Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सिद्धयोगसंग्रह

लेखक
वैद्य यादवजी त्रिकमजी आचार्य

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड
कलकत्ता ∴ पटना ∴ झाँसी ∴ नागपुर ∴ नैनी (इलाहाबाद)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

सिद्धयोगसंग्रह

लेखक

वैद्य यादवजी त्रिकमजी आचार्य

MMYVV, Karoundi

13742

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय ग्रंथालय
क्र. 13742
करौंदी, कटनी (म.प्र.)

श्री **बैद्यनाथ** आयुर्वेद भवन लिमिटेड

कलकत्ता ∗ पटना ∗ झाँसी ∗ नागपुर ∗ नैनी (इलाहाबाद)

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रकाशक का निवेदन

वैद्यसमाज तथा आयुर्वेदप्रेमी-जनता के सम्मुख 'सिद्धयोगसंग्रह' उपस्थित करते हुए आज मुझे अवर्णनीय आनन्द का अनुभव हो रहा है। यह अनुभवसिद्ध योगों का संग्रह है और **आयुर्वेदमार्त्तण्ड वैद्य यादव त्रिकमजी आचार्य** जैसे कृतविद्य तथा सिद्धहस्त वैद्य द्वारा पचास वर्ष के अनुभव के पश्चात् लिखा गया है--इतना ही इस ग्रन्थ की उपयोगिता तथा उपादेयता के बारे में पर्याप्त है।

नवीन चिकित्सकों को चिकित्साकार्य प्रारम्भ करते हुए निश्चित फलदायी योगों का ज्ञान प्रायः न होने से बहुत कष्ट होता है। ऐसे वैद्यों के लिये यह ग्रन्थ अनुपम रत्नमञ्जूषा सिद्ध होगा। जिन्हें चिकित्साकार्य करते हुए पर्याप्त समय हो चुका है, उन्हें भी इस ग्रन्थ से अपूर्व लाभ होगा।

ग्रन्थ के लेखक वैद्य यादवजी महाराज की विद्वत्ता और अनुभव से आयुर्वेद-जगत् सुपरिचित है। १८ २० वर्ष की उम्र से ही आपने आयुर्वेद के प्राचीन हस्तलिखित तथा अप्राप्य ग्रन्थों के उद्धार का कार्य प्रारम्भ कर दिया था। आयुर्वेदीय ग्रन्थमाला द्वारा आपने कई ग्रन्थरत्न प्रकाशित किये हैं। निर्णयसागर प्रेस से प्रकाशित होनेवाले अनेक आयुर्वेदीय ग्रन्थों का सम्पादन आपने किया है। हाल में आपने पाठ्यक्रमोपयोगी **'द्रव्यगुणविज्ञान'** तीन भागों में तथा **'रसामृत'** नामक ग्रन्थ तैयार करके प्रसिद्ध किया है। इसके सिवाय आपने न जाने कितने विद्वान् लेखकों तथा प्रकाशकों को प्रेरित और प्रोत्साहित कर प्राचीन ग्रन्थों का प्रकाशन, प्राचीन ग्रन्थों की व्याख्या तथा आयुर्वेदोपयोगी नूतन विषयों पर ग्रन्थों का निर्माण और प्रकाशन कराया है।

अनुभव के विषय में इतना ही कहना पर्याप्त है कि आप ५० वर्ष से बम्बई जैसी राजनगरी में सतत चिकित्साकार्य कर रहे हैं और यश का उपार्जन करते हुए भारत के प्रथम कोटि के वैद्यों में गिने जाते हैं। भारत के सब प्रान्तों के सभी कक्षाओं के अनेकानेक वैद्यराजों के आप सदा सम्पर्क में रहते हैं और इस प्रकार अनेक अनुभवों को भी प्राप्त करने और उन्हें स्वयं भी अनुभव में लाने का आपको सदा सुयोग बना रहता है। यूनानी वैद्यक का भी आपने तीन वर्ष गुरु मुख से अध्ययन किया है, जिसकी छाप आप इस ग्रन्थ में यत्र-तत्र पायेंगे।

इसके अतिरिक्त आपने अपने औषधालय में तथा बम्बई की आयुर्वेदीय पाठशाला में आयुर्वेद का सानुभव शिक्षण देकर सैकड़ों शिष्य तैयार किये हैं जो आपकी यश पताका को और भी उज्ज्वल कर रहे हैं।

इतने परिचय से समझा जा सकता है कि यह ग्रन्थ चिकित्सक-समाज को कितना उपयोगी हो सकेगा। यह उपयोगिता और भी बढ़ जाती है; जब हम

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देखते हैं कि ग्रन्थ अत्यन्त सरल और सुबोध भाषा में संक्षेपतः लिखा गया है तथा इसमें दिये योग भी ऐसे हैं जिन्हें बनाना विशेष कठिन नहीं है।

वाचकों के हाथ में ऐसा उत्तम ग्रन्थ अर्पित करते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष तथा अभिमान होता है। पूज्य गुरु यादवजी महाराज का मैं अत्यन्त अनुगृहीत हूँ कि उन्होंने मुझे इस ग्रन्थ के प्रकाशन की आज्ञा दी; तथा आयुर्वेद की यह महती सेवा करने का अवसर दिया।

१-१-५४ आयुर्वेद का नम्र सेवक
पटना **वैद्य रामनारायण शर्मा**

पंचम संस्करण

सिद्धयोगसंग्रह का यह पंचम संस्करण आयुर्वेद-जगत् को देते हुए हमें सन्तोष हो रहा है। इस संस्करण की भी पूर्व संस्करणों के समान ५००० (पाँच हजार) प्रतियाँ छपी हैं। इसके प्रणेता पूज्यपाद यादवजी महाराज आज संसार में नहीं हैं। उनको खोकर हम और सारा आयुर्वेद-जगत् शास्त्रीय दृष्टि से प्रकाशहीन सा हो गया है, इसलिये हम सब समानभाव से दुखी हैं।

वे चले गये, हमारा बहुत कुछ लेकर—और हमको बहुत कुछ देकर। हमारा ज्योतिष्मान् आशादीप वे ले गए और हमें कुछ ऐसी प्रकाश-मणियाँ वे दे गए हैं, जिनके सहारे--यदि उन्हें जीवन की गांठों में बांधे रहें तो-हम अन्धकाराच्छादित वर्तमान के कण्टकाकीर्ण पथ को पार करके, भविष्य के भव्यालोक के दर्शन कर सकेंगे।

जो कुछ हमारा वे ले गए, वह एक दिन जाने को ही था और जो कुछ वे हमें दे गए हैं, यह अक्षय है, अजर है और इसलिये वे भी हमारे बीच, सदा-सर्वदा के लिए अभिन्न हैं। युग-युग तक आयुर्वेद के साथ वे भी अमर हैं।

सिद्धयोगसंग्रह उन्हीं प्रकाश मणियों में से एक है, जो पूज्यपाद यादवजी के वरदान-सदृश हमारे-आपके पास है। इसके अधिकाधिक अनुशीलन और मनन से हमें ज्योति मिलेगी; वह ज्योति जो हमारे चिकित्साकार्य को चमत्कार से पूरित कर दे।

हमें विश्वास है कि आयुर्वेद-जगत् पूज्यपाद यादवजी के न होनेपर, उनकी स्मृति को सुरक्षित रखकर, अपने कर्त्तव्य का पालन करेगा और उनके सद्ग्रन्थों को पहले से अधिक उत्साह के साथ अंगीकृत करेगा।

झांसी
ऋषि पञ्चमी
भाद्रपद शुक्ल ५, २०१४

वैद्य रामनारायण शर्मा
श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्राइवेट लि०

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लेखक का निवेदन

आयुर्वेद के चिकित्साग्रन्थों में एक-एक रोग के लिये अनेक योग लिखे हुए हैं। उन सब योगों का बनाना और रोगियों पर प्रयोग कर के उनका अनुभव करना साधनसम्पन्न वैद्यों के लिये भी कठिन-सा है। ग्रन्थकारों ने तत्तद्रोगों में उनका अनुभव कर के ही वे योग लिखे होंगे। तथापि उन में कुछ योग ऐसे हैं जो विशेष गुणकारक हैं, और भिन्न-भिन्न प्रान्तों के वैद्यों में विशेषरूप से प्रचलित हैं। चिकित्साकार्य को प्रारम्भ करनेवाले और जिन्होंने विशेष अनुभव प्राप्त नहीं किया है या किसी अनुभवी गुरु की सेवा में रहकर चिकित्साकार्य नहीं देखा है उन नवीन वैद्यों के लिये शास्त्रोक्त असंख्य योगों में से कौन-कौन से योग बनाने चाहिये, यह कठिन समस्या हो जाती है। ऐसे वैद्यों को अपने प्रारम्भिक चिकित्साकार्य में मार्गदर्शक हो, इस आशा से मैंने अपने ५० वर्षों के चिकित्सा कार्य में जिन योगों को विशेषरूप से फलप्रद पाया उनका संग्रह कर के यह **'सिद्धयोगसंग्रह'** नामक ग्रन्थ तैयार किया है। इन में अधिकांश योग भिन्न-भिन्न प्रान्तों के वैद्यों में प्रचलित शास्त्रीय योग हैं और कुछ अन्य वैद्यों से प्राप्त और स्वतः अनुभव किये हुए हैं। कुछ शास्त्रीय योगों में मैंने अपने अनुभव से द्रव्यों में कुछ परिवर्तन भी किया है। उन के मूल पाठ में तदनुकूल परिवर्तन कर दिया है और नीचे **किञ्चित्परिवर्तित** ऐसा लिख भी दिया है। शास्त्रीय योगों के गुणपाठ में उस योग के जो गुण-विशेष अनुभव में आए वे ही रखकर अन्य हटा दिये हैं। भाषानुवाद में निर्माणविधि, मात्रा, अनुपान आदि विस्तृत और स्पष्ट भाषा में लिखा है ताकि नवीन वैद्य भी योगों को सुगमता से बना सकें और उनका प्रयोग कर सकें। हिन्दी मेरी जन्मभाषा न होने के कारण इस ग्रन्थ में भाषासम्बन्धी अनेक त्रुटियाँ रहना संभव है। आशा है कि पाठक उनको सुधार कर पढ़ेंगे और इस के लिये मुझे क्षमा करेंगे। यह ग्रन्थ गुजरात और महाराष्ट्र के वैद्यों को भी उपयोगी हो, इसलिये इस ग्रन्थ में प्रयुक्त औषधों के हिन्दी नामों के साथ उनके गुजराती और मराठी पर्यायों की सूची भी आरम्भ में दी गई है।

इस ग्रन्थ को देखने के पहिले यदि मेरे लिखे हुए **द्रव्यगुणविज्ञान— उत्तरार्ध के 'परिभाषाखण्ड'**[1] नामक प्रथम खण्ड को देख लें तो उनको योगों के निर्माण में विशेष सहायता होगी।

धातु, उपधातु, रत्न आदि का शोधन-मारण तथा विष उपविष आदि का

१—यह परिभाषाखण्ड 'निर्णय सागर प्रेस, कोलभाट स्ट्रीट, बम्बई नं २' से प्राप्त हो सकेगा। मुल्य ३।।) रु० है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देखते हैं कि ग्रन्थ अत्यन्त सरल और सुबोध भाषा में संक्षेपत: लिखा गया है तथा इसमें दिये योग भी ऐसे हैं जिन्हें बनाना विशेष कठिन नहीं है।

वाचकों के हाथ में ऐसा उत्तम ग्रन्थ अर्पित करते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष तथा अभिमान होता है। पूज्य गुरु यादवजी महाराज का मैं अत्यन्त अनुगृहीत हूँ कि उन्होंने मुझे इस ग्रन्थ के प्रकाशन की आज्ञा दी; तथा आयुर्वेद की यह महती सेवा करने का अवसर दिया।

१-१-५४ आयुर्वेद का नम्र सेवक
पटना **वैद्य रामनारायण शर्मा**

पंचम संस्करण

सिद्धयोगसंग्रह का यह पंचम संस्करण आयुर्वेद-जगत् को देते हुए हमें सन्तोष हो रहा है। इस संस्करण की भी पूर्व संस्करणों के समान ५००० (पाँच हजार) प्रतियाँ छपी हैं। इसके प्रणेता पूज्यपाद यावदजी महाराज आज संसार में नहीं हैं। उनको खोकर हम और सारा आयुर्वेद-जगत् शास्त्रीय दृष्टि से प्रकाशहीन सा हो गया है, इसलिये हम सब समानभाव से दुखी हैं।

वे चले गये, हमारा बहुत कुछ लेकर—और हमको बहुत कुछ देकर। हमारा ज्योतिष्मान् आशादीप वे ले गए और हमें कुछ ऐसी प्रकाश-मणियाँ वे दे गए हैं, जिनके सहारे--यदि उन्हें जीवन की गाँठों में बाँधे रहें तो-हम अन्धकाराच्छादित वर्तमान के कण्टकाकीर्ण पथ को पार करके, भविष्य के भव्यालोक के दर्शन कर सकेंगे।

जो कुछ हमारा वे ले गए, वह एक दिन जाने को ही था और जो कुछ वे हमें दे गए हैं, यह अक्षय है, अजर है और इसलिये वे भी हमारे बीच, सदा-सर्वदा के लिए अभिन्न हैं। युग-युग तक आयुर्वेद के साथ वे भी अमर हैं।

सिद्धयोगसंग्रह उन्हीं प्रकाश मणियों में से एक है, जो पूज्यपाद यादवजी के वरदान-सदृश हमारे-आपके पास है। इसके अधिकाधिक अनुशीलन और मनन से हमें ज्योति मिलेगी; वह ज्योति जो हमारे चिकित्साकार्य को चमत्कार से पूरित कर दे।

हमें विश्वास है कि आयुर्वेद-जगत् पूज्यपाद यादवजी के न होनेपर, उनकी स्मृति को सुरक्षित रखकर, अपने कर्त्तव्य का पालन करेगा और उनके सद्ग्रन्थों को पहले से अधिक उत्साह के साथ अंगीकृत करेगा।

झाँसी
ऋषि पञ्चमी
भाद्रपद शुक्ल ५, २०१४

वैद्य रामनारायण शर्मा
श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्राइवेट लि०

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लेखक का निवेदन

आयुर्वेद के चिकित्साग्रन्थों में एक-एक रोग के लिये अनेक योग लिखे हुए हैं। उन सब योगों का बनाना और रोगियों पर प्रयोग कर के उनका अनुभव करना साधनसम्पन्न वैद्यों के लिये भी कठिन-सा है। ग्रन्थकारों ने तत्तद्रोगों में उनका अनुभव कर के ही वे योग लिखे होंगे। तथापि उन में कुछ योग ऐसे हैं जो विशेष गुणकारक हैं, और भिन्न-भिन्न प्रान्तों के वैद्यों में विशेषरूप से प्रचलित हैं। चिकित्साकार्य को प्रारम्भ करनेवाले और जिन्होंने विशेष अनुभव प्राप्त नहीं किया है या किसी अनुभवी गुरु की सेवा में रहकर चिकित्साकार्य नहीं देखा है उन नवीन वैद्यों के लिये शास्त्रोक्त असंख्य योगों में से कौन-कौन से योग बनाने चाहिये, यह कठिन समस्या हो जाती है। ऐसे वैद्यों को अपने प्रारम्भिक चिकित्साकार्य में मार्गदर्शक हो, इस आशा से मैने अपने ५० वर्षों के चिकित्सा कार्य में जिन योगों को विशेषरूप से फलप्रद पाया उनका संग्रह कर के यह **'सिद्धयोगसंग्रह'** नामक ग्रन्थ तैयार किया है। इन में अधिकांश योग भिन्न-भिन्न प्रान्तों के वैद्यों में प्रचलित शास्त्रीय योग हैं और कुछ अन्य वैद्यों से प्राप्त और स्वतः अनुभव किये हुए हैं। कुछ शास्त्रीय योगों में मैने अपने अनुभव से द्रव्यों में कुछ परिवर्तन भी किया है। उन के मूल पाठ में तदनुकूल परिवर्तन कर दिया है और नीचे **किञ्चित्परिवर्तित** ऐसा लिख भी दिया है। शास्त्रीय योगों के गुणपाठ में उस योग के जो गुण-विशेष अनुभव में आए वे ही रखकर अन्य हटा दिये हैं। भाषानुवाद में निर्माणविधि, मात्रा, अनुपान आदि विस्तृत और स्पष्ट भाषा में लिखा है ताकि नवीन वैद्य भी योगों को सुगमता से बना सकें और उनका प्रयोग कर सकें। हिन्दी मेरी जन्मभाषा न होने के कारण इस ग्रन्थ में भाषासम्बन्धी अनेक त्रुटियाँ रहना संभव है। आशा है कि पाठक उनको सुधार कर पढेंगे और इस के लिये मुझे क्षमा करेंगे। यह ग्रन्थ गुजरात और महाराष्ट्र के वैद्यों को भी उपयोगी हो, इसलिये इस ग्रन्थ में प्रयुक्त औषधों के हिन्दी नामों के साथ उनके गुजराती और मराठी पर्यायों की सूची भी आरम्भ में दी गई है।

इस ग्रन्थ को देखने के पहिले यदि मेरे लिखे हुए **द्रव्यगुणविज्ञान—उत्तरार्ध के 'परिभाषाखण्ड'**[१] नामक प्रथम खण्ड को देख लें तो उनको योगों के निर्माण में विशेष सहायता होगी।

धातु, उपधातु, रत्न आदि का शोधन-मारण तथा विष उपविष आदि का

१—यह परिभाषाखण्ड 'निर्णय सागर प्रेस, कोलभाट स्ट्रीट, बम्बई नं २' से प्राप्त हो सकेगा। मुल्य ३॥) रु० है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शोधन इस ग्रन्थ के परिशिष्ट में लिखा है। इस विषय में जिनको विशेष जिज्ञासा हो वे मेरा लिखा हुआ **'रसामृत'** ग्रन्थ देखें।

कागज आदि की अति महँगाई के समय में इस ग्रन्थ को अच्छे कागज पर छपवाकर प्रकाशित किया इसलिये मैं अपने प्रिय शिष्य **वैद्यराज रामनारायणजी** संचालक--**"श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्राइवेट लि०"** को अनेक धन्यवाद देता हूँ। इस ग्रन्थ के प्रूफ देखने, योगों की वर्णानुक्रमणिका और शुद्धिपत्र बनाने आदि में मेरे प्रिय शिष्य **श्री रणजितराय देसाई** आयुर्वेदालङ्कार (वाइस प्रिन्सिपल ओच्छव लाल नाझर आयुर्वेदिक कालेज, सूरत तथा **शरीर-क्रिया-विज्ञान, आयुर्वेदीय पदार्थविज्ञान** आदि ग्रन्थों के लेखक) ने बहुत परिश्रम किया है, अतः उनको भी धन्यवाद देता हूँ।

ता० १-१-५४

निवेदक
यादवजी त्रिकमजी आचार्य

षष्ठ संस्सकरण

इस पुस्तक के पहले पांचों संस्करण समाप्त हो चुके हैं तथा छठा संस्करण आवश्यक हो गया। यह इस पुस्तक की उपयोगिता दर्शाने के लिये पर्याप्त है।

आशा है कि यह संस्करण भी आयुर्वेद जगत की वैसी ही सेवा करेगा तथा पाठकों का मार्गदर्शन करेगा। पूज्यपाद यादवजी की यह प्रकाश-मणि आयुर्वेद-भक्तों का प्रगतिपथ आलोकित करती रहेगी यह हमें विश्वास है।

नागपुर
मकर संक्रान्ति
१४-१-१९७६

वैद्य रामनारायण शर्मा
संस्थापक एवं प्रधान संचालक
श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड.

सप्तम संस्सकरण

इस पुस्तक के पहले छः संस्करण समाप्त हो चुके हैं तथा सप्तम संस्करण आवश्यक हो गया है। यह इस पुस्तक की उपयोगिता दर्शाने के लिये पर्याप्त है।

आशा है कि यह संस्करण भी आयुर्वेद जगत की वैसी ही सेवा करेगा तथा पाठकों का मार्गदर्शन करेगा। पूज्यपाद यादवजी की यह प्रकाश-मणि आयुर्वेद भक्तों का प्रगतिपथ आलोकित करती रहेगी यह हमें विश्वास है।

नागपुर
१४-७-१९७९

वैद्य रामनारायण शर्मा
संस्थापक एवं प्रधान संचालक
श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड.

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अष्टम संस्सकरण

सिद्धयोग संग्रह पुस्तक का ७ वाँ संस्करण शीघ्र ही समाप्त हो जाने से आठवें संस्करण की आवश्यकया महसूस होने लगी क्यों कि आयुर्वेद प्रेमियों द्वारा पुस्तक की माँग निरन्तर होने लगी, परन्तु अन्य प्रकाशनों की व्यस्तता के कारण इसका आठवाँ संस्करण निकालना सम्भव न हो सका, लेकिन आज पुस्तक का 'अष्टम संस्करण' बिद्वान पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर हमें काफी संतोष हुआ है तथा विश्वास है कि पाठक वर्ग इस ग्रन्थ को पूर्ववत समादृत करेंगे ।

मँहगाई के इस युग में प्रकाशन सामग्री के मूल्य अत्यधिक बढ़ जाने के कारण प्रकाशन सम्बन्धी कार्य भी बहुत खर्चीला हो गया है । इस कारण से पुस्तक के मूल्य में पहले की अपेक्षा आँशिक वृद्धि की गयी है, जो कि आयुर्वेद के प्रचार–प्रसार की दृष्टि से पुस्तक प्रकाशन के लागतव्यय के अन्दर ही रक्खा गया है । आशा है विद्वद्वर्ग इस उपयोगी ग्रन्थ से लाभान्वित होते हुए आयुर्वेद के प्रति अपना स्नेह-सहयोग अवश्य ही बनाये रहेंगे ।

नागपुर
१४ जुलाई १९८४

विनीत
वैद्य पं० रामनारायण शर्मा
संस्थापक एवं प्रधान संचालक
श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सिद्धयोगसंग्रह के योगों की

वर्णानुक्रमणिका

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सिद्धयोगसंग्रह के योगों की

वर्णानुक्रमणिका

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सिद्धियोगसंग्रह में आई हुई औषधियों के हिन्दी नामों के

गुजराती और मराठी पर्याय-नाम

हिन्दी	गुजराती	मराठी
	अ	
अगेथू	अरणी	ऐरण, टाकळी
अजवायन	अजमा	ओवा
अड़ूसा	अरडुसी	अडूळसा
अतीस	अतिविषनी कली	अतिविष
अदरक	आदु	आलें
अनन्तमूल	कागडीओकुंढेर, उपलसरी	उपलसरी
अनारदाना	दाड़मसार	डाळीब बीं
अमलतास	गरमालो	बाहवा
अरहर	तुवर	तूर
अरंड खरबूजा	पोपैयुं	पोपया
असगंध	आसंध	आस्कंद
	आ	
आक	आकडो	रूई
आम	आंबो	आंबा
	इ-ई-उ-ऊ-ए	
इन्द्रायन	इन्द्रावणा	कडू वृन्दावन, कवंडल
इमली	आम्बली	चिंच
इलायची	एलची	वेलची
ईख	शेरडी	ऊस
उसारे रेवन्द	पीलियो, रेवंचीनीनो सीरो	रेवचिनी शिरा
एलवा	एलियो	काळाबोळ, एलिया
	क	
कचूर	कचूरो	कचोरा
कछुआ	काचबो	कांसव
कूट	कठ, उपलेट	कोष्ठ
कबाबचीनी	चणकबाब	कबाब चीनी, कंकोळ

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिन्दी	गुजराती	मराठी
कमलगट्टा	पबडी, कमलकाकडी	कमलकाँकडी
कमीला	कपीलो	कपिला
करंजुआ	कांकच, कांच का	सागरगोटा
कलमी सोरा	सुरोखार	सोराखार
कलिहारी	दूधीओ बछनाग	कळलावी
कबांच	कवचनां बी	कवचबीज, कुहिलीचें बी
कसीस	हीराकसो	हिराकस
कालमेघ	लीलुं करियातुं	ओले किराईत
काला नमक	संचल	संचलखार, पादेलोण
काली मिर्च	काला मरी	मिरीं
काँस	कासडो	कसई
कुचला	झेरकोचलां	कुचला, काजरा
कुटकी	कडु	कडू कुटकी
कुड़ा	कडो	कुड़ा
कुरैया	कडो	कुडा
कुश	दरभ	दर्भ
कुसुम	कसुंबो	करडई
केर, करील	केरडां	नेबती
कैथ	कोठ	कवठ, कौठ
कोयल	गरणी	गोकर्णी

ख

खपरिया	खापरियुं	कलखापरा
खरेंटी	खपाट	चिकणा
खस	वालो	वाळा
खीरा	काकड़ी	काकड़ी, तौसें
खील	धाणी	लाह्या

ग

गदहपूरना	साटोडी	खापरा, घेठुली
गनियार	अरणी	ऐरण
गन्ना	शेरडी	ऊस
गिलोय	गलो	गुळवेल
गुड़हल	जासुंद	जास्वंद

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिन्दी	गुजराती	मराठी
गुलशकरी	गंगेटी	तुप्कडी
गूलर	उबरो	उंबर
गंगेरन	गंगेटी	तुप्कडी
गंभारी	शीवण	शिवण
ग्वारपाठा	कुंवार	कोरफड
	घ	
घीकुंवार	कुंवार	कोरफड
घुंघची	चणोठी	गंज
	च	
चकवड़	कुंवाडीयो	टाकळा
चन्दन	सुखड	पांढरें चन्दन
चन्द्रसूर	अशेलियो	महाळीव
चिचड़ा	अघेडो	आघाडा
चिरमिटी	चणोठी	गुंज
चिरायता	करीआतुं	किराईत
चिरौंजी	चारोली	चारोळी
	छ	
छड़ीला	छडीलो	दगडफूल
छतिवन	सातवीन	सात्वीण
छुहारा	खारेक	खारीक
छोटी पीपल	लींडीपीपर	पिंपली
छोटी कटेरी	मोर्यरिंगणी	भुईरिंगणी
छोटी मांई	पडवास	. . .
	ज	
जलनीम	बांम, कडवी नेवरी	बांय
जामुन	जांबु	जांभूळ
जीवन्ती	खीरवेल, राडारूड़ी	डोडी, हरणदोडी
जैत	जैती, रायसिंगणो	शेवारी
जोहड़	हीमज	बाळहिरडे
	ट-ड-ढ	
टेसू	खाखरो (केसुडा)	पळस
डाभ	दरभ	दर्भ

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिन्दी	गुजराती	मराठी
ढाक	खाखरो	पळस
	त	
तीखुर	तबखीर	तवखीर
तूण	...	तूण
तेजपात	तमालपत्र	तमालपत्र
	द	
दरियाई नारियल	झेरी नारियल	कडू नारळ
दालचीनी	तज	दालचीनी
दुधिया (दुद्धी)	दुधेली	नायटी, दुधी
दूब	ध्रो	दूर्वा
	ध	
धनिया	धाणा	धणे
धान	चोखा	भात
धाय	धावडी, धावणी	धायटी
	न	
निबौली	लिंबोडी	लिम्बोळचा
निसोथ	नसोत्तर	निशोत्तर
नीम	लीबडो, लींबडो	कडूनिंब
नीला थोथा	मोरथुथु	मोरचूद
नीलोफर	कमल	निळे कमल
नौसादर	नवसार	नवसागर
	प	
पद्माख	पदमकाष्ठ	पद्मकाष्ठ
पपीता	पोपौयुं	पोपई
पाक	पीपरी	पिंपरी
पाठा	कालीपाठ	पहाडवेल
पाडर	पाडल	पाडल
पाढ	कालीपाठ	पहाडवेल
पाढल	पाडल	पाडल
पीठवन	पीलो समेरवो, पीठवण	पिटवण
पिण्डखजूर	खजूर	खजूर
पित्तपापड	खडसलियो, पितपापडो	पित्तपापडा

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिन्दी	गुजराती	मराठी
पुष्करमूल	पोरखमूल	...
	ब	
बड़ी कटेरी	उभी रिंगणी	डोरलें
बरगद	वड	वड
बरहटा	उभी रिंगणी	डोरली
बरियार	खपाट	चिकणा
बरुना	वायवरणो	वायवर्णा
बायबिडंग	वावडींग	वावडिंग
बालछड़	जटामांसी	जटामांसी
बिधारा	वरधारो	बरधारा
बिहीदाना	मुगलाई वेदाण।	मोगली बेदाण।
बेत	नेतर	बेत
बेर	बोर	बोर
बेल	बीली	बेल
बेलगिरी	बीलीनो गरभ, बिलीनो मगज,	बेलफळाचा गीर
बेंगन	रिंगणाँ वंताक	वांगीं
	भ	
भटकटैया	भोंयरिंगणी	भुईरिंगणी
भँगरा	भाँगरो	माका
भलवाँ	भिलामो	बिबा
	म	
मकोय	पीलुडी	कामोणी
महुआ	महुडो	मोहडा, मोह
माजूफल	मायां	मायफळ
माषवन	जंगली अडद	रान उडीद
मिश्री	साकर	साखर
मुगवन	जंगली मग	रानमुग
मुनक्का	द्राख	काळी द्राक्षें, मनुका
मुलेठी	जेठीमधु	ज्येष्ठीमध
मूसाकानी	उंदरकानी	उंदिरकानीं
मेंहदी	मेंदी	मेंदी

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिन्दी	गुजराती	मराठी
मोम	मीण	मेण
मौलसिरी	बोलसरी	बकुल
	र	
रक्तचन्दन	रतांजली, लालचन्दन	रक्तचन्दन
रसौत	रसवंती	रसांजन
रेंड़ी	एरडो, दीवेलो	एरंड
रोहिड़ा	रगतरोहीडो	रोहिड़ा, रक्तरोहडा
	ल	
लाजवन्ती	रीसामणी	लाजाळु
लावा	धाणी	लाह्या
लिसोड़ा	गूंदो, वडगूंदो	भोंकर
लोध	लाधर	लोध्र
लौकी	दुधी	दुधी भोपळा
	व	
विजयसार	बीयो	बिवला
विदारी	भोंयकोंहलुं	भुईकोहळा
वंशलोचन	वांसकपुर	वंशलोचन
	श	
शहद	मध	मध
शीतल मिर्च	चणकबाब	कबाबचीनी, कंकोळ
शेमल	शेमलो, सीमलो	साबर, शेवरी
शंखाहुली	शंखावली	शंखपुष्पी
	स	
सत्यानाशी	दारुडी	पिंवळा धोत्रा, पिसोल
सनाय	मिंढीआवल, सोनामुखी	सोनामुखी
सरफोंका	सरपंखो	शरपुंखा
सहदेई	सेदरडी	ओसाडी
सहेंजना	सरगवो	शेगवा
सॉटो	साटोड़ी	पुनर्नवा, घेटुली
सुहागा	टंकणखार, सुहागो	टांकणखार
सोआ	सुवा	शेपु, वाळंतशेंप
सोना	.....	टेंटु
सौंफ	वरिआली, वजीयारी	बडिशेप
संखिया	सोमल	सोमल
संभालु	नगोड	निर्गुण्डी, निगड

टि०—इस अनुक्रमणिका में यूनानी द्रव्यों के गुजराती-मराठी पर्याय नहीं दिये गय हैं। कारण, वे सर्वत्र एक ही नाम से यूनानी दवा बेचनेवालों के यहाँ मिलते हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

।। नमः आयुर्वेदप्रवर्तवेभ्यो देवेभ्यो महर्षिभ्यश्च ।।

सिद्धयोगसंग्रह

ज्वराधिकार-प्रथम

१–गोदन्तीमिश्रण

द्रव्य और निर्माणविधि--

गोदन्तीभस्म ८ भाग, जहरमोहरा पिष्टी २ भाग, रसादि वटी २ भाग; तीनों को एकत्र मिलाकर रख लें।

मात्रा और अनुपान--१ माशा ३-४ घंटे से ठंडा जल, लाजमण्ड या किसी ज्वरघ्न कषाय के अनुपान से दिन में ४-५ बार दें।

उपयोग--साधारणतः किसी भी प्रकार के ज्वर के सन्ताप (Temperature) तथा दाह, तृषा, वमन, शिरोवेदना आदि ज्वर के लक्षणों को कम करने के लिए इसका उपयोग होता है। विषमज्वर में ज्वर का वेग हो तबतक ही इसका प्रयोग करें। ज्वर का वेग उतरने के बाद सप्तपर्णवटी आदि ज्वर के आगामी वेग को रोकनेवाले औषध का प्रयोग करना चाहिए।

अब गोदन्तीमिश्रण में आनेवाले तीनों योगों का पृथक् पृथक् वर्णन नीचे किया जाता है।

२–गोदन्तीभस्म

स्वरूप-वर्णन--

गोदन्ती बम्वई के बाजार में **'गोदन्ती'** या **'घापाण'** नाम से मिलती है। इसको मराठी में 'शिरोगोला', गुजराती में 'चिरोड़ी', दक्षिण भारत के सिद्ध 'सम्प्रदाय कर्पूरशिला' और अंग्रेजी में 'जिप्सम्' (Gypsum) कहते हैं। यह बाजार में पत्रमय शिला या पाशेदार टुकड़ों के रूप में मिलती है। औषध में दोनों का उपयोग होता है।

भस्म-निर्माणविधि--

मृत्तिकारहित अच्छी गोदन्ती ला, उसको गरम जल में धो, साफ कर धूप में सुखा, जमीन में एक हाथ गहरा गड्ढा बना, उसका ३।४ भाग उपलों (कंडों) से भर ऊपर गोदन्ती के टुकड़े रख, गड्ढे के शेष अंश को उपलों से भरकर अग्नि देवें। स्वांगशीतल होने पर इस भस्म को पृष्ठ ३ पर लिखे हुए चन्दनादि अर्क की एक

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिन्दी	गुजराती	मराठी
मोम	मीण	मेण
मौलसिरी	बोलसरी	बकुल
	र	
रक्तचन्दन	रतांजली, लालचन्दन	रक्तचन्दन
रसौत	रसवंती	रसांजन
रेंड़ी	एरडो, दीवेलो	एरंड
रोहिड़ा	रगतरोहीडो	रोहिड़ा, रक्तरोहडा
	ल	
लाजवन्ती	रीसामणी	लाजाळु
लावा	धाणी	लाह्या
लिसोड़ा	गूंदो, वडगूंदो	भोंकर
लोध	लोधर	लोध्र
लौकी	दुधी	दुधी भोपळा
	व	
विजयसार	बीयो	बिवला
विदारी	भोंयकोंहलुं	भुईकोहळा
वंशलोचन	वांसकपुर	वंशलोचन
	श	
शहद	मध	मध
शीतल मिर्च	चणकबाब	कबाबचीनी, कंकोळ
शेमल	शेमलो, सीमलो	साबर, शेवरी
शंखाहुली	शंखावली	शंखपुष्पी
	स	
सत्यानाशी	दारुडी	पिंवळा धोत्रा, पिसोल
सनाय	मिंढ़ीआवल, सोनामुखी	सोनामुखी
सरफोंका	सरपंखो	शरपुंखा
सहदेई	सेदरडी	ओसाडी
सहेंजना	सरगवो	शेगवा
साँटो	साटोड़ी	पुनर्नवा, घेटुली
सुहागा	टंकणखार, सुहागो	टांकणखार
सोआ	सुवा	शेपु, वाळंतशेंप
सोना	.....	टेंटु
सौंफ	वरिआली, वजीयारी	बडिशेप
संखिया	सोमल	सोमल
संभालु	नगोड	निर्गुण्डी, निगड

टि०—इस अनुक्रमणिका में यूनानी द्रव्यों के गुजराती-मराठी पर्याय नहीं दिये गये हैं। कारण, वे सर्वत्र एक ही नाम से यूनानी दवा बेचनेवालों के यहाँ मिलते हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

।। नमः आयुर्वेदप्रवर्तवेभ्यो देवेभ्यो महर्षिभ्यश्च ।।

सिद्धयोगसंग्रह

ज्वराधिकार-प्रथम

१—गोदन्तीमिश्रण

द्रव्य और निर्माणविधि——

गोदन्तीभस्म ८ भाग, जहरमोहरा पिष्टी २ भाग, रसादि वटी २ भाग; तीनों को एकत्र मिलाकर रख लें।

मात्रा और अनुपान——१ माशा ३-४ घंटे से ठंडा जल, लाजमण्ड या किसी ज्वरघ्न कषाय के अनुपान से दिन में ४-५ बार दें।

उपयोग——साधारणतः किसी भी प्रकार के ज्वर के सन्ताप (Temperature) तथा दाह, तृषा, वमन, शिरोवेदना आदि ज्वर के लक्षणों को कम करने के लिए इसका उपयोग होता है। विषमज्वर में ज्वर का वेग हो तबतक ही इसका प्रयोग करें। ज्वर का वेग उतरने के बाद सप्तपर्णवटी आदि ज्वर के आगामी वेग को रोकनेवाले औषध का प्रयोग करना चाहिए।

अब गोदन्तीमिश्रण में आनेवाले तीनों योगों का पृथक् पृथक् वर्णन नीचे किया जाता है।

२—गोदन्तीभस्म

स्वरूप-वर्णन——

गोदन्ती बम्बई के बाजार में **'गोदन्ती'** या **'घापाण'** नाम से मिलती है। इसको मराठी में 'शिरोगोला', गुजराती में 'चिरोड़ी', दक्षिण भारत के सिद्ध 'सम्प्रदाय कर्पूरशिला' और अंग्रेजी में 'जिप्सम्' (Gypsum) कहते हैं। यह बाजार में पत्रमय शिला या पाशेदार टुकड़ों के रूप में मिलती है। औषध में दोनों का उपयोग होता है।

भस्म-निर्माणविधि——

मृत्तिकारहित अच्छी गोदन्ती ला, उसको गरम जल में धो, साफ कर धूप में सुखा, जमीन में एक हाथ गहरा गड्ढा बना, उसका ३।४ भाग उपलों (कंडों) से भर ऊपर गोदन्ती के टुकड़े रख, गड्ढे के शेष अंश को उपलों से भरकर अग्नि देवें। स्वांगशीतल होने पर इस भस्म को पृष्ठ ३ पर लिखे हुए चन्दनादि अर्क की एक

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भावना दे, सूखा, पीस कपड़छान करके बोतल में भर लें। यदि जमीन में गड्ढा करके उपलों की अग्नि देने की सुविधा न हो तो अँगीठी में लकड़ी के कोयलों की अग्नि में पूर्वोक्त विधि से भस्म बना लें। कई वैद्य इस प्रकार भस्म तैयार करके पीछे उसको या गोदन्ती के चूर्ण को कुमारीगर्भ (घीकुवाँर के गुद्दे) की या निम्बपत्रस्वरस की भावना दे, टिकिया बना, उनको सुखा, मिट्टी के २ तवों के बीच में रख कर अग्निपुट देते हैं।

मात्रा——१ माशा।

अनुपान——जल, दूध, मधु, या घृत और शर्करा के साथ मिलाकर दें।

उपयोग——ज्वर में गोदन्तीमिश्रण के रूप में दें। सिर के दर्द में १ से २ माशा गोदन्तीभस्म, मिश्रि का चूर्ण १-२ माशा दोनों को समान गोघृत में मिलाकर दें। सुर्यावर्त तथा अर्धावभेदक–आधा सीसी (अधकपाली) में दिन में चार मात्रा ४-४ घंटे से तथा एक मात्रा सवेरे में सूर्योदय के १-२ घंटे पूर्व (पीड़ा प्रारम्भ होने के पहले) देने से विशेष लाभ होता है। स्त्रियों का श्वेत या रक्तप्रदर, बालकों का फक्करोग (बालशोष-सूखा) और शरीर में सुधांश (चूने-केल्शियम) की कमी से होनेवाले सर्व रोगों में यह उत्तम औषध है।

३ -- जहरमोहरा पिष्टी

जहरमोहरा का स्वरूप वर्णन——

यह बाजार में इसी नाम से मिलता है। यह एक पत्थर है जो रंग में सफेद, कुछ पीलापन और हरापन लिये होता है। जो वजन में हलका और चिकना हो वह अच्छा समझा जाता है। यह यूनानी वैद्यक में प्रचलित द्रव्य है। हकीम लोग इसको विषघ्न, हृदय तथा मस्तिष्क को बल देनेवाला, वमन को बन्द करनेवाला एवं अनुष्णाशील (मातदिल) मानते हैं। इसकी उत्तम जाती को **'जहरा मोहरा-खताई'** कहते हैं।

पिष्टी निर्माणविधि——

जहरमोहरा के अच्छे टुकड़ों को जल से धो, सुखाकर कपड़छान चूर्ण करें। उस चूर्ण को पत्थर के खरल में उत्तम गुलाबजल या चन्दनादि अर्क* में अति सूक्ष्म पीस, छाया में सुखा कर बोतल में भर लें।

***चन्दनादि अर्क बनाने की विधि**——उत्तम चन्दन का चूर्ण, मौसिमी गुलाब, केवड़ा, वेदमुश्क और कमल के फूल——सबको एकत्र कर, उसमें अठगुना पानी डाल कर भपके में आधा अर्क खींचे। मैने इस प्रकार तैयार किये हुए अर्क का **चन्दनादि अर्क** नाम रखा है। मोती-प्रवाल आदि की पिष्टी बनाने में इसी का प्रयोग करता हूँ। यदि वेदमुश्क के फूल न मिले तो मौलसिरी के फूल डालें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मात्रा--२ रत्ती से १ माशा तक।

अनुपान—जल, गुलाब का अर्क, चन्दनादि अर्क आदि।

उपयोग—इसका उपयोग हृत्स्पन्दन, हृदयदौर्बल्य, वमन, दाह दिल की घबराहट, अन्नविष, विसूचिका (हैजा), बच्चों के हरे दस्त आदि में होता है।

४ -- रसादि वटी

रसबसिघनसारचन्दनानां सनलदसेव्यपयोदजीवनानाम्।
अपहरति वटी मुखस्थितेयं सकलसमुत्थितदाहमश्रमेण॥

योगरत्नाकर, दाहाधिकार

द्रव्य और निर्माणविधि--

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, कपूर, श्वेत चन्दन, जटामासी, नेत्रवाला, नागरमोथा और खस प्रत्येक सम भाग लें। प्रथम पारद और गन्धक की कज्जली बना, उसमें अन्य द्रव्यों का सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण मिला कर गुलाब के अर्क या चन्दनादि अर्क में २-३ दिन मर्दन कर, दो-दो रत्ती की गोलियाँ बनाकर छाया में सुखा लें। या सुखा कर चूर्ण के रूप में रख लें।

मात्रा--१-२ गोली (२–४ रत्ती)।

अनुपान--जल, गुलाब का अर्क, चन्दनादि अर्क या लाजमण्ड।

वक्तव्य-- मैं इस योग में छोटी इलायची तथा दरियाई नारियल (जहरी नारियल) और कपूर-कचरी का चूर्ण और मिलाता हूँ। इससे विशेष लाभ होते देखा गया है।

उपयोग—किसी प्रकार का दाह, तृषा, हिक्का, विसूचिका और वमन में इस योग का उत्तम उपयोग होता है।

५--ज्वरसंहार रस

सोंठ, काली मिर्च छोटी पीपल, कटकी, नीम की अन्तर छाल, कूठ, नागरमोथा सफेद सरसों, इन्द्रजव सेंका हुआ, सुहागा आगपर फुलाया हुआ, रक्तचन्दन, अतीस और ममीरी* सबका चूर्ण सम भाग और रससिन्दूर या शुद्ध हिंगुल सबसे आधा भाग लेवें। प्रथम रससिन्दूर को बारीक पीस, पीछे उनमें अन्य द्रव्यों का सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण मिला कर अदरक, तुलसी और निर्गुण्डी (सम्भालू) के पत्तों के स्वरस में ३-३ दिन मर्दन करके २–२ रत्ती की गोलियाँ बना लें या सुखाकर चूर्ण के रूप में रख लें।

*यदि ममीरी न मिले तो एक भाग काली जीरी (कड़ुआ जीरा, सं० अरण्यजीरक) डालें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मात्रा और अनुपान--दो रत्ती केवल या एक माशा गोदन्तीभस्म के साथ मिलाकर जल या ज्वरघ्न कषाय के अनुपान से दें।

उपयोग—ज्वरसंहार रस अनुपानविशेष से सब प्रकार के ज्वरों में विशेषतः कफ और वातज्वर में लाभ करता है। इसको गोजिह्वादि क्वाथ के अनुपान के साथ देने से श्लेष्मज्वर में कफ पककर शीघ्र गिरने लगता है और प्रतिश्याय (जुकाम) तथा खाँसी भी शीघ्र अच्छी होती है। कफज्वर में पार्श्वशूल हो तो इसके साथ २ से ६ रत्ती मृगश्रृङ्गभस्म (हरिण या सांभर के सींग की भस्म) और श्वसनकज्वर (न्यूमोनिया) हो तो इसके साथ श्रृङ्गभस्म २-६ रत्ती तथा अभ्रक-भस्म एक रत्ती मिला कर दें और ऊपर से गोदिह्वादि कषाय या भार्ग्यादि कषाय नौसादर (२ ४ रत्ती) और यवक्षार (२-४) रत्ती का प्रतीवाप देकर दें। ज्वरसंहार रस का तरुण और जीर्ण दोनों प्रकार के ज्वर में प्रयोग कर सकते हैं।

६– संशमनी वटी (गुडूचीघनवटी)

द्रव्य और निर्माणविधि---

अंगुठे जितनी मोटी अच्छी ताजी-हरी गिलोय ला, उसको जल से अच्छी तरह धो, उसके ४-४ अंगुली जितने टुकडे बना, कूट, भीतर से खूब साफ की हुई लोहे की कड़ाही में या पीतल के कलईदार बर्तन में डाल, उसमें चौगुना पानी डालकर चतुर्थांशशेष क्वाथ करें। क्वाथ ठंडा होनेपर अच्छे बस्त्र से २-३ बार छानकर, कलईदार बर्तन में डाल कर जबतक क्वाथ सीरे (हलवे) जैसा गाढ़ा न हो तबतक पकावें। पीछे अग्निपर से उतार कर घन गोली बनने योग्य हो तबतक धूप में सुखाकर २-२ रत्ती की गोलियाँ बना लें।

मात्रा और अनुपान--५ से १० गोलियाँ दिन में ४-५ बार जल के साथ दें।

उपयोग--किसी भी प्रकार के ज्वर में इसका निश्शंक प्रयोग कर सकते हैं। जीर्णज्वर और राजयक्ष्मा के ज्वर में इस से अच्छा लाभ होता है। प्रमेह, श्वेत-प्रदर, मन्दाग्नि, दौर्बल्य और पाण्डुरोग (रक्ताल्पता) में इससे अच्छा लाभ होता है। यह बलकारक रसायन है। गुडूची के घन में चतुर्थांश अतीस का चूर्ण मिलाकर दो-दो रत्ती की गोलियाँ बना लें। इसमें से ५-१० गोलियाँ जल के अनुपान के साथ देने से विषमज्वर (पारी के बुखार) में भी लाभ होता है।

७– त्रिभुवनकीर्ति रस

हिंगुलं च व्योषं टंकणं मागधीशिफाम्।
सचूर्ण्य भावयेत् त्रेधा सुरसार्द्रकहेमभिः।।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रसस्त्रिभुवनकीर्तिर्गुञ्जैकाऽऽर्द्ररसेन वै ।
विनाशयेज्ज्वरान् सर्वाननुपानविशेषतः ।।

योगरत्नाकर-ज्वराधिकार

द्रव्य और निर्माणविधि--

शुद्ध हिंगुल, शुद्ध वत्सनाभ, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, अग्निपर फुलाया हुआ सुहागा और पीपलामूल प्रत्येक का सूक्ष्म कपड़छान किया हुआ चूर्ण सम भाग ले, उसको अदरक, तुलसी और धतूरे की पत्ती के स्वरस की ३-३ भावना दें, प्रति भावना ६ घण्टा मर्दन कर, १-१ रत्ती की गोलियां बनाकर छाया में सुखा लें। अन्त में ३ भावना कागजी-नीबू के रस की देवें तो यह योग विशेष गुणप्रद होता है।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली दिन में ३-४ बार अदरक के रस और मधु के साथ, या तुलसी और बिल्वपत्र के फांट के साथ, अथवा किसी ज्वरघ्न क्वाथ के अनुपान के साथ दें।

उपयोग--अनुपान विशेष से सर्व प्रकार के तरुणज्वरों में विशेषतः वात और कफप्रधान ज्वरों में इसके प्रयोग से स्वेद होकर ज्वर उतर जाता है। ३ ४ दिन इसके प्रयोग से यदि ज्वर न उतरे और संततज्वर (मर्यादा ज्वर) का निर्णयहो जाय तो आगे इसका प्रयोग न करना चाहिए।

८–संजीवनी बटी

विडङ्गं नागरं कृष्णां पथ्यामलबिभीतकम् ।
वचां गुडूचीं भल्लातं सद्विषं चात्र योजयेत् ।।
एतानि समभागानि गोमूत्रेणैव पेषयेत् ।
गुञ्जाभा वटिका कार्या दद्यादार्द्रकजै रसैः ।।
वटी सञ्जीवनी नाम्नाऽजीर्ण-ज्वरविनाशिनी ।।

शार्ङ्गधरसंहिता, म० खं० अ० ७

द्रव्य और निर्माणविधि--

वायबिडङ्ग, सोंठ, छोटी पीपल, हर्रदल, आंवलादल, बहेड़ादल, बच, गिलोय, शुद्ध भिलावा और शुद्ध बछनाग ये सब सम भाग लें। बछनाग और भिलावे को गोमूत्र में खूब महीन पीस, उसमें अन्य द्रव्यों का सूक्ष्म कपड़छन चूर्ण मिला, गोमूत्र में तीन दिन मर्दन कर, १-१ रत्ती की गोलियाँ बना, छाया में सुखाकर शीशी में भर लें।

मात्रा और अनुपान--एक से दो गोली अदरक के रस और मधु के साथ दें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपयोग––सञ्जीवनी वटी अजीर्ण में, अजीर्ण से होनेवाले ज्वर में और कफ वातप्रधान ज्वर में अदरक के रस और मधु के अनुपान से; सन्निपात ज्वरमें ३-७ लवंग और १०-२० ब्राह्मी की ताजी पत्ती पीस, २–४ तोला जल में मिला; कपड़े से छान कर उस जल के अनुपान से दें। ज्वर में पतले दस्त होते हों तो ५ रत्ती जायफल जल में घिस कर उसके साथ दें।

वक्तव्य––ज्वराधिकार में बछनागयुक्त जितने योग ग्रन्थों में लिखे हैं, उनमें त्रिभुवनकीर्ति और सञ्जीवनी ये दो योग मेरे अनुभव में अच्छे हैं अतः ये दो योग ही मैंने यहाँ लिखे हैं।

९––विश्वतापहरण रस

सूतशुल्वत्रिवृताबलितिक्तादन्तिबीजचपला बिषतिन्दुः।
पथ्यया सह विमर्द्य समांशं हेमवारिसहितं दिनमेकम् ॥
रत्तियुग्मगुटिकाऽऽर्द्रकवारा नाशयेदभिनवज्वरमाशु।
विश्वतापहरणोऽत्र च पथ्यं मुद्गयूषसहितं लघु भक्तम् ॥

योगरत्नाकर––ज्वराधिकार।

द्रव्य और निर्माणविधि––

शुद्ध पारद, ताम्रभस्म, निसोथ, शुद्ध गन्धक, कुटकी, शुद्ध जमालगोटा, छोटी पीपल, शुद्ध कुचला और बड़ी हर्रे का दल* ये सब द्रव्य सम भाग लें। प्रथम पारे और गन्धक की कज्जली कर, उसमें ताम्रभस्म तथा अन्य औषधों का सूक्ष्म कपड़छन किया हुआ चूर्ण मिला, धतूरे के पत्तों के स्वरस में एक दिन तथा भाँगरे के स्वरस में सात दिन मर्दन कर, २–२ रत्ती की गोलियाँ बना, छाया में सुखाकर रख लें।

मात्रा—१-२ गोली।

अनुपान––अदरक का रस और मधु के साथ अथवा मिश्री मिलाए हुए जल के साथ दें।

उपयोग––नवज्वर में या उदरादि अन्य रोगों में जहाँ विरेचन कराने की आवश्यकता हो वहाँ दें।

१०–– अश्वकञ्चुकी रस

पारदं टंकणं गन्धं विषं व्योषं फलत्रयम्।
तालकं च समं सर्वं जयपालं त्रिभागकम् ॥

* गुठली निकाला हुआ वक्कल (छिलका)।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मर्दयेद् भृङ्गनीरेण भावना तु त्रिसप्तधा ।
द्विगुञ्जां वटिकां कृत्वा छायायां शोषयेद् बुधः ।।
अश्वारोही रसो देयो ज्वरे श्वासे विबन्धके ।।

द्रव्य और निर्माण-विधि--

शुद्ध पारद, आगपर फुलाया हुआ सुहागा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध बछनाग, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, हरड़दल, बहेड़ादल, आंवलादल, शुद्ध हरताल या माणिक्य रस ये सब समभाग और शुद्ध जमालगोटा सबके समान लेवें। प्रथम पारे और गन्धक की कज्जली कर, उसमें हरताल मिला, उसके सूक्ष्म कण भी न दिखें तब तक मर्दन कर, अन्य द्रव्यों का सूक्ष्म कपड़छान किया हुआ चूर्ण मिला, भाँगरे के रस में २१ दिन मर्दन कर, २-२ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छाया में सुखा लें।

मात्रा--१-२ गोली ।

अनुपान--अदरक का रस या मिश्री मिलाया हुआ जल ।

उपयोग--ज्वर में या अन्य उदरादि रोगों में जहां विरेचन की आवश्यकता हो, वहां एक-दो मात्रा यथावश्यक प्रयोग करें ।

वक्तव्य--ज्वराधिकार में जयपाल (जमालगोटा) युक्त जितने विरेचन योग रस-ग्रन्थों में लिखे हैं उनमें तथा **विश्वतापहरण** तथा **अश्वकञ्चुकी** ये दो योग उत्तम हैं। अतः मैंने ये दो योग ही यहाँ दिये हैं। इनका प्रयोग ज्वर में विरेचनयोग्य अवस्था देखकर एक-दो बार ही करना उचित है। अन्य उदरादि रोगों में यथावश्यक अनेक बार प्रयोग कर सकते हैं। यदि किसी मृदुकोष्ठवाले को इन योगों से अधिक विरेचन हो तो मीठे वेदाना (मृदुबीज) दाड़िम (अनार) का रस, छाल, इसबगोल का लुआब मिश्री मिलाकर या सौंफ का अर्क देना चाहिए ।

११ कालारि रस

त्रिशाणं पारदं चैव गन्धकं टंकपञ्चकम् ।
त्रिशाणं वत्सनाभं च पिप्पली दशशाणिका ।।
लवङ्गं च चतुःशाणं त्रिशाणं कनकाह्वयम् ।
टंकणं वह्निशाणं च पञ्च जातिफलान् क्षिपेत् ।
मरिचं पञ्चशाणं स्यादाकल्लं च त्रिशाणकम् ।
करीरार्द्रकनिम्बूकैर्मर्दयेच्च दिनत्रयम् ।
कालारिरसनामोऽयं सर्वज्वरविनाशनः ।।

योगचिन्तामणि ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्रव्य और निर्माणविधि--

शुद्ध पारद ३ भाग, शुद्ध गन्धक ५ भाग, शुद्ध बछनाग ३ भाग, छोटी पीपल १० भाग, लौंग ४ भाग, शुद्ध धतुरे के बीज ३ भाग, आगपर फुलाया हुआ सुहागा ३ भाग, जायफल, ५ भाग, काली मिर्च ५ भाग, और अकरकरा ३ भाग लेवें। प्रथम पारे-गन्धक की कज्जली कर, उसमें अन्य द्रव्यों का सूक्ष्म कपड़छान किया हुआ चूर्ण मिला, केर की कोंपल, अदरक और कागजी नीबू इन प्रत्येक के स्वरस में ३-३ दिन मर्दन कर, २-२ रत्ती की गोलियाँ बना, छाया में सुखा कर रख लें।

मात्रा--१ गोली।

अनुपान और उपयोग—अदरक का रस, तुलसी का रस, ७ से २१ लौंग का अर्धावशेष क्वाथ—इनमें से किसी एक अनुपान से वातज्वर और वात-कफाधिक सन्निपात ज्वर में दें,। सन्निपात ज्वर की प्रलापावस्था में तगरादि क्वाथ के अनुपान से या ७ लौंग, ३ माशा ब्राह्मी (मण्डूकपर्णी) की ताजी-हरी पत्ती, ३ माशा जटामांसी और ३ माशा शंखाहुली के क्वाथ के अनुपान से दें। विषम-ज्वर (पारी के ज्वर) में १।। माशा जायफल के चूर्ण के साथ देकर ऊपर से दूध दें अथवा निम्बपत्रस्वरसपुटित गोदन्तीभस्म १ माशा के साथ मिला कर दें। आगे जो ज्वरघ्न क्वाथ लिखे हैं उन में से किसी भी क्वाथ के अनुपान से दे सकते हैं,

१२– कस्तूरीभैरव रस (लघु)

हिंगुलं च विषं टङ्कं जातिकोषफले तथा।
मरिचं पिप्पली चैव कस्तूरी घनसारकम्।।
नागवल्लीदलरसैर्दिनमेकं विमर्दयेत्।
गुञ्जामितां वटीं दद्यात् सन्निपाते सुदारुणे।
कस्तूरीभैरवः ख्यातो रसोऽयं लघुपूर्वकः।।

भैषज्यरत्नावली-ज्वराधिकार (किञ्चित् परिवर्तित)

द्रव्य और निर्माण विधि---

शुद्ध हिंगुल, शुद्ध बछनाग, आगपर फुलाया हुआ सुहागा, जायफल, जावित्री, काली मिर्च, छोटी पीपल, कस्तूरी और कपूर सम भाग लेवें। प्रथम पान के रस में शुद्ध हिंगुल, बछनाग का चूर्ण, कस्तूरी और कपूर मिला कर मर्दन करें। बाद में अन्य द्रव्यों का कपड़छान किया हुआ सूक्ष्म चूर्ण मिला, पान के रस में एक दिन मर्दन कर, १-१ रत्ती की गोलियाँ बना, छाया में सुखाकर रख लें।

मात्रा, अनुपान और उपयोग--१-२ गोली पान के रस, मधु अथवा दूध में मिलाकर दें। इसका उपयोग वातज्वर, कफज्वर और वातकफ-प्रधान सन्नि-

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पात ज्वर में करें। सन्निपात ज्वर में जब पसीना अधिक होकर शरीर ठंडा होने लगे, हाथ-पाँव ठंढे हों और नाडी क्षीण होने लगे तब इससे विशेष लाभ होता है। इस योग में यदि बछनाग के स्थान पर शुद्ध कुचला और अम्बर एक-एक भाग डालकर योग तैयार करें तो यह नाड़ी और हृदय की दुर्बलता तथा वातरोगों में विशेष लाभ देता है और वाजीकर गुणयुक्त होता है।

१३- बृहत्कस्तूरीभैरव रस

मृगमदशशिसूर्या धातकी शूकशिम्बी।
रजतकनकमुक्ता विद्रुमं लौहपाठे ।।
कृमिरिपुघनविश्वा वारितालाभ्रधात्र्यो।
रविदलरसपिष्टः कस्तुरीभैरवोऽयम् ।।
अनुपानविशेषेण सर्वज्वरविनाशनः ।।

भैषज्यरत्नावली-ज्वराधिकार।

द्रव्य और निर्माणविधि-

कस्तूरी, कपूर, ताम्रभस्म, धाय के फूल, कवांच के बीज, रौप्यभस्म, सुवर्ण-भस्म, मोती की पिष्टी या भस्म, प्रवाल की पिष्टी या भस्म, लोहभस्म, पाठा, बाय-बिडंग, नागरमोथा, सोंठ, खस, शुद्ध हरताल या माणिक्य रस, अभ्रकभस्म और आँवलादल ये सब द्रव्य सम भाग लेवें। प्रथम वनस्पतियों का सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण और भस्में मिला, आक के पत्तों के रस में २ दिन मर्दन कर उसमें कस्तूरी और कपूर डाल, एक दिन आक के पत्तों के रस में मर्दन कर, २-२ रत्ती की गोलियाँ बना छाया में सुखाकर रख लें।

मात्रा--१ गोली।

अनुपान और उपयोग--इस रस का सर्वप्रकार के सन्निपातज्वरों में अधिक पसीना, शीतांग, प्रलाप, तन्द्रा, नाड़ी की क्षीणता आदि लक्षण उत्पन्न होनेपर दोषों का बलाबल देखकर अदरक का रस, पान का रस, चन्दन का घासा अथवा लवंग-ब्राह्मी-जटामांसी, तगर और शङ्खाहुली—इनका क्वाथ, इनमें से किसी एक अनुपान से दें। सूतिकाज्वर में देवदार्वादि क्वाथ के अनुपान से दें।

१४-हिंगुकर्पूर वटिका

द्रव्य और निर्माणविधि--

घी में सेंकी हुई असली* हींग १ भाग, कर्पूर १ भाग, कस्तूरी १।८ भाग लें,

* हींग के टुकड़े को दियासलाई से जलाने पर यदि कर्पूर के जैसे समग्र जल जाय तो हींग असली है ऐसा समझना चाहिए।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सबको एकत्र घोंटकर १-१ रत्ती की गोलियां बना लें। कर्पूर और हींग को एकत्र घोंटने से प्राय: गोली बनने योग्य हो जाता है। यदि न हो तो जरा शहद मिलावें।

मात्रा--१ गोली।

अनुपान—ठंढे जल से १ गोली निगला दें। यदि रोगी गोली निगलने में समर्थ न हो तो गोली को शहद में या थोड़े अदरक के रस में मिलाकर जीभ पर लगा दें।

उपयोग--ज्वर में सन्निपात के लक्षण देखते ही हिंगुकर्पूरवटी दें। इससे नाड़ी की गति सुधरती है और हाथ-पांव काँपना, कपड़ा फेंकना, उठ-बैठ करना बकना आदि लक्षण कम होते हैं। श्वसनक ज्वर में (न्यूमोनिया में) इससे कफ पतला होकर निकलने लगता है, कफ की दुर्गन्ध नष्ट होती है और कफगत रोगजन्तु (कीटाणु) का नाश होता है। हृत्कम्प और दमे में हिंगुकर्पूरवटी से लाभ होता है।

स्व०बा०डा० वामन गणेश देसाई विरचित **औषधिसंग्रह** से किंचित्परिवर्तित।

१५-वसन्तमालती रस

स्वर्णं मुक्ता च दरदं मरिचं भागवृद्धित:।
खर्परांष्टौ कलांशं स्यान्नवनीतं पयोभवम्॥
मालती प्राग्वसन्तोऽयं रसो धातुज्वरं जयेत्॥
मात्रा गुञ्जाद्वयोन्माना कणामधुसमन्वित:।
प्रकुञ्चपञ्चके पञ्चनवतिर्निम्बुकान्यलम्॥

सिद्धभैषज्यमणिमाला ४ गुच्छ।

द्रव्य और निर्माणविधि--

सुवर्ण की भस्म अथवा सोने के वर्क १ तोला, मोती की पिष्टी या भस्म २ तोला, शुद्ध हिंगुल ३ तोला, काली मिर्च का कपड़छान चूर्ण ४ तोला, शुद्ध खपरिया अथवा जसद की भस्म ८ तोला लेवें। प्रथम शुद्ध हिंगुल को पीसकर यदि सुवर्ण की भस्म ली हो तो सब द्रव्यों को एक साथ मिलाकर ३ घंटा मर्दन करें, यदि सोने के वर्क लिए हों तो अन्य द्रव्य मिलाकर पीछे सोने के वर्क एक एक करके उसमें मिलाता जावे और सोने के सब वर्क अच्छी तरह से मिल जाँय तब तक मर्दन करते रहें। बाद में उसमें दो तोला गाय के दूधसे अथवा छाछ के निकाला हुआ मक्खन मिलाकर एक दिन मर्दन करें। पीछे कागजी नीबू का कपड़े से अच्छी तरह छाना हुआ रस मर्दन योग्य हो उतना (अधिक नहीं) प्रतिदिन डालकर दिन भर मर्दन करें। एक बार डाला हुआ नीबू का रस

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एक बार डाला हुआ नीबू का रस सूखने पर ही दूसरा रस डालना चाहिए। इस प्रकार जबतक मक्खन की चिकनाई नष्ट न हो, तबतक नींबू के रस में मर्दन करें। सामान्यत: मक्खन की चिकनाहट निकालने के लिए मध्यम प्रमाण के ९५ नींबू का रस आवश्यक होता है। पीछे १-१ रत्ती की गोलियाँ बना, छाया में सुखा कर रख लें। यह रस **वसन्तमालती** नाम से प्रसिद्ध है।

मात्रा--१ से २ रत्ती, सबेरे-शाम दिन में दो बार दें।

अनुपान--छोटी पीपल का चूर्ण २ रत्ती मधु के साथ देकर ऊपर से गौ का दूध दें अथवा सितोपलादि चूर्ण १ माशा और मधु के साथ मिलाकर दें।

उपयोग--इसका उपयोग अभ्रक भस्म १ रत्ती, प्रवाल-पिष्टी १-२ रत्ती, हरिण या साँभर के सींग की भस्म २-४ रत्ती, गुडूचीसत्त्व १ माशा और सितोपलादि चूर्ण १ माशा के साथ मिलाकर मधु और दूध के अनुपान से किया जाता है। यह योग जीर्णज्वर, राजयक्ष्मा, रोगान्त दौर्बल्य, स्त्रियों का श्वेतप्रदर, पाण्डुरोग, ग्रहणीरोग, अग्निमांद्य, गण्डमाला, अन्त्रक्षय, फुफ्फुसकला शोथ, बालशोष (सुखाफक्करोग)--इन रोगों में विशेष लाभ देता है। यह जठराग्नि और धात्वग्नि की परिपाक-क्रिया को सुधार कर उनकी विकृति से होनेवाले सब रोगों को दूर करता है और शरीर को बल, वर्ण तथा पुष्टि देता है।

१६ -- पुटपक्व विषमज्वरान्तक रस

हिंगुलं संभवं सूतं गन्धकेनं सुकज्जलम्।
पर्पटीरसवत् पाच्यं सुतांघ्रि हेमभस्म च।।
लौहमभ्रकताम्रं च रसस्य द्विगुणं क्षिपेत्।
टंकणं गैरिकं बङ्गं प्रवालं च रसार्धकम्।।
मुक्ता शङ्खं शुक्तिभस्म प्रदेयं रसपादिकम्।
निर्गुण्डीकनकद्रावैः कालमेघरसेन च।।
भावयित्वा प्रकुर्यात्तु गोलं संशोषयेत्ततः।
मुक्तागृहे च संस्थाप्य पुटपाकेन साधयेत्।।
प्रातः सायं भक्षयेत्तु द्विगुञ्जाफलमानतः।।
ज्वरमष्टविधं हन्ति यथादोषानुपानतः।।
प्लीहानं यकृतं शोथं कासं श्वासमथारुचिम्।
ग्रहणीमामदोषं च मेहं पाण्डुं तथैव च।।
पुटपक्वो रसः प्रोक्तो विषमज्वरनाशनः।।

भैषज्यरत्नावली से किंचित् परिवर्तित

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्रव्य और निर्माणविधि--

हिंगुल से निकाला हुआ पारद १ तोला और शुद्ध गन्धक १ तोला दोनों को खरल में एकत्र मिला, ऊपर थोड़े पानी के छींटे देकर उस में पारद के सूक्ष्म कण भी न दिखें ऐसी कज्जली बनावें। पीछे उस कज्जली की रसपर्पटी के विधान से पर्पटी बना लें। उस पर्पटी को खरल में डालकर मर्दन करें। जब वह सूक्ष्म हो जाय तब उस में सोने की भस्म या वर्क १-४ तोला, लोहभस्म २ तोला अभ्रकभस्म २ तोला, ताम्रभस्म २ तोला, शुद्ध सुहागा १।२ तोला, शुद्ध सोनागेरु १।२ तोला, वंगभस्म १।२ तोला, प्रवालभस्म १।२ तोला मोती की पिष्टी १।४ तोला, शंखभस्म १।४ तोला, और मोती की सीप की भस्म १।४ तोला एकत्र करके सम्भालूपत्ती, धतूरे की पत्ती और कालमेघ इनके स्वरस में एक-एक दिन मर्दन कर, उसका दो सीप के बीच में रह सके ऐसा कुछ चिपटा गोला बना, बराबर माप की दो मोती की सीप ले, उस के दोनों किनारों का संपुट ठीक बने ऐसा घिस, उसमें गोले को रख, ऊपर एक कपड़ा लपेट, उस कपड़े के ऊपर पानी में अच्छी तरह मसली हुई मिट्टी का दो अंगुल मोटा लेप करें। लेप थोड़ा सूखने पर संपुट को निर्धूम कंडों की आंच में पकावें। जब ऊपर की मिट्टी कुछ लाल हो जाय या भीतर से गन्धक गरम होने का गन्ध आने लगे तब उस को अग्नि से बाहर निकाल कर स्वांगशीतल होने दें। पीछे ऊपर की मिट्टी हटा, संपुट से गोला निकाल, उस को खरल में खूब बारीक पीस कर शीशी में भर लें इस को **पुटपक्व विषमज्वरान्तक रस** कहते हैं।

मात्रा--१-२ रत्ती।

अनुपान और उपयोग—इसका उपयोग जीर्णज्वर, यकृत् और प्लीहा की वृद्धियुक्त ज्वर, राज्ययक्ष्मा, पाण्डुरोग और प्रमेह में गिलोय के स्वरस या क्वाथ के साथ करें; कास और श्वास में अडूसे के स्वरस के साथ तथा आमदोष और ग्रहणी रोग में भुने हुए जीरे का चूर्ण १ माशा और मधु ३ माशे के साथ देकर ऊपर नागरमोथा का क्वाथ पिलावें।

१७---महाज्वरांकुश रस

शुद्धसूतं विषं गन्धं धूर्तबीजं त्रिभिः समम्।
चतुर्णां द्विगुणं व्योषं हेमक्षीरीविभावितम्॥
चतुर्वारं घर्मशुष्कं चूर्णं गुञ्जाद्वयोन्मितम्।
पक्वजम्बीरकद्रावैस्तथाऽऽर्द्रकरसैर्युतम्।
महाज्वरांकुशो नाम विषमज्वरनाशनः॥

योगरत्नाकर-ज्वराधिकार।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्रव्य और निर्माणविधि

शुद्ध पारद १ भाग, शुद्ध बछनाग १ भाग, शुद्ध गन्धक १ भाग, शुद्ध धतूरे के बीज ३ भाग, काली मिर्च ४ भाग, सोंठ ४ भाग, छोटी पीपल ४ भाग लेवें। प्रथम पारे- गन्धक की कज्जली बना, उसमें अन्य औषधों का सूक्ष्म कपड़छन चूर्ण मिला, सत्यानाशी के स्वरस की ४ भावना दें। दो-दो रत्ती की गोलियां बना, छाया मे सुखाकर रख लें। इसको **महाज्वरांकुश रस** कहते हैं।

मात्रा, अनुपान और उपयोग--विषमज्वर में ज्वर का वेग उतरा हो उस समय ३-३ घंटे से १-२ गोली जम्बरी नीबू और अदरक के ३-३ माशे रस के साथ मिलाकर दें या किसी विषमज्वरनाशक क्वाथ के अनुपान से दें।

१८–हरीतक्यादि वटी

हरीतकीशम्बलवेल्लजानां कुर्याद्वटीं वारिणि सर्षपाभाम्
वेगं रुणद्धि प्रथमं प्रदत्ता ज्वरस्य वेलेव महाम्बुराशेः॥

सिद्धभैषज्यमणिमाला-ज्वराधिकार।

द्रव्य और निर्माण विधि--

बड़ी हरड़ के दल (छाल-वक्कल) का चूर्ण, शुद्ध संखिया और काली मिर्च का चूर्ण तीनों सम भाग लें, जल में एक दिन मर्दन कर उसकी सरसों बराबर गोलीयां बना, छाया में सुखाकर रख लें।

मात्रा, अनुपान और उपयोग--शीतज्वर में ज्वर उतरने के बाद ३-३ घंटे से १-२ गोली गाय के दूध के अनुपान से दें। इससे विषमज्वर (बारी से आनेवाला ज्वर) नष्ट होता है।

१९–ज्वरघ्नी गुटिका

भागैकः स्याद्रसाच्छुद्धाद्रैलेयः पिप्पली शिवा।
आकारकरभो गन्धः कटुतैलेन शोधितः॥
फलानि चेन्द्रवारुण्याश्चतुर्भागमिता अमी।
एकत्र मर्दयेच्चूर्णमिन्द्रवारुणिकारसैः॥
माषोन्मितां वटी कृत्वा दद्यात् सद्योज्वरे बुधः।
छिन्नारसानुपानेन ज्वरघ्नी गुटिका मता॥

शार्ङ्गधर, मध्यमखण्ड, अध्याय १२

द्रव्य और निर्माणविधि---

एक तोला पारद और चार तोला कड़ुए तेल (सर्षततैल) में शुद्ध किया हुआ गन्धक दोनों को एकत्र मर्दन करके कज्जली बनावें। उसमें एलुवा मुस-

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ज्वर), छोटी पीपल, हर्रेदल, अकरकरा और सूखे इद्रायन के फल प्रत्येक चार-चार तोला लें, उनका सूक्ष्म कपडछन चूर्ण बनाकर मिलावें। पीछे इन्द्रायन के ताजे फल के रस में एक दिन मर्दन कर २-२ रत्ती की गोलियाँ बना, सूखा कर रख लें।

मात्रा, अनुपान और उपयोग—१-२ गोली दो तोला ताजी गिलोय के स्वरस या चार तोला सूखी गिलोय के क्वाथ के साथ दिन में तीन-चार बार तरुण-ज्वर में इसका प्रयोग करें।

२०-पंचतिक्तघन वटी

द्रव्य और निर्माणविधि-

सप्तपर्ण (छतिवन) के वृक्ष की हरी-ताजी अन्तर छाल, करंजुए (कंजे, कंटकीकरंज) की हरी-ताजी पत्ती, गिलोय ताजी, कालमेघ और कुटकी सब समभाग लें। सप्तपर्ण की छाल, करंजुए की पत्ती, गिलोय और कालमेघ इनको जल से अच्छी तरह धोकर काढ़ा बनाने योग्य अलग-अलग कूटे और कुटकी को भी काढ़ा बनाने योग्य जौकुट करें। पीछे सब को अच्छे कलईदार बर्तन में अठगूने जल में पकावें। जब अष्टमांश जल बाकी रहे तब नीचे उतारकर ठंडा होने दें। ठंडा होने पर अच्छे कपड़े से उसको दो बार छान, कलईदार बर्तन में डालकर पकावें। पकते-पकते क्वाथ जब करछी को लगे इतना गाढ़ा हो, तब नीचे उतारकर बर्तन को धूप में रख कर सुखावें। जब घन गोली बनने योग्य हो तब उसमें चतुर्थांश अतीस का चूर्ण मिला ३-३ रत्ती की गोलियां बना कर सुखा लें इसको **पंचतिक्त-घनवटी** कहते हैं।

मात्रा और अनुपान—एक बारमें ३, ३ घण्टे से जल के अनुपान से दें।

उपयोग—विषमज्वर में (पारी के बुखार में) इसका उपयोग करें।

२१--सप्तपर्ण वटी

द्रव्य और निर्माणविधि-

ऊपर लिखे हुए विधान से सप्तपर्ण (छतिवन) की अंतरछाल का घन बना; उसमें अतीस का चूर्ण गोली बन सके इतना मिला, ३-३ रत्ती की गोलियां बना, धूप में सुखा कर रख लें। इसका **सप्तपर्णवटी** या **सप्तपर्णघनवटी** नाम रखा गया है।

मात्रा, अनुपान और उपयोग—३-३ घण्टे से ३-३ गोलियाँ ठंढे जल के अनुपान से दें। इससे विषमज्वर दूर होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२२–गुडूच्यादि क्वाथ

गुडूचीधान्यकारिष्टरक्तचन्दनपद्मकैः ।
गुडूच्यादिगणक्वाथः सर्वज्वरहरः स्मृतः ॥
दीपनो दाहहृल्लासतृष्णाच्छर्द्यरुचीर्जयेत् ।

द्रव्य और निर्माणविधि–

गिलोय, धनिया, नीम की अन्तरछाल, लालचन्दन और पद्माख ये पाँचों द्रव्य समभाग लें, । जौकुट करके रख लें । उसमें से २१ तोला लें, चौगुने जल में क्वाथविधि से क्वाथ बनाकर दें इस प्रकार दिन में ३-४ बार दें । यह क्वाथ सब प्रकार के ज्वर, दाह, जी मिचलाना, उल्टी और अरुचि को दूर करता है तथा दीपन है ।

वक्तव्य–इस क्वाथ में रोहिड़ा की छाल, दारुहल्दी, सरफोंका के मूल तथा पुनर्नवा (गदपूरना—सांठी) के मूल ये चार द्रव्य और मिलाकर क्वाथ तैयार करने से यह यकृत् और प्लीहा (तिल्ली) के विकारों में अच्छा गुण करना है।

यकृद्विकार में इस क्वाथ में पिलाते समय ५ रत्ती शुद्ध नौसादर मिलाने से अधिक लाभ होता है।

२३–षडङ्गपानीय

मुस्तपर्पटकोशीरचन्दनोदीच्यनागरैः ।
शृतशीतं जलं दद्यात् पिपासाज्वरशान्तये ॥

चरकसंहिता चि० अ० ३ ।

द्रव्य और निर्माणविधि

नागरमोथा, पित्तपापड़ा, सुगन्धबाला, लालचन्दन, खस और सोंठ ये सब द्रव्य सम भाग लें, जौकुट करके रख लें । इसमें से एक तोला लेकर उसको १२४ तोले जल में मिट्टी के बर्तन में पकावें । जब ६४ तोला जल रह जाय तब नीचे उतार, ठंडा कर के कपडे से छान लें ।

उपयोग—ज्वरवाले को जब प्यास लगे तब यह जल थोड़-थोड़ा पीने को दें । इससे प्यास और ज्वर का वेग कम होता है । यह षडङ्गपानीय ज्वर में उत्तम पाचन है । सब प्रकार के ज्वर में इसका प्रयोग कर सकते हैं ।

२४–कमलादि फाण्ट

द्रव्य और निर्माणविधि–

कमल के फूल, सफेद चन्दन लाल चन्दन, खस, मुलेठी, नागमोथा, धान का लावा और मिश्री सब मिलाकर २ तोला लें उसको अधकचरा करके ६४ तोला

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उबलते हुए जल में डालकर ठंडा होने तक ढाँककर रख छोड़ें। ठंडा होने पर कपड़े से छानकर उसमें से ज्वरवाले को थोड़ा-थोड़ा पिलावें।

उपयोग–इस फांट से हृदय का संरक्षण होता है, पेशाब साफ होता है; दाह कम होता है, दस्त पतले होते हों तो बंधते हैं तथा हृदय की धड़कन और नाड़ी की गति तीव्र हो तो वह कम होती है। तीव्र और चालू ज्वर में अति उष्णता से हृदय की पेशी विकृत और शिथिल होती है, यदि आरम्भ से ही यह फांट दिया जावे तो हृदय पर ये दोनों घातक क्रियाएँ नहीं होती हैं।

स्व० वा० डा० **वामन गणेश देसाई-कृत औषधिसंग्रह।**

वक्तव्य--मैंने इस योग में एक भाग अनन्तमूल (उत्पलसारिवा) मिलाकर प्रयोग किया है, इससे विशेष लाभ होते देखा गया है।

२–गोजिह्वादि क्वाथ

द्रव्य और निर्माणविधि---

गावजवान, मुलेठी, सौंफ, मुनक्का, अंजीर, उन्नाव, अडूसा, जूफा सपिस्तान (सूखा लसोडा), खूबकला (खाकसीर), हंसराज, गुलबनपसा, अलसी, खतमी की जड़ (रेशे खतमी) और भटकटैया प्रत्येक समभाग तथा कालीमिर्च आधा भाग ले, उसको अधकचरा करके रख छोड़ें। इसमें से एक तोला लें, उसको दस तोला जल में पका, ४ तोला जल बाकी रहने पर कपड़े से छान; उसमें ३ माशा मिश्री या मधु (शहद) मिलाकर दिन में २-३ बार दें।

उपयोग--प्रतिश्याय (जुकाम-सर्दी), श्लेष्मज्वर, तथा वह खाँसी और श्वास जिसमें कफ जमा हुआ गाढ़ा हो और सरलता से निकलता हो उसमें इस क्वाथ से बहुत लाभ होता है। इस क्वाथ को केवल या इस में ५ रत्ती नौसादर, ५ रत्ती यवक्षार और द्राक्षारिष्ट १-२ तोला मिलाकर उपयोग करें। कफज्वर में त्रिभुवनकीर्ति, ज्वरसंहार आदि योगों के अनुपानरूप में इसका अच्छा उपयोग होता है।

२६–तगरादि क्वाथ

सतगरवर्तिक्तारेवताम्भोदतिक्ता।
नलदतुरगगन्धामारतीहारहूराः ॥
मलयजदशमूलीशङ्खपुष्प्यः सुपीताः।
प्रलपनमपहन्त्युःपानतो नातिदूरात् ॥

द्रव्य और निर्माणविधि---

तगर (यूनानी-आसारून), पित्तपापड़ा, अमलतास का गूदा, नागरमोथा, कुटकी, जटामांसी (बालछड़), असगन्ध, ब्राह्मी, मुनक्का, लाल चन्दन, दशमूल

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(शालिपर्णी-सरिवन, पृश्निपर्णी-पिठवन, छोटा गोखरू, कटेरी-भटकैया, बड़ी कटेरी-बरहंटा, बेल, गम्भारि, अरणी, सोनापाठा, पाडर—पाढल इनकी जड़ें) और शंखाहुली (कौड़ियाली) ये सब द्रव्य समभाग ले; अधकचरा-दरदरा कूट कर रख लें। इसमें से १ तोला ले, उसको १६ तोला जल में पका, जब ४ तोला जल बाकी रहे तब कपड़े से छान कर दें।

उपयोग--प्रलापक सन्निपात में (सन्निपात ज्वर में रोगी जब प्रलाप करने लगे तब) यह उत्तम योग है। इसका केवल या बृहत्कस्तूरी भैरव रस के अनुपानरूप में उपयोग करें। यदि रोगी को दस्त पतले आते हों तो इसमें से कुटकी, अमलतास और मुनक्का निकाल कर इसका उपयोग करें।

२७--भार्ग्यादि कषाय

भार्गीनिम्बघनाभयामृतलताभूनिम्बवासाविषा-
त्रायन्तीकटुकावचात्रिकटुकश्योनाकशक्रद्रुमैः ॥
रास्नायासपटोलपाटलित्रिवृद्दार्वीविशालानिशा-
ब्राह्मीपुष्करसिंहिकाद्वयशटीधात्र्यक्षदेवद्रुमैः ॥
क्वाथोऽयं किल सन्निपातनिवहान् द्वात्रिंशदङ्गक्षणाद्-
दुर्धर्षान्निजतेजसा विजयते सर्पान् गरुत्मानिव ॥
किञ्च श्वासबलासकासगुदरुग्हृद्रोगहिक्कामरु-
न्मन्यास्तम्भगलामयार्दितमलावष्टम्भवर्ध्मानपि॥

त्रिशती।

द्रव्य और निर्माणविधि--

भारंगी का मूल, नीम की अन्तर छाल, नागरमोथा, हरड़ का दल, गिलोय, चिरायता, अड़ूसा, अतीस, त्रायमाण, कुटकी, वच, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, सोनापाठा, कुड़ा की छाल, रास्ना, जवासा, पटोल (कड़ुए परवल के पत्ते) पाडर, निसोथ, दारुहल्दी, इंद्रायन की जड़ हल्दी, ब्राह्मी, पुष्करमूल, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, कचूर, आंवला दल, बहेड़ा दल और देवदारु इन ३२ द्रव्यों को सम भाग ले, अधकचरा-दरदरा कूट कर रख लें। इसमें से एक तोला लें, उसको १६ तोले जल में पका, जब ४ तोला जल बाकी रहे तब उतार कर कपड़े से छान लें।

उपयोग--यह भार्ग्यादि क्वाथ आवश्यकतानुसार दिन में २-३ बार अकेला या इसमें ५ रत्ती नौसादर और ५ रत्ती यवक्षार मिलाकर दें यह क्वाथ कफ-ज्वर, कफाधिक सन्निपातज्वर, श्वसनकज्वर (न्यूमोनिया), फुफ्फुसधराकला-शोथ (लूरिसि), पार्श्वशूल, कफकास, और श्वास को दूर करने के लिए उत्तम

२

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उबलते हुए जल में डालकर ठंडा होने तक ढाँककर रख छोड़ें। ठंडा होने पर कपड़े से छानकर उसमें से ज्वरवाले को थोड़ा-थोड़ा पिलावें।

उपयोग--इस फांट से हृदय का संरक्षण होता है, पेशाब साफ होता है; दाह कम होता है, दस्त पतले होते हों तो बंधते हैं तथा हृदय की धड़कन और नाड़ी की गति तीव्र हो तो वह कम होती है। तीव्र और चालू ज्वर में अति उष्णता से हृदय की पेशी विकृत और शिथिल होती है, यदि आरम्भ से ही यह फांट दिया जावे तो हृदय पर ये दोनों घातक क्रियाएँ नहीं होती हैं।

स्व० वा० डा० **वामन गणेश देसाई-कृत औषधिसंग्रह।**

वक्तव्य--मैंने इस योग में एक भाग अनन्तमूल (उत्पलसारिवा) मिलाकर प्रयोग किया है, इससे विशेष लाभ होते देखा गया है।

२-गोजिह्वादि क्वाथ

द्रव्य और निर्माणविधि---

गावजवान, मुलेठी, सौंफ, मुनक्का, अंजीर, उन्नाव, अडूसा, जूफा सपिस्तान (सूखा लसोडा), खूबकला (खाकसीर), हंसराज, गुलबनफ्सा, अलसी, खतमी की जड़ (रेशे खतमी) और भटकटैया प्रत्येक समभाग तथा कालीमिर्च आधा भाग ले, उसको अधकचरा करके रख छोड़ें। इसमें से एक तोला लें, उसको दस तोला जल में पका, ४ तोला जल बाकी रहने पर कपड़े से छान; उसमें ३ माशा मिश्री या मधु (शहद) मिलाकर दिन में २-३ बार दें।

उपयोग--प्रतिश्याय (जुकाम-सर्दी), श्लेष्मज्वर, तथा वह खाँसी और श्वास जिसमें कफ जमा हुआ गाढ़ा हो और सरलता से निकलता हो उसमें इस क्वाथ से बहुत लाभ होता है। इस क्वाथ को केवल या इस में ५ रत्ती नौसादर, ५ रत्ती यवक्षार और द्राक्षारिष्ट १-२ तोला मिलाकर उपयोग करें। कफज्वर में त्रिभुवनकीर्ति, ज्वरसंहार आदि योगों के अनुपानरूप में इसका अच्छा उपयोग होता है।

२६-तगरादि क्वाथ

सतगरवरतिक्तारेवताम्भोदतिक्ता।
नलदतुरगगन्धामारतीहारहूराः ॥
मलयजदशमूलीशङ्खपुष्प्यः सुपीताः।
प्रलपनमपहन्युःपानतो नातिदूरात् ॥

द्रव्य और निर्माणविधि---

तगर (यूनानी-आसारून), पित्तपापड़ा, अमलतास का गूदा, नागरमोथा, कुटकी, जटामांसी (बालछड़), असगन्ध, ब्राह्मी, मुनक्का, लाल चन्दन, दशमूल

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(शालिपर्णी-सरिवन, पृश्निपर्णी-पिठवन, छोटा गोखरू, कटेरी-भटकैया, बड़ी कटेरी-बरहूंटा, बेल, गम्भारि, अरणी, सोनापाठा, पाडर—पाढल इनकी जड़ें) और शंखाहुली (कौड़ियाली) ये सब द्रव्य समभाग ले; अधकचरा-दरदरा कूट कर रख लें। इसमें से १ तोला ले, उसको १६ तोला जल में पका, जब ४ तोला जल बाकी रहे तब कपड़े से छान कर दें।

उपयोग--प्रलापक सन्निपात में (सन्निपात ज्वर में रोगी जब प्रलाप करने लगे तब) यह उत्तम योग है। इसका केवल या बृहत्कस्तूरी भैरव रस के अनुपानरूप में उपयोग करें। यदि रोगी को दस्त पतले आते हों तो इसमें से कुटकी, अमलतास और मुनक्का निकाल कर इसका उपयोग करें।

२७--भार्ग्यादि कषाय

भार्गीनिम्बघनाभयामृतलताभूनिम्बवासाविषा-
त्रायन्तीकटुकावचात्रिकटुकश्योनाकशक्रद्रुमैः ॥
रास्नायासपटोलपाटलित्रिवृद्दार्वीविशालानिशा-
ब्राह्मीपुष्करसिंहिकाद्वयशटीधात्र्यक्षदेवद्रुमैः ॥
क्वाथोऽयं किल सन्निपातनिवहान् द्वात्रिंशदङ्गक्षणाद्-
दुर्धर्षान्निजतेजसा विजयते सर्पान् गरुत्मानिव ॥
किञ्च श्वासबलासकासगुदरुग्हृद्रोगहिक्कामरु-
न्मन्यास्तम्भगलामयार्दितमलावष्टम्भवध्मानपि॥

त्रिशती।

द्रव्य और निर्माणविधि--

भारंगी का मूल, नीम की अन्तर छाल, नागरमोथा, हरड़ का दल, गिलोय, चिरायता, अड़ूसा, अतीस, त्रायमाण, कुटकी, वच, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, सोनापाठा, कुड़ा की छाल, रास्ना, जवासा, पटोल (कड़ुए परवल के पत्ते) पाडर, निसोथ, दारुहल्दी, इंद्रायन की जड़ हल्दी, ब्राह्मी, पुष्करमूल, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, कचूर, आंवला दल, बहेड़ा दल और देवदारु इन ३२ द्रव्यों को सम भाग ले, अधकचरा-दरदरा कूट कर रख लें। इसमें से एक तोला लें, उसको १६ तोले जल में पका, जब ४ तोला जल बाकी रहे तब उतार कर कपड़े से छान लें।

उपयोग--यह भार्ग्यादि क्वाथ आवश्यकतानुसार दिन में २-३ बार अकेला या इसमें ५ रत्ती नौसादर और ५ रत्ती यवक्षार मिलाकर दें यह क्वाथ कफ-ज्वर, कफाधिक सन्निपातज्वर, श्वसनकज्वर (न्यूमोनिया), फुपफुसधराकला-शोथ (प्लुरिसि), पार्श्वशूल, कफकास, और श्वास को दूर करने के लिए उत्तम

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

योग है। इसको केवल या अभ्रक भस्म १ रत्ती और श्रृङ्गभस्म ४–८ रत्ती के अनुपान रूप में दें।

२८-पटोलादि कषाय

पटोलत्रिफलानिम्बद्राक्षेन्द्रयबमुस्तकैः।
मधुकामृतवासाभिः क्वाथं क्षौद्रयुतं पिबेत्।
पटोलादिरयंक्वाथः सर्वज्वरनिवारणः॥

शार्ङ्गधरसंहिता म० खं०, अ० २।

द्रव्य और निर्माणविधि–

कड़ुए परवल के पत्ते, हर्रेदल, बहेड़ादल, आँवलदल, नीम की अन्तर छाल, मुनक्का, इन्द्रजव, नागरमोथा, मुलेठी, गिलोय और अड़ूसा ये सब द्रव्य समभाग लें, उसको अधकचरा–दरदरा कूटकर रख लें, इसमें से एक तोला लें, उसको १६ तोला जल में पका, ४ तोला जल बाकी रहने पर कपड़े से छान कर केवल या इसमें ५ रत्ती नौसादर और ५ रत्ती कलमी सोरा मिलाकर दिन में ३-४ बार दें।

उपयोग––इस क्वाथ को सर्व प्रकार के ज्वरों में अकेला या त्रिभुवनकीर्ति, ज्वरसहार, ज्वरांकुश, कलारि, सप्तपर्णघनवटी आदि योगों के अनुपानरूप में दें।

२९–अभयादि क्वाथ

अभयामुस्तधान्याकरक्तचन्दनपद्मकैः।
वासकेन्द्रयवोशीरगुडूचीकृतमालकैः॥
पाठानागरतिक्ताभिः पिप्पलीचूर्णयुक् शृतम्।
पिबेत् त्रिदोषज्बरजित् पिपासाकासदाहनुत्॥
प्रलापश्वासतन्द्राघ्नं दीपनं पाचनं परम्।
विण्मूत्रानिलविष्टम्भवमिशोषारुचीर्जयेत्॥

शार्ङ्गधरसंहिता, म० खं०अ० २।

द्रव्य और निर्माण विधि---

हर्रेदल, नागरमोथा, धनिया, लाल चन्दन, पद्माख, अड़ूसा, इन्द्रजव, खस, गिलोय, अमलतास का गूदा, पाढ़, सोंठ और कुटकी ये सब द्रव्य समभाग लें, उनको अधकचरा कूटकर रख लें। इसमें से एक तोला क्वाथ लें, उसको १६ तोला जल में पका, ४ तोला जल बाकी रहने पर कपड़े से छान, उसमें ५ रत्ती छोटी पीपल का चूर्ण मिलाकर दिन में २–३ बार दें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुण और उपयोग--यह अभयादि क्वाथ पाचन, दीपन, मल-मूत्र और वायु के विबन्ध (कब्ज) को दूर करनेवाला तथा प्यास, खाँसी, दाह, प्रलाप, श्वास, तन्द्रा, वमन, मुंह का सूखना और अन्न पर अरुचि इन लक्षणों से युक्त ज्वर को नष्ट करता है। सब प्रकार के ज्वरों में यह क्वाथ केवल या इसमें ५ रत्ती नौशादर और ५ रत्तीकलमीसोरा मिलाकर अकेला या अन्य ज्वरघ्न रसों के अनुपान के रूप में दें।

३०-देवदार्वादिकषाय

देवदारु वचा कुष्ठं पिप्पली विश्वभेषजम् ।
कट्फलं मुस्तभूनिम्बतिक्ता धान्यं हरीतकी ॥
गजकृष्णा च दुःस्पर्शा गोक्षुरुर्धन्वयासकः ।
बृहत्यतिविषा छिन्ना कर्कटं कृष्णजीरकम् ॥
क्वाथमष्टावशेषं तु प्रसूतां पाययेत् स्त्रियम् ।
शूलकासज्वरश्वासमूर्च्छाकम्पशिरोऽर्तिजित् ॥

शार्ङ्गधरसंहिता म० खं० अ० २।

द्रव्य और निर्माणविधि-

देवदार, बच, कूठ, छोटी पीपल, सोंठ, कायफल की छाल, नागरमोथा, चिरायता, कुटकी, धनिया, हर्रेदल, बड़ी पीपल, छोटी कटेरी, गोखरू, धमासा, बड़ी कटेरी अतीस, गिलोय, काड़ासिंगी और स्याह जीरा ये सब द्रव्य समभाग लें, उनको दरदरा कूट कर रख लें। इसमें से १ तोला लें, उसको १६ तोला जल में पका, ४ तोला जल बाकी रहने पर कपड़े से छानकर प्रसूता स्त्री को दिन में २-३ बार आवश्यकतानुसार दें।

उपयोग--वह देवदार्वादि क्वाथ प्रसूतिज्वर में उत्तम है। इसका केवल या बृहत्कस्तूरीभैरव के अनुपानरूप में उपयोग करें। इससे शूल, खाँसी, श्वास मूर्च्छा, कम्प, सिर का दर्द और तन्द्रा-प्रलाप आदि उपद्रव युक्त सूतिकाज्वर दूर होता है। यदि प्रलाप हो तो इस क्वाथ में लौंग, ब्राह्मी, जटामांसी, तगर, शंखाहुली तथा खुरासानी अजवायन १/१ भाग और मिला वें। प्रसूता स्त्री को प्रसव दिन से ही देवदार्वादिक्वाथ और दशमूल क्वाथ दोनों मिला कर प्रातःकाल में देने से प्रायः सूतिकोपद्रव होते ही नहीं।

३१-दशमूलक्वाथ

शालपर्णीपृश्निपर्णीबृहतीद्वयगोक्षुरैः ।
बिल्वाग्निमन्थश्योनाककाश्मरीपाटलायुतैः ॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दशमूलमिति ख्यातं क्वथितं तज्जलं पिबेत् ।
सन्निपातज्वरहरं सूतिकादोषनाशनम् ।।
शोषशैत्यभ्रमस्वेदकासश्वासविकारनुत् ।
हृद्रोगशोथपार्श्वार्तितन्द्रामस्तकशूलहृत् ।।

शार्ङ्गधरसंहिता, म० खं०, अ० २ ।

द्रव्य और निर्माणविधि--

सरिवन, पिठवन, छोटी कटेरी (भटकटैया), बड़ी कटेरी, गोखरू, अरणी, बेल, सोनपाठा, गंभारी और पाडर इन द्रव्यों के मूल लें, उन को अधकचरा कूट कर रख लें। इसमें से १ तोला लें, उसको १६ तोले जल में पका, ४ तोला जल बाकी रहने पर नीचे उतार, कपड़े से छानकर आवश्यकतानुसार दिन में २-३ बार दें ।

उपयोग--मुँह का सूखना, हाँथ-पाँव आदि अवयवों का ठंडापन, चक्कर आना, पसीना अधिक आना, खाँसी, श्वास, छाती तथा पसली की पीड़ा, तन्द्रा और सिर के दर्द युक्त सन्निपातज्वर, सूतिकाज्वर और शोथ में इसका प्रयोग करें। यदि सन्निपातज्वर में प्रलाप और नींद न आना ये उपद्रव भी हों तो इस क्वाथ में लौंग, ब्राह्मी, जटामांसी, तगर, शंखाहुली तथा सर्पगन्धा (चांदड़-धमसरवा) ये द्रव्य १-१ भाग और मिलावें ।

३३–बृहद्गुडूच्यादि क्वाथ

गुडूचीधान्यकोशीरशुण्ठीबालकपर्पटैः ।
बिल्वप्रतिविषापाठारक्तचन्दनवत्सकैः ।।
किरातमुस्तेन्द्रयवैः क्वथितं शिशिरं पिबेत् ।
सक्षौद्र रक्तपित्तघ्नं ज्वरातीसारनाशनम् ।।

शार्ङ्गधरसंहिता, म० खं०, अ० २ ।

द्रव्य और निर्माणविधि--

गिलोय, धनिया, खस, सोंठ, सुगन्धवाला, पित्तपापड़ा, बेल, अतीस, पाढ़, लालचन्दन, कुड़ा की छाल, चिरायता, नागरमोथा और इन्द्रजव ये सब द्रव्य सम भाग लें, उस को दरदरा कूट कर रख लें। इसमें से १ तोला लें, उस को १६ तोला जल में पका, ४ तोला जल बाकी रहने पर कपड़े से छान, ठंढाकर, उसमें आधा तोला मिश्री या मधु (शहद) मिलाकर दें ।

उपयोग--जब ज्वर के साथ अतिसार भी हो तब इसका उपयोग करें। यदि २-३ दिन इसका प्रयोग करने पर भी दस्त बन्द न हो तो महागन्धक योग देकर ऊपर से यह क्वाथ अनुपान रूप में दें ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वक्तव्य--भैषज्यरत्नावली में इस योग में पित्तपापड़ा के स्थान में पद्माख डालने को लिखा है। यदि पित्तपापड़ा और पद्माख दोनों डालें तो अच्छा लाभ होता है।

३३ सुदर्शन चूर्ण

त्रिफला रजनीयुग्मं कण्टकारियुगं शटी।
त्रिकुटु ग्रन्थिकं मूर्वा गूडूची धन्वयासकः॥
कटुका पर्पटी मुस्तं त्रायमाणा च बालकम्।
यवानीन्द्रयवा भार्गी शिग्रुबीजं सुराष्ट्रजा॥
वचात्वक्पद्मकोशीरचन्दातितिषाबलाः।
शालिपर्णी पृश्निपर्णी विडङ्गं तगरं तथा॥
चित्रको देवदारुश्च चव्यं पत्रं पटोलजम्।
यवतिक्ता नक्तमालो लवङ्गं वंशलोचना॥
पुण्डरीकं च काकोली पत्रकं जातिपत्रकम्।
तालीसपत्रं च तथा समभागानि चूर्णयेत्॥
सर्वचूर्णस्य चार्धांशं कैरातं प्रक्षिपेत् सुधीः।
एतत् सुदर्शनं नाम चूर्णं दोषत्रयापहम्॥
ज्वरांश्च निखिलान् हन्यान्नात्र कार्या विचारणा।
श्वासं कासं च पाण्डुं च हृद्रोगं हन्ति कामलाम्॥
त्रिक्पृष्ठकटीजानुपार्श्वशूलनिवारणम्।

शार्ङ्गधरसंहिता, म० खं; अ० ६

द्रव्य और निर्माणविधि--

हर्रेदल, बहेड़ादल, आँवलादल, हल्दी, दारुहल्दी, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी (बरहंटा), कचूर, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, पीपलामूल, मूर्वा, गिलोय, धमासा, कुटकी, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, त्रायमाण, नेत्रवाला, अजवायन, इन्द्रजव, भारङ्गमूल, सहिजने के बीज, फिटकरी आग पर फुलाई हुई बच, दालचीनी, पद्माख, खस, सफेद चन्दन, अतीस, वरियार के मूल, सरिवन, पिठवन वायविडङ्ग, तगर, चित्रक, देवदार, चव्य, कड़ुए परवल की पत्ती, काममेघ, करंजुए–कंजे के फल का मगज, लौंग, वंशलोचन, कमल, काकोली (अभाव में शकाकुल मिश्री), तेजपात, जावित्री और तालीसपत्र ये सब समभाग लेकर सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण करें। पीछे सब चूर्ण का जितना प्रमाण हो उससे आधा चिरायते का कपड़छान चूर्ण मिलाकर बोतल में भर लें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मात्रा—३ से ६ माशे।

अनुपान—ठंढ़ा या गरम जल।

उपयोग—इस चूर्ण का सब प्रकार के ज्वरों में विशेष करके वात और कफप्रधान ज्वरों में चूर्ण, फाण्ट या हिम के रूप में उपयोग होता है। सुदर्शन चूर्ण एक तोला, पित्तपापड़े का चूर्ण ३ माशा, ताजी कुटी हुई गिलोय ६ माशा, शिलाजतु के स्थान में कलमी सोरा डालकर बनायी हुई चन्द्रप्रभा १॥ माशा, इन सबको १६ तोले उबलते हुए जल में मृत्पात्र में ६–९ घण्टा भिगो, हाथ से मसल, छान, शीशी में भरकर ४ भाग करें। इसमें से ३–४ घण्टे के बाद एक भाग देने से ज्वर का सन्ताप कम होकर ज्वर उतर जाता है। सामान्य (एकदोषज और द्वन्द्वज) ज्वरों में ज्वर का वेग कम करने के लिये यह उत्तम योग है।

३४–सुदर्शन मिश्रण

द्रव्य और निर्माणविधि--

सुदर्शन चूर्ण १० तोला, शुद्ध सज्जीखार या सोडा बाई कार्ब २ तोला, कुचले का चूर्ण १ तोला, आगपर फुलाई हुई लाल फिटकिरी १॥ तोला, सबको एकत्र मिला कर रख लें।

मात्रा--३ माशा।

अनुपान--जल।

उपयोग--सर्दी से होनेवाले ज्वर में और विषमज्वर में (मलेरिया में) इस योग से अच्छा लाभ होता है।

———

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अतिसार-प्रवाहिका-ग्रहण्यधिकार-द्वितीय

१–धान्यपञ्चक क्वाथ

धान्यबालकबिल्वाब्दनागरैः साधितं जलम् ।
धान्यपञ्चकमेतत् स्याद् ग्राहि दीपनपाचनम् ।
इदं धान्यचतुष्कं स्यात् पित्ते शुण्ठीं बिना पुनः ।

चक्रदत्त चिकित्सा।––अतिसाराधिकार

द्रव्य और निर्माणविधि––

धनिया, खस, कच्चे, बेल की गिरी, नागरमोथा, सोंठ सम भाग लें, उनको जौकुट करके रख लें। इसमें से एक तोला लें, उसको दस तोला जल में पका, चार तोला जल बाकी रह जाने पर ठंडा कर, स्वच्छ कपड़े से छान कर आवश्यकतानुसार दिन में २-३ बार दें। इस क्वाथ को **धान्यपञ्चक** कहते हैं। यदि पित्तातिसार में इसका प्रयोग करना हो तो इसमें से सोंठ निकाल देना चाहिए। तब इसको **धान्यचतुष्क** कहते हैं।

गुण और उपयोग––यह क्वाथ उत्तम पाचन, दीपन और ग्राही है। सब प्रकार के अतिसार में इसका प्रयोग होता है। पित्तातिसार और रक्तातिसार में इसका प्रयोग करना हो तो इसमें सोंठ के स्थान पर सौफ डालकर इसका प्रयोग करें। इस क्वाथ का अकेले या महागन्धकयोग आदि के अनुपान रूप में प्रयोग करें।

२–वत्सकादि कषाय

सवत्सकः सातिविषः सबिल्वः सोदीच्यमुस्तश्च कृतःकषायः ।
सामे सशूले सहशोणिते च चिरप्रवृत्तेऽपि हितोऽतिसारे ॥

चक्रदत्त-चिकित्सा––अतिसाराधिकार

द्रव्य और निर्माणविधि––

कुडा की छाल या इन्द्रयव, अतीस, बेलगिरी, नेत्रवाला और नागरमोथा सब सम भाग लें, जौकुट करके रख लें।

मात्रा––इसमें से एक तोला चूर्ण १६ तोले जल में पका, ४ तोला जल बाकी रहने पर स्वच्छ कपड़े से छान कर पिलावें।

उपयोग––शूल, आम और रक्तयुक्त नये और पुराने अतिसार में इससे अच्छा लाभ होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मात्रा—३ से ६ माशे।

अनुपान—ठंढ़ा या गरम जल।

उपयोग—इस चूर्ण का सब प्रकार के ज्वरों में विशेष करके वात और कफप्रधान ज्वरों में चूर्ण, फाण्ट या हिम के रूप में उपयोग होता है। सुदर्शन चूर्ण एक तोला, पित्तपापड़े का चूर्ण ३ माशा, ताजी कुटी हुई गिलोय ६ माशा, शिलाजतु के स्थान में कलमी सोरा डालकर बनायी हुई चन्द्रप्रभा १।। माशा, इन सबको १६ तोले उबलते हुए जल में मृत्पात्र में ६–९ घण्टा भिगो, हाथ से मसल, छान, शीशी में भरकर ४ भाग करें। इसमें से ३–४ घण्टे के बाद एक भाग देने से ज्वर का सन्ताप कम होकर ज्वर उतर जाता है। सामान्य (एकदोषज और द्वन्द्वज) ज्वरों में ज्वर का वेग कम करने के लिये यह उत्तम योग है।

३४–सुदर्शन मिश्रण

द्रव्य और निर्माणविधि--

सुदर्शन चूर्ण १० तोला, शुद्ध सज्जीखार या सोडा बाई कार्ब २ तोला, कुचले का चूर्ण १ तोला, आगपर फुलाई हुई लाल फिटकिरी १।। तोला, सबको एकत्र मिला कर रख लें।

मात्रा--३ माशा।

अनुपान--जल।

उपयोग--सर्दी से होनेवाले ज्वर में और विषमज्वर में (मलेरिया में) इस योग से अच्छा लाभ होता है।

———

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अतिसार-प्रवाहिका-ग्रहण्यधिकार-द्वितीय

१–धान्यपञ्चक क्वाथ

धान्यबालकबिल्वाब्दनागरैः साधितं जलम् ।
धान्यपञ्चकमेतत् स्याद् ग्राहि दीपनपाचनम् ।
इदं धान्यचतुष्कं स्यात् पित्ते शुण्ठीं बिना पुनः ।

चक्रदत्त चिकित्सा।––अतिसाराधिकार

द्रव्य और निर्माणविधि––

धनिया, खस, कच्चे, बेल की गिरी, नागरमोथा, सोंठ सम भाग लें, उनको जौकुट करके रख लें। इसमें से एक तोला लें, उसको दस तोला जल में पका, चार तोला जल बाकी रह जाने पर ठंडा कर, स्वच्छ कपड़े से छान कर आवश्यकतानुसार दिन में २-३ बार दें। इस क्वाथ को **धान्यपञ्चक** कहते हैं। यदि पित्तातिसार में इसका प्रयोग करना हो तो इसमें से सोंठ निकाल देना चाहिए। तब इसको **धान्यचतुष्क** कहते हैं।

गुण और उपयोग––यह क्वाथ उत्तम पाचन, दीपन और ग्राही है। सब प्रकार के अतिसार में इसका प्रयोग होता है। पित्तातिसार और रक्तातिसार में इसका प्रयोग करना हो तो इसमें सोंठ के स्थान पर सौफ डालकर इसका प्रयोग करें। इस क्वाथ का अकेले या महागन्धकयोग आदि के अनुपान रूप में प्रयोग करें।

२–वत्सकादि कषाय

सवत्सकः सातिविषः सबिल्वः सोदीच्यमुस्तश्च कृतःकषायः ।
सामे सशूले सहशोणिते च चिरप्रवृत्तेऽपि हितोऽतिसारे ।।

चक्रदत्त-चिकित्सा––अतिसाराधिकार

द्रव्य और निर्माणविधि––

कुडा की छाल या इन्द्रयव, अतीस, बेलगिरी, नेत्रवाला और नागरमोथा सब सम भाग लें, जौकुट करके रख लें।

मात्रा––इसमें से एक तोला चूर्ण १६ तोले जल में पका, ४ तोला जल बाकी रहने पर स्वच्छ कपड़े से छान कर पिलावें।

उपयोग––शूल, आम और रक्तयुक्त नये और पुराने अतिसार में इससे अच्छा लाभ होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

३--ह्रीवेरादि कषाय

ह्रीवेरधातकीलोध्र पाठालज्जालुवत्सकैः ।
धान्यकातिविषामुस्तगुडूची बिल्वनागरैः ॥
कृतः कषायः शमयेदतिसारं चिरोत्थितम् ।
अरोचकामशूलास्रज्वरघ्नः पाचनः स्मृत ॥

शार्ङ्गधर, म० खं० अ० २ ।

द्रव्य और निर्माणविधि--

खस, धाय के फूल, लोध, पाढ़, लाजवन्ती कुडा की छाल, धनिया, अतीस, नागरमोथा, गिलोय, बेलगिरी और सोंठ सब को समभाग लें, एकत्र जौकुट करके रख लें।

मात्रा—इसमें से १ तोला लें, उसको १६ तोले जल में पका, ४ तोला जल बाकी रहने पर स्वच्छ कपड़े से छान कर रोगी को दें।

उपयोग--इस कषाय का अरुचि, आम, शूल, रक्त ज्वरयुक्त सब प्रकार के नये या पुराने अतिसार में प्रयोग करें।

४--कुटजघन वटी

द्रव्य और निर्माण विधि--

कुडा के मूल की या वृक्ष की ताजी-हरी छाल ला, उसको जल से धो, जौकुट करके १६ गुने जल में पकावें। जब आठवाँ हिस्सा जल बाकी रहे तब उसको नीचे उतार, ठंडा होने पर स्वच्छ मजबूत कपड़े से छान लें। फिर उसको प्रारम्भ में मध्यम और पीछे मन्द अग्नि पर पकावें और लकड़ी के खोंचे से हलाते रहें। जब क्वाथ गाढ़ा होकर खोंचे में लगने लगे तब नीचे उतार कर सूर्य की धूप में वह गाढ़ा हो तब तक सुखावें। पीछे इसमें अतीस का चूर्ण गोली बनने योग्य मिला, ३-३ रत्ती की गोलियाँ बना कर सुखा लें।

मात्रा--२-४ गोली दिन में ३-४ बार ठंढे जल के अनुपान से दें।

उपयोग--अतिसार, ग्रहणी और ज्वर में जब दस्त पतले आते हों तब इसके प्रयोग से अच्छा लाभ होता है।

५--बिल्वादि चूर्ण

द्रव्य और निर्माणविधि—

कच्चे बेल की गिरी एक भाग, मोचरस एक भाग, सोंठ एक भाग, जल से धोकर सुखाई हुई भाँग एक भाग, धाय के फूल एक भाग, धनियाँ दो भाग और

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सौंफ चार भाग लें। प्रथम बेल की गिरी, सोंठ और मोचरस को सरौते से छोटे-छोटे टुकड़े करें। पीछे सब द्रव्यों को एकत्र कर छोटी कड़ाही में मन्द आँच पर सौंफ की थोड़ी सुगन्ध आने लगे इतना सेंक, कूट कर कपड़छान चूर्ण करें।

मात्रा——१-३ माशा।

अनुपान——ठंडा जल, दाड़िम का रस या छाछ।

समय——३-४ घण्टे से दिन में ४-५ बार दें।

गुण और उपयोग——यह योग उत्तम पाचन, दीपन और ग्राही है। अतिसार में केवल या रसपर्पटी के साथ मिला कर दें। प्रवाहिका (पेचिस-मरोड़ के साथ आँव और रक्त मिला हुआ दस्त आना) में जरा-सा घी या एरण्ड तेल लगा कर सेंकी हुई छोटी हरड़ का चूर्ण सम भाग मिला कर अर्क सौंफ या इसबगोल के लुआब के साथ दें। प्रवाहिका के लक्षण जैसे-जैसे कम होते जावें वैसे-वैसे छोटी हरड़ के चूर्ण का प्रमाण कम करना चाहिए। ग्रहणी रोग में रसपर्पटी, पंचामृतपर्पटी, स्वर्णपर्पटी आदि पर्पटी के योगों के साथ मिला कर दें। अतिसार में आरम्भ से अच्छा होने तक किसी भी अवस्था में इसका प्रयोग कर सकते हैं।

६--जातीफलादि चूर्ण

जातीफललवङ्गैलापत्रत्वङ्नागकेशरैः ॥
कर्पूरचन्दनतिलैस्त्वक्क्षीरीतगरामलैः ॥
तालीसपिप्पलीपथ्यास्थूलजीरकचित्रकैः ॥
शुण्ठी विडङ्गमरिचैः सममागविचूर्णितैः ॥
यावन्त्येतानि सर्वाणि कुर्याद्भङ्गांच तावतीम् ।
सर्वचूर्णं समा देया शर्करा च भिषग्वरैः ॥
शाणमात्रं ततः खादेन्मधुना प्लावितं सुधीः ।
अस्य प्रभावात् ग्रहणीकासश्वासोदरामयाः ॥
वातश्लेष्मप्रतिश्यायाः प्रशमं शान्ति वेगतः ।
चूर्णं जातीफलाद्यं तु दीपनं रोचनं परम् ॥

शार्ङ्गधरसंहिता. म० ख०, अ० ६।

द्रव्य और निर्माणविधि——

जायफल, लौंग, छोटी इलायची, तेजपात, दालचीनी, नागकेशर, कपूर, श्वेत चन्दन, धोये हुए तिल, बंशलोचन, तगर (यूनानी असारून), आँवले का दल, तालीसपत्र, छोटी पीपल, हर्रेदल, कलौंजी, चित्रक के मूल की छाल, सोंठ, बायविडंग

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

और काली मिर्च प्रत्येक एक-एक भाग, जल से धो के सुखाई हुई भाँग २० भाग और मिश्री ४० भाग लेकर सबका कपड़छान चूर्ण करें।

मात्रा--१-२ माशा। दिन में ३-४ मात्रा यथावश्यक दें।

अनुपान--मधु या जल।

गुण और उपयोग--यह चूर्ण दीपन, पाचन, ग्राही और अन्नपर रुचि उत्पन्न करनेवाला है। अतिसार, ग्रहणीरोग, खाँसी, दमा, वातरोग, कफरोग और प्रतिश्याय (जुकाम) में इसका उपयोग करें।

७--बृहन्नायिका चूर्ण

चित्रकं त्रिफला व्योषं विडङ्गं रजनीद्वयम्।
बालबिल्वं यवानीं च हिंगुर्लवणपञ्चकम्॥
गृहधूमो वचा कुष्ठं घनमभ्रकगन्धकम्।
क्षारत्रयं चाजमोदा पारदः शतपुष्पिका॥
कलिङ्गातिविषे धान्यं चव्यं जातिफलं समम्।
अमीषां चूर्णकं यावत्तावच्छाक्रशनस्य च॥
नायिकाचूर्णमेतद्धि संग्रहग्रहणीं जयेत्।
सर्वातिसारहरणमग्निसन्दीपनं परम्॥

भैषज्यरत्नावली ग्रहण्यधिकार से किञ्चित् परिवर्तित

द्रव्य और निर्माणविधि–

चित्रक के मूल की छाल, हर्रेदल, बहेड़ादल, आँवलादल, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, बायबिडङ्ग, हल्दी, दारुहल्दी, कच्चे बेल की गिरी, अजवायन, गाय के घी में भुनी हुई हींग, सैन्धवलवण, सामुद्रलवण, साँभरलवण, नौसादर, सोंचर (काला नमक), गृहधूम, बच, कूठ, नागरमोथा, अभ्रकभस्म, शुद्ध गन्धक, सज्जीखार, जवाखार, अग्निपर फुलाया हुआ सुहागा, अजमोदा, शुद्ध पारा, सौंफ, इन्द्रयव अतीस, धनियाँ चव्य (चाब) और जायफल प्रत्येक एक-एक भाग, जल से धोकर सुखाई हुई भाँग सबके बराबय। प्रथम पारे गन्धक की कज्जली बना, उसमें अन्य द्रव्यों का कपड़छान किया हुआ चूर्ण मिला, ३ घण्टा मर्दन करके बोतल में भर लें।

मात्रा--१-३ माशा दिन में ३-४ बार दें।

अनुपान--जल, छाछ या दाडिम का रस।

उपयोग--यह चूर्ण, दीपन, पाचन और ग्राही है। अग्निमान्द्य, अतिसार और ग्रहणी में इससे विशेष लाभ होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

८-हिंगुलयोग

द्रव्य और निर्माणविधि--

लोहे की बड़ी कड़ाही में ४० तोले दो-दो टुकड़े किये हुए भिलावे बिछा, ऊपर ४० तोला हिंगुल के १०-११ तोले के ४ टुकड़े थोड़ी-थोड़ी दूर में रख, उसके ऊपर ४० तोला एरण्ड तेल, ४० तोला गाय का घी और ४० तोला शहद डाल कर मन्दाग्नि पर पकावें। पकते-पकते जब उस में ज्वाला उठने लगे तब नीचे अग्नि देना बन्द करें। स्वांगशीतल होने पर हिंगुल के टुकड़ों को निकाल, कपड़े से पोंछ कर २-३ दिन दिन खरल में पीसें। पीछे उसमें ज़ायफल, जावित्री और लौंग प्रत्येक का ४०-४० तोला चूर्ण मिला, ३ दिन मर्दन करके शीशी में भर लें।

मात्रा और अनुपान—२-४ रत्ती, कपड़े में बाँध कर जल निकाले हुए दही में मिलाकर सबेरे-शाम दिन में दो बार दें।

पथ्य—कपड़े में बाँध कर जल निकाले हुए दही पर रोगी को रखें। यदि प्यास से रोगी न रह सके तो बेदाने अनार का रस दें।

उपयोग--पुराने अतिसार और ग्रहणी में इसका उपयोग करें।

९--महागन्धकयोग

रसगन्धकयोः कर्ष ग्राह्यमेकं सुशोधितम्।
ततः कज्जलिकां कृत्वा मृदुपाकेन साधयेत्॥
जात्याः फलं तथा कोशो लवङ्गारिष्टपत्रके।
एतेषां कर्षमात्रं हि तोयेन सह मर्दयेत्॥
मुक्तागृहे ततः स्थाप्य पुटपाकेन साधयेत्॥
गुञ्जाषट्कप्रमाणेन तोयेन सह भक्षयेत्॥
महागन्धकमेतद्धि सर्वातीसारनाशनम्।
दुर्वार ग्रहणीरोगं जयेच्चैव प्रवाहिकाम्।

भैषज्यरत्नावली—अतिसाराधिकार।

द्रव्य और निर्माणविधि--

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, जायफल, जावित्री, लौंग और नीम की ताजी कोमल पत्ती प्रत्येक सम भाग लें। प्रथम पारे गन्धक की कज्जली बना, उसको घी से पोती हुई लोहे की कड़ाही में रख, कोयले की मन्द आँच पर कज्जली सब द्रव हो जाय इतनी गरम कर नीचे उतार, स्वांगशीतल होने पर करछी से निकाल, खरल में पीस कर सूक्ष्म चूर्ण करें। पीछे उसमें जल से धोई हुई नीम की पत्ती डाल कर खूब

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मर्दन करें। बाद में अन्यद्रव्यों का कपड़छान चूर्ण मिला, उसमें थोड़ा जल दें, ६ घण्टा मर्दन कर, उसका गोला बना, दो मोती की सीप में उस गोले को रख कर विषमज्वरान्तक रस में लिखी हुई विधि के अनुसार पुटपाक करें। पुटपाक तैयार होने पर भीतर का गोला निकाल, पीस, ३-३ रत्ती की गोलियाँ बना; छाया में सुखा कर शीशी में भर लें।

मात्रा--१-२ गोली।

अनुपान—जल, मीठे दाड़िम (अनार) का रस, चावल भिगोया हुआ, जल या कोई अतिसारहर क्वाथ के अनुपान से दें।

गुण और उपयोग--यह उत्तम पाचन, दीपन और ग्राही योग है। अतिसार-प्रवाहिका और ग्रहणीरोग में इससे अच्छा लाभ होता है।

१०--पीयूषवल्ली रस

सूतकं गन्धकं चाभ्रं तारं लौहं सटंकणम्।
रसाञ्जनं माक्षिकं च जातीपत्री यवानिका॥
लवङ्ग चन्दनं मुस्तं पाठा जीरकधान्यकम्।
समङ्गांऽतिविषा लोध्रं कुटजेन्द्रयवत्वचम्॥
जातीफलं बिल्वनिम्बं कनकं दाडिमच्छदम्।
अभया धातकी कुष्ठं प्रत्येकं समभागिकम्॥
भावयेत् सर्वमेकत्र भृङ्गराजरसैः पुनः।
भावना सप्त दातव्याश्चणकाभां वटीं चरेत्॥
पक्वापक्वमतीसारं नानावर्णं सवेदनम्।
ग्रहणीं चिरजां हन्ति रक्तातीसारमुल्वणम्॥
रसः पीयूषवल्ल्याख्यः संग्राही पाचनस्तथा॥

भैषज्यरत्नावली--ग्रहण्यधिकार।

द्रव्य और निर्माणविधि--

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, अभ्रक भस्म, रौप्यभस्म, लोहभस्म, अग्नि पर फुलाया हुआ सुहागा, रसौत, माक्षिकभस्म, जावित्री, अजवायन, लौंग, श्वेतचन्दन, नागरमोथा, पाढ़, जीरा, धनियाँ, लाजवन्ती, अतीस, लोध, कुड़ा की छाल, इद्रयव दालचीनी, जायफल, बेलगिरी, नीम की पत्ती, शुद्ध धतूरे के बीज, दाड़िम का छिलका, हर्रदल, धाय के फूल, और कूठ प्रत्येक समभाग लेवें। प्रथम पारेगन्धक की कज्जली बना, उसमें अन्य भस्में तथा औषधों का सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मिला, भाँगरे के रस में सात दिन मर्दन कर, चने बराबर गोलियां बना, छाया में सुखा कर रख लें।

मात्रा--१-२ गोली।

अनुपान--ठंढा जल, इसबगोल का लुआब या बेल फल का शरबत।

गुण और उपयोग--यह पीयूषवल्ली रस पाचन और ग्राही है तथा किसी भी प्रकार के अतिसार और ग्रहणी को दूर करता है।

वक्तव्य—महागन्धक और पीयूषवल्ली ये दोनों अफीम रहित उत्तम पाचक और ग्राही योग हैं। जहाँ बिल्वादिचूर्ण आदि भाँगयुक्त योगों से लाभ न हो इनमें से किसी का प्रयोग करें।

११--नृपतिवल्लभ रस

जातीफललवङ्गाब्दत्वगेलाङ्टकरामठम्।
जीरकं तेजपत्रं च यवानीविश्वसैन्धवाः॥
लोहमभ्रं रसो गन्धस्ताम्रं प्रत्येकशः पलम्॥
मरिचं द्विपलं धात्र्याः स्वरसेन विमर्दयेत्॥
अग्निमान्द्यभवान् रोगान् यकृद्दोषभवांस्तथा।
ग्रहणीं च तथा हन्ति रसो नृपतिवल्लभः॥

भैषज्यरत्नावली, ग्रहण्यधिकार।

द्रव्य और निर्माणविधि--

जायफल, लौंग, नागरमोया, दालचीनी, छोटी इलायची, आग पर फुलाया हुआ सुहागा, घी में भूनी हुई हींग, जीरा, तेजपात, अजवायन, सोंठ, सेंधानमक, लोहभस्म, अभ्रकभस्म, पारद, गन्धक और ताम्रभस्म प्रत्येक ४-४ तोला और काली मिर्च ८ तोला लेवें। प्रथम पारे-गन्धक की कज्जली बना, उस में अन्य भस्में और वनस्पतियों का सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण मिला, आँवले के स्वरस की भावना दें, ३-३ रत्ती की गोलियां बना कर छाया में सुखा लें।

मात्रा—१-२ गोली।

अनुपान--जल या छाछ।

उपयोग--अग्निमान्द्य और उनसे होनेवाले रोग तथा यकृत् के दोषयुक्त ग्रहणी रोग में यह उत्तम योग है।

१२--कर्पूरादि वटी

कर्पूरं चाहिफेनं च मुस्तकेन्द्रयवं तथा।
जातीफलं च दरदं टङ्कणं मर्दयेत् समम्॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जलेन वटिका कार्या द्विगुञ्जाफलमानतः ।
कर्पूराद्या वटी देया पक्वातीसाररोगिणे ॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

कपूर, शुद्ध अफीम, नागरमोथा, सेंका हुआ इन्द्रयव, जायफल, शुद्ध हिंगुल और आग पर फुलाया हुआ सुहागा प्रत्येक सम भाग ले। प्रथम हिंगुल, अफीम और कपूर को जल से मर्दन करें। उनके अच्छी तरह मिल जाने पर अन्य वस्तुओं का सूक्ष्म कपड़छान किया हुआ चूर्ण मिला, ३ घण्टा जल से मर्दन कर, दो-दो रत्ती की गोलियाँ बना कर छाया में सुखा लें।

मात्रा—१-२ गोली।

अनुपान—जल।

उपयोग—कर्पूरादि बटी का उपयोग अतिसार में मल के पक्व होने के लक्षण दीखें और बिल्वादि चूर्ण आदि पाचन-ग्राही योगों से लाभ न हो और स्तम्भन औषध की आवश्यकता पड़े तब केवल अथवा बिल्वादि या जातीफलादि चूर्ण के साथ मिला कर दें।

१३-लवङ्गाभ्रकयोग

लवङ्गातिविषे मुस्तं पाठा बिल्वं सधान्यकम्।
धातकी मोचकं जीरं लोध्रमिन्द्रयवं तथा ॥
बालकं सर्जकं शृङ्गी सैन्धवं नागरं कणा।
वाट्यालकं यवक्षारमहिफेनं रसाञ्जनम् ॥
प्रत्येकं कर्षमानं स्याद् गगनं पञ्चकार्षिकम्।
सर्वेषां तुल्यभागानि लवङ्गानि प्रदापयेत् ॥
मुस्तायाः स्वरसेनैव भावयित्वा विशोषयेत्।
लवङ्गाभ्रकयोगोऽयं सर्वातीसारनाशनः ॥
ग्रहणीं चिरजां हन्ति वन्हिमान्द्यं प्रवाहिकम्।
नाशयत्यम्लपित्तं च ग्राही दीपनपाचनः।

द्रव्य और निर्माणविधि—

लौंग, अतीस, नागरमोथा, पाढ़, बेलगिरी, धनिया, धाय के फूल, मोचरस, जीरा, लोध, इद्रयव, खस, राल, काकड़ासींगी, सेन्धा नमक, सोंठ, छोटी पीपल; खरैटी के मूल, जवाखार, शुद्ध अफीम और रसौत सब एक-एक भाग, अभ्रक भस्म

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५ भाग तथा लौंग सब के बराबर लें, सब का सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण कर, नागरमोथा के स्वरस या क्वाथ की ३ भावनाएँ दें, ३-३ रत्ती की गोलियाँ बना, छाया में सुखाकर रख लें।

मात्रा, अनुपान और उपयोग—इसकी १-२ गोली जल के अनुपान के साथ दिन में ३-४ बार सब प्रकार के अतिसार, ग्रहणी, प्रवाहिका, और अम्लपित्त में दें। यह योग ग्राही, दीपन, पाचन और स्तम्भन है।

१४—नागकेशरादि चूर्ण

द्रव्य और निर्माण विधि—

नागकेशर ४ तोला, बेलगिरी २ तोला, अनीसून २ तोला, सौंफ २ तोला, खसखस १ तोला, छोटी इलायची १ तोला, धनिया १ तोला, मोचरस १ तोला, खस १ तोला, सफेद चन्दन १ तोला, गुलाब के फूल १ तोला, कपूरकचरी १ तोला, जल से धोकर सुखाई हुई भाँग ५ तोला और मिसरी ५ तोला लें, सबका एकत्र कपड़छान चूर्ण करके रख लें।

स्व० वा० वैद्य हरिप्रसाद गंगाधर आचार्य से प्राप्त।

मात्रा—२-३ माशा।

अनुपान—जल।

उपयोग—पित्तातिसार और रक्तातिसार में यह उत्तम योग है। इस चूर्ण को अकेला या रसपर्पटी के साथ मिलाकर दें।

१५—संग्राहक चूर्ण

द्रव्य और निर्माणविधि—

बेलगिरी, मोचरस, दाड़िम के फूल (गुले अनार), माजूफल, तुख्म[1] हुमाज (चूका के बीज) जुफ्तबलूत[2] (बाँझ सीता-सुपारी के फल का मग्ज), छोटी मांई (गुजराती पडवास), हबुल्लास (विलायती मेंहदी) की पत्ती तथा आम और जामुन की गुठली सब समभाग लें, एकत्र कपड़छान चूर्ण करके रख लें।

मात्रा—१॥-३ माशा।

उपयोग—कपड़े में बांधकर पानी निकाला हुआ दही। यह पक्वातिसार और पक्वप्रवाहिका में उत्तम ग्राही औषध है।

स्व० वा० हकीम रामनारायणजी से प्राप्त।

[1-2] ये द्रव्य इसी नाम से यूनानी औषध बेचनेवालों के यहाँ मिलते हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जलेन वटिका कार्या द्विगुञ्जाफलमानतः ।
कर्पूराद्या वटी देया पक्वातीसाररोगिणे ॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

कपूर, शुद्ध अफीम, नागरमोथा, सेंका हुआ इन्द्रयव, जायफल, शुद्ध हिंगुल और आग पर फुलाया हुआ सुहागा प्रत्येक सम भाग ले। प्रथम हिंगुल, अफीम और कपूर को जल से मर्दन करें। उनके अच्छी तरह मिल जाने पर अन्य वस्तुओं का सूक्ष्म कपड़छान किया हुआ चूर्ण मिला, ३ घण्टा जल से मर्दन कर, दो-दो रत्ती की गोलियाँ बना कर छाया में सुखा लें।

मात्रा—१-२ गोली।

अनुपान—जल।

उपयोग—कर्पूरादि बटी का उपयोग अतिसार में मल के पक्व होने के लक्षण दीखें और बिल्वादि चूर्ण आदि पाचन-ग्राही योगों से लाभ न हो और स्तम्भन औषध की आवश्यकता पड़े तब केवल अथवा बिल्वादि या जातीफलादि चूर्ण के साथ मिला कर दें।

१३-लवङ्गाभ्रकयोग

लवङ्गातिविषे मुस्तं पाठा बिल्वं सधान्यकम्।
धातकी मोचकं जीरं लोध्रमिन्द्रयवं तथा ॥
बालकं सर्जकं शृङगी सैन्धवं नागरं कणा ।
वाटचालकं यवक्षारमहिफेनं रसाञ्जनम् ॥
प्रत्येकं कर्षमानं स्याद् गगनं पञ्चकार्षिकम् ।
सर्वेषां तुल्यभागानि लवङगानि प्रदापयेत् ॥
मुस्तायाः स्वरसेनैव भावयित्वा विशोषयेत् ।
लवङ्गाभ्रकयोगोऽयं सर्वातीसारनाशनः ॥
ग्रहणीं चिरजां हन्ति वन्हिमान्द्यं प्रवाहिकम् ।
नाशयत्यम्लपित्तं च ग्राही दीपनपाचनः ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

लौंग, अतीस, नागरमोथा, पाढ़, बेलगिरी, धनिया, धाय के फूल, मोचरस, जीरा, लोध, इद्रयव, खस, राल, काकड़ासींगी, सेन्धा नमक, सोंठ, छोटी पीपल; खरैंटी के मूल, जवाखार, शुद्ध अफीम और रसौत सब एक-एक भाग, अभ्रक भस्म

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५ भाग तथा लौंग सब के बराबर लें, सब का सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण कर, नागरमोथा के स्वरस या क्वाथ की ३ भावनाएँ दें, ३-३ रत्ती की गोलियाँ बना, छाया में सुखाकर रख लें।

मात्रा, अनुपान और उपयोग—इसकी १-२ गोली जल के अनुपान के साथ दिन में ३-४ बार सब प्रकार के अतिसार, ग्रहणी, प्रवाहिका, और अम्लपित्त में दें। यह योग ग्राही, दीपन, पाचन और स्तम्भन है।

१४—नागकेशरादि चूर्ण

द्रव्य और निर्माण विधि—

नागकेशर ४ तोला, बेलगिरी २ तोला, अनीसून २ तोला, सौंफ २ तोला, खसखस १ तोला, छोटी इलायची १ तोला, धनिया १ तोला, मोचरस १ तोला, खस १ तोला, सफेद चन्दन १ तोला, गुलाब के फूल १ तोला, कपूरकचरी १ तोला, जल से धोकर सुखाई हुई भाँग ५ तोला और मिसरी ५ तोला लें, सबका एकत्र कपड़छान चूर्ण करके रख लें।

स्व० वा० वैद्य हरिप्रसाद गंगाधर आचार्य से प्राप्त।

मात्रा—२-३ माशा।

अनुपान—जल।

उपयोग—पित्तातिसार और रक्तातिसार में यह उत्तम योग है। इस चूर्ण को अकेला या रसपर्पटी के साथ मिलाकर दें।

१५—संग्राहक चूर्ण

द्रव्य और निर्माणविधि—

बेलगिरी, मोचरस, दाड़िम के फूल (गुले अनार), माजूफल, तुख्म[1] हुमाज (चूका के बीज) जुफ्तबलूत[2] (बाँझ सीता-सुपारी के फल का मग्ज), छोटी मांई (गुजराती पडवास), हबुल्लास (विलायती मेंहदी) की पत्ती तथा आम और जामुन की गुठली सब समभाग लें, एकत्र कपड़छान चूर्ण करके रख लें।

मात्रा—१॥-३ माशा।

उपयोग—कपड़े में बाँधकर पानी निकाला हुआ दही। यह पक्वातिसार और पक्वप्रवाहिका में उत्तम ग्राही औषध है।

स्व० वा० हकीम रामनारायणजी से प्राप्त।

[1-2] ये द्रव्य इसी नाम से यूनानी औषध बेचनेवालों के यहाँ मिलते हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१६--रस पर्पटी

जयैरण्डभृङ्गराजकाकमाचीरसैः क्रमात् ।
रसं संशोध्य यत्नेन तत्समं शोधयेद् बलिम् ।।
गन्धकं क्षुद्रितं कृत्वा भाव्यं भृङ्गरसेन तु ।
सप्तधा वा त्रिधा वाऽपि पश्चाच्छुष्कं विचूर्णितम् ।।
घृतालिप्ते लोहपात्रे दत्त्वा वह्नौ प्रतापयेत् ।
द्रुतं भृङ्गरसे क्षिप्तं तत उद्धृत्य शोषयेत् ।।
एवं शुद्धं रसं गन्धं योजयेत् पर्पटीरसे ।
रसगन्धौ समौ कृत्वा दृढे खल्वे विमर्दयेत् ।।
नष्टसूतं यदा चूर्णं भवेत् कज्जलसन्निभम् ।
घृतालिप्ते लोहपात्रे तदा तं स्थापयेद् बुधः ।।
तं पात्रं स्थापयेदन्ये बालुकास्तीर्णपात्रके ।
निर्धूमे बदराङ्गारे द्रवीकुर्यात् प्रयत्नतः ।।
महिषीमलविन्यस्ते तत्र तं कदलीदले ।
निक्षिप्य तदुपर्यन्यत् पत्रं दत्त्वा प्रपीडयेत् ।।
शीतलत्वं गते पात्रात् समुद्धृत्य विचूर्णयेत् ।
विधिरेष तु विज्ञेयः सर्वासु पर्पटीष्वपि ।।
एवं सिद्धा भवेद् व्याधिघातिनी रसपर्पटी ।
रक्तिकासंमितां प्रातर्भृष्टजीरकसंयुताम् ।।
गुञ्जार्धभृष्टहिङ्ग्वाढ्यां भक्षयेद्रसपर्पटीम् ।
रोगानुरूपभैषज्यैरपि तां योजयेद् बुधः ।।
अनुपेयं पयस्तक्रं दाडिमादिरसोऽपि वा ।
प्रत्यहं वर्धयेत्तस्या ह्येकैकां रक्तिकां भिषक् ।।
नाधिकां दशगुञ्जातो भक्षयेत्तां कदाचन् ।
आरोग्यदर्शनं यावत् भक्षयेद्दशरक्तिकाम् ।।
आरोग्यदर्शनादूर्ध्वं तां तथैवापकर्षयेत् ।
क्रम एष तु विज्ञेयः सर्वासु पर्पटीष्वपि ।।
जीर्णज्वरं च ग्रहणीं तथाऽतीसारमेव च ।
पाण्डुरोगं वह्निमान्द्यं यकृत्प्लीहजलोदरान् ।।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एवमादीन् गदान् हन्ति, हृष्टःपुष्टश्च वीर्यवान् ।
दीप्ताग्निर्बलवांश्चैव भवेदस्यास्तु सेवनात् ।।

द्रव्य और निर्माणविधि--

हिंगुल से निकाले हुए पारे को क्रम से जैत, एरण्ड और मकोय के पत्र-स्वरस में १-१ दिन मर्दन करके गरम जल से धो लें। गन्धक का मोटा चूर्ण कर, उसको सात या तीन दिन भाँगरे के स्वरस की भावना दे, सूखा कर भीतर घी से पोती हुई लोहे की छोटी कड़ाही में अग्नि पर गला कर अन्दर आधे भाँगरे के स्वरस भरे हुए और मुंह के ऊपर कपड़ा बँधे हुए पात्र में धीरे से डाल दें। बाद में उस पात्र से गन्धक को निकाल और गरम जल से धो कर सुखा लें। इस प्रकार से शुद्ध किया हुआ पारद और गन्धक का पर्पटी बनाने के लिए उपयोग करें। शुद्ध पारद और गन्धक सम भाग लेकर उसको अच्छे मजबूत खरल में मर्दन करें। मर्दन करते समय बीच-बीच में उसमें जल के छींटे दें। जब उसमें पारद के कण न दिखें और चूर्ण आँख में डालने के सुरमे जैसा सूक्ष्म हो जाय तब उस को भीतर घी से पोती हुई छोटी लोहे की कड़ाही में डाल, अग्नि पर एक लोहे का तवा रख, उस पर एक अंगुल मोटा बालू (सूक्ष्म रेती) का स्तर बिछा कर, उस पर उस कड़ाही को रखें। जब कज्जली गरम होने लगे तब उसको बीच-बीच में लोहे के छूरे से हिलाता रहे। जब सारी कज्जली अच्छी तरह से द्रव हो जाय तब उसको जमीन पर गोवर बिछा, उसके ऊपर केले का अखण्ड पत्ता रख कर उस पर डाल दे और तुरन्त ही उस पर केले का दूसरा पत्ता रख कर उसे गोवर से दबा दें। पर्पटी ठंढी हो जाने पर शीशी में भरकर रख लें। सब प्रकार की पर्पटियाँ इसी विधि से बनानी चाहिये। सेवन करते समय पर्पटी को खूब महीन पीस कर उपयोग में लेना चाहिए।

मात्रा--एक रत्ती से प्रारम्भ कर और प्रतिदिन एक-एक रत्ती की मात्रा बढ़ाकर दस रत्ती तक रोग तथा रोगी का बलादि देख कर दें। रोग अच्छा होने तक वही मात्रा देते रहें। जब रोग-मुक्त हो जाय तब प्रतिदिन एक-एक रत्ती की मात्रा घटा कर औषध छुड़ा दें। मैंने एक दिन में एक बार में १० रत्ती तक की मात्रा न देकर दिन में दो-तीन बार में १ से ३ रत्ती तक की मात्रा देकर प्रयोग कराया है। इससे अच्छा लाभ होता देखा गया है। सामान्यतः पर्पटी का प्रयोग ४० दिन तक कराया जाता है।

अनुपान--सेंके हुए जीरे का चूर्ण १।।-३ माशा और घी में सेंकी हुई हींग आधी रत्ती के साथ मिला कर दें और ऊपर से दूध, छाछ या दाड़िम; संतरा, मोसंबी, मीठा नींबू, आदि फलों का रस दें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पथ्य--केवल दूध या केवल छाछ रोगी की प्रकृति आदि देख कर दें। एक दिन में १-२ घण्टे के अन्तर से दूध, छाछ और फलों का रस तीनों दे सकते हैं। जल अकेला जहाँ तक बने न दिया जाय।

वक्तव्य----अन्न, जल और लवण बन्द करके दूध, छाछ और फलों के रस पर पर्पटी का प्रयोग कराने से ही उचित लाभ होता है। जब तक पर्पटी का प्रयोग चले तब तक रोगी को पूर्ण विश्रान्ति लेनी चाहिए; अर्थात् बिछौने पर लेटे ही रहना चाहिए। पर्पटी का प्रयोग बन्द करने के बाद भी रोगी ३-४ मास तक आधा लघु अन्न और आधा दूध-छाछ-फल का सेवन करें।

उपयोग--सब प्रकार के पाचन क्रिया (जठराग्नि) के विकारों में रस पर्पटी उत्तम औषध है। ग्रहणी रोग, जीर्ण-अतिसार, अग्निमान्द्य और पाण्डु-रोग में इसके प्रयोग से विशेष लाभ होता है।

द्रव्य और निर्माणविधि-

१७-- स्वर्णपर्पटी

शुद्धसूतं पलमितं पादांशं स्वर्णपत्रकम्।
मर्दयेन्निम्बुनीरेण यावदेकत्वमागतम्।
प्रक्षाल्योष्णाम्बुना पश्चात् पलमात्रं सुगन्धकम्।
दत्वा प्रमर्दयेत्तावद्यात् कज्जलतां व्रजेत्॥
ततः पाकविधानज्ञः पर्पटीं कारयेद् बुधः।
देया दुग्धानुपानेन रक्तकादिक्रमेण हि॥
बलपुष्टिकरी शुक्रवर्धनी वन्हिदीपनी।
ग्रहणीं राज्यक्ष्माणं हन्ति पाण्ड्वामयं तथा॥
स्वर्णपर्पटीविख्याता तमकश्वासनाशिनी।

द्रव्य और निर्माणविधि—

अच्छे पत्थर के खरल में चार तोला शुद्ध पारद डाल, उसमें एक तोला सोने के वर्क एक-एक करके मिला, कागजी नींबू का रस डालकर एक दिन मर्दन करें। पीछे उसको गरम जल से धो, उसमें शुद्ध गन्धक चार तोले, डाल,कज्जली बना, रसपर्पटी में लिखे हुए विधान से पर्पटी बनाकर शीशी में भर लें।

मात्रा--१-३ रत्ती।

अनुपान--मधु से चाटकर ऊपर से दूध दें। अन्य सब विधि रस पर्पटी में लिखे अनुसार करें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्षय में स्वर्णपर्पटी के साथ १-४ रत्ती मुक्तापिष्टी मिलाकर देने से विशेष लाभ होता है। कई वैद्य पारद के स्थान में रससिंदूर देकर रक्त वर्ण की स्वर्णपर्पटी बनाते हैं।

गुण औरउपयोग––स्वर्ण पर्पटी जठराग्नि को दीपन करनेवाली, बलकारक और शरीर को पुष्ट करनेवाली है। ग्रहणीरोग, सर्व प्रकार के क्षय और पाण्डु-रोग में इससे विशेष लाभ होता है।

१८–लौहपर्पटी

रसभागो भवेदको द्विगुणः शुद्धगन्धकः।
रसतुल्यं तीक्ष्णभस्म कज्जलीं कारयेच्छुभाम्।
रसपर्पटिका प्रोक्ता विधानेन प्रयत्नतः।
ततः पर्पटिका कार्या देया योग्यानुपानतः॥
सूतिकाया ज्वरे जीर्णे ग्रहण्यां पाण्डुरोगके।
प्लीहरोगेऽग्निमान्द्ये च यकृद्वृद्धौ तथैव च
अम्लपित्ते तथा शूले लोहपर्पटिका हिता

द्रव्य और निर्माणविधि––

शुद्ध पारद १ भाग, तीक्ष्णलोह (फौलाद) भस्म एक भाग और शुद्ध गन्धक २ भाग लें। प्रथम पारे-गन्धक की कज्जली बना, उसमें लौहभस्म मिला, एक दिन मर्दन कर, रसपर्पटी में कही हुई विधि के अनुसार पर्पटी बना लें।

मात्रा––१-३ रत्ती दिन में २-३ बार दें।

अनुपान––जीरे का चूर्ण और छाछ, दूध या फलों का रस।

उपयोग––सूतिका जीर्णज्वर, ग्रहणीरोग, पाण्डुरोग, प्लीहा के रोग, अग्निमान्द्य, यकृत् को वृद्धि, अम्लपित्त और उदरशूल इन रोगों में लोहपर्पटी का प्रयोग करें।

१९––मण्डूरपर्पटी

मण्डूरभस्म भागैकं तत्समं पारद तथा।
तयोः सम शुद्धगन्ध दत्त्वा कुर्यात्तु कज्जलीम्॥
रसपर्पटिकाप्रोक्तविधिना पर्पटी शुभा।
मन्दाग्निं ग्रहणीरोगं हन्ति मण्डूरपर्पटी।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शुद्ध पारद १ भाग, मण्डूरभस्म १ भाग और शुद्ध गन्धक २ भाग लें, प्रथम पारे-गन्धक की कज्जली बना, उसमें मण्डूरभस्म मिला, एक दिन मर्दन कर, रस-पर्पटी में कही हुई विधि के अनुसार पर्पटी बना लें।

मात्रा--१-३ रत्ती दिन में २-३ बार दें।

अनुपान--जीरे का चूर्ण और छाछ, दूध या फलों का रस।

उपयोग--पाण्डुरोग, प्लीहा के रोग, शोथ, मन्दाग्नि तथा ग्रहणीरोग में मण्डूरपर्पटी का उपयोग करें।

२०--गगनपर्पटी

रसभागो भवेदेकस्तत्समं व्योमभस्म च।
तयोः समं शुद्धगन्धं दत्वा कुर्यात्तु कज्जलीम्॥
रसपर्पटिकाप्रोक्तविधिना पर्पटी शुभा।
कार्या, पाण्डुं क्षयं कासं श्वासं मन्दानलं तथा॥
ग्रहणीं चिरजां हन्ति ह्येषा गगनपर्पटी।

द्रव्य और निर्माणविधि–

शुद्ध पारद १ भाग, अभ्रकभस्म १ भाग और शुद्ध गन्धक २ भाग लें, प्रथम पारे-गन्धक की कज्जली बना, उसमें अभ्रकभस्म मिला, एक दिन मर्दन कर, रसपर्पटी में कहे हुए विधानानुसार पर्पटी बनावें।

मात्रा--१-३ रत्ती दिन में २-३ बार दें।

अनुपान--शहद, दूध छाछ या मीठे दाड़िम का रस।

उपयोग--गगनपर्पटी मन्दाग्नि, पाण्डुरोग, राजयक्ष्मा, खांसी, श्वास;(दमा) और पुराने ग्रहणीरोग में विशेष गुण देनेवाली है।

२१--विजयपर्पटी

शुद्धगन्धं पलं चैकं गन्धार्धं शुद्धपारदम्।
सूतार्द्धं भस्म रौप्यं च तदर्द्धं स्वर्णभस्मकम्॥
तदर्द्धं मृतवैक्रान्तं मौक्तिकं च विनिक्षिपेत॥
कृत्वा कज्जलिकां पश्चात् कुर्यात् पर्पटीकां शुभाम्।
दुःसाध्यां ग्रहणीं हन्ति यक्ष्माणं सपरिग्रहम्।
शोथातिसारौ पाण्डुं च प्लीहानं च जलोदरम्॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पक्तिशूल चाम्लपित्तं हृद्रोगं विषमज्वरान् ।
कफवातोद्भवान् रोगान् हन्याद्विजयपर्पटी ॥

द्रव्य और निर्माणविधि

शुद्ध गन्धक ४ तोला, शुद्ध पारद २ तोला, रौप्यभस्म १ तोला, सुवर्णभस्म आधा तोला, वैक्रान्त-भस्म तथा मुक्तापिष्टी दोनों पाव-पाव तोला लें, प्रथम पारे-गन्धक की कज्जली बना, उसमें भस्में मिला, एक दिन मर्दन कर, रसपर्पटी में लिखे हुए विधान के अनुसार पर्पटी बनावें।

मात्रा--१-३ रत्ती दिन में २-३ बार दें।

अनुपान--शहद, दूध छाछ या मीठे दाड़िम, सेव, मोसंबी और मीठे अंगूर इनमें से किसी का रस।

उपयोग--कृच्छ्रसाध्य ग्रहणी रोग, उपद्रवयुक्त राजयक्ष्मा, शोथ, पुराना अतिसार, पाण्डुरोग, प्लीहा के रोग, जलोदर, परिणामशूल, अम्लपित्त, हृद्रोग, पुराने विषमज्वर और दूसरे कफ और वात से होनेवाले रोगों में विजयपर्पटी उत्तम औषध है। इसके प्रयोग से शरीर पुष्ट और बलवान् होता है। जहां पर्पटी के अन्य योगों से लाभ न होता हो, वहां इसका प्रयोग करें।

२३--पञ्चामृतपर्पटी

रसलोहाभ्रताम्राणि समभागानि कारयेत् ।
गन्धकं सर्वतुल्यं तु दत्त्वा कुर्याद्धि कज्जलीम् ॥
ततः पर्पटिकां कृत्वा दद्याद्योग्यानुपानतः ।
पञ्चामृता पर्पटिका स्मृता वह्निप्रदीपनी ॥
ग्रहणीमतिसारं च पाण्डुरोगमथारुचिम् ।
श्वासं मन्दानलं हन्ति शूलं चैवाम्लपित्तकम् ॥

द्रव्य और निर्माणविधि--

शुद्ध पारद, लोहभस्म, अभ्रकभस्म और ताम्र-भस्म एक-एक भाग तथा शुद्ध गन्धक सब के समान (चार-भाग) लें। प्रथम पारे-गन्धक की कज्जली बना, उसमें भस्में मिला, एक दिन मर्दन कर, रसपर्पटी में लिखे हुए विधान के अनुसार पर्पटी बना लें।

मात्रा--१-३ रत्ती दिन में २-३ बार दें।

अनुपान--सेंके हुए जीरे का चूर्ण और शहद के साथ चटाकर ऊपर से दूध, छाछ या दाड़िम आदि फलों का रस पिलावें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपयोग--अतिसार, ग्रहणी, पाण्डुरोग, अरुचि, दमा, मन्दाग्नि और शूलरोग में इसका प्रयोग करें। पञ्चामृतपर्पटी के प्रयोग से भूख बढ़ती है। अम्लपित्त में शतपत्र्यादि चूर्ण या द्राक्षादि चूर्ण के साथ मिलाकर इसका प्रयोग करें।

वक्तव्य--मैंने पञ्चामृतपर्पटी में १-१ भाग वंगभस्म और यशद (जस्ते) की भस्म मिला के सप्तामृतपर्पटी बनाई है। पञ्चामृतपर्पटी से यह अधिक गुणकारक होती है। अन्त्रक्षय में सप्तामृतपर्पटी केवल या स्वर्णपर्पटी के साथ मिलाकर देने से विशेष लाभ होता देखा गया है।

२३--ताम्रपर्पटी

मृतं ताम्रं त्रिभागं च रसं गन्धं तयोः समम्।
भागमेकं वत्सनाभं दत्त्वा कुर्यात्तु कज्जलीम्॥
ततः पाकविधानज्ञः पर्पटीं कारयेद् बुधः।
गुञ्जाद्वयं त्रयं वाऽपि ह्येलाजीरकसंयुता॥
त्रिसप्तरात्रयोगेन चिरजां ग्रहणीं जयेत्।
त्रिफलामधुसंयुक्ता मेहपाण्डुविनाशिणी॥
वातारितैलसंयुक्ता सर्वशूलनिवारिनी।
बाकुचीबीजसंयुक्ता दद्रुश्वित्रविनाशिनी॥
ताम्रपर्पटिका ह्येषा यकृत्प्लीहोदरापहा॥

योगरत्नाकर।

द्रव्य और निर्माणविधि--

ताम्रभस्म ३ भाग, शुद्ध पारद ३ भाग, शुद्ध गन्धक ६ भाग और शुद्ध बच्छनाग का चूर्ण १ भाग लें। प्रथम पारे गन्धक की कज्जली बना, पीछे अन्य द्रव्य मिला, एक दिन मर्दन कर, रसपर्पटी में लिखे हुए विधान के अनुसार पर्पटी बना लें।

मात्रा--१-३ रत्ती।

अनुपान और उपयोग--ताम्रपर्पटी, छोटी इलायची और सेंके हुए जीरे के चूर्ण के साथ सेवन करने से पुराने ग्रहणी रोग को, त्रिफला चूर्ण और मधु के साथ लेने से प्रमेह और पाण्डुरोग को, एरण्ड तैल के साथ लेने से सर्वप्रकार के शूलों को, बावची के बीज के चूर्ण के साथ सेवन करने से दाद और श्वित्र (कुष्ठ) को दूर करती है। ताम्रपर्पटी यकृत् के रोग, प्लीहा की वृद्धि और उदर रोग के लिये उत्तम औषध है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वक्तव्य--पर्पटी के योगों का उपयोग प्राय: पुराने अतिसार, ग्रहणी, पाण्डु-रोग और अग्निमान्द्य में होता है। अतिसार और ग्रहणी में इसको बिल्वादि चूर्ण के साथ दें। ग्रहणी और पाण्डुरोगों में यदि मुखपाक भी हो तो शतपत्र्यादि चूर्ण के साथ इसका प्रयोग करें। यदि साथ में रोगी को अर्श-बवासीर भी हो नागकेशर के चूर्ण के साथ मिला कर दें। यदि रोगी को अम्लपित्त भी हो। तो रसादि वटी और जहरमोहरापिष्टी के साथ अथवा द्राक्षादि चूर्ण के साथ पर्पटी दें। सामान्यत: छोटी इलायची का चूर्ण ३ रत्ती, सेकें हुए जीरे का चूर्ण ६ रत्ती और शुद्ध भांग का चूर्ण १-२ रत्ती इनके साथ पर्पटी मिलाकर देना अच्छा है। पर्पटी का प्रयोग चलता हो तब उसके अनुपानों के सिवाय अन्य योगों का उपयोग अत्यन्त आवश्यकता के बिना नहीं करना चाहिए।

अग्निमान्द्य-अजीर्णाधिकार-तृतीय

१--हिंग्वष्टकचूर्ण

हिंगुव्योषाजमोदाद्विजरणलवणं प्राग्भजेत् साज्यभक्तं।
कुर्याज्जाज्वल्यमानं ज्वलनमनिलजं गुल्ममेतन्निहन्ति ।।

वैद्यजीवन ४ उल्लास ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

घी में सेंकी हुई हींग, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, अजमोद, स्याह जीरा*, सफेद जीरा और सेंधा नमक सब समभाग लें, उनका कपड़छान चूर्ण कर के शीशी में भर लें।

मात्रा--१॥-३ माशा।

अनुपान और उपयोग--यह चूर्ण घी और भात के साथ मिलाकर भोजन के प्रारम्भ में खाने से जठराग्नि प्रदीप्त होती है और वायु का अनुलोमन होता है। अजीर्ण और पेट के दर्द में जल या छाछ के अनुपान से भी दिन में २-३ वार इसको दे सकते हैं।

* कई वैद्य स्याह जीरा के स्थान पर कलौंजी-मंगरेला डालते हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२–लवणभास्करचूर्ण

सामुद्रलवणं कार्यमष्टर्षमितं बुधैः ।
पञ्च सौवर्चलं ग्राह्यं, बिडं सैन्धवधान्यके ।।
पिप्पली पिप्पलीमूलं कृष्णजीरकपत्रकम् ।।
नागकेशरतालीसमम्लवेतसकं तथा ।।
द्विकर्षमात्राण्येतानि प्रत्येकं कारयेद् बुधः ।
मरिचं जीरकं विश्वमेकैकं कर्षमात्रकम् ।।
दाडिमं स्याच्चतुष्कर्षं त्वगेला चार्धकार्षिकी ।
एतच्चूर्णीकृतं सर्वं लवणं भास्कराभिधम् ।।
शाणप्रमाणं देयं तु मस्तुतक्रसुरासवैः ।
वातश्लेष्मभवं शूलं प्लीहानं च विबन्धकम् ।
मन्दाग्निं नाशयेदेतद्दीपनं पाचनं परम् ।।

शार्ङ्गधरसंहिता, मध्यमखण्ड, ६ अध्याय ।

द्रव्य और निर्माणविधि––

सामुद्र लवण ८ तोला, काला नमक (सोंचर) ५ तोला, नौसादर, सेंधानमक धनियां, छोटी पीपल, पीपलामूल, स्याह जीरा, तेजपात, नागकेसर, तालीसपत्र, अम्लबेत––प्रत्येक २-२ तोला, काली मिर्च सफेद जीरा, सोंठ, प्रत्येक १-१ तोला, अनारदाना ४ तोला, दालचीनी और छोटी इलायची प्रत्येक आधा तोला, इनका कपड़छान चूर्ण करके रख लें ।

मात्रा—१।।–३ माशा ।

अनुपान––जल या छाछ ।

उपयोग––यह चूर्ण उत्तम दीपन, पाचन, और अपान वायु तथा मल का अनुलोमन करनेवाला है। मन्दाग्नि तथा वायु और कफ से हुए पेट के दर्द को दूर करता है।

३–शतपत्र्यादिचूर्ण

द्रव्य और निर्माणविधि–

नागरमोथा, जीरा, श्वेत चन्दन, छोटी इलायची, सौंफ, कत्था, संगेजराहत, कबाबचीनी, गिलोय का सत्त्व, खस, वंशलोचन, खसखस, इसबगोल की भूसी, गोखरू, दालचीनी, तमालपत्र, नागकेसर, सारिवा (अनन्तमूल), कमलगट्टे का

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मगज, कमल, और तीखुर (आरारोट प्रत्येक १ भाग; गुलाब के फूल २० भाग और मिश्री ४० भाग लेकर इनका सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण करें।

—स्वानुभूत।

मात्रा——१।। से ३ माशा।

अनुपान——जल।

उपयोग——विदग्धाजीर्ण, अम्लपित्त और पेट की खराबी से होनेवाले मुख-पाक में यह चूर्ण दिया जाता है।

४—रसोनादि वटी

लशुनजीरकगन्धकसैन्धवं त्रिकटुरामठचूर्णमिदं समम्।
सपदि निम्बुरसेन विसूचिकां हरति भो रतिभोगविचक्षणे ।।

वैद्यजीवन।

द्रव्य और निर्माणविधि——

छिलका निकाला हुआ लहसुन २ भाग, स्याह जीरा, सफेद जीरा, शुद्ध गन्धक, सेंधानमक, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपल और घी में सेंकी हींग प्रत्येक १-१ भाग लें। प्रथम लहसुन को पत्थर के खरल में कागजी नीबू के रस में अच्छी तरह पीस, पीछे उसमें अन्य द्रव्यों का कपड़छान चूर्ण मिला, नीबू के रस में ३ दिन मर्दन कर, ३-३ रत्ती की गोलियाँ बना कर सुखा लें।

मात्रा और अनुपान——१-२ गोलियाँ जल के अनुपान से यथावश्यक दिन में ३-४ बार अथवा खाने के बाद दें।

उपयोग——अजीर्ण, विसूचिका और पेट के दर्द में इसका प्रयोग करें। यह गोली उत्तम पाचन, दीपन और वायु का अनुलोमन करनेवाली है।

५ – विड्लवणादिवटी

द्रव्य और निर्माण-विधि--

काला नमक (सोंचर) २० तोला, सेंधा नमक २० तोला, अजवायन, काली मिर्च, छोटी पीपल, चित्रक के मूल की छाल, अजमोद, धनियाँ, डांसरिया (संस्कृत-तिन्तिड़िक; यूनानी-गिर्दसमाक), सूखा पोदीना, घी में सेंकी हुई हींग पीपलामूल, नौसादर प्रत्येक १० तोला ले, सब द्रव्यों का सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण कर, नीबू के रस की ३ भावनाएँ देकर चने के बराबर गोलियाँ बना लें।

स्व० वा० आ० मा० स्वामी श्री लक्ष्मीरामजी से प्राप्त।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मात्रा--२ गोली भोजन करने के पीछे पानी से लें। पेट के दर्द में यथावश्यक दिन में ३-४ वार दें।

गुण और उपयोग-- यह बिड्लवणादिवटी पाचन, दीपन तथा पेट के दर्द और अजीर्ण को दूर करनेवाली है।

६-चित्रकादिवटी

चित्रकं पिप्पलीमूलं द्वौ क्षारौ लवणानि च।
व्योषं हिंग्वजमोदां च चव्यं चैकत्र चूर्णयेत् ॥
गुटिका मातुलुङ्गस्य दाड़िमस्य रसेन वा।
कृता विपाचयत्यामं दीपयत्याशु चानलम् ॥

चरक चि० अ० १५।

द्रव्य और निर्माणविधि--

चित्रक के मूल की छाल, पीपलामूल, सज्जीखार, जबाखार, सेंधानमक, सोंचर (कालानमक), सामुद्रलवण, सांभरलवण, नौसादर, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपल, घी में सेंकी हुई हींग, अजमोद और चव्य प्रत्येक समभाग ले, सबका एकत्र चूर्ण कर, कागजी नीबू, बिजौरा या खट्टे दाडिम (अनार) के रस में ३ दिन मर्दन कर, बराबर गोलियाँ बना, सुखा कर रख लें।

मात्रा --२-४ गोली जल के साथ भोजन के बाद या यथावश्यक दिन में ३-४ बार दें।

उपयोग--चित्रकादिवटी उत्तम पाचन और दीपन है। अजीर्ण, अरुचि और पेट के दर्द में इसका उपयोग करें।

७--अग्नितुण्डीवटी

शुद्धसूतं विषं गन्धमजमोदां फलत्रिकम्।
सर्जिक्षारं यवक्षारं वन्हिसैन्धवजीरकम् ॥
सौवर्चलं विडङ्गानि सामुद्रं त्र्यूषणं तथा।
विषमुष्टिं सर्वसमां जम्बीराम्लेन मर्दयेत् ॥
मरिचाभां वटीं खादेद्वन्हिमान्द्यप्रशान्तये।

शार्ङ्गधर संहिता म० खं० अ० १२।

द्रव्य और निर्माण विधि---

शुद्ध पारद, शुद्ध बच्छनाग, शुद्ध गन्धक, अजमोद, हरड़ का दल, बहेड़ादल, आँवलादल, सज्जीखार, जवाखार, चित्रक के मूलकी छाल, सेंधानमक, जीरा,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सोंचर (कालानमक), वायविडङ्ग, सामुद्र लवण, सोंठ, छोटी पीपल, काली मिर्च सब समभाग और शुद्ध कुचला सबके समान लें। प्रथम पारे-गन्धक की कज्जली बना, उसमें अन्य द्रव्यों का पकड़छान किया हुआ चूर्ण मिला, जम्बीरी नीबू के रस में ३ दिन मर्दन कर, २-२ रत्ती की गोलियाँ बना, सुखा कर रख लें।

मात्रा अनुपान और उपयोग--मन्दाग्नि, अजीर्ण और पेट के दर्द में १-२ गोली जल के अनुपान से भोजन के बाद या यथावश्यक दिन में ३-४ बार दें।

८--महाशङखवटी

पटुपञ्चकहिंगुशङ्खचिञ्चाभसितव्योषबलीश्वरामृपानि।
शिखिशेखरिकाम्लवर्गवारा भृशभाव्यानि यथाऽम्लतां व्रजन्ति।
महाशङ्खवटी ख्याता भोजनान्ते प्रभक्षिता।
दीपनी परमा हन्ति मन्दाग्निग्रहणीमुखान्॥

भैषज्यरत्नावली, अग्निमान्द्याधिकार।

द्रव्य और निर्माणविधि--

सेंधानमक, कालानमक (सोंचर), सामुद्र लवण, सांभर लवण, नौसादर, घी में सेंकी हुई हींग, शङ्खभस्म, इमली का क्षार, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, शुद्ध गन्धक, शुद्ध पारद, शुद्ध बच्छनाग सब समभाग लें। प्रथम पारे-गन्धक की कज्जली कर, उसमें अन्य द्रव्यों का कपड़छान किया हुआ चूर्ण मिला चित्रक के मूल के क्वाथ और अपामार्ग के पत्तों के स्वरस की १-१ तथा बिरोजा, खट्टे दाड़िम (अनार), कागजी नींबू आदि अम्ल फलों के रस की ७ भावना दें, २-२ रत्ती की गोलियाँ बना, सुखाकर रख लें।

मात्रा अनुपान और उपयोग--भोजन के बाद १-२ गोली जल के साथ सेवन करें। इसके सेवन से अन्न का पाचन होता है, जठराग्नि प्रदीप्त होती है और अग्निमान्द्य, अजीर्ण, पेट का दर्द, वात-कफप्रधान ग्रहणीरोग आदि दूर होते हैं। गुरु भोजन खाने के ऊपर इसके लेने से भोजन अच्छी तरह से पच जाता है।

९--अजीर्णारि रस

शुद्धं सूतं गन्धकं च पलमानं पृथक्।
हरीतकी च द्विपला नागरं त्रिपलं स्मृतम्॥
कृष्णा च मरिचं तद्वत् सिन्धूत्थं त्रिपलं पृथक्।
चतुष्पला च विजया मर्दयेन्निम्बुकद्रवैः॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भावयेत् सप्तवारांस्तद्धर्ममध्ये पुनः पुनः ।
सिद्धस्त्वजीर्णारियं प्रसिद्धो भुक्तस्तथास्वाग्निबलं निरीक्ष्य ।
संपाचयत्याशु करोति वन्हिमजीर्णदोषं परिहृत्य पूर्वम् ।।
आहारं द्विगुणं विधाय गितरां पुष्टि परां सन्दिशे-
दापाकं जठरस्थितस्तु बहुधा संपाच्य संरेचयेत् ।।

द्रव्य और निर्माणविधि--

शुद्ध पारद ४ तोला, शूक्ष्म गन्धक ४ तोला, हरड़ का दल ८ तोला, सोंठ १२ तोला, छोटी पीपल १२ तोला, कालीमिर्च १२ तोला, सेंधा नमक १२ तोला, धोकर सुखाई हुई भांग १६ तोला लेवें। प्रथम पारे-गन्धक की कज्जली कर, उसमें अन्य द्रव्यों का कपड़छान किया हुआ चूर्ण मिला, सात दिन नींबू के रस में घोंटकर २-२ रत्ती की गोलियाँ बना लें।

मात्रा--१ से २ गोली भोजन के पीछे जल से सेवन करें।

उपयोग--अजीर्णारि रस के सेवन करने से अच्छी क्षुधा लगती है, अन्न का पाचन होता है और दस्त भी साफ होता है। क्षुधामान्द्य और अजीर्ण में इसका प्रयोग करना चाहिए।

१०--अग्निकुमार रस

रसेन्द्रगन्धौ सहटङ्कणेन समं विषं योज्यमिह त्रिभागम् ।
कपर्दशङ्खाविह नेत्रभागौ मरीचमत्राष्टगुणं प्रदेयम् ।।
सुपक्वजम्बीररसेन घस्रं सिद्धो भवेदग्निकुमार एषः ।
विशूचीशूलवातादिवन्हिमान्द्ये द्विगुञ्जकः ।।
अजीर्णे संग्रहण्यां च प्रयोज्योऽयं निजौषधैः ।

भैषज्यरत्नावली, अग्निमान्द्याधिकार

द्रव्य और निर्माणविधि--

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, अग्नि पर फुलाया हुआ सुहागा १-१ भाग; शुद्ध बच्छनाग ३ भाग; कौड़ी और शंख की भस्म २-२ भाग और कालीमिर्च ८ भाग लें। प्रथम पारे-गन्धक की कज्जली बना, उसमें भस्में और अन्य द्रव्यों का सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण मिला, नींबू के रस में ७ दिन मर्दन कर, २-२ रत्ती की गोलियां बना, सुखाकर रख लें।

मात्रा--१-२ गोली।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनुपान और उपयोग—अग्निमान्द्य, अजीर्ण और पेट के दर्द में जल, छाछ अथवा नीबू और अदरख के रस के साथ इसका सेवन करें।

११-सर्वतोभद्र रस

निश्चन्द्रं गगनं ग्राह्यं द्विकर्षं शुद्धगन्धकम्।
तोलकं तोलकार्धं च हिंगुलोत्थरसं तथा ॥
कर्पूरं केशरं मांसी तेजपत्रं लवङ्गकम्।
जातीकोषफले चैव सूक्ष्मैला करिपिप्पली ॥
कुष्ठं तालीसपत्रं च धातकी चोचमुस्तकम्।
हरीतकी मरीचं च श्रृंगवेरबिभीतकम् ॥
पिप्पल्यामलकं चैवं शाणभगं विचूर्णितम्।
नागवल्लीरसैः पिष्ट्वा वटीं कुर्याद् द्विगुञ्जिकाम् ॥
भक्षयेत् पर्णखण्डेन मधुना सितयाऽपि वा।
हन्त्यजीर्णं विदग्धं च तृष्णामामं विसूचिकाम् ॥
अरुचिं मूत्रकृच्छ्रं च मूर्च्छां च ग्रहणीं वमिम्।
अम्लपित्तं शीतपित्तं रक्तपित्तं विशेषतः।
सर्वतोभद्रनामाऽयं रसो दीपनपाचनः ॥

र० सा० सं०, ज्वराधिकार।

द्रव्य और निर्माणविधि--

अभ्रक भस्म २ तोला, शुद्ध गन्धक १ तोला, हिंगुल से निकला हुआ पारद आधा तोला, कपूर, केशर, जटामांसी, तेजपात, लौंग, जायफल, जावित्री, खस, छोटी इलायची, गज पीपल, कूठ, तालीसपत्र, धाय के फूल, दालचीनी, नागरमोथा, हरड़ का दल, कालीमिर्च, सोंठ, बहेड़ादल, छोटी पीपल और आंवलादल प्रत्येक पाव-पाव तोला लें। प्रथम पारे-गन्धक की कज्जली कर, उसमें अभ्रक-भस्म और केशर डाल, नागरपान के रस में केशर अच्छी तरह मिल जाय इतना घोंट, पीछे अन्य द्रव्यों का सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण मिला, नागरपान के रस में एक दिन मर्दन कर, ३-३ रत्ती की गोलियां बना, छाया में सुखाकर रख लें।

मात्रा--१-२ गोली।

अनुपान—जल, कच्चे नारियल का जल, मीठे दाड़िम का रस या चन्दनादि अर्क।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपयोग—विदग्धाजीर्ण, तृषा, आमदोष, विसूचिका, अरुचि, मूत्रकृच्छ्र, मूर्च्छा, ग्रहणीरोग, वमन, अम्लपित्त, शीतपित्त और रक्तपित्त इन रोगों में सर्वतोभद्र रस का प्रयोग करें। पित्तप्रकृतिवालों के पाचन के विकारों में इसके प्रयोग से अच्छा लाभ होता है।

वक्तव्य--इस योग की विशेष गुणवृद्धि के लिए इसमें—"रससिन्दूर, खस, कपूरकचरी, कवावचीनी और सफेद चन्दन का बुरादा" डालना चाहिए तथा इन योगोक्त केशर, धाय के फूल तथा सोंठ को निकाल देना चाहिए।

१२--जम्बीरलवण वटी

द्रव्य और निर्माण विधि--

जम्बीरी या कागजी नीबू का रस १२० तोला, सेंधानमक १२ तोला, सोंठ २॥ तोला, अजवायन २॥ तोला, सज्जीखार २॥ तोला छोटी पीपल २॥ तोला, घी में सेंकी हुई हींग २॥ तोला, करंजुवे (सं० कण्टकी करञ्ज) के फल को थोड़ा सेक कर निकाला हुआ मगज २॥ तोला, काली मिर्च २॥ तोला, छिला हुआ लहसुन २॥ तोला, श्वेत पुनर्नवा (गदहपूरना-सांठी) के मूल २॥ तोला; सफेद (पीली) सरसों २॥ तोला, जरा सेंका हुआ सफेद जीरा २॥ तोला, अतीस २॥ तोला, सामुद्र लवण २॥ तोला लें। स्वच्छ-सफेद कपड़े से छाने हुए जम्बीरी या कागजी नीबू के रस को काच के बरतना में डाल, उसमें सेंधा नमक का चूर्ण मिला, बरतन के मुँह पर सफेद कपड़ा बाँध कर उसको चार दिन तक दिन में कड़ी धूप और रात को घर रखें। पाँचवें दिन उस रस को मिट्टी के मजबूत बरतन में डाल कर मन्दी आँच पर पकावें और कलड़ी के खोचे से हिलाते रहें। जब रस गाढ़ा हो जाय, तब उसमें अन्य द्रव्यों का सूक्ष्म कदड़छान चूर्ण मिला, नीचे उतार, ठंढा होने पर ३-३ रत्ती की गोलियाँ बना कर सुखा लें।

मात्रा और अनुपान--दो गोली ठंढ़े जल के अनुपान से भोजन के बाद या यथावश्यक दिन में ३-४ बार दें।

उपयोग—ये गोलियां उत्तम पाचन-दीपन हैं। मन्दाग्नि, अरुचि, पेट का दर्द, अजीर्ण और अफारे में इनसे अच्छा लाभ होता है।

———

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वमनाधिकार--चतुर्थ

१--रसादिचूर्ण

रसबलिघनसारकोलमज्जामरकुसुमाम्बुधरप्रियंगुलाजाः ।
मलयजमगधात्वगेलपत्रं दलितमिदं परिभाव्य चन्दनाद्भिः ॥
मधुमरिचयुतं रजोऽस्य माषं जयति वमिं प्रबलां विलिह्य मर्त्यः ।

योगरत्नाकर, वमनाधिकार ।

द्रव्य और निर्माणविधि--

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, कपूर, बेर की गुठली का मग्ज, लौंग, नागरमोथा, प्रियंगु (गुजराती-घंउला), धान का लावा (खील), सफेद चन्दन, छोटी पीपल, दालचीनी, छोटी इलायची और तेजपात प्रत्येक सम भाग लें। प्रथम पारेगन्धक की कज्जली बना, उसमें अन्य द्रव्यों का सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण मिला, चन्दन के अर्क में या चन्दन का चूर्ण (१ भाग; जल २ भाग) में १२ घंटा भिगोकर पकड़े से छान कर उस जल में एक दिन मर्दन कर के छाया में सुखा लें।

मात्रा--२-६ रत्ती। २-३ घंटे में या यथावश्यक दिन में कई बार दें।

अनुपान--मधु (शहद), ठण्डा जल, लाजमण्ड, चन्दनादि अर्क या पोदीने का रस।

उपयोग--वमन (उल्टी-कै), अम्लपित्त, हिचकी और विदग्धाजीर्ण में यह उत्तम योग है। इसका केवल या इसके साथ २ रत्ती जहरमोहरापिष्टी मिला कर उपयोग करें।

२--मयूरपिच्छभस्मयोग

मयूरपक्षं निर्दह्य तद्भस्म मधुमिश्रितम् ।
लीढ्वा निवारयत्याशु छर्दिं सोपद्रवामपि ॥

योगरत्नाकर, वमनाधिकार ।

द्रव्य और निर्माणविधि-

मोर के पंख (पर) को दियासलाई या घी की बत्ती से जला, उसकी भस्म बना, पीस, कपड़छान करके रख लें, पर का जो ऊपर का चन्द्रिकावाला भाग होता है, उसमें अधिक गुण होता है। अतः उतने अंश की भस्म करें तो अच्छी होगी।

मात्रा, अनुपान और उपयोग--२ रत्ती भस्म पाव तोला मधु (शहद) में मिला कर दें। इस योग से वमन और हिचकी में अच्छा लाभ होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

३–रसादिवटी

द्रव्य और निर्माणविधि, मात्रा, अनुपान तथा उपयोग–

पृ० ३ पर देखें। रसादि वटी २–४ रत्ती मधु, चन्दनादि अर्क, लाजमण्ड अथवा पोदीने के रस या अर्क के साथ देने से वमन और हिचकी में अच्छा लाभ होता है। इसके साथ २ रत्ती जहरमोहरा–पिष्टी मिला कर देने से विशेष गुण होता है।

४–लाजमण्ड

द्रव्य और निर्माणविधि–

धान का लावा (खील) १ तोला, छोटी इलायची २–४ नग, लौंग २–४ नग, मिश्री पाव से आधा तोला और जल २० तोला, सबको एकत्र अग्नि पर १०–२० उफान आवे इतना पका, ठण्डा होने पर कपड़े से छान लें।

मात्रा और उपयोग–इसमें से १–२ चम्मच पानी थोड़ी–थोड़ी देर से रोगी को पिलावें। यदि वमन हरा, पीला और कड़ुवा (तीता) होता हो तो इसमें थोड़ा कागजी नीबू का रस मिला कर दें। इसको बरफ से ठण्डा करके भी दे सकते हैं। उल्टी, हिचकी और अधिक प्यास लगने में यह उत्तम औषध और पथ्य है।

सेब, मीठा वेदाना–अनार (दाड़िम) और गन्ना (ईख) वमन और हिचकी में उत्तम पथ्य है।

५–छर्दिरिपु

द्रव्य और निर्माणविधि––

कपूर कचरी का सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण कर, उसको ३ घंटा चन्दनादि अर्क में मर्दन कर, २–२ रत्ती की गोलियाँ बना, छाया में सुखा कर रख लें।

स्व० वा० वैद्य तिलकचन्द ताराचन्द।

मात्रा अनुपान और उपयोग––छर्दिरिपु की २–३ गोली केवल या इनके साथ मयूरपिच्छभस्म २ रत्ती और जहरमोहरापिष्टी २ रत्ती मिला कर जल, लाजमण्ड, चन्दनादि अर्क या पोदीने के अर्क के अनुपान से दें। वमन बन्द करने के लिए यह उत्तम योग है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अम्लपित्ताधिकार-पञ्चम

१–अविपत्तिकर चूर्ण

त्रिकटु त्रिफला मुस्तं विडं चैव विडङ्गकम् ।
एला पत्रं च चूर्णानि समभागानि कारयेत् ।।
सर्वमेकीकृतं यावल्लवङ्गं तत्समं भवेत् ।
सर्वचूर्णाद् द्विगुणितं त्रिवृच्चूर्णं प्रदापयेत् ।।
सर्वमेकीकृतं यावत्तावच्छर्करयाऽन्वितम् ।
अविपत्तिकरं चूर्णमम्लपित्तविनाशनम् ।।

भैषज्यरत्नावली ।

द्रव्य और निर्माण विधि--

सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, हरड़ का दल, गहेड़ादल, आंवलादल, नागरमोथा, नौसादर, बायबिडङ्ग, छोटी इलायची और तेजपात प्रत्येक १-१ तोला, लौंग ११ तोला, निशोथ का मूल २२ तोला और मिश्री ४४ तोला ले; सबका कपड़छान चूर्ण कर के रख लें ।

मात्रा और अनुपान--$\frac{1}{4}$ से आधा तोला तक ठंढे जल या कच्चे नारियल के जल के साथ सबेरे में या रात को सोते समय दें ।

उपयोग--अम्लपित्त और परिणामशूल में प्रथम इस चूर्ण से विरेचन करा के पीछे अन्य योग देने से विशेष गुण होता है ।

२–सूतशेखर रस

सूतं स्वर्णं निर्विषा च टंकणं रौप्यभस्मकम् ।।
व्योषमुन्मत्तबीजं च गन्धकं ताम्रभस्मकम् ।।
चातुर्जातं शङ्खभस्म बिल्वमज्जा कचोरकम् ।
भृङ्गराजरसैर्मर्द्यं त्रिसप्तदिवसावधि ।।
गुञ्जामात्रां वटीं कृत्वा दद्याद्योग्यानुपानतः ।
हृद्दाहभ्रममूर्च्छाघ्नो वान्तिशूलामयापहाः ।।
अम्लपित्तहरश्चापि रसोऽयं सूतशेखरः ।

योगरत्नाकर से किञ्चित्परिवर्तित ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्रव्य और निर्माणविधि--

शुद्ध पारद, सुवर्ण भस्म, निर्विषीचूर्ण शुद्ध, सुहागा, रौप्यभस्म, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, शुद्ध धतूरे के बीज, शुद्ध गन्धक, ताम्रभस्म, दालचीनी, तेजपात, छोटी इलायची, नागकेशर, शंखभस्म, बेलगिरि और कचूर प्रत्येक समभाग लें। प्रथम पारे-गन्धक की कज्जली कर, उसमें भस्में तथा अन्य द्रव्यों का कपड़छान चूर्ण मिला, २१ दिन भांगरे के स्वरस में मर्दन कर, २-२ रत्ती की गोलियाँ बना, छाया में सुखा कर रख लें।

मात्रा--१ गोली। ३-४ घंटे से दें।

अनुपान--१।। माशा शहद और ३ माशा गाय का घी, मीठे बेदाने, दाड़िम का रस या शर्बत अथवा लाज़मण्ड।

उपयोग--अम्लपित्त, छाती की जलन, चक्कर आना, मूर्च्छा, वमन पेट का शूल आदि पित्ताविकृतिप्रधान रोगों में इससे अच्छा गुणहोता है।

३--द्राक्षादि चूर्ण

द्राक्षा लाजसितोत्पलं समधुकं खर्जूरगोपीतुगा-
ह्रीवेरामलकाब्दचन्दननतं कंकोलजातीफलम् ।।
चातुर्जातकणं सधान्यकमिदं चूर्णं समां शर्करां-
दत्त्वा भक्षितमम्भासाऽतिसरणं पित्तं सदाहं जयेत् ।।
मूर्च्छां छर्दिमरोचकं मदभ्रमौ हृत्कण्टदाहं तृषां-
रक्तार्शोरुधिरप्रमेहहरणं द्राक्षादिचूर्णोत्तमम् ।।

योगरत्नाकर, राजयक्ष्माधिकार से किञ्चित्परिवर्तित।

द्रव्य और निर्माणविधि--

मुनक्का, धान का लावा (खील), श्वेत कमल, मुलेठी, गुठली निकाली हुआ छुहारा, अनन्तमूल, वंशलोचन, खस, आँवला, नागरमोथा, सफेद चन्दन, तगर, कवावचीनी (शीतलमिर्च), जायफल, दालचीनी, तेजपात, छोटी इलायची, नागकेशर, छोटी पीपल और धनियाँ सब समभाग तथा मिश्री सब के बराबर लेकर कपड़छान चूर्ण करें।

मात्रा--१-३ माशा।

अनुपान--ठंढ़ा जल। ३-४ घंटे से दिन में ३-४ बार दें।

उपयोग--अन्न के विदाह से होने वाली छाती और कण्ठ की जलन, पैत्तिक अतिसार, मूर्च्छा वमन, अन्न पर अरुचि, मद (नशा सा रहना), चक्कर आना,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अधिक प्यास लगाना, रक्तार्श और पेशाब में रक्त आना इत्यादि पैत्तिक व्याधियों के लिये यह उत्तम योग है। इस चूर्ण का अकेला या इसमें रसादि वटी और जहर-मोहरापिष्टी २-२ रत्ती मिला करें प्रयोग करे। इस चूर्ण को पैत्तिक ग्रहणी रोग में पर्पटीयोगों के, रक्तपित्त में चन्द्रकलारस के और अम्लपित्त में अभ्रकभस्म या सूतशेखर के साथ मिला कर देने से विशेष लाभ होता है। रक्तार्श, रक्तप्रदर और रक्तपित्त में इसके साथ १ माशा खूनखराबा (यूनानी-दम्म उल अखवेन) तथा नागकेशर का चूर्ण मिला कर इसका प्रयोग करें।

४--द्राक्षादिगुटिका

द्राक्षापथ्ये समे कृत्वा तयोस्तुल्यां सितां क्षिपेत्।
संकुट्याक्षद्वयमितां तत्पिण्डीं कारयेद्भिषक् ॥
तां खादेदम्लपित्तार्तो हृत्कण्ठदहनापहाम्।

द्रव्य और निर्माणविधि--

धोकर बीज निकला हुआ मुनक्का १ भाग, गुठली निकाली हुई बड़ी हर्रे १ भाग और मिश्री २ भाग। प्रथम मुनक्का को खूब महीन पीस, पीछे उसमें हर्रेंदल और मिश्री का कपड़छान चूर्ण मिला कर १ तोले के गोले बना लें।

मात्रा और अनुपान--इसमें से १ गोला सोते समय कुनकुने जल से खावें।

उपयोग--इसके सेवन से छाती और कण्ठ की जलन, अम्लपित्त और दस्त की कब्जियत दूर होती है।

पथ्य--अम्लपित्त में गेहूं या जौ की रोटी; मूंग की दाल या साबुत मूंग का यूष (रसा); परवल, लौकी, तोरई, नेनुवा, चौलाई, बथुआ इनका शाक (साग); अनार (दाड़िम), सेव, नारियल, केला, आम आदि मीठे फल; मसाले में धनियाँ, जीरा, हल्दी, सेंधानमक और थोड़े प्रमाण में कच्चा अदरक; इतने पर रोगी को रखना चाहिए। गोरस में दूध, ताजा मक्खन और घी दे सकते हैं। अम्ल, कटु और तिक्त रसवाले द्रव्य प्रायः अपथ्य हैं। रोगी खटाई खाना चाहे तो आंवले की खटाई दाल-साग में पिलावें। तेल या घी में तली हुई पूड़ी, पकौड़ी आदि अपथ्य हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शूलाधिकार-षष्ठ

१--धात्रीलौह

धात्रीचूर्णस्याष्टौ पलानि चत्वारि लोहचूर्णस्य ।
यष्टीमधुकरजश्च द्विपलं दद्यात् पटे घृष्टम् ।।
अमृताक्वाथेन तच्चूर्णं भाव्यं च सप्ताहम् ।
चण्डातपेषु शुष्कं भूयः पिष्ट्वा घटे स्थाप्यम् ।
घृतमधुना संयुक्तं भुक्तादौ मध्यतस्तथाऽन्ते च ।
भुक्तस्यादौ शमयति रोगान् पित्तानिलोद्भूतान् ।।
मध्येऽन्ने विष्टम्भं जयति नृणां विदह्यते नान्नम् ।
शूलं परिणामभवं भुक्तान्ते शिलितं जयति ।।

द्रव्य और निर्माणविधि

अच्छे पके हुए आंवले को पत्थर से तोड़, उसकी गुठली निकाल, छाया में सुखाकर उसका कपड़छान चूर्ण करें। इस प्रकार तैयार किया हुआ आँवले का चूर्ण ३२ तोला, लोहभस्म १६ तोला और चक्कू से थोड़ा ऊपर का हिस्सा छीलकर पीछे कपड़छान किया हुआ मुलेठी का चूर्ण ८ तोला लें। सब को एकत्र करके ताजी गिलोय के स्वरस में सात दिन मर्दन कर, कड़ी धूप में सुखा, कपड़-छान करके शीशी में भर लें।

मात्रा--५ से १० रत्ती

अनुपान--मधु और घृत।

उपयोग--भोजन के पहले सेवन करने से पित्त और वायु के रोग शांत होते हैं, भोजन के मध्य में सेवन करने से मल का विष्टम्भ (कब्ज) और अन्न का विदाह दूर होता है तथा भोजन के अन्त में सेवन करने से परिणामशूल दूर होता है। परिणामशूल और अम्लपित्त के लिये यह उत्तम योग है।

२--शूलवर्जिनीवटी

रसगन्धकलोहानां पलार्धं शङ्खभस्मतः ।
टंकणं रामठं शुण्ठी त्रिकटु त्रिफला शटी ।।
त्वगेलापत्रतालीशं जातीफललवंगकम् ।
यवानी जीरकं धान्यं प्रत्येकं तोलकं शुभम् ।।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चतुर्गुञ्जामिता वट्यो धात्रीस्वरसपेषिताः ।
शीततोयानुपानेन छागीदुग्धेन वा पुनः ॥
शूलमष्टविधं हन्ति भक्षिता शूलवर्जिनी ।

भैषज्यरत्नावली से किञ्चित्परिवर्तित ।

द्रव्य और निर्माणविधि--

शुद्ध पारद २ तोला, शुद्ध गन्धक २ तोला, लोहभस्म २ तोला, शंखभस्म २ तोला, शुद्ध सुहागा १ तोला, घी में सेंकी हुई हींग १ तोला, सोंठ १ तोला, काली मिर्च १ तोला, छोटी पीपल १ तोला, हरड़ का दल १ तोला बहेड़ादल १ तोला, आँवलादल १ तोला, कचूर १ तोला, दालचीनी १ तोला, छोटी इलायची १ तोला, तेजपात १ तोला, तालीसपत्र १ तोला, जायफल १ तोला, लौंग १ तोला, अजवायन १ तोला, जीरा १ तोला और धनियाँ १ तोला लें। प्रथम पारे-गन्धक की कज्जली बना, उसमें अन्य भस्में तथा वनस्पतियों का कपड़छान किया हुआ चूर्ण मिला, ३ दिन आँवले के स्वरस में या बकरी के दूध में मर्दन कर, ४-४ रत्ती की गोलियाँ बना, छाया में सुखा कर रख लें।

मात्रा और अनुपान--१-२ गोली सबेरे-शाम बकरी के दूध से अथवा १-२ गोली भोजन के पीछे ठंडे जल से दें।

उपयोग—सर्व प्रकार के शूल में, विशेषतः परिणामशूल में इसका उपयोग करें।

३—विषाणभस्मयोग

द्रव्य और निर्माणविधि--

रससिन्दूर १ भाग और सांभर या हिरण के सींग की भस्म १६ भाग; दोनों को एक साथ एक दिन मर्दन कर के रख छोड़ें।

मात्रा और अनुपान--४-८ रत्ती गाय के घी या मधु के साथ दें।

उपयोग—पार्श्वशूल (पसली के दर्द में) और छाती के दर्द में इस योग से अच्छा लाभ होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शीत पित्ताधिकार–सप्तम्

१--हरिद्राखण्ड

निशाभयात्रिवृतानां प्रत्येकं कुडवं भवेत् ।
दार्वी मुस्ता यवान्यौ द्वे चित्रकः कटुरोहिणी ॥
आजाजी पिप्पली शुण्ठी त्रिजातं च बिडङ्गकम् ।
अमृता वासकः कुष्ठं त्रिफला चव्यधान्यकम् ॥
मृतलोहं मृतं चाभ्रं प्रत्येकं कोलसंमितम् ।
सार्धप्रस्थद्वयं ग्राह्यं सिताया मृण्मये नवे ॥
पचेन्मृद्वग्निना वैद्यस्ततश्चूर्णं विनिक्षिपेत् ।
कर्षार्धं च ततः खादेदुष्णतोयानुपानतः ॥
शीतपित्तं निहन्त्येष हरिद्राखण्डसंज्ञकः ।

भैषज्यरत्नावली से किञ्चित्परिवर्तित ।

द्रव्य और निर्माणविधि--

हल्दी, निशोथ और हरड़ का दल प्रत्येक १६ तोला, दारुहल्दी, नागरमोथा, अजवायन, अजमोद, चित्रक के मूल की छाल, कुटकी, जीरा, छोटी पीपल, सोंठ, छोटी इलायची, दालचीनी, तेजपात, बायबिडङ्ग, गिलोय, अडूसा, कूठ, हरड़ का दल, बहेड़ादल, आँवलादल, चव्य (चाब), धनिया, लोहभस्म और अभ्रकभस्म प्रत्येक आधा तोला तथा चीनी १६० तोला लें। प्रथम मिट्टी के नये बरतन में चीनी में थोड़ा जल मिलाकर चाशनी करें। चाशनी जब बूरा बनने योग्य हो जाय तब उसको अग्नि पर से नीचे उतार, उसमें भस्में तथा अन्य द्रव्यों का कपड़छान चूर्ण मिला कर रख लें।

मात्रा और अनुपान—३-६ माशा दिन में दो-तीन बार गरम जल से दें।

उपयोग—शीतपित्त (पित्ती–छपाकी) के लिये यह उत्तम योग है। अम्लपित्त के लिये जो पथ्यापथ्य लिखा है, वह शीतपित्त के लिये भी समझना चाहिये।

शुद्ध सज्जीखार या सोडा बाई कार्ब एक तोला, २० तोला गरम जल में मिला, उसमें महीन कपड़ा भिगोकर शीतपित्त के ददोड़े (दाफड़) पर फिराने से ददोड़े शीघ्र बैठ जाते हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आनाहा (कब्ज-मलावष्टम्भा) धिकार-अष्टम्

१—पञ्चसकारचूर्ण

द्रव्य और निर्माणविधि--

सनाय ४ भाग, घी या एरंड तैल लगाकर सेंकी हुई जौहरड़ (छोटी हरड़) २ भाग, सौंठ १ भाग, सौंफ २ भाग, त्रिवृताचूर्ण १ भाग, कालादाना २ भाग, जंगली पुदीना १ भाग, सोंचर नमक १ भाग और सेंधा नमक १ भाग ले सबको एक साथ कूट, कपड़छान चूर्ण करके रख लें।

मात्रा अनुपान और उपयोग—यह चूर्ण ३-६ माशा अकेला या इसमें १ माशा लवणभास्कर चूर्ण मिलाकर प्रातःकाल में या रात को सोते समय गुनगुने जल के साथ लेने से बिना कष्ट (पेट की ऐंठन) के १—२ दस्त साफ हो जाते हैं। कफ-वात प्रकृति तथा कफ और वात के विकारों में इसका प्रयोग करना चाहिये।

२—यष्ट्यादिचूर्ण

द्रव्य और निर्माणविधि--

मुलेठी २ भाग, सनाय २ भाग, सौंफ १ भाग, शुद्ध गन्धक १ भाग और मिश्री ६ भाग ले, सबको एक साथ कूट, कपड़छान चूर्ण करके रख लें। इस चूर्ण का कई वैद्यों ने मधुकादिचूर्ण नाम रखा है। कई फार्मेसीवाले इसको स्वादिष्टविरेचन के नाम से बेचते हैं। डाक्टरी मेटेरिया मेडिका में इसको पल्विस् ग्लिसह्लाइझा कम्पाउन्ड नाम दिया है।

मात्रा अनुपान और उपयोग--३—६ माशा सबेरे या रात को सोते समय गुनगुने जल के साथ खाने से बिना कष्ट के २-३ दस्त इससे साफ हो जाते है। अर्श (बवासीर) वाले को कब्ज दूर करने के लिये इसका प्रयोग करना अच्छा है।

३—मञ्जिष्ठादिचूर्ण

द्रव्य और निर्माणविधि--

मजीठ १ भाग, छोटी इलायची १ भाग, सौंफ १ भाग, सोनागेरू २ भाग, पाषाणभेद १ भाग, कलमी सोरा २ भाग, गोखरू १ भाग, रेवन्दचीनी १ भाग, घी लगाकर सेंकी हुई छोटी हरड़ २ भाग, बड़ी हर्रे का दल २ भाग, बहेड़ादल २ भाग,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आंवलादल २ भाग, गुलाब के फूल २ भाग और सनाय ४ भाग ले, सबको एक साथ कूट, कपड़छान चूर्ण कर के रख लें।

मात्रा और अनुपान—यह चूर्ण ३—६ माशे प्रातःकाल या रात को सोते समय ठण्डे या गुनगुने जल के साथ लेने से १-२ दस्त बिना कष्ट के साफ होते हैं।

गुण और उपयोग--यह चूर्ण दस्त और पेशाब साफ लानेवाला और रक्त-शोधक है। मल और मूत्र की रुकावट (कब्ज), अर्श-बवासीर और रक्तातिसार में इसके प्रयोग से विशेष लाभ होता है। पित्तप्रकृति और रक्त तथा पित्त के विकारों में इसका प्रयोग करना चाहिए।

४–सुखविरेचनीवटी

द्रव्य और निर्माणविधि--

जमालगोटे के बीज को फोड़ कर उसके मग्ज (मींगी) की दो दाल कर लें। ऐसी २६ दाल को रात को एक कलईदार पात्र में उबलते हुए पानी में डालकर रातभर ढांक कर रख दें। सबेरे दालं को हाथ से मसल, जल से धो, खरल में डालकर उनको खूब घोंटें। दाल अच्छी तरह पिस जाने पर उसमें दो तोला सोंठ का कपड़छान चूर्ण मिला, जल से ३ घंटा मर्दन कर, २-२ रत्ती की गोलियां बना, सुखाकर रख लें।

मात्रा और अनुपान उपयोग---रात को सोते समय १ गोली ठंढे जल से निगलने से सबेरे-एक दस्त साफ हो जाता है।

वै० भू०, पं० गोवर्धनशर्मा छांगाणीजी से प्राप्त।

५–त्रिवृतादिलेह

सक्षौद्रां शर्करां पक्त्वा कुर्यान्मृभ्दाजने नवे।
क्षिपेच्छीते त्रिवृच्चूर्णं त्वक्पत्रमरिचैः सह॥
मात्रया लेह्येदेतदीश्वराणां विरेचनम्।

द्रव्य और निर्माणविधि--

शक्कर (चीनी) १६ तोला और शहद (मधु) १६ तोला को कलईदार बरतन में थोड़ा जल देकर पकावें। जब अवलेह बनने योग्य चाशनी हो जाय तब उसको नये मिट्टी के बरतन में छोड़, उसमें निशोथ १२ तोला, दालचीनी १ तोला, तेजपात १ तोला और कालीमिर्च १ तोला इनका सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण मिला कर लेह बना लें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मात्रा, अनुपान और उपयोग—आधे से १ तोला तक गरम जल के साथ प्रातःकाल में लेने से २-३ दस्त बिना कष्ट हो जाते हैं।

६--ईसबगोल की भूसी का योग

द्रव्य और निर्माणविधि--

नयी साफ की हुई इसबगोल की भूसी आधा तोला रात को सोते समय गरम जल या दूध के साथ लेने से सबेरे एक मल फूला हुआ दस्त साफ हो जाता है।

७--तरुण्यादिकषाय

द्रव्य और निर्माणविधि--

गुलाब के फूल १ तोला, सनाय १ तोला, सौंफ १ तोला और मुनक्का २ तोला लेकर सबको बिना कूटे ही रात को २० तोला जल में भिगों दें। सबेरे पका कर पाँच तोला जल बाकी रहे तब उसमें १ तोला यास सर्करा (यूनानी तुरंजबीन) या आधा तोला मिश्री मिला, कपड़े से छान कर पिलावें। इससे २-३ दस्त बिना कष्ट के साफ हो जाते हैं।

८--सनाय की फली का योग

द्रव्य और निर्माणविधि--

सनाय की फली (सेम) १० से २० बिना कुटी हुई रात को ५-७ तोले उबलते हुए जल में मिट्टी या काच के बरतन में भिगोकर रख दें। सबेरे हाथ से मसलकर कपड़े से छान लें। इसमें ३ माशा चीनी या शहद मिलाकर पीने से १-२ दस्त खुलासा हो जाते हैं।

अन्य योग--ज्वराधिकार में कहे हुए विश्वतापहरण और अश्वकञ्चुकी इन दो योगों का भी विरेचन के लिये अच्छा उपयोग होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अर्शोऽधिकार–नवम्

१–अर्शोघ्नीवटी

द्रव्य और निर्माणविधि—

निंबोली (नीम के फल की मींगी) २ तोला, बकायन के फली की मींगी २ तोला, खूनखराबा (यूनानी—दम उल अखवेन) २ तोला, तृणकान्त (यूनानी कहरवा) की अर्कगुलाब या चन्दनादि अर्क से बनाई हुई पिष्टी २ भाग और शुद्ध रसौत (दारुहल्दी का घन) ६ भाग लें। प्रथम निंबोली और बकायन की मींगी को खूब महीन, पीस, पीछे अन्य द्रव्य मिला, घोंटकर ३-३ रत्ती की गोलियाँ बना लें।

मात्रा और अनुपान——२-२ गोली दिन में ३-४ बार ठंढे जल से दें।

उपयोग—इससे सूखे और खूनी (रक्तार्श) दोनों प्रकार के अर्श में अच्छा लाभ होता है।

२–योगकेशर-योग

द्रव्य और निर्माणविधि—

असली नागकेशर १ भाग और खूनखराबा (यूनानी——दम उल अखवेन) १ भाग दोनों का कपड़छान चूर्ण करके रख लें।

मात्रा अनुपान और उपयोग——यह योग २ माशा दिन में ३-४ बार यथा-वश्यक मोसम्बी, मीठा अनार, दूर्वा या हरे धनिये की पत्ती——इनमे से किसी के रस के साथ या उदुम्बरसार १।।-३ माशा ५ तोला ठंढे जल में मिलाकर उसके साथ देने से अर्श का रक्त बन्द होता है।

३–सूरणवटक

सूरणो वृद्धदारुश्च भागैः षोडशभिः पृथक्।
मुशलीचित्रको ज्ञेयावष्टभागमितौ पृथक्॥
शिवा बिभीतको धात्री विडङ्गं नागरं कणा।
भल्लातः पिप्पलीमूलं तालीशं च पृथक् पृथक्॥
चतुर्भागप्रमाणानि त्वगेला केशरं तथा।
द्विभागमात्राणि पृथक् ततस्त्वेकत्र चूर्णयेत्॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्विगुणेन गुडेनाथ वटकान् कारयेद् बुधः ।
प्रबलाग्निकरा ह्येते तथाऽर्शोनाशनः परम् ।।

शार्ङ्गधर संहिता म० खं० अ० ७ ।

द्रव्य और निर्माणविधि--

सुखाया हुआ सूरण (जमीकन्द) १६ तोला, बिधारा १६ तोला; काली मुसली ८ तोला, चित्रक के मूल की छाल ८ तोला; हरड़ का दल, बहेड़ादल, आँवला दल, बायबिड़ङ्ग, सोंठ, छोटी पीपल, शुद्ध भिलावा, पीपलामूल और तालीसपत्र प्रत्येक ४-४ तोला; दालचीनी, छोटी इलायची और नागकेशर प्रत्येक २-२ तोला; इन सबका कपड़छान चूर्ण कर, सब चूर्ण से दो गुने (२०४ तोले) १ साल के पुरानेगुड़ में अच्छी तरह मिला, ३-३ माशे के वटक बनाकर छोड़े ।

मात्रा--१-२ वटक ।

अनुपान--जल या दूध ।

उपयोग--शुष्कार्श में इसका उपयोग करें । विशेषतः रोगी की जठराग्नि मन्द हो तब इसके सेवन से अग्नि प्रदीप्त होकर अर्श में लाभ होता है ।

वक्तव्य--अर्शवालों को प्रायः क़ब्जियत रहती है, अतः उसको रात को सोते समय यष्ट्यादि चूर्ण, मंजिष्ठादि चूर्ण या बड़ी हर्रे के दल का चूर्ण यथावश्यक देना चाहिए ।

४-अभयारिष्ट

हरीतकीनां प्रस्थार्धं प्रस्थमामलकस्य च ।
स्यात् कपित्थाद्दशपलं ततोऽर्धा चेन्द्रवारुणी ।।
विडङ्गं पिप्पली लोध्रं मरिचं शतपुष्पिका ।
द्विपलांशं जलस्यैतच्चतुर्द्रोणे विपाचयेत् ।।
द्रोणशेषे रसे तस्मिन् धातक्याः कुडवं क्षिपेत् ।
चातुर्जातस्य कुडवं मृद्विकाप्रस्थमेव च ।।
गुडस्य द्वितुलां तिष्ठेत्तत् पक्षं घृतभाजने ।
पक्षादूर्ध्वं भवेत् पेया ततो मात्रा यथाबलम् ।।
अस्याभ्यासादरिष्टस्य गुदजा यान्ति संक्षयम् ।
शोफारुचिकृमिप्लीहयकृद्गुल्मोदरापहः ।।
सिद्धोऽयमभयारिष्टो बलवर्णाग्निवर्धनः ।

चरक चि० अ० १४ से किञ्चित्परिवर्तित ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्रव्य और निर्माणविधि--

बड़ी हरें गुठली निकाली हुई ३२ तोला, आँवलादल ६४ तोला; पके कैथ का गूदा ४० तोला, इन्द्रायन के ताजे फल या मूल २० तोला, बायबिडङ्ग, छोटी पीपल, लोध, कालीमिर्च और सौंफ प्रत्येक ८-८ तोला; सबको जौकुट कर, ४०९६ तोले जल में पकावें, जब चौथा हिस्सा (१०२४) तोला जल बाकी रहे तब ठंढा करके कपड़े से छान लें। पीछे उसमें ८०० तोला गुड़, ६४ तोला धोकर कुटी हुई मुनक्का, धाय के फूल १६ तोला दालचीनी ४ तोला, तेजपात ४ तोला, छोटी इलायची ४ तोला और नागकेशर ४ तोला—इनका कपड़छान चूर्ण मिलाकर पेचदार ढ़क्कन की चीनी मिट्टी की बरनी में या सागौन की लकड़ी के पीपे में डाल कर १५ दिन रहने दें। १५ दिन के बाद छान, फिर उसी बरतन को जल से स्वच्छ धोकर उसमें भर दें।

मात्रा और अनुपान-- २ से ४ तोला तक, उतना ही जल मिला कर प्रातःकाल या सबेरे-शाम दें।

उपयोग--अर्श (बवासीर), शोथ, अरुचि पेट के कृमि, प्लीहा और यकृत्-की वृद्धि गुल्म तथा उदर-रोगों में इसके सेवन से अच्छा लाभ होता है और मलावष्टम्भ (कब्ज) दूर होता है।

अन्य योग—राल का मलहम और गुलाबी मलहम अर्श पर लगाने से जलन और पीड़ा शांत होती है। ताजी मेंहदी पीस कर उसका कल्क या भाँग जल में पीस कर उसका कल्क लगाने से मस्से की जलन और पीड़ा शांत होती है। दशांग लेप ६ माशा, गेहूँ का आटा २-४ तोला, घी ६ माशा और शहद ६ माशा, इन-को जल में पकाकर उसकी पुलटिस बाँधने से मस्से की सूजन और पीड़ा कम होती है।

कृमिरोगाधिकार-दशम

१--मूस्तादि योग

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, नागरमोथा, पलास (ढाक-टेसू) के बीज सेंके हुए, वायबिडङ्ग छिलका निकाला हुआ, दाड़िम के मूल या वृक्ष की छाल, करञ्जुए (कंजे) का मग्ज (मींगी) सेंका हुआ, इन्द्रजव सेंका हुआ, कमीला और

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

किरमानी अजवायन प्रत्येक १-१ भाग, अजवायन का सत्त्व और सेंकी हुई हींग प्रत्येक आधा भाग लें। प्रथम पारे-गन्धक की कज्जली बना, उसमें अन्य द्रव्यों का कपड़छान चूर्ण मिला, अनन्नास के पत्तों के रस में एक दिन मर्दन कर, ४-४ की रत्ती गोलियाँ बना, छाया में सुखाकर रख लें।

मात्रा—१-२ गोली।

अनुपान—१-२ गोली खिलाकर ऊपर से नागरमोथा, मूसाकानी, पलास के बीज, बायबिडङ्ग, दाड़िम के वृक्ष की छाल, अजवायन, दोने की पत्ती, किरमानी अजवायन, सुपारी, देवदार, सहिंजन के बीज, हरड़ादल, बहेड़ादल, आँवलादल, खैर की लकड़ी का बुरादा, नीम की अन्तरछाल और इन्द्रजव समभाग लें, जौकूट कर, उसमें से १ तोला द्रव्य को १६ तोला जल में पका, ४ तोला जल बाकी रहे तब छानकर पिलावें।

उपयोग—मुस्तादियोग के सेवन से पेट के कृमि और कृमियों से होनेवाले उपद्रव दूर होते हैं। ७ से २१ दिन तक इसका सेवन करना चाहिए।

पाण्डुरोगाधिकार—एकादश

१—योगराज

त्रिफलायास्त्रयो भागास्त्रयस्त्रिकटुकस्य च।
भागश्चित्रकमूलस्य बिडङ्गानां तथैव च॥
पंचाश्मजतुनो भागाः पंच रूप्यमलस्य च।
माक्षिकस्य च शुद्धस्य लोहस्य रजसस्तथा॥
अष्टौ भागाः सितायाश्च तत् सर्वं सूक्ष्मचूर्णितम्।
माक्षिकेणाप्लुतं स्थाप्यमायसे भजने शुभे॥
मात्रषयमितां मात्रां ततः खादेद्यथाग्निना।
योगराज इति ख्यातो योगोऽयममृतोपमः॥
रसायनमिदं श्रेष्ठं सर्वरोगहरं शिवम्।
पाण्डुरोगं विषं कासं यक्ष्माणं विषमज्वरम्॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुष्टान्यजरकं मेहं शोषं श्वासमरोचकम् ।
विशेषाद्धन्त्यपस्मारं कामलां गुदजानि च ।।
चरक चि० अ० १६ ।

द्रव्य और निर्माणविधि–

हरड़ का दल १ भाग, बहेड़ादल १ भाग, आँवलदाल १ भाग, सोंठ १ भाग, काली मिर्च १ भाग, छोटी पीपल १ भाग, चित्रक के मूल की छाल १ भाग, बायबिडङ्ग १ भाग, लोहशिलाजतु ५ भाग, रौप्यशिलाजतु ५ भाग, माक्षिक भस्म ५ भाग, लोहभस्म ५ भाग और मिश्री ८ भाग लें। भस्में और शिलाजीत छोड़कर अन्य द्रव्यों का कपड़छान चूर्ण करें। पीछे उसमें भस्में तथा शिलाजीत मिला, ६–६ रत्ती की गोलियाँ बना कर रख छोड़े। यदि रौप्यशिलाजतु न मिले तो लोह शिलाजतु १० तोला लें।

मात्रा और अनुपान––१–२ गोली सबेरे–शाम दूध से दें।

उपयोग––पांडुरोग, खांसी, राजयक्ष्मा, जीर्ण विषमज्वर, कुष्ठ, मन्दाग्नि, प्रमेह, शोष, श्वास, अरुचि, अपस्मार, कामला और अर्श में इसका प्रयोग करें। अपस्मार में इस योग से लाभ होता देखा है।

२–नवायसचूर्ण

त्र्यूषणात्रिफलामुस्तविडङ्गदहनाः समाः ।
नवयोरजसो भागास्तच्चूर्णं मधुसर्पिषा ।।
भक्षयेत् पाण्डुहृद्रोगकुष्ठार्शः कामलापहम् ।
नवायसमिदं चूर्णं कृष्णात्रेयेण भाषितम् ।।
चरक संहिता चि० अ० १६ ।

द्रव्य और निर्माणविधि––

सोंठ, काली मिर्च छोटी पीपल, हरड़ का दल, बहेड़ादल, आँवलादल, नागरमोथा, वायबिडङ्ग और चित्रक के मूल की छाल प्रत्येक का सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण १–१ भाग और लोह भस्म या मंडूरभस्म ९ भाग लें, सबको तीन दिन मर्दन करके रख लें।

मात्रा––२–४ रत्ती।

अनुपान––दूध या छाछ के साथ दें।

उपयोग––ज्वर के पीछे जो पांडुरोग होता है उसमें तथा जीर्ण विषमज्वर में इससे अच्छा लाभ होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

३--कालमेघनवायस

कालमेघरजोभागैर्नवभिः संप्रयोजितम् ।
सप्ताहं कालमेघस्य रसेनाथ शृतेन वा ॥
भावितं जायते तत्तु कालमेघनवायसम् ।
रक्तित्रयमतो दद्याद्यकृत्पाण्डुनिवृत्तये ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

यदि पूर्वोक्त नवायस चूर्ण में ९ भाग कालमेघ के पंचाग का चूर्ण मिला, उसको कालमेघ के स्वरस वा क्वाथ की ७ भावना देकर तैयार करे तो यह कालमेघनवायस तैयार होता है ।

मात्रा—३ रत्ती ।

अनुपान – जल ।

उपयोग—जीर्ण विषमज्वर, ज्वरान्तदौर्बल्य, पांडुरोग और यकृत् की वृद्धि में इससे विशेष लाभ होता है ।

४--रोहितकलौह

रोहीतकसमायुक्तं त्रिफलत्रययुतं त्वयः ।
यकृत्प्लीहभवं शोथं पाण्डुरोगं च नाशयेत् ॥

द्रव्य और निर्माणविधि--

हरड़ का दल, बहेड़ादल, आंवलादल, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, चित्रक के मूल की छाल, नागरमोथा और बायविडङ्ग प्रत्येक १-१ भाग, रोहेड़ा के वृक्ष की अन्तर्छाल ९ भाग, इन सब का सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण कर, उसमें लोहभस्म या मंडूरभस्म ९ भाग मिला, रोहेड़ा के वृक्ष की अन्तर्छाल के क्वाथ की ७ भावनाएँ दे, छाया में सुखा, पीस कर रख छोड़ें ।

मात्रा--३ रत्ती ।

अनुपान--दूध या छाछ ।

उपयोग--यकृत् और प्लीहा की वृद्धि-शोथ, पांडुरोग और जीर्ण विषमज्वर यह अच्छा लाभ देनेवाला योग है ।

अन्य योग--सर्व प्रकार के पर्पटी के योग, वसन्तमालती, संशमनी वटी, अभ्रकभस्म, मुक्तापिष्टी, आरोग्यवर्धिनी और पुनर्नवामण्डूर इन योगों से पांडुरोग में अच्छा लाभ होता है ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वक्तव्य——पांडुरोगवाले को पूर्ण विश्रान्ति लेनी चाहिए अर्थात् सब प्रकार के शारीरिक और मानसिक परिश्रम छोड़ कर दिन-रात बिछौने पर लेटे रहना चाहिए। भोजन में दूध, छाछ, मोम्सबी–माल्टा, सेव, दाड़िम-अनार, खरबूजा, मीठा नीबू, ऊख (ईख-गन्ना) और आम आदि फल, इतने पथ्य पर रहकर औषध का प्रयोग करने से रोगी शीघ्र अच्छा होता है। मीठा अच्छा आम पांडुरोगी के लिये अमृत के तुल्य है। अन्न प्रारम्भ में पुराने चावल का भात, मूंग की दाल और हल्के साग देना चाहिए। बाद में गेहूँ की रोटी और दलिया भी दें। ब्रह्मचर्य अत्यन्त आवश्यक है। औषध छोड़ने के पीछे भी दूध, छाछ और फलों का सेवन छः मास तक जारी रखना चाहिए। अन्न सहसा न बढ़ाना चाहिए।

५–कामलाहर रस

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद ४ तोला, शुद्ध गंधक ४ तोला, त्रिफलाचूर्ण १६ तोला, यवक्षार ८ तोला, शुद्ध सज्जीखार ८ तोला और डमरूयन्त्र में ऊर्ध्वपातन किया हुआ नौसादर ८ तोला लें। प्रथम पारे-गन्धक की कज्जली बना, उसमें अन्य द्रव्य मिला, ३ घंटा मर्दन करके शीशी में भर लें।

मात्रा और अनुपान——१-१ माशा दिन में ३ बार मक्खन निकाली हुई छाछ के साथ दें।

उपयोग—कामला में इस योग से अच्छा लाभ होता है।

पथ्य——रोगी को केवल मक्खन निकाली हुई छाछ और भात के पथ्य पर रखे तथा गन्ना, मोसम्बी, मंतरे का रस और कच्चे नारियल का जल पिलावें।

अन्य योग——पृष्ठ ४० पर लिखा हुआ शतपत्र्यादि चूर्ण १-२ माशा और शुद्ध सज्जीखार (या सोडा बाई कार्ब) १-२ माशा एकत्र मिलाकर जल के साथ दें। ऐसे दिन में ४ बार देने से कामला में अच्छा लाभ होता है।

———

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यकृत्-प्लीह-उदर-शोथरोगाधिकार-द्वादश

१-आरोग्यवर्धनी गुटिका

रसगन्धकलोहाभ्रशुल्वभस्म समांशकम् ।
त्रिफला-द्विगुणा प्रोक्ता त्रिगुणं च शिलाजतु ॥
चतुर्गुणं पुरं शुद्धं चित्रमूलं च तत्समम् ।
तिक्ता सर्वसमा ज्ञेया सर्वं संचूर्ण्य यत्नतः ॥
निम्बवृक्षदलाम्भोभिर्मर्दयेद्दिवसत्रयम् ।
ततश्च वटिका कार्या त्रिगुञ्जाफलमानतः ॥
मण्डलं सेविता सैषा हन्ति शोथानशेषतः ।
जीर्णज्वरं यकृद्वृद्धिं प्लीहवृद्धिं जलोदरम् ॥
पाचनी दीपनी पथ्या हृद्या मेदोविनाशिनी ।
मलशुद्धिकरी नित्यं दुर्धर्षं क्षुत्प्रवर्तिनी ।
आरोग्यवर्धनी नाम्ना गुटिकेयं प्रकीर्तिता ॥

रसरत्नसमुच्चय कुष्ठाधिकार से किञ्चित्परिवर्तित ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद १ भाग, शुद्ध गन्धक १ भाग, लोहभस्म १ भाग, अभ्रकभस्म १ भाग, ताम्रभस्म १ भाग, बड़ी हर्रे का दल २ भाग, बहेड़ादल २ भाग, आंवलादल २ भाग, शिलाजीत ३ भाग, शुद्ध गुगल ४ भाग, चित्रक के मूल की छाल ४ भाग और कुटकी २२ भाग लें। प्रथम पारे-गन्धक की कज्जली बना, उसमें अन्य भस्में, शिलाजतु और शेष द्रव्यों का कपड़छान चूर्ण मिलावे। पीछे गूगल को नीम की ताजी पत्ती के स्वरस में ६ घण्टा भिगो, हाथ से मसल, कपडे से छान, उसमें अन्य द्रव्य मिला कर मर्दन करें। नीम की ताजी पत्ती के रस में ३ दिन घोंट, सुखा कर चूर्ण रूप में रख लें या ३-३ रत्ती की गोलियाँ बना, छाया में सुखा कर रख लें।

मात्रा--१-२ गोली। (३--६ रत्ती)

अनुपान--रोगानुसार जल, दूध, पुनर्नवादि क्वाथ या केवल पुनर्नवा का क्वाथ, दशमूलक्वाथ, मूत्रलकषाय आदि।

गुण और उपयोग--आरोग्यवर्धनी उत्तम पाचन, दीपन, शरीर के स्रोतों के शोधन करनेवाली, हृदय को बल देनेवाली, मेद को कम करनेवाली और मलों को

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शुद्धि करनेवाली है। यकृत्-प्लीहा, बस्ति-वृक्क, गर्भाशय, अन्त्र, हृदय आदि शरीर के किसी भी अन्तर अवयव के शोथ में,जलोदर में,जीर्णज्वर और पाण्डुरोग में इस योग से अधिक लाभ होता है। पाण्डुरोग में यदि दस्त पतले और अधिक होते हों तो इसका प्रयोग न करके पर्पटीयोगों का प्रयोग करना चाहिए। सर्वाङ्ग (सर्वसर) शोथ में और उदररोगों में विशेषतः जलोदर में रोगी को केवल गाय, या ऊँटनी के दूध के पथ्य पर रखकर इसका प्रयोग करना चाहिए। यकृत् की वृद्धि के कारण शोथ हो तो पुनर्नवाष्टक क्वाथ में रोहेड़ा की छाल और शरपुंखामूल १-१ भाग अधिक मिलाकर उसके अनुपान से इसका प्रयोग करें। यदि शोथ हृद्रोगजन्य हो तो आरोग्यवर्धनी के साथ डिजिटेलिस पत्रचूर्ण आधा से १ रत्ती और जङ्गली प्याज (वन्यपलाण्डु) का चूर्ण १ रत्ती मिलाकर पुनर्नवादि या दशमूल के क्वाथ के साथ इसका प्रयोग करें। जीर्ण-फुफ्फुसधराकलाशोथ में इसके साथ शृंग भस्म ४-८ रत्ती मिलाकर भारङ्गमूल, पुनर्नवा, देवदार और अडूसा के क्वाथ के साथ इसका प्रयोग करें। मेद कम करने के लिये रोगीको केवल गाय के दूधपर रखकर शार्ङ्गधरोक्त महामंजिष्ठादि क्वाथ के अनुपान से इसका सेवन करावें।

वक्तव्य--गुजरात-सौराष्ट्र के कई वैद्य और फार्मेसीवाले इस योग में द्रव्यों का प्रमाण इस प्रकार लेते हैं--पारद १, गन्धक १, लोहभस्म १, अभ्रकभस्स १ ताम्रभस्म १, त्रिफला मिलाकर १०, शिलाजीत १५, गूगल २०, चित्रकमूल ३० और कुटकी ७० भाग।

२--पूनर्नवामण्डूर

पुनर्नवा त्रिवृद्व्योषविडङ्गं दारु चित्रकम्।
कुष्ठं हरिद्रे त्रिफला दन्ती चव्यं कलिङ्गकाः॥
कटुका पिप्पलीमूलं मुस्तं चेति पलोन्मितम्।
मण्डूरं तु समं चूर्णाद् गोमूत्रेऽष्टगुणे पचेत्।
कोलवद्गुटिकाः कृत्वा तक्रेणालोड्य ना पिबेत्।
ताः पाण्डुरोगान् प्लीहानमर्शांसि विषमज्वरम्॥
यकृद्विकारं श्वयथुं हन्युः कुष्टं क्रमींस्तथा।

चरकसंहिता, चि० अ० १६ से किञ्चत्परिवर्तित

द्रव्य और निर्माणविधि--

पुनर्नवा के मूल, निशोथ, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, वायबिडङ्ग,देवदार; चित्रक के मूल की छाल, कूठ, हल्दी, दारुहल्दी, हर्रे का दल, बहेड़ा का दल, आँवला

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दल, दन्तीमूल, चवक (चाव), इन्द्रजव कुटकी, पीपलमूल और नागरमोथा प्रत्येक का सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण ४-४ तोला और मण्डूरभस्म सबके बराबर (८० तोला) लें। प्रथम मण्डूरभस्म को अठगुने (१२८० तोले) गोमूत्र में पकावें। जब वह गाढ़ा होने लगे तब नीचे उतार, उसमें अन्य द्रव्यों का चूर्ण मिला, ३ घंटा मर्दन कर, ४-४ रत्ती की गोलियाँ बना लें।

मात्रा--१-२ गोली।

अनुपान और उपयोग--इसको पाण्डुरोग, मन्दाग्नि और अर्श (बवासीर) में छाछ के साथ दें। प्लीहा और यकृत की वृद्धि तथा शोथ में पुनर्नवादिक्वाथ के अनुपान से दें तथा कृमिविकार में मुस्तादिक्वाथ के अनुपान से दें।

३-पुनर्नवादि (पुनर्नवाष्टक) कषाय

पुनर्नवाभयानिम्बदार्वीतिक्तापटोलकैः।
गुडूचीनागरयुतैः क्वाथो गोमूत्रसंयुतः॥
पाण्डुप्लीहोदरश्वासयकृत्ससर्वाङ्गशोथहा।

शार्ङ्गधर, म० खं० अ० २।

द्रव्य और निर्माणविधि--

पुनर्नवा के मूल, हरडे का दल, नीम के वृक्ष की अन्तर्छाल, दारुहल्दी, कुटकी पटोल (कडुए परवल का पंचाङ्ग), गिलोय और सोंठ सबको समभाग लें, जौकुट दरदरा करके रख लें। इसमें से एक तोला लें, उसको १६ तोले पानी में पका, ४ तोला जल बाकी रहने पर कपड़े से छान, उसमें १-२ तोला गोमूत्र मिलाकर पिलावें। ऐसी दो-तीन मात्रा दिन में यथावश्यक दें।

उपयोग--यकृत् और प्लीहा की वृद्धि--शोथ, उदररोग, सर्वाङ्गशोथ और सन्धिवात में इसका प्रयोग करें। इससे दस्त और पेशाब साफ होकर शोथ उतर जाता है। इसमें पुनर्नवा और कुटकी दो भाग लें और रोहेडा के वृक्ष की अन्तर्छाल तथा शरपुंखा (सरफोंका) के मूल और अफसन्तीन १-१ भाग और मिलावें तो अधिक गुण होता है। इस क्वाथ का केवल या आरोग्यवर्धनी और पुनर्नवादिमण्डूर के अनुपान रूप में प्रयोग करना चाहिए। सन्धिवात और आमवात में इस क्वाथ में चोपचीनी, असगन्ध, विधारा उशबा, सुरंजान कडुआ, एरण्डमूल, सोनापाठा की छाल, इन्द्रायण की जड़, हरमल तथा रास्ना एक-एक भाग और मिला कर शृङ्गभस्म (१-२ माशा) के साथ इसका प्रयोग करें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४—मूत्रलकषाय

द्रव्य और निर्माण विधि---

पुनर्नवा के मूल, गन्ने के मूल कुश—डाभ के मूल, कांस के मूल, छोटे गोखरू, वरियार के मूल, खुरसानी अजवायन, रक्त-चन्दन, अनन्तमूल, देवदारु, सौंफ, धनिया, सागौन (शाकवृक्ष) के फल, मकोय, कासनी के बीज, गिलोय, पाषाणभेद, काकनज और कमल के फूल सब समभाग लें, जौकुट-दरदरा कर के रख लें। इसमें से दो तोला लें, उसको १६ तोले जल में पका, ४ तोला जल बाकी रहने पर कपड़े से छान, इसमें अच्छा शिलाजीत ५ रत्ती या क्षार पर्पटी ५–१० रत्ती मिला कर पिलावें। ऐसी एक-एक मात्रा दिन में २–३ बार यथावश्यक दें।

उपयोग—इस क्वाथ का गुर्दे के शोथ से जो सर्वाङ्ग शोथ होता है उसमें अच्छा उपयोग होता है। यह अच्छा मूत्रल (पेशाब बढ़ाने और साफ लाने-वाला) है। अश्मरीनिमित्त जो कमर और पेट में शूल-दर्द होता है, उसमें इस क्वाथ में जटामांसी २ भाग और खुरासानी अजवायन के बीज या पत्ती २ भाग और मिला कर इसका प्रयोग करें। साथ में हजरुलयहूद की भस्म ४-८ रत्तीतक दें तो विशेष गुण होता है।

५—दशमूलकषाय

ज्वराधिकारोक्त दशमूलकषाय केवल या पुनर्नवादिकषाय और मूत्रलकषाय के साथ मिलाकर देने से शोथ में उत्तम लाभ होता है।

वक्तव्य--इन क्वाथों के साथ आरोग्यवर्द्धनी या पुनर्नवादिमण्डूर दिया जावे तो विशेष और शीघ्र लाभ होता है।

६--दोषघ्नलेप

पुनर्नवा दारुशुण्ठीं सिद्धार्थं शिग्रुमेव च।
काकमाचीरसैः पिष्ट्वा प्रलेपः सर्वशोथजित्॥

शार्ङ्गधर उ०, खं०, अ० ११

द्रव्य और निर्माणविधि—

पुनर्नवा (गदहपुरना-सांठी) के मूल, देवदारु, सोंठ, सफेद सरसों और सहिजन की छाल—-इनका कपड़छान चूर्ण बना, मकोय के रस में पीस कर लेप करें।

उपयोग--वात और कफ से होनेवाले शोथ में इस लेप से विशेष लाभ होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

७--दशाङ्गलेप

शिरीषं मधुयष्टी च तगरं रक्तचन्दनम् ।
एला मांसी निशायुग्मं कुष्ठं बालकमेव च ॥
इति संचूर्ण्य लेपोऽयं पञ्चमांशघृतप्लुतः ।
जलेन क्रियते सुज्ञैर्दशाङ्ग इति संज्ञितः ॥
विसर्पान् विषविस्फोटान् शोथान् दुष्टव्रणाञ्जयेत् ।

द्रव्य और निर्माणविधि--

सिरस की छाल, मुलेठी, तगर, लालचन्दन, छोटी इलायची, जटामांसी (बालछड़), हल्दी, दारुहल्दी, कूठ और नेत्रवाला इनको एकत्र कूट कपड़छान चूर्ण करके रख लें।

उपयोग विधि और उपयोग--इस लेप को ठंढे जल में पीस, उसमें पाँचवा हिस्सा गौ का घी मिला कर या बिना घी मिलाये ही लेप करें। इस लेप से विसर्प, विष, विस्फोटक, शोथ (सर्वाङ्ग-सर्वरस और व्रणशोथ दोनों), सिर का दर्द और दुष्टव्रण अच्छे होते हैं। पैत्तिक और रक्तज शोथ में यह उत्तम योग है। इसके साथ उदुम्बरसार चतुर्थांश मिलाकर लेप करने से विशेष लाभ होता है। वृषण के शोथ में दशांगलेप और संभालू की ताजी पत्ती दोनों को साथ पीसकर लेप करने से अच्छा लाभ होता है। ज्वर में १ तोला दशाङ्गलेप १०-१५ तोले ठण्डे जल में मिला, उसमें कपड़ा भिगोकर उसकी पट्टी सिरपर चढ़ाने से सिर की पीड़ा और ज्वर का वेग कम हो जाता है। ओ-डी-कोलन के बदले इसका उपयोग करना अच्छा है। फोड़े-फुन्सियों पर भी दशाङ्गलेप लगाने से लाभ होता है।

८--कुमार्यासव

सुपक्वरससंशुद्धं कुमार्याः पत्रमाहरेत् ।
यत्नेन ससमादाय पात्रे पाषाणमृण्मये ॥
द्रोणे गुडतुलां दत्त्वा घृतभाण्डे निधापयेत् ।
माक्षिकं लोहचूर्णं च तस्मिन्नर्धतुलां क्षिपेत् ॥
कटुत्रिकं लवङ्गं च चातुर्जातकमेव च ।
चित्रकं पिप्पलीमूलं विडङ्गं गजपिप्पली ॥
चविका हपुषा धान्यं कटुका गिरिकर्णिका ।
मुस्ता फलत्रयं रास्ना देवदारु निशाद्वयम् ॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शतपुष्पा हिंगुपत्री आकल्लकमुटिङ्गणम् ।
पुनर्नवाद्वयं दन्तीमूलं पुष्करसंभवम् ।।
मूलं तु शरपुङ्खायातस्था रोहीतकत्वचम् ।
एषामर्धपलं दत्त्वा धातक्यास्तु पलाष्टकम् ।।
मासाज्जातरसं ज्ञात्वा पलमर्धं प्रयोजयेत् ।
अष्टावुदरजान् रोगान् गुल्मं शूलं कृमींस्तथा ।।
कामलां पाण्डुरोगं च शोथमानाहमेव च ।
कुमार्यासवसंज्ञोऽयं नाशयेन्नात्र संशयः ।।

द्रव्य और निर्माण विधि–

अच्छा पका और रसभरा–कड़ुवा ग्वारपाठा ले, उसे जल से धो, छोटे-छोटे टुकड़े कर, लोहे की बड़ी कड़ाही में डाल, आगपर चढ़ा, पांच-दस उफान आवें इतना गरम कर, नीचे उतार कर रख छोड़ें। ठंड़ा होनेपर हाथ से मसल कर कपड़े से रस छान लें। इस प्रकार निकाला हुआ रस १०२४ तोला, गुड़ ४०० तोला, शुद्ध फौलाद चूर्ण २०० तोला, शहद २०० तोला और सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, लौंग, दालचीनी, तेजपात, छोटी इलायची, नागकेशर, चित्रकमूल, पीपलामूल, बायबिडंग, बड़ी पीपल, चाब हाउवेर धनिया, कुटकी, कोयल के बीज, नागरमोथा, हरड़ेदल, बहेड़ादल आँवलादल, रास्ना, देवदारु, हल्दी, दारुहल्दी सौंफ, डीकामाली अकरकरा, उटंगण के बीज, श्वेत पुनर्नवा, रक्त पुनर्नवा, दन्तीमूल, पुष्करमूल, सरफोंका का मूल तथा रोहेड़ा की छाल प्रत्येक २-२ तोला और धाय के फूल २३ तोले का कपड़छान चूर्ण-सब को एकत्र मिला, चीनी मिट्टी की पेचदार ढक्कन की बरनी या सागौन की लकड़ी के पीपे में डालकर रख छोड़े। आसव तैयार होने पर कपड़े से छान, उसी बर्तन को जल से धोकर उसमें भर दें।

मात्रा––२ तोला, उतना जल ही मिलाकर दें।

उपयोग—सब प्रकार के उदर रोग, शूल, गुल्म, कृमिविकार, कामला, पाण्डुरोग, शोथ और कब्जियत में कुमार्यासव का प्रयोग करें।

वक्तव्य––आसव छानने के बाद निकले हुए कल्क को धोकर उसमें से लोह अलग कर ले। उसको सुखाकर लोहभस्म बनाने के काम में लें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कास-श्वासाधिकार-त्रयोदश

१-भागोत्तरगुटिका

रसभागो भवेदेको, गन्धको द्विगुणो भवेत्।
त्रिभागा पिप्पली, पथ्या चतुर्भागा, विभीतकः।।
पञ्चभागस्तथा वासा षड्भागा, सप्तभागाकम्।
भार्गीमूलं, तथा यष्टीमधुकं चाष्टभागकम्।
ततः सर्वमिदं चूर्णं भाव्यं बब्बूलजैर्द्रवैः।
एकविंशतिवारांस्तु मधुना गुटिका कृता।।
चतुर्गुञ्जाप्रमाणा तां दद्याद्योग्यानुपानतः।
कासं श्वासं निहन्त्येषा भगोत्तरवटी शुभा।।

भैषज्यरत्नावली से किञ्चित्परिवर्तित।

द्रव्य और निर्माणविधि--

शुद्ध पारद १ भाग, शुद्ध गन्धक २ भाग, छोटी पीपल ३ भाग, हरड़ का दल ४ भाग, बहेड़ादल ५ भाग, अडूसा के मूल की छाल या छाया में सुखाये हुए फूल ६ भाग, भारंगमूल ७ भाग, मुलेठी ८ भाग लें। टंकण ३ भाग, काकड़ाश्रृंगी ३ भाग और मिलावें। प्रथम पारे-गन्धक की कज्जली कर, पीछे उसमें अन्य द्रव्यों का कपड़छान चूर्ण मिला, बबूल (कीकर) की अन्तर्छाल के क्वाथ की २१ भावना दे, सुखा, कपड़े से छान कर रख लें।

मात्रा--२-४ रत्ती।

अनुपान--मधु (शहद) के साथ चटाकर ऊपर से गोजिह्वादिक्वाथ, द्राक्षारिष्ट या शर्बत जूफा दें।

उपयोग--सब प्रकार की खांसी में यह उत्तम योग है। यदि खांसी के साथ श्वास भी हो तो उस के साथ ५-८ रत्ती सोमचूर्ण मिलाकर इसका प्रयोग करें।

२-चन्द्रामृत रस

त्रिकटु त्रिफला चव्यं धान्यजीरकसैन्धवम्।
रसगन्धकलोहाभ्रं प्रत्येकं कार्षिकं शुभम्।।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

टंकणाद् द्विपलं दत्त्वा वासानीरेण मर्दयेत् ।।
गुञ्जात्रयप्रमाणेन वटिकां चैव कारयेत् ।
कासं पञ्चविधं चापि श्वासं ज्वरसमन्वितम् ।।
अनुपानविशेषेण हन्ति चन्द्रामृतो रसः ।।
कासे सरक्ते दातव्यो रक्तोत्पलरसाप्लुतः ।।

भैषज्यरत्नावली से किंचित्परिवर्तित ।

द्रव्य और निर्माणविधि--

सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, हर्रे का दल, बहेड़ादल, आंवलादल, चवक (चाव), धनिया, जीरा, सेंधा नमक, शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, लोहभस्म, और अभ्रकभस्म प्रत्येक १-१ तोला और शुद्ध सुहागा ८ तोला लें। प्रथम पारे-गन्धक की कज्जली बना, उसमें अन्य भस्में तथा वनस्पतियों का कपड़छान चूर्ण मिला, अडूसे के पत्तों के स्वरस की ३ भावनाएँ दे, ३-३ रत्ती की गोलियाँ बना, छाया में सुखा कर रख लें।

मात्रा और अनुपान--१ गोली शहद में मिला कर चटावें और ऊपर से बकरी का दूध, गोजिह्वादि क्वाथ, द्राक्षारिष्ट या शर्बत जूफा पिलावें। यदि खाँसी में कफ के साथ रक्त आता हो तो एक गोली ५ रत्ती नागकेशर का चूर्ण और ५ रत्ती खूनखरावे के चूर्ण के साथ मिला कर १-२ तोला लाल कमल के स्वरस के अनुपान से दें। खाँसी के साथ श्वास भी हो तो एक गोली के साथ ५-८ रत्ती सोमचूर्ण मिला कर शहद के साथ दें।

उपयोग--सब प्रकार की खांसी,दमा और उसके साथ हलका ज्वर भी रहता हो तो इस योग से अच्छा गुण होता है।

३--द्राक्षारिष्ट

मृद्वीकायाः पलशतं चातुर्द्रोणेऽम्भसः पचेत् ।
द्रोणशेषे सुशीते च पूते तस्मिन् प्रदापयेत् ।।
द्वे तुले क्षौद्रखण्डाभ्यां धातक्याः प्रथमेव च ।
कंकोलकं लवङ्गं च जात्याः पत्रफले तथा ।।
पलांशकं च मरिचत्वगेलापत्रकेशरम् ।
पिप्पली चित्रकं चव्यं विडङ्गं ग्रन्थिकं तथा ।
घृतभाण्डे विनिक्षिप्य मासाज्जातरसं पिबेत् ।
उरःक्षतं क्षयं हन्ति कासश्वासगलामयान् ।।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्राक्षारिष्टाह्वयः प्रोक्तो बलकृन्मलशोधनः ।

द्रव्य और निर्माण-विधि--

मुनक्का ४०० तोला ले, जल से धो, कल्क जैसा कूट कर ४०९६ तोला जल में पकावें। जब १०२४ तोला जल बाकी रहे तब कपड़े से छान, उसमें ४०० तोला शहद, ४०० तोला चीनी (शक्कर), धाय के फूल ६४ तोला, तथा शीतल मिर्च (कवावचीनी) लौंग जायफल, जावित्री, काली मिर्च, दालचीनी, छोटी इलायची, तेजपात, नागकेशर, छोटी पीपल, चित्रकमूल, चबक, बायबिडङ्ग और पीपलामूल ये प्रत्येक ४–४ तोले का कपड़छान चूर्ण मिला, इनको पेचदार ढक्कन की चीनी मिट्टी की बरनी या सागौन की लकड़ी के पीपे (ढोल) में डाल कर एक मास रख छोड़े। बाद में कपड़े से छान, उसी बर्तन को जल से धो, उसमें डाल, पात्र के मुख को अच्छी तरह से बन्द कर के रख दें।

मात्रा और अनुपान--२-४ तोला उतना ही जल मिला कर दिन में २–३ बार यथावश्यक दें।

गुण और उपयोग—द्राक्षारिष्ट भूख बढ़ानेवाला, दस्त साफ लानेवाला और बलकारक है। उरःक्षत, खाँसी, श्वास, राजयक्ष्मा आदि में इसका प्रयोग करें।

४--शर्बत जूफा

–द्रव्य और निर्माणविधि–

मुनक्का ३० तोला, उन्नाव २० तोला, सपिस्तान* (लिसोडे के पके और सूखे फल) २० तोला, सूखे अंजीर २० तोला, सोसन के मूल (बेख सोसन) ३० तोला, मुलेठी २० तोला, सौंफ के मूल १० तोला, कर्फस के मूल (बेख कर्फस) १० तोला, जूफा १० तोला, हंसराज १० तोला, बिहीदाना ५ तोला, अनीसून ५ तोला, सौंफ ५ तोला, जौ छिले हुए ५ तोला, अलसी ५ तोला, जटामांसी ५ तोला, गावजबान ५ तोला और खतमी के बीज ५ तोला लें, सबको जोकुट कर ३ गुने जल में रात को भिगो दें सवेरे में मन्दी आंच पर पका, जब एक तिहाई जल रह जाय तब ठंढा कर के कपड़े से छान लें। पीछे उसमें ६ सेर (४८०) तोला चीनी मिला कर पकावें। जब शहद जैसी चासनी हो जाय तब नीचे उतार, ठंढा होने के बाद कपड़े से छान कर बोतलों में भर लें।

मात्रा और अनुपान—एक से दो तोला शर्बत उतना ही जल मिला कर दिन में २–३ बार यथावश्यक दें।

---

*सपिस्तान, बेख सोसन, बेख कर्फस, अनीसून, तुख्म खत्म ये द्रव्य यूनानी दवाएँ बेचनेवाले पन्सारियों के यहाँ इसी नाम से मिलती हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपयोग--सब प्रकार की खाँसी में विशेषतः बात और पित्त-प्रधान खाँसी में इसका विशेष उपयोग होता है, इससे कफ ढीला होकर खांसने के साथ तुरन्त गिर जाता है।

५--वासाहरीतक्यवलेह

तुामलादाय वासायाः संक्वाथ्याष्टगुणे जले।
तेन पादावशेषेण पाचयेदाढ़कं भिषक्॥
गुरूणामभयानां तु खण्डाच्छुद्धात् पलं शतम्।
शीतीभूते निदध्यात्तु क्षौद्रस्याष्टौ पलानि च॥
वंशोद्भवायाश्चत्वारि पिप्पल्यर्धपलं तथा।
चातुर्जातपलं शृंग्याः पलं हन्ति निषेवितः॥
कासं क्षयं तथा श्वासं रक्तपित्तं सपीनसम्।
कर्षार्ध भक्षयेदस्य गव्यं दुग्धं पिवेदनु॥

गदनिग्रह लेहाधिकार से किंचित्परिवर्तित

द्रव्य और निर्माणविधि--

अडूसे के मूल या ताजी पत्ती ४०० तोला ले, उसको जल से धो, कूट, अठगुने जल में कलईदार बर्तन में डाल कर पकावें। जब चौथाई जल बाकी रहे तब ठंढ़ा कर कपड़े से छान, उसमें गुठली निकाली हुई बड़ी हर्रे का चूर्ण २५६ तोला और चीनी-शक्कर ४०० तोला डाल पकावें। पकाते समय लकड़ी के खोंचे से हिलाते रहें। जब लेह जैसा हो, तब नीचे उतारें। ठण्ढा होने पर उसमें ३२ तोला शहद तथा वंशलोचन १६ तोला, छोटी पीपल २ तोला, दालचीनी २ तोला, छोटी इलायची ४ तोला, नागकेशर ४ तोला, और काकड़ा-सींगी ४ तोला-इनका कपड़छान चूर्ण मिलाकर काच या चीनी के बर्तन में भर लें।

मात्रा और अनुपान--आधा तोला लेह चटा कर ऊपर से गौ का गरम किया हुआ दूध पिलावें।

उपयोग--खाँसी, क्षय, श्वास, रक्तपित्त और जुकाम में इसका प्रयोग करें।

६--सितोपलादिचूर्ण

सितोपलां तुगाक्षीरीं पिप्पलीं बहुलां त्वचम्।
अन्त्यादूर्ध्वं द्विगुणितं लेहयेन्मधुसर्पिषा॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चूर्णितं प्राशयेद्वा तच्छ्वासकासकफातुरम् ।
सुप्तजिह्वारोचकिनमल्पाग्निं पार्श्वशूलिनम् ॥
चरक चि० अ० ११ ।

द्रव्य और निर्माणविधि–

मिश्री १६ तोला, वंशलोचन ८ तोला, छोटी पीपल ४ तोला, छोटी इलायची २ तोला और दालचीनी १ तोला ले, सबको कूट, कपड़छान चूर्ण करके रख लें।

मात्रा और अनुपान––४–१२ रत्ती शहद और गाय के घी के साथ मिला कर दें। यदि वात और पित्तप्रधान रोग में तथा वात और पित्त प्रकृतिवाले को देना हो तो अनुपान में शहद एक भाग और घी दो भाग लें। यदि कफ प्रधान रोग में और कफप्रकृतिवाले को देना हो तो शहद दो भाग और घी एक भाग लें। सूखी खांसी में घी के साथ और कफ अधिक सरलता से निकलता हो, ऐसी खांसी में शहद के साथ दें।

७--एलादिगुटिका

एलापत्रत्वचोऽर्धाक्षाः पिप्पल्यर्धपलं तथा ।
सितामधुकखर्जूरमृद्वीकाश्च पलोन्मिताः ॥
सचूर्ण्य मधुना युक्ता गुटिकाः संप्रकल्पयेत् ।
अक्षमात्रां ततश्चैतां भक्षयेन्ना दिने दिने ॥
कासं श्वासं क्षयं हिक्कां स्वरभेदमुरःक्षतम् ।
गुटिका तर्पणी वृष्या रक्तपित्तं च नाशयेत ॥
चरक चि० अ० ११ ।

द्रव्य और निर्माणविधि––

छोटी इलायची आधा तोला, तेजपात आधा तोला, दालचीनी आधा तोला, छोटी पीपल २ तोला, मिश्री ४ तोला, गुठली निकाला हुआ पिण्डखजूर ४ तोला और धोकर बीज निकाले हुए मुनक्का ४ तोला लें। प्रथम मुनक्का और पिण्डखजूर को खूब महीन पीस, उसमें अन्य द्रव्यों का कपड़छान चूर्ण मिला कर १॥ माशे की गोलियाँ बना लें। यदि गोली बनाने में आवश्यकता पड़े तो थोड़ा शहद मिलावें।

मात्रा और अनुपान––२-२ घंटे से १-१ गोली मुंह में रखकर रस उतारें। दिन भर में १ तोला दें। खांसी, श्वास, क्षय, हिचकी, उरःक्षत और स्वरभंग (आवाज बैठ जाने) में इसका उपयोग करें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

८—लवङ्गादिवटी

द्रव्य और निर्माणविधि—

लौंग ८ तोला, बहेड़ादल ४ तोला, छोटी पीपल ४ तोला, शक्कर तिगाल ४ तोला, काकड़ासिंगी ४ तोला, अनार का सूखा छिलका १ तोला, दालचीनी २ तोला, खैरसार या कत्था १० तोला, मुलेठी का सत २० तोला, मनुक्का १० तोला, आक के फूल ५ तोला, नौसादर २ तोला, कपूर १ तोला और आगपर फूलाया हुआ सुहागा १ तोला, लें। प्रथम मुनक्का और आक के फूल को कूट कर चौगुने जल में क्वाथ करें। जब चौथाई जल बाकी रहे तब कपड़े से छान कर उसमें मुलेठी का सत्त्व, नौसादर, कपूर और सुहागे की लाई (खील) मिलावें। पीछे अन्य द्रव्यों का सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण मिला, मटर बराबर गोलियाँ बना कर छाया में सुखा लें।

उपयोग—जब खांसी जोर की आती हो और कफ न निकलता हो तब इस गोली को मुंह में रख कर रस निगलने से खांसी का वेग कम होता है, कफ आसानी से निकलता है और गला साफ हो जाता है।

९—सोमयोग

द्रव्य और निर्माणविधि—

रससिन्दूर १ भाग और सोमचूर्ण २० भाग लें। प्रथम रससिंदूर को खूब महीन पीस, उसमें सोम का कपड़छानचूर्ण मिला, एक दिन मर्दन करके शीशी में भर लें।

मात्रा—५-१० रत्ती अकेला या अभ्रकभस्म, भागोत्तरवटी अथवा चन्द्रामृत रस के साथ मिला कर दें।

अनुपान—जल या मधु (शहद) के साथ दें।

उपयोग—इसके प्रयोग से दमे में तात्कालिक और अच्छा लाभ होता है। (दमे का वेग शीघ्र कम होता है)।

१०—धूमयोग

द्रव्य और निर्माणविधि

छाया में सुखाई हुई अडूसे की पत्ती ४ भाग, छाया में सुखाई हुई धतूरे की पत्ती ३ भाग, भाँग २ भाग, चाय २ भाग और खुरासानी अजवायन की पत्ती २ भाग लें, सबका मोटा चूर्ण कर, कलमी शोरे के तृप्तद्रव में*भिगा, छाया में सुखा कर

*कलमी सोरे को जल में मिलाकर उसका घोल बनावें। जब उसमें अधिक सोरा न घुल सके तब उस घोल को 'तृप्तद्रव' कहते हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रख लें। आवश्यकता पड़ने पर इसकी मोटे कागज में बीड़ी बनाकर धूम्रपान करने के लिये दें।

उपयोग—इस धूम्रपान से दमे में तत्काल लाभ होता है। यदि रोगी को खुश्की मालूम हो तो धूम्रपान कराने के थोड़ी देर के बाद गौ का दूध देना चाहिए।

अन्य योग—वसन्तमालती, अभ्रकभस्म और सितोपलादि चूर्ण, भागोत्तर-रस या चन्द्रामृत रस के साथ मिलाकर, स्वर्णबंग भागोत्तर रस के साथ मिलाकर गोजिह्वादिक्वाथ के अनुपान से और च्यवनप्राशावलेह इसका भी खाँसी में उपयोग कर सकते हैं।

११–तालीशादि चूर्ण

तालीशसोमयष्ट्याह्वासापुष्पैः सपुष्करैः।
समभागैः कृतं चूर्णं श्वासकासनिवर्हणम्॥

द्रव्य और निर्माण विधि—

तालीस पत्र, सोम, मुलेठी, अडूसे के फूल और पुष्करमूल सम भाग लें, कपड़छान चूर्ण कर, ४-६ रत्ती की मात्रा में दिन में ३-४ बार शहद के साथ दें। इस चूर्ण से श्वास, खाँसी और जुकाम में लाभ होता है।

पं० जियालालजी वैद्य, श्रीनगर (काश्मीर) से प्राप्त।

राजयक्ष्मा–उरःक्षताधिकार–चतुर्दश

१–अमृतप्राशावलेह

जीवकर्षभकौ वीरां जीवन्तीं नागरं शटीम्।
चतस्रः पर्णिनीर्मेदे काकोल्यौ द्वे निदिग्धिके॥
पुनर्नवे द्वे मधुकमात्मगुप्तां शतावरीम्।
ऋद्धिं परूषकं भार्गीं मृद्वीकां गोक्षुरं कणाम्॥
शृङ्गाटकं तामलकीं पयस्यां पद्मकं बले।
बदराक्षोटखर्जूरवाताभाभिषुकाण्यपि॥
फलानि चैवमादीनि कल्कान् कुर्वीत् कार्षिकान्।
धात्रीवरीविदारीक्षुच्छागमांसरसं पयः॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुर्यात् प्रस्थोन्मितं तेन घृतप्रस्थौ विपाचयेत् ।
प्रस्थार्धं मधुनः शीते शर्कराप्रस्थमेव च ।।
द्विकार्षिकाणि पत्रैलाहेमत्वङ्मरिचानि च ।
कुडवं च तुगाक्षीर्याश्चूर्णितं प्रक्षिपेत्तथा ।।
अमृतप्राशमित्येतन्नराणाममृतं घृतम् ।
कासहिक्काक्षयश्वासदाहतृष्णास्रपित्तनुत् ।
नष्टशुक्रक्षतक्षीणदुर्बलव्याधिकर्षितान् ।
स्त्रीप्रसक्तान् कृशान् वर्णस्वरहीनांश्च बृंहयेत् ।।

चरक चि० अ० १५ से किञ्चत्परिवर्तित ।

द्रव्य और निर्माणविधि--

जीवन, ऋषभक, विदारीकन्द, जीवन्ती, सोंठ, कचूर, सरिवन पिठवन, जंगली उड़द (मषवन), जंगली मूंग (मुगवन), मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीर-काकोली, खटेरी (छोटी कटाई-भटकटैया), बड़ी कटाई, सफेद पुनर्नवा (गदह-पूरना-सांठी) लाल पुनर्नवा, मुलेठी, कवांच, शतावर, ऋद्धि, फालसा, भारंगमूल, मुनक्का, गोखरू, छोटी पीपल, सिंघाड़ा भुई आंवला, दुद्धी, पद्माख, कंघी, बरियारा, उन्नाव, अखरोट, पिण्डखजूर, बादाम, पिस्ता, चिलगोझा-नेजा, खुरमानी, चिरोंजी प्रत्येक एक-एक तोला ले, उनका कपड़छान चूर्ण कर, जल में पीस कर कल्क बना, उसमें ताजे आंवले का स्वरस ६४ तोला, ताजी शतावर का रस ६४ तोला, विदारीकन्द का स्वरस ६४ तोला, बकरी के मांस का रस ६४ तोला, बकरी का या गाय का दूध ६४ तोला और गौ का घी १२८ तोला मिलाकर घृतपाक की विधी से घृत तैयार करें। घृत सिद्ध होने पर कपड़े से छान, उसमें शहद ३२ तोला, मिश्री ६४ तोला, तेजपात छोटी इलायची, नागकेशर, दालचीनी और काली मिर्च इन प्रत्येक का चूर्ण २-२ तोला तथा वंशलोचन का चूर्ण १६ तोला मिलाकर काच से बरतन में भर लें।

मात्रा--आधा से १ तोला ।

अनुपान—गौ या बकरी का दूध ।

गुण और उपयोग--यह घृत उत्तम पौष्टिक है। खाँसी, क्षय, दमा, दाह तृषा, रक्तपित्त और शुक्रक्षय में इसका प्रयोग करें। कृश और जिनके शरीर का वर्ण और स्वर क्षीण हो गया हो उनको, विशेष स्त्रीप्रसंग करनेवालों को दुर्बल और रोगों से कृश हुए को यह पुष्ट करता है। राजयक्ष्मा में और बालकों के सूखा रोग में इसके सेवन से विशेष लाभ होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वक्तव्य--जो रोगी मांसवाली दवा न लेना चाहता हो उसके लिये मांसरस के स्थान में उतना उड़द का क्वाथ डालकर यह योग तैयार करें।

२--एलादिरसायन

एलाजमोदात्रिफलासौराष्ट्रीव्योषचित्रकान् ।
सारानरिष्टगायत्रीसालबीजकसंभवान् ।।
भल्लातकं विडङ्गंच वचां मुस्तां चतुष्पलम् ।
पचेदष्टगुणे तोये पादांशमवशेषयेत् ।।
प्रस्थद्वयं घृतं दत्त्वा पक्त्वा तस्मिन् पलानि षट् ।
तुगाक्षीर्याः क्षिपेत् त्रिंशत् सितायाः द्विगुणं मधु ।।
घृतात्, त्रिजातात् त्रिपलं ततो लीढं खजाहतम् ।
पयोनुपानं तत् प्राह्णे रसायनमयन्त्रणम् ।
मेध्यं चक्षुष्यमायुष्यं दीपनं हन्ति चाचिरात् ।
कार्श्यं कासं सयक्ष्माणं स्वरभेदमुरःक्षतम् ।।

अष्टाङ्गसंग्रह से किञ्चित्परिवर्तित ।

द्रव्य और निर्माणविधि--

छोटी इलायची, अजमोद, हरड़ का दल, बहेड़ादल, आँवलादल, फिटकिरी, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, चित्रक के मूल की छाल, नीम-खैर-साल और विजयसार इनके सार (बीच की ठोस लकड़ी-रांच) का बुरादा, भिलाव, वायबिडङ्ग, बच और नागरमोया प्रत्येक १६-१६ तोला ले, जौकुट-दरदरा कर के अठगुने जल में पकावें। जब चौथाई जल बाकी रहें तब ठंढ़ा कर के कपड़े से छान लें। पीछे उसमें १२८ तोला गाय का घी डाल कर पकावें। जब घृत सिद्ध--तैयार हो जाय तब कपड़े से छान उसमें २४ तोला वंशलोचन और १२० तोला मिश्री का कपड़छान चूर्ण, जितना घृत हो उससे दूना शहद और छोटी इलायची ४ तोला, दालचीनी ४ तोला और तेजपात ४ तोला इनका कपड़छान चूर्ण मिलाकर और सबको मथानीसे खूब मथकर काच की शीशी में भर लें। कई वैद्य घृत सिद्ध होने पर उसको कपड़े से छान कल्क नहीं निकालते, परन्तु कल्क (सिट्ठी) समेत घृत में वंशलोचन का चूर्ण आदि मिलाकर और मथकर रख लेते है।

मात्रा और अनुपान--१-२ तोला सबेरे-शाम भोजन से ३ घंटा पहले गौ के या बकरी के दूध के अनुपान से दें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपयोग--राजयक्ष्मा, उर:क्षत, खाँसी, कार्श्य, बालकों का फक्करोग-सूखा इन रोगों में इसका उपयोग करें। इसके सेवन से बल, मांस और स्मरण-शक्ति बढ़ती है। यह उत्तम रसायन है।

३--च्वनप्राशावलेह

पाटलारणिकाश्मर्यं बिल्वारलुकगोक्षुराः :
पण्यौ बृहत्यौ पिप्पल्यः शृङ्गी द्राक्षामृताभयाः ॥
वला भूम्यामली वासा ऋद्धिर्जीवन्तिका शटी।
जीवकर्षभकौ मुस्तं पौष्करं काकनासिका ॥
मुद्गपर्णी माषपर्णी विदारी च पुनर्नवा।
काकोल्यौ कमलं मेदे वर्येलागुरुचन्दनम्।
एकैकं पलसंमानं स्थूलचूर्णितमौषधम् ॥
एकीकृत्य महत्पात्रे पञ्चामलशतानि च।
पचेद् द्रोणजले क्षिप्त्वा ग्राह्यं पादावशेषितम्।
तान्यामलानि पश्चात्तु निष्कुलीकृत्य वाससा ॥
दृढहस्तेन संपीड्य क्षिप्त्वा तत्र ततो घृतम्।
पलसप्तमितं तानि सम्यग्भृष्ट्वाऽल्पवह्निना ॥
ततस्तत्र क्षिपेत् क्वाथे शर्करां द्रोणसंमिताम्।
लेववत् साधयित्वा च भृष्टान् धात्रीफलान् क्षिपेत् ॥
पुनर्लेहत्वमापन्ने चूर्णानीमानि दापयेत्।
पिप्पली द्विपला देया तुगाक्षीरी चतुष्पला ॥
प्रत्येकं पलमानं च त्वगेलापत्रकेशरम्।
ततस्त्वेकीकृतं सर्वं क्षिपेत् क्षौद्रं च षट्पलम्।
इत्येतच्च्यवनप्रोक्तं च्यवनप्राशसंज्ञितम्।
लेहं वह्निबलं दृष्ट्वा खादेत् क्षीणो रसायनम् ॥
बालवृद्धक्षतक्षीणा नारी क्षीणाश्च शोषिणः।
हृद्रोगिणः स्वरक्षीणा ये नरास्तेषु युज्यते ॥
कासं श्वासं पिपासां च वातास्रमुरसो ग्रहम्।
वातपित्तं शुक्रदोषं मूत्रदोषं च नाशयेत् ॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मेधां स्मृतिं स्त्रीषु हर्षं कान्ति वर्णप्रसन्नताम् ।
अस्य प्रयोगादाप्नोति नरो जीर्णत्ववर्जितः ।।

शार्ङ्गधर संहिता म० खं० अ० ४ से किञ्चित्परिवर्तित ।

द्रव्य और निर्माणविधि--

पाडर का मूल, अरणी (गनियार-अगेथू) का मूल, गंभारी का मूल, बेल का मूल, सोनापाठा का मूल, गोखरू, सरिवन, छोटी कटेरी (भटकटैया), बड़ी कटेरी, छोटी पीपल, काकड़ासींगी, मुनक्का, हर्रे का दल, गिलोय, बरियार (खरेंटी) का मूल, भुइंआंवला, अड़ूसा का मूल, ऋद्धि, जीवन्ती, कचूर, जीवक, ऋषभक, नागरमोथा, पुष्कर मूल, कौवाठोंठी, जंगली मूंग, जंगली उड़द, बिदारीकन्द, गदहपूरना-सांठी, काकोली, क्षीरकाकोली कमल के फूल, मेदा, महामेदा, शतावर, छोटी इलायची, अगर और सफेद चन्दन प्रत्येक ४-४ तोला लें, उनको जौकुट— दरदरा कर एक बड़े कलईदार बर्तन में डाल, उसमें १०२४ तोला जल और ५००* तोले ताजे परिपक्व आँवले जल से धो, कपड़े में बाँध कर डालें। पीछे उसको अग्नि पर पकावें। जब चौथाई हिस्सा जल बाकी रहे तब नीचे उतार कर आँवले को अलग कर लें और क्वाथ को कपड़े से छान लें। आँवलों की गुठली अलग करके उसको एक अच्छे कलईदार बर्तन के मुंह पर पाट(सन) का कपड़ा बांध, उसपर थोड़े-थोड़े आँवले रख, हाथ से दबाकर (मसलकर) छान लें। पीछे उसमें २८ तोले गाय का घी डाल कर मंद आँच पर पकावें और लकड़ी के खोंचे से हिलाते रहें। जब आंवलों से घी अलग होने लगे इतना गाढ़ा हो जाय तब नीचे उतार कर रख दें। फिर क्वाथ में १०२४ तोले हाथ से बनी हुई देशी खाँड (बनारसी खाँड) डालकर पकावें। जब चाशनी ठंडी होने पर अवलेह जैसी गाढ़ी बन जाय तब उसमें आँवले अच्छी तरह मिला, अग्नि पर रखकर हिलाते रहें। बाद में नीचे उतार, ठंढा होने पर उसमें २४ तोला शहद और छोटी पीपल ८ तोला, वंशलोचन १६ तोला, दालचीनी ४ तोला, छोटी इलायची ४ तोला, तेजपात ४ तोला और नागकेशर ४ तोला इनका कपड़छान चूर्ण मिला, चीनीमिट्टी के बर्तन में भर कर रख दें।

मात्रा--१ से २ तोला।

अनुपान--गाय या बकरी का दूध।

---

*आँवले जङ्गली छोटे और बगीचे के कलमी बड़े होते हैं। सब फलों का वजन एक सा नहीं होता, अतः सूखे आंवले का वजन आधा तोला और गीले आँवले का वजन १ तोला मान कर व्यवहार करने का नियम टीकाकारों ने लिखा है।
देखो--शा० सं० अ० ६ श्लोक ४ की आढमल्ली टीका।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुण और उपयोग—च्यवनप्राश उत्तम रसायन और पौष्टिक है। खाँसी, पुराना दमा, राजयक्ष्मा, शुक्रदोष, मूत्रदोष, हृद्रोग, स्वरभंग, स्मरणशक्ति का कम होना आदि में इसका उपयोग करें।

४–चतुर्मुखरस

रसगन्धकलोहाभ्रं समं सूतांघ्रि हेम च।
सर्वं खल्ले विनिक्षिप्य कन्याम्भोभिर्विमर्दयेत् ॥
ततोऽमृतावरामुस्तब्राह्मीमांसीलवङ्गजैः।
पुनर्नवाचित्रकजै रसैर्गाढं विमर्दयेत् ॥
ततो गोलं विधायाथ रवितापे विशोषयेत्।
एरण्डपत्रैरावेष्टच धान्यराशौ दिनत्रयम्।
संस्थाप्य तत उद्धृत्य सर्वरोगेषु योजयेत्।
एतद्रसायनवरंत्रिफलामधुयोजितम् ॥
क्षयमेकादशविधं पाण्डुं चैवाम्लपित्तकम्।
अपस्मारं तथोन्मादं भ्रमं मूर्च्छां प्रमेहकम् ॥
क्रमेण शीलितं हन्ति वृक्षमिन्द्राशनिर्यथा।

योगरत्नाकर।

द्रव्य और निर्माण विधि—

शुद्ध पारद १ भाग, शुद्ध गन्धक १ भाग, लोहभस्म १ भाग, अभ्रकभस्म १ भाग और सुवर्णभस्म चौथाई भाग लें। प्रथम पारे-गन्धक की कज्जली बना, उसमें अन्य भस्में मिला, उसको ग्वारपाठा ताजी गिलोय, त्रिफला, नागरमोथा, ब्राह्मी, जटामांसी, लौंग, पुनर्नवा और चित्रक के मूल की छाल इनके यथालाभ स्वरस या क्वाथ में १-१ दिन मर्दन कर, एक गोला बना कर उसको धूप में सुखावें। जब गोला सूख जाय तब उसपर एरण्ड की हरी पत्ती लपेट, सूत से बाँध, बड़ी धान्य की कोठी में ३ दिन रहने दें। ३ दिन के बाद गोले को कोठी से निकाल, ऊपर का एरण्ड पत्र हटा, खरल में अच्छी तरह पीस कर शीशी में भर लें।

मात्रा—१-२ रत्ती।

अनुपान—त्रिफला का चूर्ण १॥ से ३ माशा और शहद आधा से एक तोला में मिलाकर दिन में दो बार सबरे-शाम दें।

उपयोग—राजयक्ष्मा, पाण्डुरोग, अम्लपित्त, अपस्मार, उन्माद, भ्रम (चक्कर आना), मूर्च्छा, प्रमेह, वातरोग, दिल और दिमाग की कमजोरी आदि में इस योग का अच्छा उपयोग होता।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२—हेमगर्भरस

रसस्य भागाश्चत्वारस्तावन्तः कनकस्य च ।
तयोश्च पिष्टिकां कृत्वा गन्धो द्वादशभागिकः ।।
कुर्यात् कज्जलिकां तेषां मुक्ताभागास्तु षोडश ।
चतुर्विंशच्च शङ्खस्य भागैकं टंकणस्य च ।
एकत्र मर्दयेत सर्वं पक्वनिम्बूकजैः रजैः ।
मुद्रां दत्वा ततो वैद्यः रचेल्लवणयन्त्रके ।।
पिष्ट्वा गुञ्जाद्वयोन्मानं दद्याद् गव्याज्यसंयुतम् ।
कासे श्वासे क्षये जीर्णज्वरे ग्रहणिकागदे ।।
अपच्यां च प्रयोक्तव्यो रसोऽयं हेमगर्भकः ।

योगरत्नाकर राजयक्ष्माधिकार से किञ्चत्परिवर्तित ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

चार तोला शुद्ध पारद लेकर उसमें ४ तोला सोने के वरक एक-एक करके मिलावें और मर्दन करते रहें। जब सब वरक मिल जावे तब उसमें १२ तोला शुद्ध गन्धक मिला, कज्जली बना, उसमें १६ तोले अच्छे बसराई मोती का कपड़छान चूर्ण, २४ तोला शंख का कपड़छान चूर्ण तथा १ तोला शुद्ध सुहागा मिला, एक दिन पके नींबू के रस में मर्दन करके चिपटा गोला बनावें। गोला जब सूख जाय तब उसको दो मिट्टी के सकोरों में रख, उनकी सन्धिपर सात कपड़मिट्टी करके सुखा लें। अच्छी तरह सूखने पर एक मिट्टी के घड़े में नीचे दो अंगुल पीसे हुए सामुद्र या सेंधानमक का चूर्ण बिछा, उसपर संपुट को रख, घड़े के बाकी हिस्से को नमक के चूर्ण से भर, घड़े के मुंह पर उलटा सकोरा रख, दोनों की सन्धि कपड़मिट्टी करके बन्द कर दें। पीछे उस घड़े को चूल्हे पर चढ़ा कर ३ दिन-रात मध्यम आंच दें। जब घड़ा स्वांगशीतल हो जाय तब उसके भीतर से संपुट को निकाल कपड़मिट्टी हटाकर गोले को निकालें। जब गोला पककर कुछ गुलाबी रंग लिये श्वेतवर्ण का हो जाय तो उसको खरल में एक दिन पीसकर शीशी में भर लें। गोला यदि श्याम वर्ण का हो तो पूर्वोक्त बिधि से एक दिन फिर पकावें।

मात्रा और अनुपान——१—२ रत्ती, चौथाई तोला गाय के घी या शहद में मिलाकर चटावें।

उपयोग—खांसी, दमा, क्षय, जीर्णज्वर, ग्रहणी और अपची में इसका प्रयोग करें। मृगांक रस में शंख के सिवाय यही द्रव्य है। मृगांक रस से यह कुछ विशेष गुणप्रद है, अतः इसका प्रयोग करना अच्छा है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

६--मुक्तापञ्चामृतरस

मुक्ताप्रवालखुरवङ्गककम्बुशुक्तिभूतिं वसूदधिदृगिन्दुसुधांशुभागाम् ।
इक्षो रसेन सुरभेः पयसाविदारीकन्यावरीसुरसहंसपदीरसैश्च ।।
संमर्द्य यामयुगलं च वनोपलाभिर्दद्यात् पुटं सुमृदुलं भिषजां वरिष्ठः
पञ्चामृतं रसविभुं भिषजा प्रयुक्तं गुञ्जाचतुष्टयमितं चपलारजश्च ।।
पात्रे निधाय चिरसूतपयस्विनीनां दुग्धेन च प्रपिबतः खलु पथ्यभोक्तुः ।
जीर्णज्वरः क्षयमियादथ राजयक्ष्मा कासादिलिंगसहितश्च क्षयं प्रयाति ।।

योगरत्नाकर ज्वराधिकार ।

द्रव्य और निर्माणविधि--

मोती का चूर्ण ८ भाग, प्रवाल का चूर्ण ४ भाग, शङ्ख का चूर्ण १ भाग और मोती की सीप का चूर्ण १ भाग, सबको मजबूत पत्थर के खरल में--ईख (गन्ने) का रस, गाय का दूध, विदारीकन्द, ग्वारपाठा (घीकुआर), शतावर, तुलसी और हंसराज इन प्रत्येक के स्वरस में ६-६ घंटे मर्दन कर, गोला बना, सुखा, शराव-संपुट में बन्दकर चार सेर जङ्गली कंडों की आँच दें। स्वांगशीतल होने पर पीस, शीशी में भरकर रख लें।

मात्रा और अनुपान--इसकी २ रत्ती, ४ रत्ती छोटी पीपल के चूर्ण के साथ मिलाकर ३-४ मास की व्यायी (प्रसूता) गाय के धोरोष्ण दूध के साथ दें।

उपयोग--जीर्णज्वर और कासादि लक्षण सहित राजयक्ष्मा में इससे लाभ होता है। इसके साथ $\frac{1}{2}$ रत्ती सुवर्णभस्म मिलाकर इसका प्रयोग करें तो अधिक गुण होता है।

७--रसोनक्षीरयोग

द्रव्य और निर्माणविधि--

अच्छा पुष्ट लहसुन लाकर उसका छिलका निकाल दें। दो सौ दाने अच्छे बायविडङ्ग के लेकर उसको थोड़ा दरदरा-सा कूटलें। पीछे दोनों को २० तोला गाय का दूध और २० तोला जल में डाल कर मन्दी आंच पर पकावें। जब सारा जल, जल जाय और दूध बाकी रहे तब नीचे उतार, कपडे से छान, उसमें चीनी और छोटी इलायची के बीज का चूर्ण यथारुचि डाल कर पीने को दें। रोगी इस प्रयोग को जैसे-जैसे सहन करता जाय वैसे-वैसे लहसुन की कली और बायविडङ्ग की मात्रा बढ़ाते जावें। १५ कली लहसुन और ५०० दाने बायविडङ्ग की मात्रा तक बढ़ाना चाहिए।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपयोग--राजयक्ष्मा, कण्ठमाला और अपची के लिये यह उत्तम प्रयोग है।

८--कुर्स कहरुवा

द्रव्य और निर्माणविधि--

गिले अरमनी, निशास्ता (गेहूँ का सत्त्व) और गुलाब के फूल प्रत्येक १। तोला; कहरुवा की पिष्टी और हब्बुलास प्रत्येक १।। तोला; केकड़ा मीठे पानी का अन्तर्धूम जलाया हुआ, कुलफा के बीज, सफेद चन्दन, लौकी (कद्दू) के बीज का मग्ज और ककड़ी (खीरा) के बीज का मग्ज प्रत्येक ३-३ तोला; गिले मखतुम १ तोला; प्रवाल की पिष्टी, कतीरा, वंशलोचन और सादनज का चूर्ण धोया हुआ--प्रत्येक १।। तोला; बबूल (कीकर) का गोंद और मुलेठी का सत प्रत्येक २-२ तोला तथा कपूर १।। माशा लें, सब का बारीक कपड़छान चूर्ण कर, बिहीदाने के लुआब में पीस, ५-५ रत्ती की टिकिया बना, सुखा कर रख लें।

मात्रा और अनुपान--१-२ टिकिया पेठे के ताजे निकाले हुए १० तोला रस के अनुपान से दें।

उपयोग--यह योग उरक्षत के रक्त को बन्द करने के लिये उत्तम है। इसके प्रयोग से कफ के साथ मिलकर आता हुआ या अकेला खाँसने से आता हुआ रक्त बन्द होता है।

९--गुडूच्यादिमोदक

गुडूचीं खण्डशः कृत्वा कुट्टयित्वा सुमर्दयेत्।
वस्त्रेण गालितं तोयं रात्रिं संस्थापयेद् बुधः॥
उपरिस्थं जलं त्यक्त्वा सत्त्वं ग्राह्यमधःस्थितम्।
उशीरं वासकं पत्रं कुष्ठं धात्रीं च मोसलीम्॥
एलां नागबलां द्राक्षां कुंकुमं नागकेशरम्।
पद्मकन्दं च कर्पूरं चन्दनं मधुकं बलाम्॥
गोपी तुगां कणां लाजामश्वगन्धां शतावरीम्।
गोक्षुरं मर्कटीबीजं जातीकंकोलजीरकम्॥
रसाभ्रवङ्गलोहैश्च संमिश्रं कारयेद् बुधः।
सर्वेभ्यस्तु समं दद्यात् सत्त्वं छिन्नरुहोद्भवम्॥

* रसोनयोग विधिवत् क्षयार्तः क्षीरेण वा नागबलाप्रयोगम्।
सेवेत वा मागधिकाविधानं तथोपयोगं जतुनोऽश्मजस्य॥
सुश्रुत, उत्तरतन्त्र अ० ४१।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मत्स्याण्ड्याज्यमधूपेतं भक्षयेत् प्रातरुत्थितः ।
जयेत् क्षयं रक्तपित्तं पाददाहमसृग्दरम् ।।
मूत्रकृच्छ्रं प्रमेहांश्च ज्वरं जीर्णमथापि च ।

योगरत्नाकर राजयक्ष्माधिकार से किञ्चित्परिवर्तित ।

द्रव्य और निर्माणविधि--

अंगूठे जितनी मोटी ताजी-हरी गिलोय ला, उसको जल से धो, छोटे-छोटे टुकड़े कर, लकड़ी की ऊखली में डाल, लकड़ी के मूसल से खूब कूट, कलईदार बरतन में चौगुने जल में डाल, हाथों से खूब मल, दूसरे कलईदार बरतन में स्वच्छ कपड़े से सब जल छान लें और रात भर बरतन को ढांककर रहने दें। सबेरे ऊपर का सब जल धीरे-धीरे एक बरतन में निथार लें और बरतन के ऊपर पतला-महीन कपड़ा बांधकर उसको खुले स्थल में रखकर सुखा लें। इसको गिलोय का सत्व कहते हैं। (निथारे हुए जल को मन्द आंच पर पका, उसका घन बनाकर संशमनीवटी बना लें) खस, अडूसे के फूल या मूल की छाल, तेजपात, कूठ, आँवले, सफेद मूसली, छोटी इलायची, गुलशकरी, मुनक्का, केशर, नागकेशर, कमल का कन्द, कपूर, श्वेत चन्दन, मुलेठी, बरियार के मूल या बीज, अनन्तमूल, बंशलोचन, छोटी पीपल, धान का लावा (खील), असगन्ध, शतावर गोखरू, कवांच के बीज, जायफल, कवावचीनी (शीतल मिर्च), जीरा, रससिन्दूर अभ्रकभस्म और लोहभस्म १-१ भाग तथा ऊपर लिखे हुए विधान से बनाया हुआ गिलोय का सत्त्व सबके बराबर लें। प्रथम पत्थर के खरल में रससिन्दूर को खूब महीन पीस उसमें भस्में और अन्य द्रव्यों का कपड़छान चूर्ण मिला, एक दिन मर्दन करके शीशी में भर लें।

मात्रा और अनुपान—१॥ से ३ माशा तक चूर्ण मिश्री, गाय का घी और शहद के साथ मिलाकर दें।

उपयोग--क्षय, रक्तपित्त, हाथ-पांव की जलन, प्रदर, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह और जीर्णज्वर में इसका प्रयोग करें।

१०–ताप्यादियोग

ताप्यलोहविडङ्गाश्मजतुपथ्याज्यमाक्षिकम् ।
हन्ति यक्ष्माणमत्युग्रं सेव्यमानं हिताशिना ।।

द्रव्य और निर्माणविधि, मात्रा, अनुपान और उपयोग--

सुवर्णमाक्षिकभस्म १ भाग, लौहभस्म १ भाग, बायविडङ्ग १ भाग, शिलाजीत १ भाग और बड़ी हर्रे के दल का कपड़छान चूर्ण १ भाग ले, सब को एक साथ एक दिन

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पीसकर शीशी में भर लें। इसमें से ५ रत्ती चूर्ण १॥ माशा शहद और पाव तोले गाय के घी के साथ मिला कर दें। इस योग से क्षय और पाण्डुरोग में अच्छा लाभ होता है।

अन्य योग—संशमनीवटी, वसन्तमालती, सितोपलादिचूर्ण, एलादिवटी, द्राक्षारिष्ट, वासाहरीतक्यवलेह, सुवर्णपर्पटी, अभ्रकभस्म, मुक्तापिष्टी, मृगशृङ्ग-भस्म इन योगों का राजयक्ष्मा में अवस्थानुसार उपयोग होता है।

रक्तपित्ताधिकार–पञ्चदश

१–उशीरासव

उशीरं बालकं पद्मं काश्मरीं नीलमुत्पलम्।
प्रियंगु पद्मकं लोध्रं मञ्जिष्ठां धन्वयासकम्॥
पाठां किराततिक्तं च न्यग्रोधोदुम्बरं शटीम्।
पर्पटं कुंकुमं दार्वी पटोलं काञ्चनारकम्॥
जम्बू शाल्मलिनिर्यासं प्रत्येकं पलसंमितम्।
भागं सुचूर्णितं कृत्वा द्राक्षायाः पलविंशतिम्॥
धातकीं षोडशपलां जलद्रोणद्वये क्षिपेत्।
शर्करायास्तुलां दत्वा क्षौद्रस्यार्धतुलां तथा॥
मासैकं स्थापयेद्भाण्डे मांसीचन्दनधूपिते।
उशीरासव इत्येष रक्तपित्तविनाशनः॥
असृग्दरं प्रमेहं च रक्तार्शांसि च नाशयेत्।

शार्ङ्गधर संहिता, म० खं०, अ० १०।

द्रव्य और निर्माणविधि–

खस, नेत्रवाला, सफेद कमल, गम्भारी का मूल या वृक्ष की अन्तर्छाल, नील कमल, प्रियंगु, पद्माख, लोध, मजीठ, धमासा, पाढ़ के मूल, चिरायता, बड़ की अन्तर्छाल, गूलर के वृक्ष की अन्तर्छाल, कचूर, पित्तपापड़ा, केशर, दारुहल्दी पटोल, कचनार की छाल, जामुन की छाल और मोचरस—प्रत्येक ४-४ तोला लेकर उसका कपड़छान चूर्ण करें। पीछे २०४८ तोला जल में वह चूर्ण, जल से धोकर कुटा हुआ मुनक्का ८० तोला, धाय के फूल का चूर्ण ६४ तोला,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शक्कर (चीनी) ४०० तोला और शहद २०० तोला मिला, सागौन की लकड़ी के पीपे में या पेचदार ढक्कनी चीनी मिट्टी की बरनी में भरकर १ मास रख छोड़ें। १ मास के बाद उसको कपड़े से छान, उसी पात्र को जल से धो, उसमें भर, उसका मुंह ठीक से बन्द कर के रख दें।

मात्रा, अनुपान और उपयोग--२ तोला उतना ही जल मिलाकर दें।

उपयोग—रक्तपित्त, रक्तप्रदर, प्रमेह, और रक्तार्श में इसका प्रयोग करें। सब प्रकार के पित्त और रक्तविकृतिप्रधान रोगों में इससे अच्छा लाभ होता है।

२—चन्द्रकलारस

प्रत्येकं कर्षमानं स्यात् सूतं ताम्रं तथाऽभ्रकम्।
द्विगुणं गन्धकं मुक्तां दत्त्वा कुर्यात्तु कज्जलीम्॥
तिक्तां गुडूचिकासत्वं पर्पटोशीरमागधीः।
चन्दनं सारिवां चैव दद्यात कर्षं सुचूर्णितम्॥
मुस्तादाडिमदूर्वोत्थैः केतकीकमलद्रवैः।
सहदेव्याः शतावर्याः पर्पटस्य च वारिणा॥
भावयित्वा प्रयत्नेन दिनमेकं पृथक् पृथक्।
द्राक्षाफलकषायेण सप्तधा परिभावयेत्॥
ततः पोताश्रयं दत्त्वा वट्यः कार्याश्चणोपमाः।
अयं चन्द्रकला नाम रसेन्द्रः परिकीर्तितः॥
अन्तर्बाह्यमहादाहविध्वंसनमहाघनः।
भ्रमं मूर्च्छां रक्तकासं रक्तावान्तिं विशेषतः॥
ऊर्ध्वाधोरक्तपित्तं च जीर्णज्वरमसृग्दरम्।
मूत्रकृच्छ्राणि सर्वाणि नाशयेन्नात्र संशयः॥

द्रव्य और निर्माणविधि--

शुद्ध पारद १ तोला, ताम्रभस्म १ तोला, अभ्रकभस्म १ तोला, शुद्ध गन्धक २ तोला, मोती की पिष्टी २ तोला, कुटकी, गिलोय का सत्त्व, पित्तपापड़ा, खस, छोटी पीपल, श्वेतचन्दन और अनन्तमूल प्रत्येक का कपड़छान चूर्ण १-१ तोला लें। प्रथम पारे-गन्धक की कज्जली कर, उसमें भस्में तथा अन्य द्रव्यों का चूर्ण मिला, नागरमोथा, मीठा दाड़िम (अनार), दूध, केवड़ा, कमल, सहदेई, शतावर और पित्तपापड़ा इनके यथालाभ स्वरस, अर्क या क्वाथ की १-१ भावना और मुनक्का के

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्वाथ की ७ भावनाएँ दें। प्रत्येक भावना में १-१ दिन मर्दन करें और छाया में सुखा कर दूसरी भावना दें। अन्त में १ तोला कपूर मिला, चने बराबर गोलियाँ बना, छाया में सुखाकर रख लें।

मात्रा और अनुपान--१-२ गोली ठंढा जल, उशीरासव, अशोकारिष्ट या पेठे के स्वरस से दिन में २-३ बार दें।

उपयोग--शरीर का दाह, चक्कर आना, मूर्च्छा, खांसी में रक्त आना, रक्त का वमन, रक्तपित्त, रक्तप्रदर, रक्तार्श, जीर्णज्वर और मूत्रकृच्छ्र में इससे अच्छा लाभ होता है।

३--दूर्वादिघृत

दूर्वा दाडिमपुष्पं च मञ्जिष्ठोत्पलकेशरम्।
औदुम्बरमुशीरं च मुस्तं चन्दनपद्मकम्॥
वृषपुष्पं कुंकुमं च गैरिकं नागकेशरम्।
विपचेत् कार्षिकैरेतैः सर्पिराजं चतुर्गुणैः॥
अजाक्षीरेण कूष्माण्डस्वरसैस्तण्डुलाम्बुभिः।
तथैवास्रहरानीरैः समभागनियोजितैः॥
तत्पानं वमतो रक्तं नावनं नासिकागते।
कर्णाभ्यां यस्य गच्छत्तु तस्य कर्णौ प्रपूरयेत्॥
चक्षुःस्राविणि रक्ते तु पूरयेत्तेन चक्षुषी।
मेढ्रपायुप्रवृत्ते तु बस्तिकर्मणि तद्धितम्॥

द्रव्य और निर्माणविधि--

दूब, अनार के फूल, मजीठ, कमल का केशर, गूलर का फल, खस, नागर मोथा, सफेद चन्दन, पद्माख, अडूसे के फूल, केशर, गेरू और नागकेशर प्रत्येक १-१ तोला ले, उनका कपड़छान चूर्ण बना, जल में पीस, उसमें बकरी का घी ६४ तोला; बकरी का दूध, पेठ का स्वरस, आयापान का स्वरस और चावल भिगोया हुआ जल प्रत्येक ६४-६४ तोला मिलाकर मंदी आँचपर पकावें। जब घृत सिद्ध हो जाय तब नीचे उतार, कपड़े से छानकर शीशी में भर लें।

मात्रा और अनुपान-आधा तोला से एक तोला तक उतना ही मिश्री का चूर्ण मिलाकर दें।

उपयोग-यह घृत मुख से रक्त आता हो तो पीने को देना, नाक से रक्त आता हो तो इसका नस्य देना,कान या आंख से रक्त आता हो तो कान या आँख में डालना

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

और शिश्न, योनि अथवा गूदा से रक्त आता हो तो इसको उत्तरबस्ति या अनुवासन बस्ति से देना चाहिए।

अन्य योग--नागकेशर योग, अशोकारिष्ट, मुक्तापिष्टी, प्रवालपिष्टी, कहरुवापिष्टी, पेठे का स्वरस और ताजे कमल का स्वरस--इनका भी रक्तपित्त में अच्छा उपयोग होता है।

हृद्रोगाधिकार--षोडश

१-चिन्तामणिरस

पारदं गन्धकं चाभ्रं लौहं वङ्गं शिलाजतु।
अग्निजारं समं सर्वं स्वर्णं सूताङ्घ्रिसंमितम्॥
सूतार्धं मौक्तिकं रौप्यं सर्वमेकत्र मर्दयेत्।
चित्रकस्य द्रवेणापि भृङ्गराजाम्भसा ततः॥
पार्थस्य च कषायेण सप्तकृत्वा विभावयेत्।
ततो गुञ्जामिताः कुर्याद्वटीश्छायाप्रशोषिताः॥
वलामूलकषायेण वटीमेकां प्रदापयेत्।
हृद्रोगान्निखिलान् हन्ति चिन्तामणिरसो ह्ययम्॥

भैषज्यरत्नावली से किञ्चित्परिवर्तित।

द्रव्य और निर्माणविधि--

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, अभ्रकभस्म, लोहभस्म, वंगभस्म, शिलाजीत और अम्बर प्रत्येक १-१ भाग; स्वर्णभस्म चौथाई भाग; मोती की पिष्टी और रौप्यभस्म प्रत्येक आधा भाग लें। प्रथम पारे-गन्धक की कज्जली बना, उसमें अम्बर, शिलाजीत तथा अन्य भस्में मिला, चित्रक के मूल के क्वाथ तथा भाँगरे के स्वरस में १-१ दिन तथा अर्जुन वृक्ष की छाल के क्वाथ में ७ दिन मर्दन कर, १-१ गुञ्जा की गोलियाँ बना, छाया में सुखाकर शीशी में भर लें।

मात्रा और अनुपान--१-१ गोली सवेरे-शाम शहद में चटाकर ऊपर से वरियार (बला) के मूल का क्वाथ पिलावें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपयोग——सर्व प्रकार के हृदय के रोगों में, हृदय के शूल और हृद्द्रव (हृदय के स्पन्दनाधिक्य) में इसके प्रयोग से अच्छा लाभ होता है। हृद्रोग के साथ यकृत् का शोथ और उदर-रोग हो तो इसके साथ आरोग्यवर्धनी मिलाकर प्रयोग करें।

२–अर्जुनक्षीर

अर्जुनस्य त्वचा सिद्धं क्षीरं योज्यं हृदामये।

भैषज्यरत्नावली।

द्रव्य और निर्माणविधि—

अर्जुन के वृक्ष की छाल १ तोला ले, उसको जल से धो, कूट, १६ तोला गाय का दूध तथा १६ तोला जल मिलाकर मन्दी आँच पर पकावें। जब जल सब जलकर दूध बाकी रहे तब छान, उसमें मिश्री आधा तोला तथा ५ छोटी इलायची के बीज का चूर्ण मिलाकर पिलावें।

३–बलादिघृत

घृतं बलानागबलार्जुनाम्बुसिद्धं मधूकार्जुनकल्कपादम्।
हृद्रोगशूलक्षतरक्तपित्तकासानिलासृक् शमयत्युदीर्णम्॥

भैषज्यरत्नावली।

द्रव्य और निर्माणविधि--

बला (वरियार-खरेंटी) के मूल, नागबला (भूमिबला-फरीद बूटी) के मूल और अर्जुन की छाल प्रत्येक ६४ तोला लें, जवकूट-दरदरा करके १०२४ तोला जल में पकावें, जब चौथाई (२५६ तोला) जल बाकी रहे तब कपड़े से छान, उसमें गाय का घी ६४ तोला तथा मुलेठी ८ तोला और अर्जुन की छाल ८ तोला दोनों को जल में चटनी जैसा महीन पीस कर डालें और मंदी आँच पर कलईदार बरतन में पकावें तथा लकड़ी के खोंचे से हिलाते रहे। जब घृत सिद्ध हो जाय तब नीचे उतार, कपड़े से छान कर ठंढा होने पर शीशी में भर लें।

मात्रा—१ तोला।

अनुपान—दूध।

उपयोग—हृद्रोग, शूल, उरःक्षत, रक्तपित्त, खाँसी और वातरक्त में इसका प्रयोग करें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४–जवाहरमोहरा

द्रव्य और निर्माणविधि—

माणिक्यपिष्टी २ तोला, पन्ना की पिष्टी २ तोला, मुक्तापिष्टी २ तोला, प्रवालपिष्टी २ तोला, संगेयशव की पिष्टी ४ तोला, कहरुवा की पिष्टी २ तोला, चाँदी के वरक १ तोला, सोने के वरक १ तोला, दरियाई नारियल का चूर्ण ४ तोला, अबरेशम कतरा हुआ २ तोला, मृगशृंगभस्व ४ तोला, जदवार (निर्विषी) का चूर्ण २ तोला, कस्तूरी १ तोला और अम्बर २ तोला लें। अच्छे न घिसनेवाले पत्थर के खरल में प्रथम सब पिष्टियाँ और चूर्ण डाल, उसमें सोने और चाँदी के वरक एक-एक करके मिलावें और मर्दन करते रहें। जब सब वरक मिल जाएँ तब उसमें उत्तम अर्क गुलाब थोड़ा-थोड़ा डालकर १४ दिन मर्दन करें। १५ वें दिन उसमें कस्तूरी और अम्बर मिला, एक दिन गुलाब के अर्क में मर्दन कर, १-१ रत्ती की गोलियां बना, छाया में सुखाकर, शीशी में भर लें।

मात्रा और अनुपान—१–१ गोली दिन में २–२ वार शहद या खमीरे गावजवान में मिलाकर दें और ऊपर से दूध या केवड़ा, वेदमुश्क अथवा गावजवान के फूलों का अर्क दें।

उपयोग—यह हृदय को बल देनेवाला उत्तम योग है। दिल की घबराहट, हृदय का धड़कना, हृदय की दुर्बलता से थोड़ा-सा चलने पर दम भर जाना और दिमाग की कमजोरी—इन लक्षणों में इससे अच्छा लाभ होता है।

५–खमीरे गावजवान

द्रव्य और निर्माणविधि—

गुलाब के फूल, श्वेत चन्दन, बालछड़ (जटामांसी), धनिया, उस्तखुद्दुस, अबरेशम, नीलोफर और छड़ीला प्रत्येक १–१ तोला, बादरंजबूया १॥ तोला, गावजवान के फूल ८ तोला, सबको ४० तोला गुलाब के अर्क में रात को भिगो कर सबेरे मन्दी आँच पर पकावें। जब एक तृतीयाँश द्रव बाकी रहे तब नीचे उतार, ठंढा होने पर हाथ से मसल कर कपड़े से छान लें। पीछे उसमें ४० तोला चीनी डाल कर मन्दी आँच पर अवलेह जैसा पकावें। जब अवलेह ठंढा हो जाय तब उसमें कपूर १॥ माशा, अम्बर १॥ माशा और केशर ३ माशा गुलाब के अर्क में पीसकर खूब मिला दें और लकड़ी के घोटने से इतना घोटें कि चाशनी की तरह श्वेताभ (सफेटी मायल) हो जाय। पीछे काच की बरनी में भर लें।

मात्रा—३–६ माशा।

अन्ययोग—यह योग हृदय और मस्तिष्क (दिमाग) को बल देनेवाला है अकेला या जवाहरमोहरा के अनुपानरूप में इसका प्रयोग करें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

६--याकूती

द्रव्य और निर्माणविधि—

माणिक्यपिष्टी, पन्नापिष्टी, मुक्तापिष्टी प्रवालपिष्टी, कहरुवापिष्टी, चन्द्रोदय, सोने के वरक, अम्बर, कस्तूरी, अबरेशम-कतरा हुआ और केशर प्रत्येक २-२ तोला; बेहमन सफेद, बेहमन लाल, जायफल, लौंग और सफेद मिर्च प्रत्येक का चूर्ण १-१ तोला। प्रथम चन्द्रोदय को खूब महीन पीस, पीछे उसमें अन्य द्रव्य तथा सोने के वरक मिला, उत्तम गुलाब के अर्क मे २१ दिन मर्दन कर १-१ रत्ती की गोलियाँ बना, छाया में सुखाकर शीशी में भर लें। कस्तूरी और अम्बर अखीर के (२१ वें) दिन मिलाना चाहिये।

स्व० वा० वैद्य तिलकचन्द ताराचन्द से प्राप्त।

मात्रा और अनुपान—१ गोली पोदीने के रस में मिला कर दें।

उपयोग--हृदय की दुर्बलता, सन्निपातज्वर आदि में नाड़ी की क्षीणता और शरीर ठंढा पड़ना, स्वेदाधिक्य, हृदय की दुर्बलता से थोड़ा सा चलने से दम भर जाना और हृदय का स्पन्दन बढ़ना आदि लक्षणों में इसका प्रयोग करने से अच्छा लाभ होता है।

७--हृद्यचूर्ण

द्रव्य और निर्माण विधि--

डिजिटेलिसपत्र चूर्ण १ भाग और सांभर के शृंग की भस्म २ भाग ३ घण्टा मर्दन करके रख लें।

मात्रा--१ रत्ती।

अनुपान—शहद।

उपयोग--हृदय की दुर्बलता, हृद्द्रव (हृदय की धड़कन), नाड़ी का वेगाधिक्य इन लक्षणों में इसका प्रयोग करें। हृद्रोग में उपद्रवरूप जब सर्वाङ्ग-शोथ होता है तब आरोग्यवर्द्धनी के साथ मिलाकर इसका प्रयोग करने से विशेष लाभ होता है। पुरानी खांसी में जब कफ ज्यादा और चिकना पड़ता हो और साथ में हृदय की दुर्बलता हो तो इसमें जंगली प्याज को सुखाकर उसका कपड़छान किया हुआ चूर्ण-१ भाग मिलाकर इसका प्रयोग करें। यदि रोगी को हृल्लास और वमन हो तो इसका प्रयोग कुछ दिन के लिये बन्द कर दें।

वक्तव्य--डिजिटेलिस भारतबर्ष के काश्मीर आदि प्रदेशों में होता है। बम्बई की झंडु फार्मास्युटिकल कम्पनी लि० डिजिटेलिस के पत्र का चूर्ण बेचती है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रमेहाधिकार–सप्तदश

१–गोक्षुरादिगुग्गुलु

त्रिकटु त्रिफला मुस्तं चूर्णितं पलसप्तकम् ।
चूर्णं गोक्षुरसंभूतं तावन्मानं प्रपादयेत् ।।
चतुर्दशपलायन्त्र योजयेच्छुद्धगुग्गुलोः ।
संकुट्य गुग्गुलुं पूर्वं चूर्णं पश्चाद्विमिश्रयेत् ।।
शाणमाना तु वटिका गोक्षुरक्वाथयोजिता ।
प्रमेहान् मूत्रकृच्छ्रं च मूत्राघातांश्च नाशयेत् ।।

सोंठ, छोटी पीपल, काली मिर्च, हर्रे का दल, बहेड़ादल, आंवलादल और नागरमोथा प्रत्येक ४-४ तोला; गोखरू २८ तोला तथा अच्छा गूगल ५६ तोला लें। प्रथम गूगल को लकडी के टुकड़े, मिट्टी आदि से रहित करके केवल गूगल के टुकड़े (कण) ५६ तोला वजन कर लें। पीछे उसको लोहे के इमामदस्ते में खूब कूट, नरम कर, उसमें अन्य द्रव्यों का चूर्ण थोड़-थोड़ा करके मिला, गोली बनाने योग्य हो जाने पर १।।-१।। माशे की गोलियां बनाकर शीशी में भर लें।

मात्रा और अनुपान––१-२ गोली सबेरे-शाम भोजन से ३ घंटा पहले गोखरू के क्वाथ या प्रमेह हर क्वाथ के अनुपान से दें।

उपयोग—प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघात में इसका उपयोग करें।

२–चन्द्रकलावटी

द्रव्य और निर्माणविधि––

एला सकर्पूरशिलाजधात्री जातीफलं केशरशाल्मली च ।
सूतेन्द्रवङ्गाभ्रकभस्म सर्वमेतत् समानं परिभावयत्तु ।।
गुडूचिकाशाल्मलिकाकषायैर्निष्कार्धमानं मधुना ततश्च ।।
बद्ध्वा वटीं चन्द्रकलेतिसंज्ञां सर्वप्रमेहेषु नियोजयेत्ताम् ।।

योगरत्नाकर प्रमेहाधिकार से किंचित्परिवर्तित ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

छोटी इलायची के बीज, कपूर, शिलाजीत, आंवलादल, जायफल, केशर, सेमल के मूल, रससिन्दूर, वंगभस्म और अभ्रकभस्म समभाग लें। प्रथम रससिंदूर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

को पत्थर के खरल में खूब महीन पीस, पीछे उसमें शिलाजीत, भस्में तथा अन्य द्रव्यों का कपड़छान चूर्ण मिला, हरी गिलोय तथा सेमल के मूल के स्वरस में ३-३ दिन मर्दन कर, ३ ३ रत्ती की गोलियां बना, छाया में सुखाकर रख लें।

मात्रा और अनुपान--२ गोली शहद में मिलाकर दें और ऊपर से गाय का दूध या प्रमेहहर क्वाथ पिलावें।

उपयोग--सर्व प्रकार के प्रमेहों में, विशेष करके शुक्रमेह और स्वप्नदोष में इसका प्रयोग करें।

चन्द्रप्रभावटी

चन्द्रप्रभा वचा मुस्तं भूनिम्बामृतदारुकम् ।
हरिद्राऽतिविषा दार्वी पिप्पलीमूलचित्रकौ ।।
धान्यकं त्रिफला चव्यं विडङ्गं गजपिप्पली ।
व्योषं माक्षिकधातुश्च द्वौ क्षारौ लवणत्रयम् ।।
एलाबीजं च कंकोलं गोक्षुरः श्वेतचन्दनम् ।
एतानि शाणमानानि प्रत्येकं कारयेद् बुधः ।
त्रिवृद्दन्ती पत्रकं च त्वगेलाबंशलोचनाः ।
प्रत्येकं कर्षमात्राणि कुर्यादेतानि बुद्धिमान् ।।
द्विकर्षं हतलोहं स्याच्चतुष्कर्षा सिता भवेत् ।
शिलाजत्वष्टकर्षः स्यादष्टौ कर्षाश्च गुग्गुलोः ।।
एभिरेकत्र संक्षुण्णैः कर्तव्या गुटिका शुभा ।
चन्द्रप्रभेति विख्याता सर्वरोगप्रणाशनी ।।
प्रमेहान् मूत्रकृच्छ्रांश्च मूत्राघातांस्तथाऽश्मरीम् ।
जयेदर्शांसि शूलानि कामलां पाण्डुमेव च ।।
पुंसां शुक्रगतान् दोषान् स्त्रीणामार्तवजां रुजम् ।

शार्ङ्गधर म० ख० अ० ७ से किञ्चित्परिवर्तित ।

द्रव्य और निर्माणविधि--

कपूरकचरी, बच, नागरमोथा, चिरायता, गिलोय, देवदार, हल्दी, अतीस, दारुहल्दी, पीपलामूल, चित्रक के मूल की छाल, धनिया, बड़ी हर्रे का दल, बहेड़ा-दल, आंवलादल, चवक, बायबिडङ्ग, बड़ी पीपल, छोटी पीपल, सोंठ, काली मिर्च, माक्षिकभस्म, सज्जीखार, जौखार, सेन्धानमक, सोंचरनमक, सामुद्रलवण,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

छोटी इलायची के बीज, कवावचीनी (शीतल मिर्च), गोखरू और श्वेत चन्दन प्रत्येक पाव तोला निशोथ, दन्तीमूल, तेजपात, दालचीनी, छोटी इलायची और वंशलोचन प्रत्येक १-१ तोला, लोहभस्म २ तोला, मिश्री ४ तोला, शिलाजीत ८ तोला और गूगल ८ तोला लें। प्रथम गूगल को साफ करके लोहे के इमामदस्ते में कूटें। जब गूगल नरम हो जाय तब उसमें शिलाजीत, भस्में तथा अन्य द्रव्यों का कपड़छान चूर्ण क्रमशः मिला तीन दिन गिलोय के स्वरस में मर्दन कर, ३-३ रत्ती की गोलियाँ बना, सुखा कर शीशी में भर लें।

मात्रा और अनुपान--२-३ गोली जल, दूध या तत्तद्रोगहर क्वाथ के अनुपान से दें।

उपयोग--सर्व प्रकार के प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, पथरी, अर्श (बावासीर), शूल, कामला, पाण्डुरोग, शुक्रदोष और स्त्रियों के श्वेतप्रदर में इस योग से अच्छा लाभ होता है।

वक्तव्य—गुजरात और सौराष्ट के कई वैद्य चन्द्रप्रभा में शिलाजीत के स्थान पर ८ तोला कलमी सोरा मिलाकर चन्द्रप्रभा तैयार करते हैं और उसमें माक्षिक-भस्म तथा लोहभस्म नहीं डालते।

४--शिलाजत्वादिवटी

द्रव्य और निर्माणविधि--

त्रिवंगभस्म ३ तोले, छाया में सुखाई हुई नीम तथा गुड़मार की पत्ती का चूर्ण १०-१० तोले और शिलाजीत १५ तोले लें। प्रथम शिलाजीत में त्रिवंगभस्म और पीछे अन्य चूर्ण मिलाकर ३-३ रत्ती की गोलियाँ बनावें। यदि इस योग को विशेष गुणशाली बनाना हो तो इसमें आधा तोला सुवर्णभस्म मिला करके गोलियाँ बनावें।

मात्रा अनुपान और --उपयोग--४-४घंटे से ३-३ गोली करके दिन में १२ गोलियाँ विजयसार के क्वाथ के अनुपान से दें। इन गोलियों के सेवन से इक्षुमेह और मधुमेह में लाभ होता है।

५--प्रमेहहरकषाय

द्रव्य और निर्माणविधि—

दारुहल्दी, हल्दी, गिलोय, हर्रे का दल, बहेड़ादल, आंवलादल, देवदारु, नागरमोथा, खस, लोध, श्वेतचन्दन, कमल के फूल, पद्माख, गोखरू और पटोल सब समभाग ले, जौकुट (दरदरा) करके रख लें। इसमें से एक तोला द्रव्य को

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१० तोला जल में पका, जब ४ तोला जल बाकी रहे तब कपड़े से छान, उसमें आधा शहद मिलाकर दिन में २ बार सबेरे–शाम दे।

उपयोग—सब प्रकार के प्रमेहों में अकेला या अन्य प्रमेहहर योगों के अनुपान रूप में इसका प्रयोग करें।

६--चन्दनादिवटी

द्रव्य और निर्माणविधि--

श्वेतचन्दन का बुरादा, छोटी इलायची के बीज, कवाबचीनी, सफेद राल, गन्धाबिरोजें का सत्त्व; कत्था,, गरू और आंवला, गोखरू, पाषाणभेद प्रत्येक ४–४ तोला तथा कपूर १ तोला ले, कपड़छान चूर्ण कर, उसमें ५ तोला उत्तम चन्दन का तेल (इत्र) तथा गोली बन सके इतनी रसोत (दारुहल्दी का घन) मिलाकर ३–३ रत्ती कि गोलियाँ बना लें।

मात्रा और अनुपान–२–४ गोलियाँ दिन में ३–४ बार ठंढे जल के साथ लेने से पेशाब की जलन और पेशाब में पूय आना बन्द होता है।

अश्मरी–मूत्रकृच्छ्राधिकार–अष्टादश

१–हजरुल यहूद की भस्म

स्वरूप-परिचय–

हजरुल यहूद एक लंब–गोल और ऊपर से रेखा वाला पत्थर है। यूनानी दवा बेचनेवालों के यहाँ इसी नाम से मिलता है। यूनानी वैद्यक में यह मूत्रक और पथरी को तोड़कर निकालनेवाला माना गया है।

भस्म निर्माणविधि–

हजरुल यहूद को जल से धो, कपड़े से पोंछकर साफ कर लें। पीछे लोहे के इमामदस्ते में कूट, सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण बना, पत्थर के खरल में ३ दिन मूली के स्वरस में घोंट, टिकिया बना, सुखा, दो मिट्टी के तवों के बीच में टिकिया रखकर अर्धगजपुट की अग्नि दें। स्वांगशीतल होनेपर टिकिया निकाल, पीसकर शीशी में भर लें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मात्रा और अनुपान--४ से ८ गुञ्जा दिन में ३ बार कच्चे नारियल के पानी या अश्मरीहर कषाय के अनुपान से दें।

उपयोग--यदि अश्मरी छोटी हो तो कुछ दिन इसका सेवन करने से पेशाब के रास्ते से निकल जाती है।

२–क्षार पर्पटी

द्रव्य और निर्माण विधि--

अच्छा कलमीसोरा ४० तोला, फिटकरी ५ तोला और नौसादर २॥ तोला ले, सबका मोटा चूर्ण करके मिट्टी की हांड़ी में अग्निपर पकावें। जब सब द्रव हो जाय तब जमीन पर गोबर बिछा, ऊपर से केले का बड़ा अखण्ड पत्ता रख-कर उसपर ढाल दें और तुरन्त ऊपर से दूसरा केले का पत्र दबा दें। ठंढा होने पर निकाल, कपड़छान चूर्ण करके शीशी में भर लें। इसके शीतलपर्पटी, श्वेतपर्पटी, वज्रक्षार ये नाम भी प्रचलित हैं।

मात्रा—५–१० रत्ती।

अनुपान--ठंढा जल, कपूर भिगोया हुआ जल या कच्चे नारियल का पानी।

गुण और उपयोग--यह अच्छा मूत्रल, स्वेदन और वातानुलोमक योग है। अम्लपित्त, मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात, पेट अफारा और अश्मरी में इसका प्रयोग करते हैं। इसका अकेले या अन्य क्वाथों में मिलाकर प्रयोग किया जाता है।

३–अश्मरीहरकषाय

द्रव्य और निर्माणविधि--

पाषाणभेद, सागौन के फल, पपीते (अरण्ड खरबूजे) की जड़, शतावर गोखरू, बरुना की छाल, कुश (डाभ) के मूल कांस के मूल, चावल-धान के मूल, पुनर्नवा, गिलोय, चिरचिड़ा (अपामार्ग) के मूल और ककड़ी (खीरा) के बीज--प्रत्येक सम भाग, जटामांसी तथा खुरासानी अजवायन के बीज या पत्ती प्रत्येक दो भाग ले, सबको जौकुट (दरदरा) करके रख लें। इसमें से १ तोला ले, उसको १६ तोले जल में पका, ४ तोले जल बाकी रहे तब कपड़े से छान, उसमें ५–१० रत्ती शिलाजीत अथवा १० रत्ती क्षारपर्पटी या जवाखार मिलाकर पीने को दें। इस प्रकार रोगी को दिन में ३–४ बार पिलावें। इस क्वाथ को हजरुल यहूद की भस्म के साथ देने से विशेष लाभ होता है।

उपयोग--अश्मरी (पथरी), शर्करा (रेती) तथा उससे होनेवाले गुर्दे और पेट के दर्द में इसका प्रयोग करें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वक्तव्य--यवमण्ड (२ तोला जौ को ६४ तोले जल में उबाल, चौथाई बाकी रख कर कपड़े से छाना हुआ जल), कच्चे नारियल का पानी, गन्ने का रस तथा लौकी, पेठा, ककड़ी मकोय की पत्ती, पुनर्नवा की पत्ती, कासनी की पत्ती आदि मूत्रल द्रव्यों का शाक अश्मरी में हितकर है। द्विदल धान्य, मांस, कंद का शाक और स्नेहपक्व अन्न अपथ्य है। गरम जल में कमर का भाग डूबा रहे; इस प्रकार बैठना (अवगाहस्वेद) मूत्रकृच्छ्र और अश्मरीशूल में हितकर है।

भ्रम-अनिद्रा-उन्मादाधिकार-एकोनविंश

१—चन्द्रावलेह

शतावर्या विदार्याश्च कूष्माण्डस्याढ़कं रसम्।
स्वरसं शङ्खपुष्प्याश्च शर्करायास्तुलां तथा॥
लेहवत् साधिते तस्मिन्नेलायाः प्रस्थमेव च।
त्रिजातकं च मृद्वीकाचन्दनोत्पलसारिवाः॥
मुस्तापद्मकह्रीवेरधात्रीमांसीलवङ्गकम्।
एतेषां पलमादाय क्षिपेत् क्षीर्याचतुष्पलम्॥
कुडवं सर्पगन्धाया क्षौद्रप्रस्थं तथैव च।
अनिद्रायामथोन्मादे शिरोभ्रमणमूर्च्छने॥
हस्तपादाङ्गदाहेषु शस्तश्चन्द्रावलेहकः।

द्रव्य और निर्माणविधि--

शतावर, विदारीकन्द, पेठा और शंखाहुली इनमें से प्रत्येक का कपड़े से छाना हुआ स्वरस २५६ तोला लें। उसमें शक्कर (चीनी) ४०० तोला मिला, मंदी आँचपर अवलेह जैसा पका, नीचे उतार, ठंढा कर, उसमें छोटी इलायची ६४ तोला दालचीनी, तेजपात, नागकेशर, मुनक्का, श्वेत चन्दन, कमल, अनन्त-मूल, नागरमोथा, पद्माख, खस, आँवला जटामांसी और लौंग, प्रत्येक ४-४ तोला और सर्पगन्धा १६ तोला—इनका कपड़छान चूर्ण मिलाकर काच या चीनी मिट्टी के बरतन में भर लें।

मात्रा—आधा तोला से १ तोला तक।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनुपान--चन्दनादि अर्क, केवड़े का अर्क, गावजवान के फूलों का अर्क, बेदमुश्क का अर्क या गाय का दूध।

उपयोग--अनिद्रा, उन्माद, शिर में चक्कर आना, मूर्च्छा तथा हाँथ-पाँव का दाह इन विकारों में इस योग से अच्छा लाभ होता है।

२-सारस्वतारिष्ट

मांस्या मण्डूकपर्ण्याश्च शङ्खपुष्प्यास्तथैव च।
प्रत्येकं प्रस्थमादाय कूष्माण्डं च शतावरी॥
विदारिकाभयोशीराण्यार्द्रकं च तथा मिशिः।
पंच पंच पलान्येषां द्विद्रोणेऽपां विपाचयेत्॥
पादावशेषे विस्राव्य रसं वस्त्रेण दापयेत्।
पलानि दश क्षौद्रस्य सितामर्धतुलां तथा॥
धातकी पंचपलिका तगरं त्रिवृता कणा।
देवपुष्पं वचा कुष्ठं वाजिगन्धा विभीतकः॥
अमृतैला विडङ्गं त्वक् कुंकुमं कर्षसंमितम्।
क्वाथे सुचुर्णितं तस्मिन् समाक्षिप्य प्रयत्नतः॥
मासाज्जातरसं ज्ञात्वा परिस्राव्य च वाससा।
सुवर्णलवणं तस्मिन् दद्यादर्धपलं भिषक्॥
सारस्वताभिधोऽरिष्टो रसायनवरः स्मृतः।
आयुर्वीर्यं धृतिं मेधां बलंकान्ति विवर्धयेत्॥
वाग्विशुद्धिकरो हृद्यः परमोजस्करः स्मृतः।

द्रव्य और निर्माण-विधि--

जटामांसी, मण्डूकपर्णी, ब्राह्मी और शंखाहुली प्रत्येक ६४-६४ तोला; पेठा, शतावर, विदारीकन्द, बड़ी हर्रे का दल, सुगन्धवाला, अदरख और सौंफ प्रत्येक २०-२० तोले, सबको कूटकर २०४८ तोले जल में पकावें। जब चौथाई (५१२ तोला) जल बाकी रहे तब कपड़े से छान, उसमें शहद ४० तोला, देशी चीनी २०० तोला तथा धाय के फूल २० तोला, तगर, निशोथ, छोटी पीपल, लौंग, वच, कूठ, असगन्ध, बहेड़ादल गिलोय, छोटी इलायची, वायविडंग, दालचीनी और केशर प्रत्येक एक-एक तोला--इनका कपड़छान चूर्ण मिला कर चीनी मिट्टी की पेचदार ढक्कनवाली बरनी में भरकर १ मास रहने दें। एक मास के

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बाद कपड़े से छान उस सुवर्ण-लवण* १ तोला मिलाकर बरनी में भरकर रखें।

मात्रा और अनुपान--एक तोला अरिष्ट में दो तोला जल मिलाकर सबेरे-शाम पिलावें।

गुण और उपयोग--यह सारस्वतारिष्ट आयुष्य, वीर्य, धैर्य, स्मरणशक्ति, बल, कान्ति और ओज को बढ़ानेवाला, हृदय को हितकर और उच्चारण को शुद्ध करनेवाला है। दिल और दिमाग की कमजोरी तथा उन्माद में इसका प्रयोग करना चाहिये।

वक्तव्य--यदि इस योग में मंडूकपर्णी-ब्राह्मी, शंखाहुली, पेठा, शतावर, विदारीकन्द और अदरख इनका स्वरस, तथा सुगन्धवाला और सौंफ का अर्क तथा हर्रे का क्वाथ बनाकर डालें तो आसव विशेष गुणदायक होता है।

३--सर्पगन्धायोग

नाम--सर्पगन्धा को बंगाल में **चान्दर-चाँवड**, बिहार में **चन्दरमराव, धनमरवा या ईशरगज**; काशी में **धवलवरुवा**, मराठी में **अडकई** और अंग्रेजी में **रावोल्फिया सर्पेण्टाइना** कहते हैं।

उत्पत्तिस्थान--नेपाल की तराई, बिहार, बंगाल और मलबार में यह विशेष प्रमाण में तथा कोंकण में थोड़े प्रमाण में होती है।

उपयोगी अङ्ग-इसके केवल मूल औषधरूब में उपयोग में आते हैं।

प्राप्तिस्थान (मण्डी)--कलकत्ता, पटना, भागलपुर, आजकल प्रायः सब बड़े शहरों के पनसारी लोग बेचने के लिये रखते हैं।

गुण और उपयोग--इस वनस्पति का आधुनिक वैज्ञानिक रीति से परीक्षण सर्व प्रथम कलकत्ते में **स्व० बा० म० म० कबिराज गणनाथसेन सरास्वती तथा डा० कातिकचन्द्र** बसु ने (सन् १९३० में) बोस लेबोरेटरी में किया। उसका सारांश **डा० कातिकचन्द्र बसु** विरचित '**भारतीयभैषज्यतत्त्व**' से नीचे उद्धृत किया जाता है--

"इस में १ प्रतिशत उपचार मिला। इसके अतिरिक्त राल, श्वेतसार (स्टार्च-निशास्ता), गोंद और लवण (साल्ट) मिले। लवणांश में पोटेशियम कार्बोनेट, फोस्फेट और सिलिकेट के साथ केल्शियम और मैन्गेनिज मिले। इसमें कोई टेनिन जाति का कषाय द्रव्य नहीं है।

---

*सुवर्ण-लवण बनाने की विधि वैद्य सदानन्दजी शास्त्री विरचित **रसतरङ्गिणी** में ५ वें तरङ्ग के श्लोक ३५-४४ में लिखी है। उस के अनुसार बना लें। सुवर्ण-लवण बाजार में Auriet Sodii Chloridum इन नाम से विलायती दवा बेचनेवालों के यहां तैयार भी मिलता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इसके मूल चूर्ण उपयुक्त मात्रा में सेवन करने से अच्छी नींद आती है और मानसिक उत्तेजना तथा उन्मत्तता का ह्रास होता है । इसका उपक्षार हृदय के ऊपर अवसादक क्रिया करता है सूक्ष्म रक्तवाहिनियों को विस्फारित-विकसित करता है, जिससे रक्त का दबाव (ब्लडप्रेसर) कम होता है। जो उन्माद का रोगी उत्तेजित और बलवान् हो, उसको इसके प्रयोग से विशेष लाभ होता है। परन्तु जो रोगी, दुर्बल, निस्तेज और मनोऽवसादग्रस्त हो उसपर इसका सावधानी से प्रयोग करना चाहिये (इसपर विशेष लाभ नहीं होता, किन्तु रोगी अधिक दुर्बल होता है) । प्रबल ज्वर में इसके सेवन से अशान्ति, मोह और प्रलाप दूर होकर, रोगी को अच्छी नींद आ जाती है और साथ में ज्वर का वेग भी कम होता है।"

मात्रा—रक्त का दबाव कम करने के लिये २।।-५ रत्ती (५-१० ग्रेन) निद्रा लाने के लिये ५-१५ रत्ती; उन्माद और प्रबल अपतन्त्रक (हिस्टीरिया) के लिये १।। माशा से ३ माशा तक ।

अनुपान--जल, दूध या गुलाब के फूलों का अर्क । इसका चूर्ण १-३ माशा, ५ छोटी इलायची का चूर्ण, ५ काली मिर्च का चूर्ण और ५ तोला गुलाब का अर्क इनको ३ घण्टा भिगो, ठंढाई जैसा पीस, उसमें ३-६ माशा मिश्री मिलाकर देने से अनिद्रा और उन्माद में अच्छा लाभ होता है।

४–सर्पगन्धाचूर्णयोग

द्रव्य और निर्माणविधि--

अत्यन्त सूक्ष्म पीसा हुआ रससिन्दूर १।। माशा और सर्पगन्धा का सूक्ष्म-कपड़छान चूर्ण २।। तोला एकत्र मिला, १ घण्टा मर्दन कर के रख लें ।

मात्रा और अनुपान—इसकी २४ पुड़िया बनाकर-सबेरे-शाम १-१ पुड़िया जल, दूध या गुलाब के अर्क साथ दें ।

उपयोग--अनिद्रा, अपतन्त्रक (हिस्टीरिया), उन्माद और नये अपस्मार में इससे लाभ होता है।

५–सर्पगन्धाघनवटी

द्रव्य और निर्माणविधि--

सर्पगन्धा १० सेर खुरासानी अजवायन की पत्ती या बीज २ सेर, जटामांसी १ सेर और भांग १ सेर इनका जौकुट (दरदरा) चूर्ण कर, उसको अठगुने जल में मन्दी आंचपर पकावें और हिलाते रहें । जब अष्टमांश जल बाकी रहे तब ठंडा होनेपर दो बार कपड़े से छानकर फिर मन्दी आंचपर पकावें । जब

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्वाथ करछी या लकड़ी के खोंचे को लगे इतना गाढ़ा हो तब उसको नीचे उतार कर धूप में सुखावें। जब गोली बनने योग्य हो जाय तब उसमें १०-२० तोला पीपलामूल का चूर्ण मिला, ३-३ रत्ती की गोलियाँ बना, सुखा कर रख लें।

मात्रा, अनुपान और उपयोग--२-३ गोली रात को सोते समय जल या दूध के साथ लेने से अच्छी नींद आती है।

वातरोगाधिकार–विंशतितम

१–योगराजगुग्गुल

नागरं पिप्पली चव्यं पिप्पलीमूलचित्रकौ ।
भृष्टं हिंग्वजमोदा च सर्षपा जीरकद्वयम् ।।
रास्ना शक्रयवाः पाठा विडङ्गं गजपिप्पली ।
कटुकाऽतिविषा भार्गी वाजिगन्धा वचा तथा ।।
प्रत्येकं कार्षिकाणि स्युर्द्रव्याणीमानि विंशतिः ।
द्रव्येभ्यः सकलेभ्यश्च त्रिफला द्विगुणा भवेत् ।।
एभिश्चूर्णीकृतैः सर्वैः समो देयश्च गुग्गुलुः ।
गुडूच्या दशमूलस्य क्वाथे पक्वो नवः शुभः ।।
वङ्गं रौप्यं च नागं च लौहं ताम्रमथाभ्रकम् ।
मण्डूरं रससिन्दूरं प्रत्येकं पलसम्मितम् ।।
रक्तित्रयमिताः कार्या वटीर्वैद्या यथोचिताः ।
गुग्गुलुर्योगराजोऽयं त्रिदोषघ्नो रसायनः ।।
रास्नादिक्वाथसंयुक्तो विविधं हन्ति मारुतम् ।
मेदोवृद्धिं तथा कुष्ठं मंजिष्ठादियुतो हरेत् ।।
क्वाथेन निम्बनिर्गुण्ड्योः सर्वव्रणनिसूदनः ।

शार्ङ्गधरसंहिता म० खं० अ० ७ से किंचित्परिवर्तित ।

द्रव्य और निर्माणविधि--

सोंठ, छोटी पीपल, चाब, पीपलामूल, चित्रक के मूल की छाल, घी में सेकी हुई हींग, अजमोद, पीली सरसों, जीरा, कलोजी (मँगरैला), रास्ना, इन्द्रजव,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पाढ़ के मूल, बायविडंग, बड़ी पीपल, कुटकी, अतीस, भारंगमूल, असगंध और बच प्रत्येक का कपड़छान चूर्ण १-१ तोला; हर्रे का दल, बहेड़ादल और आंवलादल तीनों समभाग का कपड़छान चूर्ण मिलाकर ४० तोला; गिलोय और दशमूल के क्वाथ में शुद्ध किया हुआ गूगल ८० तोला; बंगभस्म, रौप्यभस्म, नागभस्म, लोहभस्म, माक्षिकभस्म, अभ्रकभस्म, मण्डूरभस्म और रससिन्दूर प्रत्येक ४-४ तोला लेवें। प्रथम गिलोय और दशमूल ४० तोला लेकर उसका अठगुने जल में क्वाथ करें। जब आठवां हिस्सा जल बाकी रहे तब कपड़े से छान, उसमें ९० तोला गूगल भिगोकर ४-६ घण्टा रख दें। बाद में हाथ से खूब मसलकर कपड़े से छान लें। पीछे उसको मन्दी आंचपर पकावें। जब गूगल पक जावे तब उसमें सूक्ष्म पीसा हुआ रससिन्दूर, भस्में तथा अन्य द्रव्यों का चूर्ण मिला, अच्छी तरह खरल या इमादस्ते में कूटकर ३-३ रत्ती की गोलियां बना लें। कई वैद्य गूगल को गिलोय और त्रिफला के क्वाथ में शुद्ध किये बिना वैसा ही साफ और कूट कर उसमें अन्य द्रव्य मिलाकर गोलियां बना लेते हैं। इस प्रकार बनाये हुए योग को **महायोगराजगुग्गुलु** और बिना भस्मों के बनाए हुए योग को **लघुयोगराजगुग्गुलु** कहते है।

मात्रा—२ गोली महायोगराजगुग्गुलु और ३-५ गोली तक लघुयोगराज-गुग्गुलु की है।

अनुपान और उपयोग—लघु या महायोगराजगुग्गुलु रास्नादि क्वाथ के साथ वातरोगों में; महामञ्जिष्ठादि क्वाथ के साथ मेदोवृद्धि, कुष्ठ तथा अनार्तव पीड़ितार्तव आदि स्त्री-रोगों में और नीम की अन्तर्छाल तथा संभालू के मूल या पत्ती के क्वाथ के साथ सब प्रकार के व्रणों में दें।

२—पञ्चामृतलोहगुग्गुल

रसगन्धकताराभ्रमाक्षिकाणां पलं पलम्।
लोहस्य द्विपलं चापि गुग्गुलोः पलसप्तकम्॥
मर्दयेदायसे पात्रे दण्डेनाप्यायसेन च।
कटुतैलसमायोगाद्यामद्वयमतन्द्रितः॥
माषमात्रप्रयोगेण गृध्रसीमवबाहुकम्।
स्नायुजान् वातजांश्चान्यान् नाशयेन्नात्र संशयः॥

भैषज्यरत्नावली।

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, रौप्यभस्म, अभ्रकभस्म और सुवर्णमाक्षिकभस्म प्रत्येक ४-४ तोला, लोहभस्म ८ तोला और साफ किया हुआ गूगल २८ तोला

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लें। प्रथम पारे-गन्धक की कज्जली बना लें, पीछे गूगल को लोहे के खरल में लोहे की मूसली से थोड़े कड़ुए तेल के छींटे देकर कूटें। जब गूगल नरम हो जाय तब उसमें कज्जली तथा अन्य भस्में मिला, ६ घण्टा मर्दन कर, ४–४ रत्ती की गोलियाँ बना कर रख लें।

मात्रा और अनुपान--१-१ गोली सबेरे-शाम दूध से अथवा चोपचीनी, असगन्ध, एरण्डमूल, इन्द्रायन के मूल, उशबा, सोंठ और कड़ुए सुरंजान के क्वाथ के अनुपान से दें।

उपयोग--इसके सेवन से गृध्रसी, अवबाहुक, कमर और घुटने का दर्द तथा स्नायुओं मे होनेवाले वातरोगों में अच्छा लाभ होता है।

३--अमृतभल्लातक

सुशुद्धभल्लातफलानि सम्यग्द्विधा विदार्याढकसंमितानि।
विपाच्य तोयेन चतुर्गुणेन चतुर्थशेषे व्यपनीय तानि॥
पुनः पचेत् क्षीरचतुर्गुणेन घृतांशयुक्तेन तथा घनं स्यात्।
सितोपलाषोडशभिः पलैस्तु विमथ्य संस्थाप्य दिनानि सप्त॥
ततः प्रयोज्याग्निबलेन मात्रा जयेन्मरुच्छ्लेष्मभवान् विकारान्।

द्रव्य और निर्माणविधि—

अच्छे पके और पुष्ट भिलावों को १ दिन गोमूत्र में तथा ३ दिन गाय के दूध में भिगो के रखें। प्रतिदिन जल से खूब धोकर दूसरे द्रव में भिगोवें। पीछे कपड़छान किये हुए ईंट के चूर्ण से खूब मसल, जल से धोकर सुखा लें। इस प्रकार शुद्धि किये हुए भिलावों को खाने के प्रयोगों के काम में लें। २५६ तोले शुद्ध भिलावों की टोपी सरौते से काट, दो टुकड़े कर १०२४ तोले जल में पकावें। जब क्वाथ चौथाई बाकी रहे तब उसको कपड़े से छान, उसमें २५६ तोले दूध और ६४ तोले गाय का घी मिलाकर मन्दी आँचपर पकाकर खोवा (मावा) बना लें। पीछे नीचे उतार, उस में मिश्री का कपड़छान चूर्ण ६४ तोले मिला, मथानी से मथकर काच के बरतन में भर लें। सात दिन के बाद इसका खाने के लिये प्रयोग करें।

मात्रा और अनुपान--सबेरे-शाम १-१ तोला देकर ऊपर से गाय का धारोष्ण अथवा गरम कर के ठंढा किया हुआ दूध पिलावें।

उपयोग—सब प्रकार के कफ और वात के रोगों में विशेषतः जीर्ण प्रतिश्याय, पक्षाघात और कमर के दर्द में इसका उपयोग करें। यह योग अच्छा पौष्टिक, वीर्यवर्धक और वाजीकरण है। इसके सेवन करनेवाले को गरम

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भोजन, अधिक गरम जल से स्नान, धूप में बैठना-फिरना और अग्नि के पास बैठना निषिद्ध है। इसके सेवनकाल में यदि शरीर में कहीं भी खाज आने लगे तो प्रयोग बन्द कर के नारियल का तैल लगाना चाहिए।

४–नारसिंहचूर्ण

शतावरीरजः प्रस्थं प्रस्थं गोक्षुरकस्य च।
वाराह्या विंशतिपलं गुडूच्याः पंचविंशतिः॥
भल्लातकानां द्वात्रिंशच्चित्रकस्य दशैव तु।
तिलानां शोधितानां च प्रस्थं दद्यात् सुचूर्णितम्॥
त्रिजातस्य पलान्यष्टौ शर्करायाश्च सप्ततिः।
शतावरीसमं देयं विदारीकन्दजं रजः॥
एतदेकीकृतं चूर्णं काचभाण्डे निधापयेत्।
घृतमाक्षिकसंयुक्तं कर्षार्धमुपयोजयेत्॥
नारसिंहमिदं चूर्णं वातरोगहरं नृणाम्॥
बल्यं वृष्यं तथा चैव रसायनवरं स्मृतम्॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

शतावर ६४ तोला, गोखरू ६४ तोला, बाराहीकन्द ८० तोला, गिलोय १०० तोला, शुद्ध भिलावे १२८ तोला, चित्रक के मूल की छाल ४० तोला, धोये हुए तिल ६४ तोला, दालचीनी-तेजपात और छोटी इलायची प्रत्येक ११-११ तोला, मिश्री २८० तोला और विदारीकन्द ६४ तोला लें, सब को एकत्र कूट, कपड़छान चूर्ण बनाकर शीशी में भर लें।

मात्रा और अनुपान–चौथाई तोला चूर्ण, $\frac{1}{2}$ तोला गाय के घी और १ तोला शहद में मिलाकर सबेरे-शाम दें और ऊपर से गाय का दूध पिलावें।

उपयोग—सब प्रकार के वातरोगों में इसका प्रयोग करें यह चूर्ण उत्तम बलकारक, वाजीकरण और रसायन है।

५–रसोनपिण्ड

पक्वकन्दरसोनस्य गुलिका निष्तुषीकृताः।
पाटयित्वा च मध्यस्थं दूरीकुर्यात्तदंकुरम्॥
तदुग्रगन्धनाशाय रात्रौ तक्रे विनिक्षिपेत्।
अपनीय च तन्मध्याच्छिलायां पेषयेत्ततः॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तन्मध्ये पंचमांशेन चूर्णमेषां विनिक्षिपेत् ।
सौवर्चलं यवानीं च भर्जितं सैंहिंगु सैंधवम् ।।
कटुत्रिकं जीरके द्वे समभागानि चूर्णयेत् ।
एकीकृत्य ततः सर्वं तिलतैलेन योजितम् ।।
खादेदग्निबलापेक्षी ऋतुदोषाद्यपेक्षया ।
अनुपानं ततः कुर्यादेरण्डशृतमन्वहम् ।।
सर्वाङ्गैकाङ्गजं वातमर्दितं चापतन्त्रकम् ।
अपस्मारमथोन्मादमूरुस्तम्भं च गृध्रसीम् ।।
उरःपृष्ठकटीपार्श्वकुक्षिपीडां कृमीञ्जयेत् ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

अच्छे पके हुए रसदार लहसुन लो, उनके ऊपर का छिलका उतार, चाकू से दो टुकड़े करके बीच का अंकुर निकाल दें। पीछे उनको रातभर गाय के दही की छाछ में भिगो दें, सवेरे छाछ से निकाल, धो, पत्थर के खरल में महीन पीस, उसमें सोंचर नमक (काला नमक), अजवायन, घी में सेंकी हुई हींग, सेंधा नमक, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, जीरा और कलोंजी (मंगरैला) इनको समभाग लेकर बनाया हुआ चूर्ण एक-पञ्चमांश (पाँचवाँ हिस्सा) मिलाकर थोड़ा तिल का तेल मिलाकर काँच के पात्र में भर लें।

मात्रा और अनुपान—जठराग्नि और रोगी का बल, ऋतु तथा दोष-दूष्यादि देखकर $\frac{1}{2}$ से १ तोला तक देकर ऊपर से रेंडी के मूल का क्वाथ पिलावें।

उपयोग—इस योग का सब प्रकार के वातरोग, विशेष करके सर्वाङ्गवात, एकांगवात, अर्दित, अपतन्त्रक, अपस्मार, वातज उन्माद, ऊरुस्तम्भ, गृध्रसी तथा छाती, पीठ, कमर, पार्श्व और पेट के दर्द एवं कृमिरोगों में प्रयोग करें।

६—वातकुलान्तक रस

मृगनाभिः शिवा नागकेशरं कलिवृक्षजम् ।
पारदो गन्धको जातीफलमेला लवङ्गकम् ।
प्रत्येकं कार्षिकं चैव श्लक्ष्णचूर्णानि कारयेत् ।
ब्राह्मीरसेन संमर्द्य वटीं कुर्याद् द्विरक्तिकाम् ।।
अपस्मारे महाघोरे मूर्च्छारोगे च शस्यते ।
वातजान् सर्वरोगांश्च हन्याद्वातकुलान्तकः ।।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्रव्य और निर्माणविधि-

कस्तूरी, बड़ी हर्रे का दल, नागकेशर, बहेड़ादल, शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, जायफल, छोटी इलायची और लौंग प्रत्येक समभाग लें। प्रथम पारे-गन्धक की कज्जली बना, उसमें कस्तूरी डालकर ब्राह्मी के रस में ३ घंटा मर्दन करें। पीछे अन्य द्रव्यों का कपड़छान चूर्ण मिला, ब्राह्मी के स्वरस में एक दिन मर्दन कर, २-२ रत्ती की गोलियाँ बना कर छाया में सुखा लें।

मात्रा और अनुपान--१ गोली दिन में ३-४ बार ब्राह्मी, शंखाहुली, लौंग और जटामांसी के क्वाथ के अनुपान से दें।

उपयोग--अपस्मार, मूर्च्छा, हिस्टीरिया आक्षेपक आदि वातरोगों में इसका प्रयोग करें।

७--बृहद्वातचिन्तामणि रस

भागमेकं स्वर्णभस्म द्विभागं रौप्यमभ्रकम्।
मौक्तिकं विद्रुमं लौहं भागत्रयमितं भवेत्॥
कस्तूरीमग्निजारं च भागमेकं विनिक्षिपेत्।
चन्द्रोदयं सप्तभागं कन्यारसविमर्दितम्॥
द्विगुञ्जा वटिका कार्या देया योग्यानुपानतः।
वातचिन्तामणिर्हन्याद्वातरोगानशेषतः॥

द्रव्य और निर्माण विधि-

स्वर्णभस्म १ भाग, रौप्यभस्म २ भाग, अभ्रकभस्म २ भाग, मोती की भस्म या पिष्टी ३ भाग, प्रवाल की भस्म या पिष्टी ३ भाग, लोहभस्म ३ भाग, कस्तूरी १ भाग, अम्बर १ भाग और चन्द्रोदय ७ भाग लें। प्रथम चन्द्रोदय को खूब महीन पीस, उसमें कस्तूरी और अम्बर डालकर ग्वारपाठे के रस में मर्दन करें। जब वे अच्छी तरह मिल जायें तब अन्य द्रव्य मिला एक दिन ग्वारपाठे के रस में मर्दन कर, १-१ रत्ती की गोलियाँ बना, छाया में सुखाकर शीशी में भर लें।

मात्रा और अनुपान--१ गोली यथावश्यक दिन में ३-४ बार शहद में मिलाकर चटावें।

गुण और उपयोग--यह रस हृदय और मस्तिष्क के लिये उत्तम बलकारक, वात-कफनाशक और वाजीकरण है। सब प्रकार के वातरोगों में इसका प्रयोग करें। आक्षेपक और अपतन्त्रक (हिस्टीरिया) में मांस्यादि क्वाथ के अनुपान से दें। सन्निपात ज्वर में जब प्रलाप, मोह, नाड़ी की क्षीणता, हाँथ-पाँव काँपना

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पसीना अधिक होकर शरीर ठंढा पड़ना इत्यादि लक्षण हों तो इसके प्रयोग से लाभ होता है। प्रलापावस्था में ज्वराधिकारोक्त तगरादिक्वाथ के साथ इसका प्रयोग करें।

८–खञ्जनिकारि रस

कुपीलु मल्लसिन्दूरं तथा रजतभस्म च ।
मुद्गमानां वटीं कुर्यात् संभाव्यार्जुनवारिणा ॥
आर्दितं पक्षघातं च गदं खञ्जनिकं तथा ।
रसः खञ्जनिकार्याख्यो हरेदाशु न संशयः ॥

द्रव्य और निर्माण विधि––

शुद्ध कुचले का कपड़छान चूर्ण, मल्लसिंदूर और रौप्यभस्म सम भाग लें, प्रथम मल्लसिंदूर को खूब महीन पीस, उसमें अन्य द्रव्य मिला, अर्जुन वृक्ष की छाल के क्वाथ की ७ भावनाएँ दे, मूंग के बराबर गोलियाँ बनाकर छाया में सुखा लें।

मात्रा और अनुपान––१-२ गोली सबेरे-शाम गाय के दूध या दशमूल के क्वाथ के अनुपान से दें।

उपयोग––अर्दित, खञ्जवात और पुराने पक्षाघात में इससे अच्छा लाभ होता है।

९–अपतन्त्रकारिवटी

द्रव्य और निर्माणविधि––

घी में सेंकी हुई हींग १ तोला, कपूर १ तोला, चरस या गांजा १ तोला, खुरासानी अजवायन के बीज या पत्ती २ तोला और तगर (यूनानी-असारून) २ तोला, सबका कपड़छान चूर्ण कर, जटामांसी के फाण्ट में पीस, २–२ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छाया में सुखा लें।

मात्रा––२ गोली देकर ऊपर से मांस्यादि क्वाथ पिलावें। ऐसे दिन में ३-४ मात्रा यथावश्यक दें।

उपयोग––अपतन्त्रक (हिस्टीरिया) में इस योग से अच्छा लाभ होता है।

१०–मास्यादिक्वाथ

द्रव्य और निर्माणविधि––

जटामांसी १ तोला, असगन्ध चौथाई तोला और खुरासानी अजवायन के बीज १॥ माशा इनको जौकूट कर, १० तोला जल में पका, ४ तोला जल बाकी रहने पर कपड़े से छान कर पिलावें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपयोग——इस क्वाथ का हिस्टीरिया, आक्षेप बालकों का आक्षेपक—इन रोगों में अकेले या अपतन्त्रकारिवटी, बृहद्वातचिन्तामणि, ब्राह्मीवटी, सर्पगन्धायोग इनके अनुपान के रूप में प्रयोग करें।

११—मल्लसिन्दूर

रसरसविधू नवाक्षौ सार्धेषुचतूः सुवर्णबलिमल्लौ।
कूप्यां द्व्यहं परिपचेत् पवनकफौ हन्ति मल्लसिन्दूरः॥

सिद्धभैषज्यमणिमाला।

द्रव्य और निर्माणविधि——

शुद्ध पारद ९ भाग, रसकपूर ९ भाग, शुद्ध गन्धक ५॥ भाग और शुद्ध संखिया ४॥ भाग लें। प्रथम पारे-गन्धक की कज्जली बना, उसमें रसकपूर सङ्खिया मिला, ग्वारपाठे के रस में २ दिन मर्दन कर, ७ कपड़मिट्टी की हुई शीशी में भरकर बालुकायन्त्र में २ दिन पकावें। स्वांगशीतल होनेपर शीशी को तोड़, शीशी के गले में जमे हुये मल्लसिन्दूर को निकाल, ३ दिन पत्थर के खरल में पीस, खूब महीन होनेपर शीशी में भर लें।

मात्रा और अनुपान——आधी से १ रत्ती दिन में दो बार शहद में या सितोपलादि चूर्ण १॥ माशे और शहद में मिलाकर दें। कफरोगों में अदरख के रस और शहद के साथ मिलाकर दें।

उपयोग—सर्व प्रकार के वात और कफ के रोगों मे विशेषतः अर्दित और पक्षाघात तथा जीर्ण प्रतिश्याय और कफाधिक-तमकश्वास (दमे) में इससे अच्छा लाभ होता है।

१२—सुवर्णसमीरपन्नग

द्रव्य और निर्माणविधि——

सोने के वरक १ भाग, शुद्ध पारद ४ भाग, शुद्ध गन्धक ४ भाग, शुद्ध संखिया ४ भाग, शुद्ध मैनसिल ४ भाग और शुद्ध हरताल ४ भाग लें। प्रथम खरल में पारा डालकर उसमें सोने के वरक एक-एक कर के मिलावें। जब सब वरक मिल जायँ तब उसमें गन्धक मिलाकर कज्जली करें। पीछे उसमें संखिया, मैनसिल और हरताल मिलाकर २ दिन ग्वारपाठे के रस में मर्दन कर, सुखा, सात कपड़मिट्टी की हुई शीशी में भरकर बालुकायन्त्र में दो दिन पकावें। अग्नि इतना रखें जिसमें कज्जली द्रव होकर पकती रहे (शीशी के गले में आवे इतनी तेज न करें)। स्वांगशीतल होनेपर शीशी को तोड़, तलस्थ रस को निकाल, २-३ दिन खूब महीन पीसकर शीशी में भर लें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मात्रा और अनुपान:– आधी से १ रत्ती, शहद या अदरक का रस और शहद के साथ मिलाकर चटावें।

उपयोग–सब प्रकार के वातरोगों में, विशेषत: अर्दित, पक्षाघात, कटिस्तम्भ, तथा पार्श्वशूल इनमें, कफाधिक तमकश्वास में, सन्निपातज्वर में जब तन्द्रा, स्वेदाधिक्य, शीतांग आदि लक्षण हों तब इस योग से अच्छा लाभ होता है।
स्वेदाधिक्य, शीतांग आदि लक्षण हों तब इस योग से अच्छा लाभ होता है।
फिरंगोपदंश से जो वातरोग होते हैं उनमें इससे विशेष लाभ होता है।

१३–ब्राह्मीवटी

द्रव्य और निर्माणविधि--

अभ्रकभस्म, संगेयशव की भस्म या पिष्टी, अकीक की भस्म या पिष्टी, माणिक्य की भस्म या पिष्टी, चन्दोदय प्रवाल की भस्म या पिष्टी, कहरुवा की पिष्टी, सोने की भस्म या वरक, मोती की भस्म या पिष्टी प्रत्येक ६–६ माशा, जायफल, लौं, कूठ, जावित्री, स्याह–जीरा, छोटी पीपल, दालचीनी, अनीसून, असगन्ध, अकरकरा, धनिया, वंशलोचन, छोटी इलायची के बीज, शंखाहुली, श्वेतचन्दन, सौंफ, तेजपात, नागकेशर, रूमीमस्तंगी, पीपलामूल, चित्रक के मूल की छाल और कुलिंजन प्रत्येक ४-४ माशा; कस्तूरी अम्बर, ब्राह्मी, निशोथ, अगर और केशर प्रत्येक १।।-१।। तोला लेवें। प्रथम चन्द्रोदय, केशर, कस्तूरी और अम्बर को खूब महीन पीस उसमें अन्य भस्में और पिष्टियाँ मिला, सोने के वरक १–१ करके मिलावें। सोने के वरक अच्छी तरह मिल जानेपर अन्य द्रव्यों का कपड़छान चूर्ण मिला १ दिन ब्राह्मी के स्वरस में मर्दन कर, २–२ रत्ती की गोलियाँ बना, छाया में सुखाकर शीशी में भर लें।

मात्रा–१-२ गोली दिन में २-२ बार आवश्यकतानुसार दें।

अनुपान और उपयोग–सन्निपातज्वर में प्रलाप हो तब तगरादिक्वाथ के अनुपान से, अपतन्त्रक और आक्षेपक में मांस्यादिक्वाथ के अनुपान से, सन्ततज्वर में शहद में मिलाकर, वातरोगों में दशमूल के क्वाथ के अनुपान से, हृदय की दुर्बलता में खमीरे गावजवान के साथ मिलाकर, भ्रम (सिर में चक्कर आने) में द्राक्षादि चूर्ण के साथ मिलाकर इसका प्रयोग करें। दिल और दिमाग की कमजोरी और उनसे होनेवाले लक्षणों में इससे अच्छा लाभ होता है।

१४--रसराजरस

पलैकं रससिन्दूर व्योमभस्म च कार्षिकम्।
तदर्धं काञ्चनं दद्यान्मुक्ता विद्रुममेव च॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लोहं रौप्यं मृतं वङ्गं वाजिगन्धां लवङ्गकम् ।
जातीकोषफले क्षीरकाकोलीं च तदर्धतः ।।
कन्यायाः काकमाच्याश्च रसैः पिष्ट्वा वटीं चरेत् ।
गुञ्जाद्वयोन्मितां दत्त्वा गोक्षीरमनुपाययेत् ।।
पक्षाघातेऽर्दिते वाते हनुस्तम्भेऽपतन्त्रके ।
आक्षेपके कर्णनादे तथैव मस्तकभ्रमे ।।
सर्ववातविकारेषु रसराजः कीर्तितः ।

भैषज्यरत्नावली से किंचित्परिवर्तित ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

रससिन्दूर ४ तोला, अभ्रकभस्म १ तोला; सुवर्णभस्म, मोती की पिष्टी, प्रवाल की भस्म या पिष्टी आधा-आधा तोला; लोहभस्म रौप्यभस्म, वङ्गभस्म असगन्ध, लौङ्ग, जायपत्री, जायफल और काकोली प्रत्येक चौथाई-चौथाई तोला लें। प्रथम रससिन्दूर को खूब महीन पीस, उसमें अन्य भस्में तथा वनस्पतियों का कपड़छान चूर्ण मिला, एक-एक दिन ग्वारपाठे और मकोय के रस में मर्दन कर, २-२ रत्ती की गोलियाँ बना, छाया मे सूखा कर शीशी में भर लें।

मात्रा और अनुपान—१-१ गोली सबरे-शाम शहद में चटाकर ऊपर से गाय का दूध दें।

उपयोग—सब प्रकार के बातरोग में विशेषत: पक्षाघात, अर्दित, अपतन्त्रक, आक्षेपक, कान में आवाज होना और शिर में चक्कर आना—इन विकारों में इसका प्रयोग करें।

१५—नारायण तैल

अश्वगन्धां बलां बिल्वं पाटलं बृहतीद्वयम् ।
श्वदंष्ट्रां चैव निर्गुण्डीं श्योनाकं च पुनर्नवाम् ।
माषान् कुरण्टकं रास्नामेरण्डं देवदारु च ।
प्रसारणीमग्निमन्थं कुर्याद्दशपलं पृथक् ।।
चतुर्द्रोणे जले पक्त्वा कुर्यात् पादावशेषितम् ।
तैलाढकेन संयोज्य शतावर्या रसाढकम् ।।
क्षिपेत्तत्र च गोक्षीरं तथैवाढकसंमितम् ।
शनैर्विपाचयेदेभिः कल्कैर्द्विपलिकैः पृथक् ।।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुष्ठैलाचन्दनबलामांसीशैलेयसैन्धवै ।
अश्वगन्धावचारास्नाशतपुष्पेन्द्रदारुभिः ।।
पर्णीचतुष्टयेनैव तगरेण च साधयेत् ।।
तत्तैलं नावनेऽभ्यङ्गे पाने बस्तौ च योजयेत् ।।
पक्षाघातं हनुस्तम्भं मन्यास्तम्भावबाहुकम् ।
खल्लीं कटिग्रहं पार्श्वशूलं कर्णव्यथां तथा ।।
गृध्रसीं गात्रशोषं च पांगुल्यं च शिरोग्रहम् ।
अन्यांश्च विषमान् वाताञ्जयेत् सर्वाङ्गसंश्रयान् ।।
शार्ङ्गधरसंहिता म० खं० अ० ९ से किंचित्परिवर्तित ।

द्रव्य और निर्माणविधि-

असगन्ध, बरियार (खरेंटी) के मूल, बेलमूल, पाडर के मूल, छोटी कटेरी (भटकटैया), बड़ी कटेरी (बरहंटा), गोखरू, संभालू की पत्ती, सोनापाठा के मूल या छाल, गदहपुरना के मूल, उड़द, कटसरैया, रास्ना, एरण्डमूल, देवदारु, प्रसारणी (खींप) और अरणी प्रत्येक ४०-४० तोला लें, उनको जौकुट करके ४ द्रोण (४०९६ तोले) जल में पकावें । जब चौथाई जल बाकी रहे तब नीचे उतार, ठंढा होने पर कपड़े से छान; उसमें तिल का तेल २५६ तोला, शतावर का रस २५६ तोला, गाय का दूध २५६ तोला और कूठ, छोटी इलायची, श्वेतचन्दन, बरियार के मूल, जटामांसी, छड़ीला, सेंधानमक, असगन्धं, बच, रास्ना, सौंफ, देवदार, सरिवन, पिठवन, मषवन, मुगवन और तगर, इन प्रत्येक का कल्क ८-८ तोला मिलाकर तैलपाक विधि से पकावें । तैल सिद्ध होनेपर कपड़े से छानकर शीशियों में भर लें ।

उपयोग—पक्षाघात, अर्दित, हनुस्तभ, मन्यास्तम्भ, अवबाहुक, खल्ली (हाथ-पाँव में बाँयटे आना), कमर का दर्द, पार्श्वशूल कान का दर्द गृध्रसी, शरीर के किसी अवयव का सूखना, लंगड़ापन शिर का दर्द तथा अन्य एकांग या सर्वाङ्ग में होनेवाले वातरोग में इस तेल का उपयोग—मालिश करने में, नस्य, देने में, कान में डालने में, पिलाने में, और बस्ति देने में करें ।

१६—विषगर्भतेल

द्रव्य और निर्माणविधि—

ताजे असगन्ध के मूल, कनेर की जड़, आक की जड़, धतूरे का पञ्चांग, संभालू की पत्ती कायफर की छाल ये प्रत्येक ६४-६४ तोला लेकर उसका अठगुने जल में

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्वाथ करें। जब चौथाई जल बाकी रहे तब कपड़े से छानकर उसमें तिल का तेल १२८ तोला और बच्छनाग, धतूरे के बीज, घुंघची (चिरमिटी), अफीम, खुरासानी अजवायन, कलिहारी की जड़ कुठ, कुचला और वच प्रत्येक ४-४ तोले का कल्क मिलाकर मन्दी आँच पर पकावें। तेल तैयार होनेपर कपड़े से छान, थोड़ी गरम हालत में उसमें ५ तोला कपूर का चूर्ण मिलाकर शीशी में भर लें।

उपयोग--सन्धिवात में और शरीर के किसी भी अवयव में दर्द होता हो तो इस तैल की हल्के हाथ से मालिस करें। पीड़ा शान्त करने के लिये यह उत्तम योग है।

१७--पञ्चगुणतैल

द्रव्य और निर्माण-विधि--

हर्रे, बहेड़ा और आंवला प्रत्येक ५-५ तोला, नीम और संभालू की पत्ती प्रत्येक १५-१५ तोला, लें जोकुट कर, अठगुने जल में पका, चौथाई जल बाकी रहने पर कपड़े से छान, उसमें तिल का तेल ८० तोला तथा मोम, गन्धाबिरोजा, शिला-रस, राल और गूगल प्रत्येक ४-४ तोला डालकर मन्दी आँच पर पकावें। पकते-पकते खरपाक होकर जब तेल अलग हो जाय तब कपड़े से छान, थोड़ा गरम हालत में उसमें कपूर का मोटा चूर्ण ५ तोला डाल, चमचे से हिलाकर मिला दें। ठंढा होने पर उसमें तार्पीन का तेल, युकेलिप्टस का तेल और केजोपुटी का तेल २॥-२॥ तोला मिलाकर शीशी में भर लें।

उपयोग—संधिवात और शरीर के किसी भी अवयव के शूल-दर्द में हलके हाथ से मालिश करें। कर्णशूल में कान में डालें। सब प्रकार के व्रणों में व्रण को नीम और संभालू की पत्ती के क्वाथ से धोकर उसपर इस तेल में भिगोई हुई रूई या स्वच्छ कपड़ा रख, ऊपर केला, समुद्रशोष, धायपात अथवा बड़ का पत्ता रखकर बांध दें। यह तेल उत्तम वेदनाहर (पीड़ाशामक) और व्रण का शोधन-रोपण करनेवाला है।

१८--वातघ्नलेप

द्रव्य और निर्माण विधि–

कुन्दुरू-गोंद २० तोला, आंबाहल्दी ५ तोला, सज्जीखार २ तोला, एलुवा (मुसब्बर) ५ तोला, हीराबोल ५ तोला, रेवन्दचीनी ४ तोला, गेरू ५ तोला, सफेद सरसों १ तोला, उसारे रेवन्द १ तोला, अंजरूत २ तोला, डीकामाली-गोंद (नाड़ीहिंगु) २ तोला, मेदालकड़ी ५ तोला, चन्द्रसूर (चन्द्रसूर-हालीम) ५ तोला,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गूगल ४ तोला, अलसी ४ तोला, उशक २ तोला और मेथी ४ तोला, इन सब का चूर्ण करके रख लें।

उपयोग--आवश्यकतानुसार ले, जल में खूब महीन पीस, गरम करके जहाँ पीड़ा हो या चोट लगी हो वहाँ मोटा लेप करके ऊपर रूई चिपका दें। इससे पीड़ा और सूजन शान्त होती है।

१९-वातहर उपनाह

कोलं कुलत्थाः सुरदारु रास्ना माषातसीतैलफलानि कुष्ठम्।
वचा शताह्वा यवचूर्णमम्लमुष्णानि वातामयिनां प्रदेहः॥

चरक सु० अ० ३।

द्रव्य और निर्माणविधि--

सूखे हुए बेर का गूदा, कुलथी, देवदार, रास्ना, उड़द, अलसी, तिल, रेंडी के बीज, कूठ, गच सौंफ और जौ--इनका चूर्ण कर, खट्टी कांजी या (या गोमूत्र) में पका, दो कपड़ो के बीच में रखकर जहाँ वायु का दर्द हो वहाँ सेकें। इससे पीड़ा शान्त होती है।

२०-महारास्नादि क्वाथ

रास्ना द्विगुणभागा स्यादेकभागास्तथाऽपरे।
धन्वयासबलैरण्डदेवदारुशटीवचाः॥
वासको नागरं पथ्या चव्यं मुस्ता पुनर्नवा।
गुडूची वृद्धदारुश्च शतपुष्पा च गोक्षुरः॥
अश्वगन्धा प्रतिविषा कृतमालः शतावरी।
कृष्णा सहचरश्चैव धान्यकं बृहतीद्वयम्॥
द्वीपान्तरवचा मुण्डी विल्वो नागबला तथा
एभिः शृतं पिबेत् क्वाथं शुण्ठीचूर्णेन संयुतम्॥
कृष्णाचूर्णेन वा योगराजगुग्गुलुनाथऽवा।
हिंगुसौवर्चलाभ्यां वा तैलेनैरण्डजेन वा॥
सर्ववातविकारेषु पक्षाघातेऽववाहुके।
गृध्रस्यामामवाते च श्लीपदे चापतानके॥
वातवृद्धौ तथाऽश्माने नार्या योन्यामयेषु च।
महारास्नादिराख्यातः कटिपृष्ठरुजापहः॥

शार्ङ्गधर म० खं० अ० २ से किंचित्परिवर्तित।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्रव्य और निर्माणविधि—

रास्ना २ भाग; धमासा, बरियारा (खरेंटी) के मूल, रेंडी के मूल, देव-दार, बच, कचूर, अडूसे के मूल, सोंठ,हर्रेदल, चाब, नागरमोथा, गदहपुरना-सांठी, गिलोय, विधारा, सोया के बीज गोखरू, असगन्ध, अतीस, अमलतास का गूदा, शतावर, छोटी पीपल, कटसरैया, धनिया, छोटी कटाई, बड़ी कटाई, चोपचीनी; गोरखमुण्डी, बेल के वृक्ष की जड़ और नागबला—इनको सम भाग लें, जौकूट करके रख लें। इसमें से एक तोला ले, उसको १६ तोले जल में पका, ४ तोला-जल बाकी रहने पर सोंठ का चूर्ण, छोटी पीपल का चूर्ण, योगराजगूगल, हींग, सोंचर का चूर्ण अथवा रेंड़ी का तैल इनमें से किसी एक अनुपान के साथ दिन में २ बार सबेरे-शाम दें।

उपयोग—सब प्रकार के वातरोगों में विशेष करके पक्षाघात, अवबाहुक, गृध्रसी, आमवात, सन्धिवात, श्लीपद, अपतानक, वातज-अण्डवृद्धि, पेट का अफरा और स्त्रियों के पीड़ितातंव इन रोगों में इसका प्रयोग करें।

२१—माजून कुचला

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध कुचला १२ तोला, गुले गावजवान ८ तोला छोटी इलायची ४ तोला, कचूर ४ तोला, शकाकुल ४ तोला, चन्दन सफेद ४ तोला, आँवलादल ४ तोला, बड़ी हर्रे का दल ४ तोला, अगर २ तोला, लौंग २ तोला, मग्ज चिलगोला ६ तोला, मग्ज-नारियल ६ तोला, मग्ज भिलावा ६ तोला, नागरमोथा २ तोला, शुद्ध बच्छनाग १ तोला, काली मिर्च २ तोला, असगन्ध २ तोला, चोपचीनी ८ तोला, सुरंजान कड़ुवा ६ तोला, जायफल २ तोला, जावित्री २ तोला, अकरकरा ४ तोला—इन सबका कपड़छान चूर्ण तथा अभ्रकभस्म २ तोला, लौहभस्म २ तोला और शुद्ध संखिया १॥ माशा ले, सबको तीन गुने शहद में मिला, काँच की बरनी में भरकर रख दें।

मात्रा और अनुपान—३ माशा सबेरे-शाम खाने के तीन घण्टा पहले गरम दूध के साथ दें। यह माजून सब प्रकार के वातरोग, विशेषत: पक्षाघात; कटि-शूल, जीर्ण सन्धिवात और अर्दित में विशेष लाभ करता है तथा उत्तम पाचन, दीपन, रसायन, वाजीकर और बलकारक है।

———

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुष्ठाधिकार—एकविंशतितम

१--महातिक्त घृत

सप्तच्छदं प्रतिविषां शम्याकं तिक्तरोहिणीं पाठाम् ।
मुस्तमुशीरं त्रिफलां पटोलपिचुमर्दपर्पटकम् ।।
धन्वयवासं चन्दनमुपकुल्यां पद्मकं हरिद्रे द्वे ।
षड्ग्रन्थां सविशालां शतावरीं सारिवां वासाम् ।।
वत्सकयासं मूर्वाममृतां किराततिक्तकं चैव ।
कल्कान् कुर्यान्मतिमान् यष्टयाह्व त्रायमाणां च ।
कल्कश्चतुर्थभागो जलमष्टगुणं रसोऽमृतफलानाम् ।
द्विगुणो घृतात् प्रदेयस्तत् सर्पिः पाययेत् सिद्धम् ।।
कुष्ठानि रक्तपित्तप्रबलान्यर्शांसि रक्तवाहीनि ।
विसर्पमम्लपित्तं वातासृक् पाण्डुरोगं च ।।
विस्फोटकान् सपामानुन्मादं कामलां ज्वरं कण्डूम् ।
हन्यादेतत् सर्पिः पीतं काले यथाबलं सद्यः ।।

च० चि० अ० ७ ।

द्रव्य और निर्माणविधि—

छतिवन, अतीस, अमलतास, कुटकी, पाढ, नागरमोथा, खस, हर्रेदल, बहेड़ादल, आँवलादल, परवल की पत्ती, नीम की अन्तर छाल, पित्तपापड़ा धमासा, रक्त चन्दन, छोटी पीपल, पद्माख, हल्दी, दारुहल्दी, वच, इन्द्रायायन की जड़, शतावर, अनन्तमूल, अड़ूसा, कुड़ा (कोरैया) की छाल, जवासा, मूर्वा, गिलोय, चिरायता, मुलेठी और त्रायमाण प्रत्येक १—१ तोला ले, इनका कपड़-छान चूर्ण बना जल में पीसकर कल्क करें। पीछें उसमें गाय का घी १२८ तोला, जल १०२४ तोला और आमलेका रस २५६ तोला मिलाकर घृतपाक-विधि से घृत पकावें। घृत सिद्ध होनेपर कपड़े से छान कर काच के बरतन में भर लें।

मात्रा—१-२ तोला दिन में दो बार सबेरे—शाम दें।

उपयोग—रक्त और पित्त की अधिकतावाले कुष्ठ, रक्तार्श, विसर्प, अम्लपित्त (जिसमें खट्टा वमन होता हो), वातरक्त, पाण्डुरोग, बिस्फोटक, पामा उन्माद, कामला, जीर्ण ज्वर और कण्डू—इन रोगों में इनके सेवन से अच्छा लाभ होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वक्तव्य–यदि रोगी इस घृत को न लेना चाहता हो तो कल्क के द्रव्यों का क्वाथ करके पिला वें अथवा कल्क के द्रव्यों के बराबर (३१ तोला) खैर की लकड़ी का बुरादा मिला, उसको जौकुटकर, उस में चौगुना जल डाल कर पकावें; जब चौथाई जल बाकी रहे तब कपड़े में छानकर उसमें क्वाथ से चतुर्थांश शहद और चीनी तथा ३२ वां भाग अनन्तमूल और धाय के फूल का चूर्ण मिलाकर चीनी मिट्टी की बरनी या सागौन की लकड़ी के पीपे में डालकर १ मास रख छोड़ें। एक मास के बाद कपड़े से छानकर फिर उसी पात्र में भर दें। यह 'महातिक्तासव' तैयार होगा। इसको भी ऊपर लिखें रोगों में ४ तोले की मात्रा में उतना ही जल मिलाकर दिन में दो बार पिलावें।

२–खदिरारिष्ट

द्रव्य और निर्माणविधि--

खदिरस्य तुलार्धं तु देवदारु च तत्समम्।
बाकुची द्वादशपला दार्वी स्यात् पंचविंशतिः॥
त्रिफला विंशतिपला ह्यष्टद्रोणेऽम्भसः पचेत्।
कषाये द्रोणशेषे च पूते शीते विनिक्षिपेत्॥
माक्षिकस्य सितायाश्च दद्यादेकतुलां पृथक्।
धातक्याः कुडवं चैव कंकोलं नागकेशरम्॥
जातीफलं लवङ्गैलात्वक्पत्राणि पृथक् पृथक्।
पलोन्मितं सारिवाया दद्यादष्टपलं भिषक्॥
घृतभाण्डे विनिक्षिप्य मासादूर्ध्वं पिबेन्नरः।
एष वै खदिरारिष्टः सर्वकुष्ठनिवारणः॥

शा० म० खं० १०।

द्रव्य और निर्माणविधि--

खैर की लकड़ी का बुरादा २०० तोला, देवदार २०० तोला, बावची ४८ तोला, दारुहल्दी १०० तोला, हर्रेदल, बहेड़ादल और आंवलादल प्रत्येक ८० तोला; इन सबको जौकुट कर, ८१९२ तोले जल में पका, १०२४ तोला जल बाकी रहनेपर कपड़े से छान, उसमें शहद ४०० तोला, चीनी ४०० तोला, धाय के फूल ६४ तोला, कबावचीनी, नागकेशर, जायफल, लौंग. छोटी इलायची दालचीनी तेजपात प्रत्येक ४–४ तोला तथा अनन्तमूल ३२ तोला इसका कपड़-छान चूर्ण मिला, पेंचदार ढक्कन की चीनी मिट्टी की बरनी में या सागौन की लकड़ी के पीपे में भर कर १ मास रहने दें। १ मास के बाद कपड़े से छान, उसी बरतन को जल से धोकर उसमें भर लें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मात्रा--२-४ तोला, उतना ही जल मिलाकर दिन में दो बार दें।

उपयोग--सब प्रकार के कुष्ठ रोगों में इसका अकेला या गन्धकरसायन के अनुपान के रूप में प्रयोग करें।

३--गन्धक रसायन

शुद्धो बलिर्गोपयसा त्रिवारं ततश्चतुर्जातगुडूचिकाद्भिः।
पथ्याक्षधात्रीफलभृङ्गनीरैर्भाव्योऽष्टवारं पृथगार्द्रकेण ।।
सिद्धे सितां योजय तुल्यभागां रसायनं गन्धकसंज्ञकं स्यात्।
कुष्ठानि सर्वाणि निहन्ति नाड़ीव्रणं तथा कोष्ठगतांश्च रोगान्।
मासोन्मिते सेवित एति मर्त्यो वीर्यं च पुष्टिं बलमग्निदीप्तिम्।
आयुर्वेदप्रकाश।

द्रव्य और निर्माण विधि--

गाय के दूध से ३ बार शुद्ध किया हुआ गंधक ६४ तोला ले, उसको पत्थर के खरल में डाल, दालचीनी, तेजपात, छोटी इलायची और नागकेशर इन प्रत्येक के कपड़छान चूर्ण को रात में द्विगुण जल में भिगो, सबेरे हाथ से मसलकर कपड़े से छाने हुए जल से, ताजी गिलोय के स्वरस से हर्रे और बहेड़े के क्वाथ से, आँवला भांगरा और अदरख इन के स्वरस से ८-८ दिन मर्दन करें। अर्थात् प्रत्येक के जल, क्वाथ या स्वरस में ८-८ दिन भावना दें। कुल ८० भावना दें। प्रत्येक भावना में ३-६ घण्टा मर्दन करके छाया में सुखाने के बाद दूसरी भावना दें। अन्त में सुखाकर, उसमें समान भाग मिश्री का चूर्ण मिलाकर शीशी में भर लें।

मात्रा और अनुपान—४-८ रत्ती सबेरे शाम जल, दूध, मञ्जिष्ठादि क्वाथ, महातिक्तघृत के कल्कद्रव्यों का क्वाथ, सारिवादिहिम अथवा खदिरारिष्ट के अनुपान से दें।

उपयोग—इसके सेवन से सब प्रकार के कुष्ठ, नाड़ीव्रण (नासूर-भगन्दर) और शूल--अग्निमान्द्य आदि पेट की बीमारियाँ दूर होती हैं। एक मास इसके सेवन से वीर्य, बल तथा शरीर की पुष्टि प्राप्त होती है और जठराग्नि प्रदीप्त होती है।

४--मदयन्त्यादिचूर्ण

द्रव्य और निर्माणविधि—

छाया में सुखाए हुए मेंहदी के बीज या पत्ती का कपड़छान चूर्ण २ भाग और भाङ्गरे के रस में शुद्ध किये हुए गन्धक का कपड़छान चूर्ण १ भाग ले, दोनों को ३ घण्टा मर्दन करके शीशी में भर लें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मात्रा और अनुपान–१ माशा–दिन में २–३ बार जल या सारिवादिहिम के अनुपात से दें ।

उपयोग–कण्डू (खाज), पामा और फोड़े-फुन्सी में इसका प्रयोग करें ।

५--सारिवादि हिम

द्रव्य और निर्माणविधि–

अनन्तमूल, खदिर, आँवला, ब्राह्मी, नीलकंठीमीठी, चोपचीनी, मजीठ, गिलोय धमासा, रक्तचन्दन, गुलबनफ्सा, खस, गोरखमुण्डी, शाहतरा, कमल के फूल, गुलाब के फूल, गूमा, पद्माख जीवंतीमूल और शंखाहुली प्रत्येक समभाग ले, उनका मोटा चूर्ण कर के रख लें । इसमें से १ तोले चूर्ण को रात में ६ तोला गरम जल में मिट्टी के या काँच के पात्र में भिगो, सबेरे मे हाथ से मसल, कपड़े से छानकर पीने को दें । सवेरे में उसी में फिर ५ तोला गरम जल डालकर रख छोडें । उसको शाम को मसल, कपड़े से छानकर पीने को दें ।

उपयोग–सब प्रकार के रक्तविकार, कण्डू पामा, हाँथ–पाँव की जलन, अम्लपित्त, जीर्णज्वर आदि पित्त और रक्तदुष्टिप्रधान विकारों में इसका प्रयोग करें ।

६--महामञ्जिष्ठादिकषाय

मञ्जिष्ठामुस्तकुटजगुडूचीकुष्ठनागरैः ।
भार्गीक्षुद्रावचानिम्बनिशाद्वयफलत्रिकैः ।।
पटोलकटुकीमूर्वाविडङ्गासनशालकैः ।
शतावरीत्रायमाणामुण्डीन्द्रियववासकैः ।।
भृङ्गराजमहादारुपाठाखदिरचन्दनैः ।
त्रिवृद्वरुणकैरातबाकुचीकृतमालकैः ।।
शाखोटकमहानिम्बकरंजातिविषाजलैः ।
इन्द्रवारुणिकानन्तासारिवापर्पटैः समैः ।।
एभिः कृतं पिबेत् क्वाथं मधुशर्करयाऽन्वितम् ।
अष्टादशसु कुष्ठेषु वातरक्तार्दिते तथा ।।
मेदोवृद्धौ श्लीपदे च मंजिष्ठादिः प्रशस्यते ।

द्रव्य और निर्माणविधि--

मजीठ, नागरमोथा, कुड़ा की छाल या मूल, गिलोय, कूठ, सोंठ, भारङ्गी, छोटी कटाई, (भटकटैया), वच, नीम की अन्तर्छाल, हल्दी, दारुहल्दी, हर्ड, बहेड़ा,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आंवला, पटोल, कुटकी, मूर्वा, बायविडङ्ग, विजयसार, साल, (सखुआ), शतावर, त्रायमाणा, गोरखमुण्डी, इन्द्रजव, अड़ूसा भँगरा, देवदार, पाढ़ खैर, रक्त-चन्दन, निशोथ, वरना की छाल, चिरायता, बावची, अमलतास, शाखोटक, बकायन की छाल, करंज की छाल, अतीस, खस, इद्रायन की जड़, धमासा, अनन्तमूल और पित्तपापड़ा सब समभाग ले, जौकुट करके रख लें।

मात्रा—इसमें से १ तोला ले, उसको १६ तोले जल में पकावें। जब चौथाई जल बाकी रहे तब कपड़े से छान उसमें शहद और मिश्री मिलाकर पिलावें। ऐसा सबेरे-शाम दिन में दो बार दें।

उपयोग—सब प्रकार के कुष्ठरोग, वातरक्त, मेद बढ़ना और श्लीपद इन रोगों में अकेला या गन्धकरसायन अथवा माणिक्यरस के अनुपान रूप में इसका प्रयोग करें। मेदोवृद्धि में योगराज गूगल के अनुपान रूप में इसका प्रयोग करें।

७--तुवरकतैल योग

वृक्षास्तुवरका ये स्युः पश्चिमार्णवभूमिषु।
तेषां फलानि गृह्णियात् सुपक्वान्यम्वुदागमे॥
मज्जां तेभ्योऽपि संहृत्य षोषयित्वा विचूर्ण्य च।
तिलवत पीडयेद् द्रोण्यां स्रावयेद्वा कुसुम्भवत्॥
तत्तैलं संहृतं भूयः पचेदातोयसंक्षयात्।
तदेव खदिरक्वाथे त्रिगुणे साधु साधितम्।
करीषे निहितं पक्षात् पिबेनन्मात्रां यथाबलम्।
तेनाभ्यक्तशरीरस्य षण्मासं पथ्यभुग्भवेत्॥
शालीन् सयवगोधूमान् फलानि मधुराणिच।
लवणं कटुकं चाम्लं त्यक्त्वा सेवेत बृद्धिमान्॥
मासषट्कप्रयोगेण महाकुष्ठैर्विमुच्यते॥

द्रव्य और निर्माणविधि--

भारतवर्ष के पश्चिम समुद्र के तटपर कोंकण से त्रावणकोर तक तुवरक के वृक्ष होते हैं। इसके फल को मराठी में 'कडूकवीठ' कहते हैं वर्षाऋतु के आरम्भ में जब इस वृक्ष के फल पक कर तैयार हो जायँ तब ला, तोड़कर उसके अन्दर का मग्ज निकाल, सुखा, कोल्हू में पेरकर तैल निकाल लें अथवा मग्ज का चूर्ण करके उसको

* तुवरक तैल--औषधि भंडार--ठि०--नारायण मन्दिर, कालबादेवी रोड, बम्बई नं० २, इस पते पर मिल सकता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जल के साथ पकावें और जब तैल जल के ऊपर आवे तब उसको युक्ति से लेकर आँचपर इतना पकावे कि जल सब जलकर केवल तैल बाकी रहे। फिर उसको कपड़े से छानकर रख लें। किसी भी प्रकार से निकाले हुए तैल की तीनगुने खैर की लकड़ी के बुरादे या छाल के क्वाथ में पकावें। जब तैल सिद्ध हो जाय तब छान, शीशी में भर कर १५ दिन शीशी कंडों के चूर्ण में रख छोड़ें। बाद उसमें से निकाल कर काम में लें।

मात्रा औरउपयोगविधि--सबेरे-शाम दिन में दो बार यह तैल पाँच बूंद की मात्रा से आरम्भ करके और प्रति चौथे दिन पांच बूंद की मात्रा बढ़ाकर १ तोले तक गाय के ताजे मक्खन या दूध की मलाई में मिला कर दें। रोगी जितनी मात्रा सहन कर सके उतनी बढ़ावें। जब मात्रा सहन नहीं होती तब जी मिचलाने लगता है और वमन भी हो जाता है। जब ऐसा होने लगे तब तैल की मात्रा घटा कर दें। इसी तैल का रोगी को स्नान कराने के पीछे अभ्यंग भी करावें। अधिक से अधिक जितनी मात्रा रोगी सहन कर सके उतनी मात्रा ६ मास तक या बिल्कुल रोगमुक्त हो तबतक देते रहें।

पथ्य--यदि रोगी केवल दूध और मोसम्बी, मीठा नींबू, मीठा अनार, सेव, केला, मीठा अंगूर आदि मीठे फल इतने पर रहकर इसका प्रयोग करें तो शीघ्र और विशेष लाभ होता है। यदि इस पथ्यपर न रह सके तो पुराने चावल का भात और जौ या गेहूँ की रोटी थोड़ा घी लगाकर दूध के साथ खिलावें। अम्ल लवण और कटु रसवाले पदार्थ खाना अपथ्य है।

उपयोग--सब प्रकार के महाकुष्ठों में इसके खाने और लगाने से बड़ा लाभ होता है। इस तैल में कपड़ा भिगोकर उसको व्रण पर रखकर बाँधने से व्रण शीघ्र भरता है पामा--कण्डू आदि में इनके लगाने से लाभ होता है।

८--बाकुचीयोग

प्रयोगविधि

श्वित्रवाले को बावची के बीज पहिले दिन पाँच दाने से आरम्भ करके और प्रति दिन १-१ दाना बढ़ाकर सबेरे में ठंढे जल से निगलावें। इस प्रकार २१ दाने तक बढ़ाकर फिर १-१ दाना घटाकर पाँच तक लावें। इस प्रकार यह वर्धमानबाकुची का प्रयोग जबतक रोग अच्छा न हो तबतक कई बार करें। साथ में खालिस बावची का तेल या उसके बराबर तुवरक तैल मिलाकर श्वित्र पर लगावें। इस प्रकार खाने और लगाने में बावची का प्रयोग करने से श्वित्र में बड़ा लाभ होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पथ्य--रोगी को अम्ल, लवण और कटु रसवाले पदार्थ छोड़कर चावल, जौ या गेंहूँ की रोटी, बिना खटाई-नमक और गरम मसाले डाला हुआ मूंग का यूष और मीठे फल, इतने पथ्यपर रखकर इसका प्रयोग करें। तुवरक तैल २ भाग, बाकुची का तैल १ भाग और चन्दन का तैल १ भाग इनको मिलाकर कण्डू, पामा और विचर्चिका पर लगाने से अच्छा लाभ होता है।

९--रसादि प्रलेप

रसद्विजीरद्विनिशामरीचसिन्दूरदैत्येन्द्रमनः शिलानाम्।
चूर्णीकृतानां घृतमिश्रितानां त्रिभिः प्रलेपैरपयाति पामा॥

वैद्य जीवन।

द्रव्य और निर्माणविधि--

पारा, जीरा, काला जीरा (अरण्यजीरक), हल्दी, आँबाहल्दी, कालीमिर्च सिन्दूर, गन्धक और मैनसिल सब समभाग लेवें। प्रथम पारे-गन्धक की कज्जली बना, उसमें अन्य द्रव्यों का कपड़छान चूर्ण तथा घी मिला, ३ दिन खरल में मर्दन करके रख छोड़ें। इस योग में चकवड़ (पवाड़) के बीज १ भाग मिला देने से विशेष लाभ होता है।

उपयोग--कण्डू, पामा, दाद और विचर्चिका में रोगस्थान को गरम जल से धोकर लगावें।

१०--गुलाबी मलहम

द्रव्य और निर्माणविधि--

सौ बार पानी से धोया हुआ घी १० तोला, पुष्पांजन (सफेदा-जिंक आक्साइड) १ तोला, सिन्दूर १ तोला, रसकपूर आधा तोला, कपूर १ तोला, चन्दन का तेल १ तोला--सबको एकत्र घोट मिला कर काच के बरतन में भर लें।

उपयोग--खाज, पामा, अग्निदग्धस्थान और बवासीर पर इसको लगाने से वेदना, जलन और रोग की शान्ति होती है।

११--जीवन्त्यादि मलहम

जीवन्ती मञ्जिष्ठा दार्वी कम्पिल्लकः पयस्तुत्थम्।
एष घृततैलपाकः सिद्धः सिद्धे च सर्जरसः॥
देयः समधूच्छिष्टो विपादिका तेन शाम्यतेऽभ्यक्ता।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जीवन्ती गुजराती--(दोड़ी का शाक) के मूल, मंजीठ, दारुहल्दी और कमीला प्रत्येक का कपड़छान चूर्ण ४-४ तोला और नीलाथोथा का सूक्ष्म चूर्ण १ तोला इनको जल में पीस, कल्क बना, उसमें तिल का तेल, ३२ तोला गाय का घी ३२ तोला, गाय का दूध ६४ तोला और पानी २५६ तोला मिलाकर स्नेहपाक-विधि से पकावें। जब स्नेह सिद्ध हो जाय तब उसको कपड़े से छान, थोड़ा गरम कर, उसमें राल का चूर्ण ८ तोला और मोम ८ तोला मिला, कपड़े से छान कर काच के बरतन में भर लें अथवा इसको एक सौ बार पानी से धोकर काच के या चीनी मिट्टी के पात्र में भर कर, ऊपर चार अंगुलतक ठंढा जल डाल कर रख छोड़ें। ४-४ दिन से ऊपर का जल बदलते रहें।

उपयोग--बिना धोये हुए इस मलहम को हाथ-पाँव के तलों के फटने और पाँव की अंगुलियों के बीच के हिस्से के पकने पर लगावें। धोये हुए मलहम को अग्निदग्धस्थान, कण्डू, पामा और बवासीर के मस्सों पर लगावें।

व्रणाधिकार-द्वाविंशतितम

१--दशाङ्गलेप का उपनाह पुलटिस

द्रव्य और निर्माणविधि--

शोथाधिकार में लिखा हुआ दशाङ्गलेप १ तोला, घी १ तोला, शहद १ तोला तथा गेहूँ का आटा या कूटी हुई अलसी ५-१० तोला आवश्यकतानुसार लें, उसमें जल मिला, मन्दी आंचपर पका, कपड़े के ऊपर बिछा, ऊपर दूसरा कपड़ा रख कर व्रणशोथ के स्थानपर बांध दें। ३-३ घण्टे से पुलटिस बदलते रहें। यदि प्रारम्भ में ही इसका प्रयोग किया जाय तो शोथ प्रायः बैठ जाता है। यदि पकना आरम्भ हो गया हो तो जल्दी पक कर फूट जाता है। फूटने पर भी २-३ दिन जबतक कि सब पूय (मवाद) निकल न जाय तबतक इसका प्रयोग करते रहें। मवाद निकल जाने के बाद काले या बिरोजे के लाल मलहम की पट्टी लगानी चाहिये।

२--निम्बपत्रादि उपनाह--पुलटिस

द्रव्य और निर्माणविधि--

नीम की ताजी पत्ती, हल्दी, घी, शहद, तिल और जौ का आटा इनको यथा-वश्यक लें, जल में पीस, मन्दी आँच पर पका, कपड़ेपर बिछा, ऊपर से दूसरा कपड़ा

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रख कर व्रणशोथ पर बांध दें। ३-३ घण्टे से बदल कर दूसरी पुटलिस बांधें। इससे पाक प्रारम्भ न हुआ हो तो शोथ बैठ जाता है और पाक प्रारम्भ हुआ हो तो जल्दी पककर फूट जाता है।

३—चन्दनादि लेप

द्रव्य और निर्माण विधि—

श्वेतचन्दन, रक्तचन्दन गेरू, खस, गिले अरमनी, कपूरकचरी, हंसराज और गेहूँला*प्रत्येक द्रव्य समभाग लें, उसका कपड़छान चूर्ण कर के रख लें।

उपयोग—पित्त और रक्तदुष्टिप्रधान व्रणशोथ, विसर्प और फोड़े-फुन्सीपर इनको गुलाबजल में पीसकर लगावें।

४—काला मलहम

द्रव्य और निर्माणविधि—

एक सेर शुद्धतिल का तेल लेकर उसे एक बड़ी कढ़ाई में गरम करें। तेल धुआँ छोड़ने लगे तब उसमें आधा सेर उत्तम सिन्दूर डाल कर लोहे के कर्छे से हिलाते रहें। हिलाते हुए बड़ी सावधानी रखनी चाहिए। एक ओर मिश्रण के छीटें उड़ते हैं, उनसे बचने की आवश्यकता होती है; दूसरी ओर मलहम में उफान आता है, उसे न सँभाला जाय तो वह चूल्हे में जा गिरता है और उसके जलने से बड़ा भभका होता है। जब मिश्रण का रङ्ग काला हो जाय तब कर्छे द्वारा मिश्रण की दो-चार बूंद जलभरे कटोरे में डालें और देखें कि गोली बनती है या नहीं। मलहम कच्चा होगा तो पानी में उसके कण अलग-अलग रहेंगे; उसकी गोली न बन सकेगी। वह पट्टी के काम का न होने से उसे और पकाना होगा, जबतक कि गोली बनने योग्य हो जाय : मलहम की बूंदे यदि पानी में डूब जायँ तो समझें कि पाक अधिक (खरपाक) हो गया है। यह मलहम भी काम का न होगा। मलहम पानी में डालने से डूबे नहीं और गोली बनाने योग्य हो जाय तो इसे उतार, उसमें १ तोला कपूर और आधा तोला खूब महीन पीसा हुआ नीलाथोथा मिलाकर कुछ गरम रहनेपर डब्बे में भरकर रख लें।

उपयोग—सब प्रकार के व्रणों में इस मलहम की मोटे कपड़े पर पट्टी बनाकर लगाने से मवाद निकल जाता है और व्रण भर आता है। यह मलहम उत्तम व्रणशोधन और व्रणरोपण है।

(**वैद्य तिलकचन्द ताराचन्द** कृत आयुर्वेदनिबन्धमाला प्रथम भाग से किंचित्परिवर्तित)

---

*यह एक प्रकार के सुगन्धी बीज-दाने हैं, जो बम्बई के बाजार में इसी नाम से बिकते हैं। गुजरात और महाराष्ट्र के वैद्य इसको प्रियंगु मानते हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५–बिरौजे का लाल मलहम

द्रव्य और निर्माणविधि––

गन्धाबिरौजा ४० तोला और हिंगुल १ तोला लें। प्रथम गन्धाबिरौजा को मन्दाग्निपर रखकर पिघलावें। बीच-बीच में उसके एक–दो बूंद चम्मच या चाकू से जल भरे पात्र में डाल, दो अँगुलियों से दबाकर देखते रहें कि मलहम बनाने योग्य हुआ या नहीं। मलहम बनाने योग्य हो जाय तब कपड़े से छान, उस में सूक्ष्म पीसा हुआ हिंगुल थोड़ा–थोड़ा कर के डालते जायँ, और तवतक हिलाते रहें, जबतक मलहम ठण्ढा न हो जाय। यदि इस प्रकार हिलाया न जायगा तो हिंगुल भारी होने से नीचे बैठ जायगा।

उपयोग–यह मलहम शोधन (व्रणों को शुद्ध करनेवाला), रोपण (व्रणों को भरनेवाला), वेदनाहर और प्लीहा की वृद्धि को दूर करनेवाला है। पार्श्वशूल (प्लुरिसी) या अन्य स्थानों के दर्दों में इस के लगाने से लाभ होता है। इस के प्रयोग के लिये व्रण, प्लीहा या जहाँ शूल हो उस स्थान के बराबर मोटे कपड़े की पट्टी काट, एक चाकू गरम कर, उस पर मलहम ले कर पट्टी पर फैलाते जायँ। पट्टी तैयार होने पर उसे जहाँ लगाना हो, वहाँ लगा दें। लगाने के पूर्व उस्तरे से बाल उतार लेना चाहिये, अन्यथा पट्टी निकालते समय पट्टी के साथ बाल खिचेंगे। पट्टी उखाड़ते हुए बाल खिंचे तो कुछ बूंद तारपीन के तेल की पट्टी की किनारी को जरा उखाड़कर अन्दर डालें। इस से पट्टी आसानी से उतर जायगी।

६--बिरौजे का हरा मलहम

द्रव्य और निर्माणविधि—

गन्धाबिरौजा ४० तोला, जङ्गाल २ तोला, साबुन २ तोला, पापड़खार ३ तोला और पत्थर का कोयला २ तोला लें। प्रथम गन्धविरौजा को मन्दी आंचपर पिघला लें। पिघला कर मलहम बनाने योग्य हो जाने पर उसे कपड़े से छान लें। फिर अन्य द्रव्यों का सूक्ष्म चूर्ण मिलावें और ठंढा होने तक हिलाते रहें।

उपयोग— यह मलहम व्रणों का शोधन करनेवाला, भरनेवाला तथा फोड़ों को पकाकर फोड़नेवाला (विदारण) है। यदि व्रणशोथ पक जाने पर भी न फूटता हो तो इसकी पट्टी बनाकर लगाने से जल्दी फूट जाता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

७--श्वेत मलहम

द्रव्य और निर्माणविधि--

१६ तोला तिल का तेल लेकर उसे मन्दी आँचपर रखें। उसमें से धुआँ निकलने लगे तब ४ तोला राल का चूर्ण और ३ माशा सूक्ष्म पीसा हुआ नीलाथोथा उसमें डालकर तेल को नीचे उतार लें। राल तेल में घुल जाने पर उसे कपड़े से छान, एक थाली में डाल कर ठंढा होने दें। ठंढा होने पर उसमें थोड़ा-थोड़ा पानी मिलाते जाएँ और हाथ से मलते जायें। थोड़ी-थोड़ी देर से पानी बदलते रहें। मसलते-मसलते मिश्रण का रंगरूप भैंस के मक्खन का-सा हो जाय तब उसे काच के पात्र में भर, ऊपर से थोड़ा-सा पानी डाल, बन्द कर रख दें। पानी थोड़े-थोड़े दिन पीछे बदलते रहें। पानी थोड़े-थोड़े दिन पीछे न बदला जयगा तो मलहम काला पड़ जायगा और मलहम पर पपड़ी आ जायेगी। परन्तु पानी सर्वथा न डाला जायगा तो वायुमण्डल की उष्णता से जैसे जैसे पानी सूखता जायगा वैसे-वैसे मलहम चिकना होता जायगा और प्रयोग में न आ सकेगा।

उपयोग--बच्चों की गुदा और मूत्रेन्द्रिय के आस-पास के स्थान के शोथ और पाक में, तथा अन्यत्र भी फोड़ फुन्सी, बवासीर, अग्निदग्ध आदि में इसके लगाने से बहुत लाभ होता है।

(**वैद्य तिलकचन्द ताराचन्द** कृत आयुर्वेद निबन्धमाला प्रथम भाग से उद्धृत)

८--उदुम्बरसार

द्रव्य और निर्माणविधि--

अच्छी हरी और पुष्ट गूलर की पत्तियाँ ले, उनको साफ कर और जल से धो कर १० सेर वजन करके लें। पीछे उनको धोकर साफ किये हुए ऊखल में लकड़ी के मूसल से या लोहे के इमामदस्ते में कूट कर मिट्टी के या अच्छे कलईदार बरतन में १ मन पानी डालकर मन्दी आँच पर पकावें। तब चौथाई जल बाकी रह जाय तब अच्छे कपड़े से दो बार छान, उसमें ५ तोला शुद्ध सोहागा मिलाकर मन्दी आंच पर पकावें और लकड़ी के करछे से हिलाते रहें। जब करछे में लगने लगे तब नीचे उतार, कलईदार थाली में फैला, ऊपर पतला कपड़ा बाँध कर धूप में सुखा लें। जब घन जैसा हो जाय तब काच की बरनी में भर कर रख दें।

गुण और उपयोग--उदुम्बरसार उत्तम व्रणशोथ को बैठानेवाला (शोथविम्लापन), व्रणशोधन, व्रणरोपन और रक्तस्राव को बन्द करनेवाला है। व्रणशोथ की प्रारम्भावस्था में उदुम्बरसार को चौगुने जल में मिला, उसमें कपड़ा भिगो कर व्रणशोथ के ऊपर रख देना और बीच-बीच में ऊपर से उदुम्बरसार का जल देकर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उसको तर रखना, सूखने न देना। इससे प्रायःशोथ बैठ जाता है, और पीड़ा कम हो जाती है। स्त्रियों को स्तनपर जो शोथ होता है, उसपर इसका प्रयोग बहुत लाभ करता है। उबलते हुए जल में उदुम्बरसार डालकर उससे व्रण को धोने से व्रण शुद्ध होकर शीघ्र भरता है। मुखपाक में इसके कुल्ले कराने से अच्छा लाभ होता है। स्त्रियों को प्रदर में तथा योनिमार्ग के क्षत में इसकी उत्तरबस्ति देनी चाहिए। नेत्राभिष्यन्द में उदुम्बरसार को नेत्र के बाहर लगाने से तथा अर्क गुलाब में बनाये हुए उसके द्रव की बूंदे नेत्र में डालने से अभिष्यन्द शीघ्र अच्छा होता है। रक्तार्श, रक्तप्रदर आदि में इसकी ३–६ माशे की मात्रा अठगुने जल में मिलाकर दिन में ३-४ बार देना चाहिए

–मधूच्छिष्टादि घृत

मधूच्छिष्टं समधुकं लोध्रं सर्जरसं तथा।
मञ्जिष्ठां चन्दनं मूर्वां पिष्ट्वा सर्पिर्विपाचयेत्॥
सर्वेषामग्निदग्धानामेतद्रोपणमुत्तमम्।

सुश्रुत सू० अ० १३।

द्रव्य और निर्माणविधि––

मोम, मुलेठी, लोध्र, राल, मजीठ, श्वेतचन्दन और मूर्वा प्रत्येक ४-४ तोला और गौ का घी ६४ तोला लें। प्रथम मुलेठी, चन्दन, राल और मूर्वा इनका कपड़छान चूर्ण बना, जल में पीसकर चतुर्गुण जल, मोम और घी मिलाकर घृतपाक-विधि से पकावें। घृत तैयार होने पर कपड़े से छानकर शीशी में भर लें।

उपयोग—सब प्रकार के अग्नि से जले हुए स्थानपर इसको लगावें।

———

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वृद्धिरोगाधिकार–त्रयोविंशतितम

१–वृद्धिहरीवटिका

द्रव्य और निर्माणविधि–

कुन्दरूगोंद ४ तोला, करंजुवे (कंजे-कण्टकी करञ्ज) के फल को सेंक, फोड़कर निकाला हुआ मग्ज ४ तोला, इन्द्रजव २ तोला, घी में सेंकी हुई हींग १ तोला, डीकामाली (नाड़ीहिंगु) १ तोला, बायबिडंग २ तोला, छिलका निकाला हुआ लहसुन २ तोला, इन्द्रायन की जड़ २ तोला, अजमोदा २ तोला, रूमीमस्तंगी २ तोला, सोंचर (काला नमक) ४ तोला ले, सबका कपड़छान चूर्ण कर, ग्वारपाठे-के रस में एक दिन पीस, ३-३ रत्ती की गोलियाँ बना, सुखा कर शीशी में भर लें।

मात्रा और अनुपान—२-२ गोली दिन में २-३ बार ठंडे जल के अनुपान से दें।

उपयोग—वातज तथा कफज वृद्धिरोग, कृमिविकार और पेट के दर्द में इन गोलियों से अच्छा लाभ होता है।

२–वृद्धिहरलेप

द्रव्य और निर्माणविधि—

शार्ङ्गधरोक्त दशांगलेप १ से २ तोला और उदुम्बरसार ३ माशा से ६ माशा ले, दोनों को संभालू की पत्ती के स्वरस में पीसकर अण्डवृद्धि पर लेप करें।

उपयोग—इस लेप से शोथ और पीड़ा दोनों शान्त होते हैं।

वक्तव्य—वृद्धिरोग में दस्त और पेशाब साफ लानेवाले और वायु का अनुलोमन करनेवाले औषध और आहार का उपयोग करना चाहिये।

लिनिमेण्ट रेवंदचीनी

द्रव्य और निर्माणविधि—

रेवंदचीनी की जड़ का कपड़छान चूर्ण १० तोला ले, उसको काच की शीशी में डाल, ऊपर से ६० तोला मेथिलेटेड स्पिरिट दे, हिला, शीशी को डाट लगाकर बन्द कर दें। प्रतिदिन शीशी को १-२ बार हिलाते रहें। आठवें दिन कपड़े से छान, उसमें ५ तोला शिलाजीत मिला, अच्छी तरह हिला, कपड़े से छान, शीशी में भर, अच्छी डाट लगा, शीशी का मुंह बन्द करके रख दें।

उपयोग—कहीं भी चोट लगने पर, चाकू आदि से कहीं सद्योव्रण होनेपर, वात-कफ प्रधान शोथ और नये निकले हुए फोड़े-फुन्सी पर इसमें रुई भिगोकर लगा दें। यह लिनिमेण्ट आयोडीन से भी अच्छा काम देता है।

———

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गण्डमालाधिकार-चतुर्विंशतितम

१—काञ्चनारगुग्गुलु

काञ्चनारत्वचो ग्राह्यं पलानां दशकं बुधैः।
षट्पलं त्रिफलायास्तु त्रिकटोः स्यात् पलत्रयम् ॥
पलैकं वरुणं कुर्यादेलात्वक्पत्रकं तथा ।
एकैकं कर्षमात्रं स्यात् सर्वाण्येकत्र चूर्णयेत् ।
यावच्चूर्णमिदं सर्वं तावन्मात्रस्तु गुग्गुलुः ॥
संकुट्य सर्वमेकत्र शाणमात्रां वटीं चरेत् ।
प्रदेयश्चानुपानार्थं क्वाथ एषां प्रकल्पितः ॥
वरुणःकाञ्चनारश्च श्रमणी खदिरस्तथा ।
गण्डमालां जयत्युग्रामपचीमर्बुदानि च ॥
ग्रन्थीन् व्रणांश्च गुल्मांश्च कुष्ठानि च भगन्दरम् ।

शार्ङ्गधर म० खं० अ० ७ से किंचित्परिवर्तित ।

द्रव्य और निर्माणविधि--

कचनार की छाल ४० तोला, हर्रे का दल ८ तोला, वहेड़ादल ८ तोला, आंवला दल ८ तोला, सोंठ ४ तोला, काली मिर्च ४ तोला, छोटीपीपल ४ तोला, वरुना की छाल ४ तोला, छोटी इलायची १ तोला, दालचीनी १ तोला और तेजपात १ तोला ले सबका कपड़छान चूर्ण कर; सब के बराबर साफ किया गूगल लें। उसको पत्थर के खरल में या लोहे के इमामदस्ते में कूटे। जब गूगल नरम हो जाय तब उसमें थोड़ा-थोड़ा कर के सब चूर्ण मिला दें और कूटकर गोली जैसा बने तब १॥-१॥ माशे की गोलियां बनाकर शीशी में भर लें।

मात्रा और अनुपान--सबेरे-शाम २ गोली देकर ऊपर से कचनार की छाल, बरुना की छाल, गोरखमुण्डी और खैर की छाल या लकड़ी का बुरादा इनका क्वाथ बनाकर दें। यदि विशेष लाभ न हो तो इसके साथ $\frac{1}{8}$ रत्ती सुवर्ण भस्म और ५ रत्ती प्रवालपञ्चामृत मिलाकर दें। गूगल, गन्धक और रसौत तीनों समभाग ले, जल में पीसकर उसका गण्डमाला पर लेप करें।

अन्य योग--पञ्चामृतलोहगुग्गुलु और अमृतप्राशघृत का भी गण्डमाला में अच्छा उपयोग होता है।

———

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपदंशाधिकार–पञ्चविंशतितम

१--सवीरवटी

द्रव्य और निर्माणविधि—

फिटकरी ४ तोला, कलमी शोरा ४ तोला, नौसादर ४ तोला, कसीस ४ तोला, सेंधानमक ४ तोला, नीलाथोथा ४ तोला, लोबान ४ तोला और पीला संखिया २ तोला लेकर सबको खरल में पीसें। पीसने से सब गीला हो जायगा, उसको लोहे के तवे में डाल, अग्निपर सुखा, खरल में डाल, उसमें पारद ३० तोला मिला, सब को ३ दिन मर्दन कर, ७ बार कपड़मिट्टी की हुई आतसी शीशी में भरकर बालुका यन्त्र में पकावें। प्रारम्भ में जब तक शीशी से जलयुक्त वाष्प निकलती रहे तब तक शीशी का मुंह खुला रखें। जब जलांशरहित श्वेतवर्ण का धुआं आने लगे तब शीशी के मुंह को मुलतानी या खड़िया मिट्टी की डाट लगा, ऊपर से चूना और गुड़ या पानी में मिलाया हुआ प्लास्टर आफ पेरिस लगा दें। उसके बाद ६ घण्टा और मध्यम आंच दें। स्वांगशीतल होनेपर शीशी को बाहर निकाल, तोड़कर शीशी के गले में लगा हुआ श्वेतवर्ण का सवीर (रसकपूर) निकाल लें।

सवीरवटी-निर्माणविधि--सवीर ४ तोला, केशर ४ तोला, लौंग का चूर्ण ४ तोला, श्वेतचन्दन का चूर्ण ४ तोला, और कस्तूरी ½ तोला लें। प्रथम सवीर को खरल में खूब महीन पीस, उसमें केशर और कस्तूरी मिला कर पान के रस में घोटें, दोनों मिल जाने पर अन्य चूर्ण मिला, पान के रस में १ दिन मर्दन कर, १-१ रत्ती की गोलियां बना, छाया में सुखाकर शीशी में भर लें।

मात्रा और अनुपान—१-२ गोली सबेरे-शाम निगला कर ऊपर से मिश्री मिलाया हुआ गाय का (गरम करके पीने योग्य ठण्ढा किया हुआ) दूध पिलावें।

पथ्य--इस गोली के सेवन के समय खटाई, मिर्च, हींग, राई आदि गरम मसाले तथा करेला, बैंगन सरसों, मूली, एरण्डखर्बूजा इनका शाक न खाना चाहिये।

उपयोग--फिरंगोपदंश के विष से होनेवाले सर्वप्रकार के रोगों में इसके सेवन से अच्छा लाभ होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऊर्ध्वजत्रुरोगाधिकार–षड्विंशतितम

१–खदिरादि तैल

गायत्र्या वकुलस्याथ त्वचं शतपलोन्मिताम् ।
द्विद्रोणे सलिले पक्त्वा गृह्णीयात् पादशेषितम् ।।
तैलस्यार्धाढकं दत्त्वा कल्कैः कर्षमितैः पचेत् ।
खदिरत्वग्लवङ्गाभ्यां गैरिकागुरुपद्मकैः ।।
मञ्जिष्ठालोध्रमधुकैर्लाक्षान्यग्रोधमुस्तकैः ।।
त्वग्जातीफलकर्पूरकङ्कोलाकल्लकैस्तथा ।।
पतङ्गधातकीपुष्पसूक्ष्मैलानागकेशरैः ।
कटुफलेन च संसिद्धं तैलं मुखरुजं जयेत् ।।
प्रदुष्टमांसं पूयं च शीर्णदन्तं च सौषिरम् ।
श्वावदन्तं दन्तहर्षं विद्रधिं कृमिदन्तकम् ।।
दन्तस्फुटनदौर्गन्ध्यजिह्वाताल्वोष्ठजा रुजः ।

द्रव्य और निर्माणविधि––

खैर की छाल २०० तोला, मौलसिरी की छाल २०० तोला ले, कूटकर, २०४८ तोला जल में पकावें, ५१२ तोला जल बाकी रहने पर कपड़े से छान, उसमें १२८ तोला तिल का तैल और खैर की छाल, लौंग, गेरू, अगर, पद्माख; मजीठ, लोध, मुलेठी, लाख, बड़ की छाल, नागरमोथा, दालचीनी, जायफल, कवाबचीनी, अकरकरा, पतंग धाय के फूल, छोटी इलायची, नागकेशर और कायफल की छाल––प्रत्येक १-१ तोला ले, इनका कल्क मिला, तैलपाकविधि से मन्दी आँचपर पकावें और खोंचे से हिलाते रहें। जब तैल सिद्ध हो जाय तब ठण्ढा होनेपर उसमें १ तोला कपूर का चूर्ण मिला, कपड़े से छानकर शीशी में भर लें।

उपयोग––इस तैल से मुंह का पकना, मसूड़ों का पकना और उसमें मवाद (पीव) होना, दाँतों का सड़ना दाँतों में छिद्र होना, दाँत फटना, दाँतों में कीड़े पड़ना, मुंह की दुर्गन्ध तथा जीभ-तालु और ओठ के रोग ये सब नष्ट होते हैं।

२–भृङ्गराज तैल

स्वरसं भृङ्गराजस्य गृह्णीयादाढ़कोन्मितम् ।
ब्राह्मीरसं प्रस्थमितं तथैवामलकाद्रसम् ।।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तैलं प्रस्थद्वयं ग्राह्यं कल्कं तु कुडवोन्मितम् ।
वरा मुस्ता शटी लोध्रं मञ्जिष्ठा बाकुची बला ।।
चन्दनं पद्मकं गोपीं मण्डूरं मदयन्तिका ।
प्रियंगुर्मधुकं मांसी कुष्ठं चैषां प्रदापयेत् ।
सम्यक्पक्वं ततो ज्ञात्वा शुभे भाण्डे निधापयेत् ।
कुञ्चिताग्रानतिस्निग्धान् कचान् कुर्यात् बहूंस्तथा
खालित्यमिन्द्रलुप्तं च तैलमेतद् व्यपोहति ।।

द्रव्य और निर्माणविधि--

भंगरे का स्वरस २५६ तोला, ब्राह्मी का स्वरस ६४ तोला, आँवले का रस ६४ तोला, तिल का तैल १२८ तोला, तथा हरड़, बहेड़ा, आंवला, नागरमोथा, कचूर, खरेटी, लोध, मजीठ, बावची, बरियारा के मूल, चन्दन, पद्माख, अनन्त-मूल, मण्डूर (कच्चा लौहकीट), मेहंदी, प्रियंगु मुलेठी, जटामांसी और कूठ--प्रत्येक १-१ तोला इनका कल्क मिलाकर सबको तैलपाक विधि से एकत्र पकावें। जब तैल सिद्ध हो जावे तब कपड़े से छानकर भर लें।

उपयोग--यह तैल नित्य सिर पर लगाने से बाल बढ़ते हैं तथा सिर का दर्द, बाल सफेद होना और गिरना ये रोग अच्छे होते हैं। स्वस्थ स्त्री-पुरुष को नित्य सिर में लगाने के लिये यह तैल उत्तम है।

३--किंशुकादि तैल

किंशुकं चन्दनं लाक्षा मञ्जिष्ठा मधुयष्टिका ।
कुसुम्भकमुशीरं च पद्मकं नीलमुत्पलम् ।।
न्यग्रोधपादाः प्लक्षस्य मूलं पद्मस्य केशरम् ।
मदयन्ती निशे द्वे च सारिवा पलिकं पृथक ।।
जलाढके विपक्तव्यं पादशेषमथोद्धरेत् ।
मञ्जिष्ठा मधुकं लाक्षा पतगङ्ं कुंकुमं तथा ।।
कर्षप्रमाणैरेतैस्तु तैलस्य कुडवं पचेत् ।
अजाक्षीरं द्विगुणितं दत्वा मृद्वग्निना भिषक् ।।
सम्यक् पक्वं परं ह्येतन्मुखवर्णप्रसादनम् ।
नीलिकापीड़काव्यङ्गानभ्यङ्गादेव नाशयेत् ।।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्रव्य और निर्माणविधि—

टेसू (ढाक) के फूल, रक्तचन्दन, लाख, मजीठ, मुलेठी, कुसुम के फूल, खस, पद्माख, नीलकमल, बड़ की जटा, पाकर के मूल, कमल का केशर, मेहँदी हल्दी, दारुहल्दी और अनन्तमूल—प्रत्येक ४-४ तोला ले, उन्हें जौकुट कर २५६ तोले जल में पका, ६४ तोला जल बाकी रहने पर कपड़े से छान, उसमें तिल तैल १६ तोला, बकरी का दूध ३२ तोला और मजीठ, मुलेठी, लाख, पतंग तथा केशर, प्रत्येक का चूर्ण १-१ तोला का कल्क मिलाकर मन्दी आँच पर पकावें। जब तैल सिद्ध हो जाय तब कपड़े से छानकर शीशी में भर लें।

उपयोग—इस तैल को मुंह पर लगाने से मुंह पर की फुन्सियाँ, काले दाग आदि अच्छे हो कर चेहरा रौनकदार होता है।

४--कुम्भीतैल

जलकुम्भी का कल्क १६ तोला, तिल का तैल ६४ तोला और जलकुम्भी का स्वरस २५६ तोला—सबको तैलपाक विधि से पकावें। जब तैल सिद्ध हो जाय तब उसको कपड़े से छानकर शीशी में भर लें।

उपयोग--इस तैल को कान साफ करके उसमें डालने से कान का दर्द, कान पकना और कान से मवाद (पीव) आना ये अच्छे होते हैं।

५--नासार्शोहरतैल

गृहधूमकणादारुक्षारनक्ताह्वसैन्धवैः ।
सिद्धं शिखरिबीजैश्च तैलं नासार्शसां हितम् ॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

गृहधूम (घर की छत में जमा हुआ धुआँ), छोटी पीपल, देवदार, जवाखार करञ्ज की छाल, सेंधानमक और चिरचिंडे (औंगे) के बीज प्रत्येक का चूर्ण २-२ तोला ले, उसको जल में पीस, ६४ तोला तैल और २५६ तोला जल में मिलाकर तैलपाक विधि से पकावें। जब तैल सिद्ध हो जाय तब कपड़े से छान कर शीशी में भर लें।

उपयोग--एक बाँस की सलाईपर रूई लगा, इस तेल में भिगोकर नाक के भीतर लगाने से नाक में होनेवाले मस्से अच्छे होते हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

६—षड्बिन्दु तैल

एरण्डमूलं तगरं शताह्वा जीवन्तिरास्नागुरुसैन्धवं च ।
भृङ्गं विडङ्गं मधुयष्टिका च विश्वौषधं हृष्णतिलस्य तैलम् ॥
आजं पयस्तैलसमं तथैव चतुर्गुणे भृङ्गरसे विपक्वम् ।
षड् बिन्दवो नासिकया प्रदेया निहन्ति शीघ्रं सिरसो विकारान् ॥

द्रव्य और निर्माणविधि——

एरंड के मूल, तगर, सौंफ, जीवन्ती के मूल, रास्ना, अगर, सेंधानमक, दालचीनी, बायबिडंग, मुलेठी और सोंठ, प्रत्येक का चूर्ण १।।-१।। तोला ले, उसको बकरी के दूध में पीस, उसमें काले तिल का तैल ६४ तोला, बकरी का दूध ६४ तोला भंगरे का रस, २५६ तोला मिला कर मंदी आंच पर तैलपाक विधि से पकावें। जब तैल सिद्ध हो जाय तब उसको कपड़े से छान कर शीशी में भर लें।

उपयोग—सिर के दर्द में रोगी को चित्त लेटा कर दोनों नथुनों में इस तैल के ६-६ बिन्दु डालें। पुराना जुकाम, बार-बार सर्दी जुकाम होना, नाक के मस्से, नाक के अन्दर की सूजन——इन रोगों में एक सलाई पर रूई लगा, इस तैल में भिगो कर नाक के अन्दर लगावें।

७—चित्रकहरीतकी

चित्रकस्यामलक्याश्च गुडूच्या पश मूलतः ।
शतं शतं रसं दत्त्वा पथ्याचूर्णाढकं गुडात् ॥
शतं पचेद्घनीभूते पलद्वादशकं क्षिपेत् ।
व्योषत्रिजातयोः क्षारात् पलार्धमपरेऽहनि ।
प्रस्थार्धं मधुनो दत्त्वा यथाग्न्यद्यादतन्द्रितः ।
पीनसं दुर्जयं हन्ति चिरकालभवं नृणाम् ।

द्रव्य और निर्माणविधि——

चित्रक के मूल का क्वाथ ४०० तोला, आंवले का स्वरस अथवा क्वाथ ४०० तोला, गिलोय का स्वरस अथवा क्वाथ ४०० तोला, मिले हुए दशमूल का क्वाथ ४०० तोला, बड़ी हर्रे के दल का चूर्ण २५६ तोला और गुड़ ४०० तोला, इन सबको एकत्र करके पकावें। जब अवलेह जैसा हो जाय तब उसमें सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, दालचीनी, तेजपात और इलायची प्रत्येक ८-८ तोला और जवाखार

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२ तोला ले, इनका कपड़छान किया हुआ चूर्ण मिला कर रख छोड़ें, दूसरे दिन उसमें ३२ तोला शहद मिला कर काच के बरतन में भर दें।

मात्रा और अनुपान--सबेरे-शाम आधा-आधा तोला गाय के गरम किये हुए दूध के साथ दें।

उपयोग--पुराने और बार-बार होनेवाले प्रतिश्याय (जुकाम) में इसके सेवन करने से अच्छा लाभ होता है।

वक्तव्य--इसके सेवन के समय नाक में दिन में दो बार षड्बिन्दु तैल लगाने से विशेष लाभ होता है। इस योग में चित्रक, दशमूल आदि को १६ गुने जल में पका कर चौथाई बाकी रखा हुआ क्वाथ लेना चाहिये। इस योग के प्रक्षेप-द्रव्यों में कायफल की छाल का चूर्ण ८ तोला और मिलाने से अधिक लाभ होता है।

८--महात्रिफलादि घृत

त्रिफलाया रसप्रस्थं प्रस्थं भृङ्गरसस्य च।
वृषस्य च रसप्रस्थं शतावर्याश्च तत्समम्॥
अजाक्षीरं गुडूच्याश्च आमलक्या रसं तथा।
प्रस्थं प्रस्थं समाहृत्य सर्वैरेभिर्घृतं पचेत्॥
कल्कः कणा सिता द्राक्षा त्रिफला नीलमुत्पलम्।
मधुकं क्षीरकाकोली मधुपर्णी निदिग्धिका॥
तत् साधु सिद्धं विज्ञाय शुभे भाण्डे निधापयेत।
नाक्तान्ध्ये दृष्टिमान्द्ये च ह्याभिष्यन्देऽधिमन्थके।
सर्वनेत्रामये योज्यं त्रिफलाद्यं महद्घृतम्।

चक्रदत्तचिकित्सा।

द्रव्य और निर्माण विधि--

त्रिफला का क्वाथ ६४ तोला, भँगरे का रस ६४ तोला, अडूसे का रस ६४ तोला, शतावर का रस ६४ तोला, बकरी का दूध ६४ तोला, गिलोय का स्वरस ६४ तोला, आँवले का रस ६४ तोला, गाय का घी ६४ तोला तथा छोटी पीपल, मिश्री, मुनक्का, हर्रे, बहेड़ा, आँवला, कमल, मुलेठी, क्षीरकाकोली, गिलोय और छोटी कटेरी मिला कर १६ तोले का कल्क ले, सबको एकत्र करके घृतपाक विधि से पकावें। घृत सिद्ध होने पर छानकर शीशी में भर लें।

मात्रा--आधा तोला से १ तोला तक, उतना ही मिश्री का चूर्ण मिला कर सबरे-शाम सेवन करावें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपयोग--सर्व प्रकार के नेत्ररोगों में, विशेष कर रतौंधी, दृष्टिमान्द्य, नेत्र का शूल, अभिष्यन्द और शरीर की कमजोरी तथा पोषण की कमी से होनेवाले नेत्र रोगों में इसका प्रयोग करें।

९–एलादि मञ्जन

द्रव्य और निर्माणविधि--

छोटी इलायची, कबाबचीनी, (शीतलमिर्च), कत्था और संगजराहत (संगराज) प्रत्येक समभाग ले, कूट, कपड़छान चूर्ण करके रख लें।

उपयोग--यह मञ्जन सबेरे-शाम या आवश्यकतानुसार दिन में कई बार मुंह के छालों पर लगाकर जल या जात्यादि कषाय से कुल्ला करावें। इससे मुखपाक में अच्छा लाभ होता है।

१०–जात्यादि कषाय

द्रव्य और निर्माणविधि–

चमेली की पत्ती, दाड़िम (अनार) की पत्ती, बबूल की छाल और बेर की जड़ प्रत्येक ६-६ माशा ले, जौकुट कर, ६४ तोले जल में पका आधा रहनेपर कपड़े से छान, उसमें फिटकरी १० रत्ती और शुद्ध सुहागा १० रत्ती मिलाकर कुल्ला करने से मुंह और गले के पकने और छाले में अच्छा लाभ होता है।

अन्य उपयोग--मुखपाक, मसूड़े फूलना और मुँह तथा गले में छाले पड़ना इन रोगों में उदुम्बरसार को जल में मिलाकर कुल्ला कराना, खदिरादि तैल लगाना या उस को मुंह में रखकर फिराना; यदि दस्त की कब्जियत हो तो मञ्जिष्ठादि चूर्ण सोते समय देना और मुखपाक आदि रक्तविकार या पेट की गर्मी से हो तो सारिवादि हिम पीने को और शतपत्र्यादि चूर्ण खाने को देना चाहिये।

११–भल्लातकादि मञ्जन

आढक्या दलमध्यगान् सुमतिमान् भल्लातकान्मृण्मये।
पात्रे स्थाप्य विधाय पावकमधः प्रज्वालयेद्युक्तितः॥
तन्मस्याऽखिलदन्तघर्षणमिदं कुर्वन्तु लोकाः सदा।
योगोऽयं किल दन्तरोगमदभुन्मत्तेभकण्ठीरवः॥

वैद्यामृत।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्रव्य और निर्माण विधि--

अरहर की दाल २ भाग और भिलावा एक भाग ले, एक मिट्टी के घड़े में आधी अरहर की दाल रख, ऊपर भिलावे रखकर, बाकी रही अरहर की दाल ऊपर से भर दें। पीछे घड़े के मूंहपर मिट्टी का सिकोरा रख, ७ कपड़मिट्टी दे, सुखा कर घड़े को चूल्हे पर रख कर नीचे अग्नि करें। भिलावे जल कर तैल-रहित कोयले जैसे हो जायं, इतनी अग्नि देनी चाहिये। पीछे उनको पीस; कपड़छान करके शीशी में भर लें।

उपयोग—इस मसी से दांत अच्छे साफ होते हैं।

वक्तव्य—यदि दांतों से पीब आती हो तो इस मसी में कपूर, बच, कूठ और अकरकरा सम भाग लेकर कपड़छान किया हुआ चूर्ण चतुर्थांश मसी में मिलाकर इसका प्रयोग करें। अथवा, तिरफल (नेपाली धनिया) के चूर्ण या तेल में यह मंजन मिलाकर दांतों पर मलें।

१२–शिरःशूलाद्रिवज्ररस

पलं रसं पलं गन्धं पलं लौहं पलं त्रिवृत्।
गुग्गुलोः पलचत्वारि तदर्धं त्रिफलारजः॥
यष्टीमधु कणा शुण्ठी गोक्षुरं कृमिनाशनम्।
दशमूलं च प्रत्येकं तोलकं वस्त्रशोधितम्।
क्वाथेन दशमूलस्य तथा भृङ्गाम्बुनाऽपि च॥
भावयित्वा प्रकर्तव्यां माषैकप्रमिता वटी॥
छागीदुग्धेन सा सेव्या मधुना पयसाऽथवा।
शिरःशूलाद्रिवज्रोऽयं शिरोरोगविनाशनः॥

द्रव्य और निर्माणविधि—

शुद्ध पारद ४ तोला, शुद्ध गन्धक ४ तोला, लोहभस्म ४ तोला, निशोथ ४ तोला, शुद्ध गूगल १६ तोला; त्रिफला (हर्रदल, बहेड़ादल, और आंवलादल मिलाकर) ८ तोला; तथा मुलेठी, छोटी पीपल, सोंठ, गोखरू, बायविडंग, सरिवन, पिठवन, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, छोटा गोखरू, बेल, अरणी, सोना-पाठा, गम्भारी और पाडर प्रत्येक १-१ तोला लें। प्रथम पारे गन्धक की कज्जली बनाकर, उसमें लोहभस्म तथा अन्य द्रव्यों का कपड़छान चूर्ण मिलावें। पीछे साफ किये हुए गूगल को इमामदस्ते में डालकर कूटें। जब गूगल नरम हो जाय तब उसमें अन्य द्रव्य मिला, दशमूल के क्वाथ और भंगरे के स्वरस की ३-३ भावना दे, ४-४ रत्ती की गोलियां बना, सुखा कर शीशी में भर लें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मात्रा और अनुपान—२ गोली सबेरे-शाम बकरी का दूध, गाय का दूध या पथ्यादि क्वाथ के अनुपान से दें।

उपयोग—सब प्रकार के सिर के दर्द में इसका अकेला या १ माशा गोदन्ती भस्म के साथ मिला कर प्रयोग करें।

१३--पथ्यादिक्वाथ

पथ्याक्षधात्रीभूनिम्बनिशानिम्बामृतायुतः ।
कृतः क्वाथः षडङ्गोऽयं सगुडः शीर्षशूलहृत् ॥

द्रव्य और निर्माणविधि--

हर्रे का दल, बहेड़ादल, आँवलादल, चिरायता, हल्दी और नीम के वृक्ष पर लगी हुई गिलोय प्रत्येक समभाग लें, जौकुट करके रख लें।

मात्रा—१ तोला मिश्रण १६ तोला जल में पका, चौथाई जल बाकी रहने पर कपड़े से छान, उसमें अधा तोला गुड़ मिला कर दें।

उपयोग--सब प्रकार के सिर के दर्द में इसका प्रयोग करें।

अन्य उपयोग—दशाँगलेप जल में पीस, उसमे $\frac{1}{8}$ घृत मिलाकर सिर पर लगाने से सिर की पीड़ा कम होती है। गोदन्तीभस्म १॥ माशा, मिश्री का चूर्ण १॥ माशा, इस दोनों को ३ से ६ माशे घी में मिला कर देने से सिर के दर्द में अच्छा लाभ होता है।

स्त्रीरोगाधिकार-सप्तविंशतितम

१--अशोकारिष्ट

अशोकस्य तुलामेकां लोध्रस्यार्धतुलां तथा ।
चतुर्द्रोणे जले पक्त्वा गृह्णीयात् पादशेषितम् ॥
शर्करायास्तुलां दत्त्वा क्षौद्रस्यार्धतुलां तथा ।
धातकीं षोडशपलां द्राक्षायाः पलविंशतिम् ॥
अजाजीं मुस्तकं शुण्ठीं दार्व्युत्पलफलत्रिकम ।
आम्रास्थि कुंकुमं वासां चन्दनं च रसाञ्जनम् ॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पत्राङ्गं खदिरं बिल्वं शाल्मलीकुसुमं बलाम् ।
भल्लातकं सारिवां च जपाकुसुमकं त्वचम् ॥
पृथ्वीकां देवकुसुमं प्रत्येकं पलसंमितम् ।
सर्वं सुचूर्णितं दत्त्वा स्थापयेन्मासमात्रकम् ॥
हन्त्युग्रं प्रदरं श्वेतं रक्तं चापि सवेदनम् ।
अशोकारिष्टसंज्ञोऽयं सर्वयोनिगदापहः ॥

द्रव्य और निर्माणविधि–

अशोक की छाल ४०० तोला और लोध्र २०० तोला ले, जौकुट कर, ४०९६ तोला जल में पका, चौथाई जल बाकी रहने पर कपड़े से छान, उसमें ४०० तोला चीनी, २०० तोला शहद, जौकुट की हुई मुनक्का ८० तोला, धाय के फूल ६४ तोला और जीरा, नागरमोथा, सोंठ, दारुहल्दी, कमल, हर्रेदल, बहेड़ादल, आंवलादल, आम की गुठली, केशर, अड़ूसा, श्वेतचन्दन, रसौत, पतंग, खैर का बुरादा, बेल, सेमल के फूल या मोचरस, बरियारा (खरैंटी) के मूल, भिलावा, अनन्तमूल, गुड़हल के फूल, दालचीनी, बड़ी इलायची और लौंग प्रत्येक ४-४ तोले का कपड़छान चूर्ण मिला कर सागौन की लकड़ी के पीपे में भर दें। एक मास के बाद छान कर फिर उसी पीपे को धोकर उसमें भर लें।

मात्रा और अनुपान—२–४ तोला, उतना ही जल मिला कर पीने को दें।

उपयोग--स्त्रियों के रक्त या श्वेत प्रदर में अकेला या चन्द्रकला रस के साथ अथवा १ माशा नागकेशर का चूर्ण और १ माशा खूनखराबे का चूर्ण मिला कर उसके अनुपान के रूप में इसका प्रयोग करें।

२–अश्वगन्धादियोग

द्रव्य और निर्माणविधि--

असगन्ध और विधारे का चूर्ण ८-८ भाग, बड़ी इलायची का चूर्ण २ भाग कुक्कुटाण्डकपाल चूर्ण २ भाग, वंगभस्म १ भाग और मिश्री का चूर्ण ८ भाग; इन सबको एकत्र मिला कर शीशी में भर लें।

मात्रा और अनुपान--४-४ माशा सबेरे-शाम देकर ऊपर से गाय का दूध पिलावें।

उपयोग–श्वेतप्रदरवाली स्त्री को २ से ६ माशा तक या योग अच्छा होने तक इस चूर्ण का सेवन करावें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

३–बोलादि वटी

द्रव्य और निर्माणविधि--

हीराबोल (यूनानी–मुरमकी) २ भाग, शुद्ध सुहागा १ भाग, कसीस १ भाग, घी में सेंकी हुई हींग १ भाग, एलुवा (मुसब्बर) १ भाग, सबको जटामांसी के क्वाथ में पीस कर २-२ रत्ती की गोलियाँ बना लें।

मात्रा और अनुपान--२-२ गोली सबेरे-शाम भोजन के आधा घण्टा बाद जल से दें।

उपयोग—इसके सेवन से स्त्रियों को रजोदर्शन ठीक होता है।

४–रजोदोषहरी वटी

द्रव्य और निर्माणविधि--

मुश्कतरामसी, रेवन्दचीनी, तगर, हरमल, सातर, सौंफ, अनीसून, तुख्मकर्फस, अजखर, सोया, हमामा और बाँस की जड़ प्रत्येक १०-१० तोला, उलटकंबल के मूल ४० तोला ले, सबको जवकुट करके चौगुने जल में पकावें। जब चौथाई जल बाकी रहे तब कपड़े से छान कर मन्दी आँच पर पकावें। जब करछें में लगने लगे तब नीचे उतार, धूप में रख कर सुखावें। जब गोली बनने योग्य हो जाय तब उसमें कूट का चूर्ण २ तोला, जावसीर २ तोला, हीराबोल ३ तोला, और जुंदबेदस्तर १ तोला मिला, ४-४ रत्ती की गोलियाँ बना, छाया में सुखा कर शीशी में भर लें।

मात्रा और अनुपान--नित्य सवेरे-शाम २-२ गोली जल से दें। रजोदर्शन के समय में नीचे लिखे क्वाथ के अनुपान से दें।

क्वाथ--अजखर, मुस्कतरामसी, अनीसून, अबहल, ककड़ी के बीज, गोखरू, बाँस की जड़ या पत्ती और हंसराज प्रत्येक ६-६ माशा ले, २० तोला जल में पका, ५ तोला बाकी रहे तब कपड़े से छान, १ तोला गुड़ मिलाकर दें।

उपयोग—स्त्रियों को मासिक साफ न आना और मासिक के समय पेट में दर्द होना इसमें इसके सेवन से लाभ होता है।

वक्तव्य--मुश्कतरामसी, सातर, अनीसून, जावशीर, हमामा, अजखर और जुंदबेदस्तर ये द्रव्य यूनानी दवा बेचनेवाले पन्सारी के यहाँ से मिल सकते हैं।

५–न्यग्रोधादिगण

न्यग्राधोदुम्बराश्वत्थप्लक्षयष्टीकपीतनाः।
ककुभाम्राप्रियालाश्च वेतसो रोहिणी शिवा॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तिन्दुकी बदरी लोध्रं जम्बू भल्लातकस्तुणिः ।
कदम्बकस्तथा दार्वी पलाशमधुकावपि ॥
न्यग्रोधादिगणो ह्येष योनिदोषहरः परः ।
एभिः कषायं तैलं च साधयित्वा प्रयोजयेत् ॥

द्रव्य और निर्माणविधि--

बड़ (बरगद), गूलर पीपर, पाकर, मूलेठी, पारसपीपल, अर्जुन. आम, चिरौंजी, बेद सादा, रोहण, हर्रे, तेंदु. बेर, लोध, जामुन, भिलावा, तूण, कदम्ब, दारुहल्दी, ढाक और महुआ इन वृक्षों की छाल,*समभाग ले, उनको जौकुट करके रख लें। इसमें से २ तोला ले, उसको १२८ तोला जल में पका, आधा जल बाकी रहने पर कपड़े से छान, उसमें ५ रत्ती फिटकिरी और ५ रत्ती सुहागा मिला कर बस्ति (एनिमा देने के यन्त्र) से योनि में बस्ति (डूश) दें।

न्यग्रोधादिगण की छाल २५६ तोला ले, उसको चौगुने (१०२४ तोले) जल में पका, चौथाई जल बाकी रहने पर कपड़े से छान, उसमें ६४ तोला तिल का तैल और न्यग्रोधादिगण १६ तोले चूर्ण को जल में पीस कर तैयार किया हुआ कल्क मिला कर तैलपाक विधि से धोकर साफ की हुई शीशी में भर कर रख दें। इस तेल में शोषक रूई भिगो कर योनि में रखें।

उपयोग—श्वेतप्रदर, योनिमार्ग का शोथ और क्षत इन में न्यग्रोधादिकषाय की बस्ति देने और तैल में रूई भिगो कर रखने से अच्छा लाभ होता है।

२—फलघृत

मञ्जिष्ठा मधुकं कुष्ठं त्रिफला शर्करा वचा ।
अजमोदा हरिद्रे द्वे हिंगुकं कटुरोहिणी ॥
उत्पलं चन्दनं द्राक्षा पद्मकं देवदारु च ।
मेदे पयस्या काकोली वाजिगन्धा च पिप्पली ॥
जातीपुष्पं तुगाक्षीरी विडङ्गं कमलं बला ॥
कट्फलं सारिवा मुस्ता गोक्षुरं बृहतीद्वयम् ॥
एषामक्षसमैः कल्कैः सर्पिः प्रस्थद्वयं पचेत् ।
शतावरीरसं क्षीरं घृताद्दत्त्वा चतुर्गुणम् ॥

* मुलेठी के मूल, हर्रे का फल और अन्य वृक्षों की छाल लेनी चाहिए।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एतत् फलघृतं नाम गर्भिण्याः परमं हितम् ।
या चैवास्थिरगर्भा स्यात् पुत्रं जनयते मृतम् ॥
अल्पायुषं वा जनयेद्या च सूत्वा पुनः स्थिता ।
सा सुताञ्जयेन्नारी मेधाढ्यान् प्रियदर्शनान् ॥

द्रव्य और निर्माणविधि--

मजीठ, मुलेठी, कूठ, हर्रे, बहेडा, आँवला, चीनी, बच, अजमोद, हल्दी, दारुहल्दी, घी में सेकी हुई हींग, कुटकी, नीलोफर (कुंई का फुल), चन्दन, मुनक्का, पद्माख, देवदारु, मेदा, महामेदा, विदारीकन्द, काकोली, असगन्ध छोटी पीपल, चमेली के फूल वंशलोचन, बायबिडङ्ग, कमल, बरियार(खरेंटी) के मूल, कायफल अनन्तमूल, नागरमोथा, गोखरू, छोटी कटेरी और बड़ी कटेरी प्रत्येक १-१ तोला ले, कूट, कपड़छान चूर्ण बना, जल में पीसकर इनका कल्क करें। इस कल्क में गाय का घी १२८ तोला, शतावर का रस २४८ तोला और गाय का दूध २४८ तोला मिलाकर घृतपाकविधि से पकावें। जब घृत तैयार हो जाय तब कपड़े से छानकर काच के बरतन में भरकर रख दें।

मात्रा और अनुपान—आधा तोला से १ तोला तक उतना ही मिश्री का चूर्ण मिला कर दें और ऊपर से दूध पिलावें।

उपयोग—जिस स्त्री को बारम्बार गर्भपात होता हो, मरे हुए या अल्पायु बालक होते हों और एक बालक होकर फिर गर्भ न रहता हो, ऐसी स्त्री को इस घृत के सेवन से बुद्धिमान् और स्वरूपवान् बालक होता है।

बालरोगाधिकार–अष्टाविंशतितम

१--बालचातुर्भद्रचूर्ण

घनकृष्णारुणाश्रृङ्गीचूर्णं क्षौद्रेण संयुतम् ।
शिशोर्ज्वरातिसारघ्नं कासश्वासवमोहरम् ॥

द्रव्य और निर्माणविधि-

नागरमोथा, छोटी पीपल, अतीस और काकड़सिंगी प्रत्येक समभाग ले, उनका कपड़छान चूर्ण करके शीशी में भर लें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मात्रा और अनुपान--२-८ रत्ती चूर्ण शहद में मिला कर दिन में ३-४ बार यथावश्यक दें।

उपयोग—बालकों के ज्वर, अतिसार, खाँसी और वमन में इसका प्रयोग करें।

२–बालार्करस

रसकं च प्रवालं च शृङ्गभस्म च हिंगुलम्।
गोरोचना च कर्चूरं केशरं च समांशकम्॥
ब्राह्मीरसेन संमर्द्य कुर्याद् गुञ्जामितां वटीम्॥
वातश्लेष्मातिसारघ्नः क्रिमिकासज्वरापहः॥

द्रव्य और निर्माणविधि--

शुद्ध खपरिया अथवा यशद की भस्म, प्रवाल की भस्म या पिष्टी, हरिण या साँभर के सींग की भस्म, शुद्ध हिंगुल, गोरोचन, कचूर का चूर्ण और केशर सम भाग ले, ब्राह्मी के स्वरस में १ दिन मर्दन कर, १-१ रत्ती की गोलियाँ बना, छाया में सुखा कर शीशी में भर लें।

मात्रा और अनुपान— १-१ गोली दिन में ३-३ बार शहद या जल में मिला कर दें।

उपयोग--बालकों के वात और कफ के विकार, अतिसार, कृमिविकार; ज्वर, वमन, अतिसार और आक्षेपक में इसका प्रयोग करें।

३–बालवटी

द्रव्य और निर्माणविधि—

जीरा, छाया में सुखाया हुआ पोदीना, बड़ी हर्रे का दल, बायबिडङ्ग, लौंग अतीस, सौंफ, जायफल, भाँग, रूमीमस्तंगी, कछुए की पीठ की भस्म, कोयल के बीज, जहरमोहरा की पिष्टी और केशर समभाग ले, कपड़छान चूर्ण बना, ग्वारपाठे के रस में पीस, १-१ रत्ती की गोलियाँ बना, छाया में सुखा कर शीशी में भर लें।

मात्रा और अनुपान— १-२ गोली सबेरे-शाम दूध में मिलाकर पिलावें।

उपयोग–इस गोली का सेवन कराने से बालकों को दूध ठीक पचता है, नींद अच्छी आती है और सर्दी, अतिसार, वमन तथा खाँसी ये विकार अच्छे होते है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४–सुधाषट्क योग

द्रव्य और निर्माण-विधि--

प्रवालभस्म १ भाग, सीप की भस्म २ भाग, शंखभस्म ३ भाग, कौड़ी की भस्म ४ भाग, कछुए की पीठ, की भस्म ५ भाग और गोन्दती भस्म ६ भाग ले, सबको नीबू के रस की ३ भावनायें दे, सुखा कर शीशी में भर लें।

मात्रा और अनुपान--२ से ८ रत्ती दूध के साथ सवेरे-शाम दें।

उपयोग--बालशोष (सूखा) में इसके प्रयोग से अच्छा लाभ होता है। शरीर में सुधांश(चूने)की कमी से जो रोग होते हैं, उनमें इनका प्रयोग करना चाहिए।

५–बालपंचभद्र

द्रव्य और निर्माणविधि---

यशदभस्म आधा तोला, रससिन्दूर १ तोला, गोरोचन १ तोला, शुद्ध गन्धक १ तोला और गोदन्ती भस्म ८ तोला ले, सबको एक दिन खरल में मर्दन करके शीशी में भर लें।

मात्रा और अनुपान--२-४ रत्ती शहद में मिलाकर चटावें और ऊपर से गाय का दूध दें।

उपयोग--बालकों के पाण्डुरोग, जीर्णज्वर और बालशोष में दिन में तीन-चार बार इसका प्रयोग करें।

६–कुमारकल्याण घृत

शङ्खपुष्पी वचा ब्राह्मी कुष्ठं त्रिफलया सह।
द्राक्षा सशर्करा शुण्ठी जीवन्ती जीवको बला॥
शटी दुरालभा बिल्वं दाडिमं सुरसा स्थिरा।
मुस्तं पुष्करमूलं च सूक्ष्मैला पिप्पली जलम्॥
श्वदंष्ट्राऽतिविषा पाठा विडङ्गं दारु मालती।
मधूकपुष्पं खर्जूरं बदरं वंशरोचना॥
कल्कैरेषां समांसानां घृतं क्षीरे चतुर्गुणे।
कषाये कण्टकार्याश्च साधयेत् सौम्यदैवते॥
एतत् कुमारकल्याणं घृतरत्नं सुखप्रदम्।
बलवर्णकरं धन्यं पुष्ट्यग्निरुचिकारकम्॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सर्वबालामयघ्नं च मेध्यमायुष्यमुत्तमम् ।
रसायनमिदं सेव्यं विशेषाद्दन्तजन्मनि ॥

द्रव्य और निर्माणविधि--

शंखाहुली, बच, ब्राह्मी, कूठ हरड़, बहेड़ा, आँवला, मुनक्का, मिश्री, सोंठ, जीवन्ती, जीवक बरियारा (बलामूल), कचूर, धमासा, बेल, अनार, तुलसी, सरिवन, नागरमोथा, पुष्करमूल, छोटी इलायची, छोटी पीपल, खस, गोखरू, अतीस, पाढ़, बायबिडङ्ग देवदार, मालती के फूल, महुआ के फूल, पिण्ड खजूर, मीठे बेर और वंशलोचन-सब सम भाग ले, कूट, कपड़छान कर, जल में पीस, उसमें चौगुना गाय का घी और गाय का दूध तथा छोटी कटेरी का क्वाथ घी से चौगुना मिलाकर घृतपाकविधि से पकावें। जब घृत तैयार हो जाय तब उसको कपड़े से छान कर शीशी में भर लें।

मात्रा और उपयोग--३ से ६ माशा, गरम दूध में मिलाकर पिलावें।

उपयोग--इस घृत के सेवन से बल, वर्ण रूचि, जठराग्नि, मेधा और आयुष्य बढ़ता है। दांत आने के समय में बालकों को इसके सेवन कराने से विना उपद्रव के दांत निकल आते हैं।

७--मुक्तादि वटी

द्रव्य और निर्माणविधि--

मोती २ भाग, सोने के वरक आधा भाग, चाँदी के वरक १ भाग, नागकेशर २ भाग, कमल के फूलों के अन्दर का केशर १ भाग, जीरा-गुलाब (गुलाब के पुष्प का केशर) १ भाग, केशर आधा भाग, कपूर चौथाई भाग, कहरुवा १ भाग, जहर-मोहरा खताई १ भाग, संगेयशब १ भाग, गोरोचन १ भाग और गोदन्ती भस्म सबके बराबर लें। दोनों वरकों को छोड़ सब कपड़छान चूर्ण कर के पीछे उसमें वरक १-१ कर के मिलावें। पीछे अच्छे गुलाब के अर्क में आठ दिन मर्दन कर, २-२ रत्ती की गोलियाँ बना सुखाकर शीशी में भर लें।

मात्रा और अनुपान-- आधी गोली से २ गोली तक गाय या माता के दूध में मिला कर देवें।

उपयोग---बालकों का जीर्णज्वर, बालशोष (सूखा), पांडुरोग दूध न पचकर दस्त, या उल्टी होना, खांसी आदि रोगों में इसके सेवन से रोग दूर होकर बालक अच्छा पुष्ट होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रसायन-वाजीकरणाधिकार-एकोनत्रिंशत्तम

१–विदार्यादि चूर्ण

द्रव्य और निर्माणविधि–

विदारीकन्द, सफेद मुसली, सालमपंजा, असगन्ध, गोखरू, अकरकरा, सब सम भाग ले, कपड़छान चूर्ण करके शीशी में भर लें।

मात्रा और अनुपान––३-३ माशा चूर्ण सबेरे-शाम भोजन के ३ घण्टा पहले गाय के गरम दूध के साथ पीवें।

उपयोग––इसके सेवन से वीर्य की वृद्धि और स्तम्भन होता है तथा कामोत्तेजना होती है।

२–कामलाक्षादि चूर्ण

द्रव्य और निर्माणविधि––

कमलगट्टा ७ तोला, जायफल २ तोला, केशर १ तोला, तेजपात १ तोला, शतावरी २ तोला, असगन्ध २ तोला, सफेद मुसली २ तोला, बंशलोचन १ तोला; सालमपंजा २ तोला, छोटी इलायची के बीज १ तोला, सोंठ १ तोला, रूमीमस्तंगी १ तोला, पीपलामूल १ तोला और कबाबचीनी १ तोला, ले सबको कूट, कपड़-छान चूर्ण करके शीशी में भर लें।

मात्रा और अनुपान—३ से ६ माशे चूर्ण को आधा से १ तोला गाय के घी में थोड़ा सेंक, उसमें पाव से आधा सेर गाय का दूध और यथारुचि मिश्री मिला, ५–७ उफान आवे इतना गरम कर, नीचे उतार कर ठंडा होने पर पीवें।

उपयोग—इसके सेवन से शरीर पुष्ट होता है, वीर्य बढता है तथा कामोत्ते-जना होती है।

३--कामदेव घृत

अश्वगन्धा तुलैकास्यात्तदर्धो गोक्षुरः स्मृतः।
बलाऽमृता शालपर्णी विदारी च शतावरी ॥
शुण्ठी पुनर्नवाऽश्वत्थः काश्मर्यास्तु फलानि च।
पद्मबीजं माषबीजं ग्राह्यं पंचपलं पृथक् ॥
चतुर्द्रोणेऽम्भसां पक्त्वा पादशेषं शृतं नयेत्।
जीवनीयगणः कुष्ठं पद्मकं रक्तचन्दनम् ॥

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पत्रकं पिप्पली द्राक्षा कपिकच्छुफलं तथा ।
नीलोत्पलं नागपुष्पं सारिवा द्वे बले तथा ।।
पृथक् कर्षसमा भागा : शर्करायाः पलद्वयम् ।
रसं च पौण्ड्रकेक्षूणामाढकेकं समाहरेत् ।।
घृतस्य चाढकं दत्त्वा पाचयेन्मृदुनाऽग्निना ।
घृतमेतन्निहन्त्याशु मूत्रकृच्छ्रमुरःक्षतम् ।।
शुक्रक्षयमुरोदाहं कार्श्यमोजःक्षयं तथा ।
स्त्रीणां चैवाप्रजातानां गर्भदं शुक्रदं नृणाम् ।।
कामदेवघृतं नाम हृद्यं बल्यं रसायनम् ।

द्रव्य और निर्माण विधि–

असगन्ध ४०० तोला गोखरू २०० तोला, बरियारा, गिलोय, सरिवन, विदारीकन्द, शतावर, सोंठ गदहपुरना-सांठी, पीपल की कोंपल, गम्भारी के फल, कमलगट्टा और उड़द--प्रत्येक २० तोला ले, सबको जौकुट कर, ४०९६ तोले जल में पकावें। चौथाई जल बाकी रहने पर कपडे से छान उसमें गाय का घी २५६ तोला, गन्ने का रस २५६ तोला तथा मेदा, महामेदा जीवक, ऋषभक; काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि, वृद्धि कूठ, पद्माख, लालचन्दन, तेजपात, छोटी पीपल, मुनक्का, कवांच, नीलकमल, नागकेशर, अनन्तमूल, वरियारा और कंधी प्रत्येक १-१ तोला तथा मिश्री ८ तोला इनका कपड़छान चूर्ण जल में पीसकर बनाया हुआ कल्क मिलाकर घृत-पाक विधि से पकावें। घृत तैयार होने पर कपड़े से छानकर शीशी में भर लें

मात्रा और अनुपान--आधा से २ तोला तक, उतना ही मिश्री का चूर्ण मिला कर दें और ऊपर से दूध पिलावें।

उपयोग--यह घृत उत्तम पौष्टिक और वाजीकर है। वीर्यक्षय, शरीर की कृशता, मूत्रकृच्छ्र, उरःक्षत और नपुंसकता में इसका प्रयोग करें।

४–मकरध्वज (चन्द्रोदय) रस

पलं मृदु स्वर्णदलं रसेन्द्रात् पलाष्टकं षोडश गन्धकस्य ।
शोणैः सुकार्पासभवप्रसूनैर्दिनं विमर्द्याथ कुमारिकाद्भिः ।।
सत्काचकुम्भे निहितं सुगाढे मृत्कर्पटैस्तद्दिवसत्रयं च ।
पचेत् क्रमाग्नौ सिकताख्ययन्त्रे ततो रसः पल्लवरागरम्यः ।।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तलस्थस्वर्णभाग: स्यादेकोऽष्टौ मकरध्वजात्
तथैव भागा देया: स्युर्लवङ्गात् केशरात्तथा ।।
जातीफलाच्च कर्पूरादेकस्तु मृगनाभित: ।
श्लक्ष्णपिष्टो रसो नाम जायते मकरध्वज: ।।
वल्लं वल्लद्वयं वाऽथ ताम्बूलीदलसंयुतम् ।
भक्षयेन्मधुरिस्निग्धं कटुकाम्लविवर्जितम् ।
शृतशीतं सितायुक्तं दुग्धं गोधूममाज्यकम् ।
करोत्यग्निबलं पुंसां जराब्याधिविनाशन: ।।
मेधायु:कान्तिजननो मकरध्वजसंज्ञक: ।।

द्रव्य और निर्माणविधि--

शुद्ध पारद ३२ तोला, ले उसको पत्थर के खरल में डाल, उसमें ४ तोला सोने के वरक एक-एक करके मिला, नींबू का रस डाल कर एक दिन मर्दन करें। दूसरे दिन उसको जल से धो, उसमें शुद्ध गन्धक ६४ तोला मिला कर कज्जली करें। पीछे एक दिन लाल फूलवाले कपास के फूलों के रस में और एक दिन ग्वारपाठे के रस में मर्दन कर, सुखा लें। पीछे एक अच्छी आतसी शीशी को या ब्रांडी की नीचे पिंडे में समतल हो ऐसी बोतल को ७ कपड़मिट्टी चढ़ा, सुखा कर उसमें भरें। बाद एक लोहे की या मिट्टी की नांद या घड़े में नीचे एक अंगुल बालू (रेत) बिछा उस पर शीशी रख, शेष भाग में शीशी के गले तक बालू भर चूल्हे पर चढ़ा कर नीचे क्रम से मन्द, मध्यम और तीक्ष्ण अग्नि दें। इस क्रिया में प्रथम गन्धक ऊपर आने लगेगा। गन्धक जम कर शीशी का मुंह बन्द न हो जाय, इसलिये जब गन्धक ऊपर आने लगे तब एक लोहे की सलाई (सींक) को अग्नि में तपा कर शीशी के अन्दर गले तक फिरावें। जब सारा गन्धक जल जाय तब शीशी के मुंह पर खड़िया मिट्टी या मुलतानी मिट्टी का डाट लगा कर ऊपर से गुड़ या शहद में मिला हुआ चूना लगा दें। पीछे १२ घंटा तीव्र अग्नि दें। बाद नया ईन्धन देना बन्द करके जब आप से आप ठंढा हो जाय तब शीशी को निकाल, ऊपर की कपड़मिट्टी को हटा, शीशी के मध्य में मिट्टी के तेल में भिगोई हुई सुतली लपेट, उसको दियासलाई से जला, ठंढे पानी के छींटे देकर शीशी को तोड़ दें। इस क्रिया से शीशी आसानी से मध्य में से ठीक टूट जाती है। पीछे शीशी के गले में लगे हुए मकरध्वज और तलस्थ स्वर्ण को सावधानी से ले लें।

मात्रा और अनुपान--शीशी मे नीचे रहा हुआ सोने का चूर्ण १ भाग, मकरध्वज ८ भाग, कपूर ८ भाग लौंग ८ भाग, केशर ८ भाग, जायफल ८ भाग

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

और कस्तूरी १ भाग लेवें। प्रथम सुवर्ण और मकरध्वज को ३ दिन मर्दन करें, पीछे कस्तूरी, कपूर और अन्य द्रव्यों का सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण मिला, १ दिन मर्दन करके शीशी में भर लें। ३ से ६ रत्ती तक सबेरे-शाम शहद में चटाकर या नागरबेल के पान में खिला कर ऊपर से गाय का दूध पिलावें।

उपयोग--यह उत्तम रसायन, वाजीकर और बलकारक है। अनुपान भेद से अनेक रोगों में इसका प्रयोग किया जाता है।

५--वसन्तकुसुमारकर रस

प्रवालरसमौक्तिकाभ्रकमिदं चतुर्भागभाक्।
पृथक् पृथगथ स्मृते रजतहेमतो द्वयंशके॥
अयोभुजगवङ्गकं त्रिलवकं विमर्द्याखिलं।
शुभेऽहनि विभावयेद्भिषगिदं धिया सप्तशः॥
द्रवैर्वृषनिशेक्षुजैः कमलमालतीपुष्पजैः।
वरीकदलिकन्दजैर्मलयजैणनाभ्युद्भवैः॥
वसन्तकुसुमाकरो रसपतिर्द्विगुञ्जोऽशितः।
समस्तगदहृद्भवेत् किल निजानुपानैरयम्॥

द्रव्य और निर्माण विधि--

प्रवाल भस्म या पिष्टी ४ भाग, चन्द्रोदय या रससिन्दूर ४ भाग, मोती की भस्म या पिष्टी ४ भाग, अभ्रकभस्म ४ भाग, रौप्यभस्म २ भाग, सुवर्णभस्म २ भाग, लोहभस्म ३ भाग, नागभस्म ३ भाग और वंगभस्म ३ भाग ले, सबको पत्थर के खरल मे डाल कर अडूसे की पत्ती का रस, हल्दी का रस, गन्ने का रस कमल के फूलों का रस, मालती के फूलों का रस, शतावरी का रस, केले के कन्द का रस और चन्दन भिगोया हुआ जल इन प्रत्येक की सात-सात भावना दें। प्रत्येक भावना में ३-६ घंटा मर्दन करना चाहिये। अन्त की भावना के समय उसमें २ भाग अच्छी कस्तूरी मिला, ३ घंटा मर्दन कर, २-२ रत्ती की गोलियाँ बना कर छाया में सुखा लें। इस योग में यदि दो भाग अम्बर भी मिलावें तो यह विशेष गुणकारक होता है।

मात्रा और अनुपान--सबेरे-शाम एक-एक गोली मधु में मिला कर दें और ऊपर से गौ का गरम किया हुआ दूध पिलावें।

उपयोग--वसन्तकुसुमाकर रस उत्तम रसायन, वाजीकर, स्मरणशक्ति को बढ़ानेवाला तथा हृदय और मस्तिष्क को बल देनेवाला है। मधुमेह में ताजे हर्रे आँवले ताजी हल्दी के रस के साथ इसके सेवन से अच्छा लाभ होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

६--धात्रीरसायन (नोशदारु)

द्रव्य और निर्माणविधि--

ताजे पुष्ट आंवले २।। सेर लेकर उनको एक दिन-रात दूध में भिगों दें। दूसरे दिन उनको जल से धो, २।। सेर जल में डालकर गुठली हो जाय इतना पका लें। पीछे गुठली निकाल, एक कलईदार बर्तन पर पाट--सन का कपड़ा बाँध, उस पर आँवले को हाथ से मसल कर छान लें। पीछे उसमें १० तोला गाय का घी डाल कर मन्दी आँच पर पकावे और लकड़ी के खोचें से हिलाते रहें। जब आँवले घी छोड़ने लगें और खोवे जैसे हो जायें तो नीचे उतार कर रख देवें। पीछे ५ सेर चीनी में थोड़ा अर्कगुलाब देकर चासनी करें। जब पक्की चासनी हो जाय तब उसमें आँवले अच्छी तरह मिलाकर नीचे उतार लें। बाद में ठंढा होने पर छोटी इलायची के बीज, बड़ी इलायची के बीज, नागरमोथा, अगर, तगर, जटामांसी, श्वेतचन्दन, बंशलोचन, रूमीमस्तंगी, जायफल, जावित्री, केशर, तेजपात, तालीसपत्र, लौंग, गुलाब के फूल, धनिया, स्याहजीरा, कपूरकचरी, निर्विषी (जदवार खताई), दालचीनी, अबरेशम कतरा हुआ और बिजौरे का छिलका सुखाया हुआ प्रत्येक एक-एक तोला, इनका कपड़छान चूर्ण मिलाने के बाद अन्त में चाँदी के बड़े वरक १०० तथा सोने के बड़े वरक २५ मिलाकर काच की बरनी में भरकर रख दें। ४० दिन के बाद उपयोग में लें। यदि इस में कस्तूरी १ तोला, अम्बर १ तोला प्रवालपिष्टी १ तोला तथा मोती की पिष्टी १ तोला और मिलावें तो यह योग विशेष गुणकारक होता है।

मात्रा और अनुपान—खाने के तीन घंटा पहले आधा से एक तोला देकर ऊपर से गरम किया हुआ गाय का दूध पिलावें।

गुण--यह योग उत्तम रसायन, वाजीकर, बलकारक, शरीर को पुष्ट करनेवाला, दिल और दिमाग को बल देनेवाला तथा भूख को बढ़ानेवाला है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
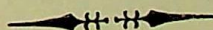
सिद्धयोगसंग्रह

परिशिष्ट

स्वर्णादि धातुओं का शोधन-मारण

स्वर्ण, रौप्य, ताम्र और लोहे का सामान्य शोधन--

सुवर्ण-रूप्य-ताम्रायःपत्राण्यग्नौ प्रतापयेत् ।
कृत्वा कण्टकवेधीनि दृष्ट्वा वह्निसमानि च ।।
निषिञ्चेत्तप्ततप्तानि तैले तक्रे गवां जले ।
काञ्जिके च कुलत्थानां कषाये सप्तधा पृथक् ।।
एवं स्वर्णादिलोहानां विशुद्धिः संप्रजायते ।

सोना, चाँदी, ताँबा और फौलाद (तीक्ष्ण लोह) इन के सुनार से कण्टकवेधी (कांटे या सुई से वेधे जा सके इतने पतले) पत्र बना, उनको सीधे या मूषा—सकोरा आदि में रख, अग्निपर लाल रंग के हो जायँ इतना तपाकर तिल का तेल, छाछ, गोमूत्र, खट्टी कांजी और कुलथी के क्वाथ में सात-सात बार बुझाने से उनका शोधन होता है। इस प्रकार शुद्ध की हुई धातु को गरम जल से धो, सुखा कर मारण के काम में लेना चाहिये।

वक्तव्य--भस्म बनाने के लिये सोना, चाँदी आदि जो धातु ली जाय वह जिसमें किसी अन्य धातु की मिलावट न हो ऐसी लेनी चाहिये। कण्टकवेधी पत्र सुनार से पिटवाकर कराए जा सकते हैं या आजकल बड़े शहरोंमें मशीन (यन्त्र) से भी बनवाए जा सकते हैं। खट्टी कांजी तैयार न हो तो उसके बदले में गन्ने का सिरका काम में ला सकते हैं। छाछ, गोमूत्र, कांजी सिरका और कुलथी का क्वाथ इनको दो-तीन बार उसमें धातु बुझाने के बाद बदल देना चाहिए।

१—सुवर्णभस्म

द्रव्य और निर्माणविधि--

चन्द्रोदय (मकरध्वज) बनाते समय शीशी के तले में जो सोना रह जाता है, उसको लोहे के खरल में डाल, उसमें समभाग शुद्ध संखिया मिला, तुलसी की पत्ती के स्वरस में ७ दिन घोट, टिकिया बना, सुखा, दो सकोरों के संपुट में तुलसी के कल्क

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(लुग्दी) के बीच में रख, संधिस्थान पर ७ कपड़मिट्टी कर, १ सेर कण्डों की आँच में निर्वातस्थान में पुट दें। पीछे संपुट से टिकिया निकाल, उसमें आधा शुद्ध संखिया मिला कर प्रथम पुट की विधि से दूसरा पुट दें। तीसरी बार में तथा आगे जब तक भस्म न हो जाय चौथाई संखिया मिलावें। दूसरे पुट से तुलसी के स्वरस में ३ दिन मर्दन करें। १०-१२ पुटों में खुल्ले लाल रंग की भस्म बनती है। पीछे उस भस्म को एक-एक दिन गुलाब, कमल और मौलसिरी के फूलों के स्वरस में घोंटकर पुट देने से उत्तम बनती है। सोने, चाँदी और शीशे की भस्म बनाते समय यह ध्यान में रखें कि थोड़ी-सी आंच अधिक होने से सोना, चाँदी और शीशा गलकर गठ्ठा बन जाता है। अतः प्रारम्भ में एक सेर कण्ड़ों की आंच दें पीछे। जैसे-जैसे भस्म अग्निसह हो वैसे-वैसे आँच बढ़ाते जावें। सोने की भस्म एक बार में एक से दस तोले तक की बनावें, अधिक न बनावें।

मात्रा और अनुपान—आधा चावल से दो चावल तक १ माशे सितोपलादि और शहद के साथ मिलाकर दें और ऊपर से गरम किया हुआ गो का दूध पिलावें।

गुण और उपयोग—सुवर्ण भस्म रसायन, बाजीकर, बलकारक, मेध्य (स्मरणशक्ति को बढ़ाने वाली) और त्रिदोषहर है। राजयक्ष्मा, कण्ठमाला (गण्डमाला), श्वास, कास, पांडुरोग, मधुमेह, नपुंसकता, दिमाग की कमजोरी जीर्ण फिरंगोपदंश और वातविकारों में इससे विशेष लाभ होता है।

२—रौप्य भस्म

द्रव्य और निर्माणविधि—

चांदी के पत्र के दूनी शुद्ध हरताल को सत्यानासी के स्वरस में महीन पीस, उसका शुद्ध चाँदी के पत्रों पर लेपकर,कुछ सुखा मिट्टी के सकोरे में सत्यानासी के कल्क के बीच में रख, ऊपर दूसरा सकोरा ढक, संपुट की संधिपर कपड़मिट्टी कर, २ सेर कण्डों की आंच का पुट दें। दूसरे पुट में आधी और तीसरे पुट में चौथाई हरताल मिलावें। इस प्रकार १० या जब तक ठीक भस्म न बन जाय तब तक पुट दें। क्रम से आँच थोड़ी-थोड़ी बढ़ाते जायं। पीछे गुलाब के फूलों के स्वरस में पीस, टिकिया बना, सुखा, गुलाब के फूलों का स्वरस निकाल कर बचे हुए कल्क को ऊपर लगा, गोला बना, शराव संपुट में रखकर ५ सेर अग्नि का पुट दें। ऐसे तीन पुट दें। उत्तम भस्म बनेगी। इस प्रकार बनाई हुई भस्म को योगों में डालें अथवा शुद्ध चांदी के वरक या रेती से बनाये हुए चूर्ण में द्विगुण शुद्ध हिंगुल मिला, नीबू के रस में घोंट, टिकिया बना, डमरूयन्त्र में रख, पारद का ऊर्ध्वपातन करें। ऊपर के पात्र में हिंगुलाकृष्ट शुद्ध पारद मिलेगा और नीचे के पात्र में से चांदी का चूर्ण मिलेगा। इस प्रकार दो बार करें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नीचे के पात्र में से चाँदी का चूर्ण निकाल, सत्यानासी के स्वरस में मर्दन कर, टिकिया बना, सुखा शराव संपुट में सत्यानासी के कल्क के बीच में रखकर दो सेर कण्ड़ों का पुट दें। अग्नि की मात्रा उत्तरोत्तर बढ़ाते रहें। इस प्रकार बीस पुट और अन्त मे गुलाब के फूलों के स्वरस के तीन पुट देने से उत्तम रौप्यभस्म बनेगी। रौप्यभस्म एक बार में ५ से २० तोले तक तैयार करें। एक साथ में अधिक न बनावें।

३–ताम्रभस्म

द्रव्य और निर्माणविधि––

१ भाग हिंगुल से निकाला हुआ पारा और २ भाग शुद्ध गन्धक की कज्जली बना, उसको नीबू के रस में मर्दन कर, शुद्ध ताम्र पत्रपर उसका लेप कर, कुछ सुखा, संपुट में रख, सन्धि को कपड़मिट्टी कर, सूखने पर अर्द्ध गजपुट की आँच दें। ठण्डा होने पर संपुट से ताम्र को निकाल, उसमें समभाग शुद्ध गन्धक का चूर्ण मिला, नीबू के रस में घोंट, टिकिया बना, दो मिट्टी के तवों के संपुट में रख, संपुट के सन्धिस्थान पर तीन कपड़मिट्टी कर के बालुकायन्त्र में चार प्रहर पकावें। इस प्रकार दो पुट देकर भस्म को एक काचपात्र में डाल, उपर से खट्टे नीबू का रस गिराकर एक दिन–रात रहने दें। दूसरे दिन देखें, यदि नीबू के रस में हरापन न आया हो तो भस्म ठीक हो गई है ऐसा समझ कर उसको काम में लें। ताम्रभस्म एक साथ में २० से ४० तोले तक बनावें, अधिक न बनावें।

ताम्रभस्म के गुण

ताम्रं तिक्तकषायकं च मधुरं पाकेऽथ वीर्योष्णकं।
साम्लं पित्तकफापहं जठररुक्कुष्ठामजन्त्वकृत्॥
ऊर्ध्वाधःपरिशोधनं विषयकृत्स्थौल्यापहं क्षुत्करं।
दुर्नामक्षयपाण्डुरोगशमनं नेत्र्यं परं बृंहणम्॥

ताम्रभस्म रस में तिक्त, कषाय और अम्ल, विपाक में मधुर, उष्णवीर्य भूख को बढ़ाने वाली (दीपन), नेत्र के लिए हितकर और उदररोग, कुष्ठ (त्वचा के रोग,) आम, कृमि, यकृत् के रोग, शरीर की स्थूलता, अर्श (बवासीर) क्षय और पाण्डुरोग को दूर करती है।

४–लौहभस्म

द्रव्य और निर्माणविधि––

शुद्ध तीक्ष्ण लोह का चूर्ण ४० से ६० तोला ले, उसमें बारहवाँ हिस्सा शुद्ध हिंगुल का चूर्ण मिला, ग्वारपाठे के रस में मर्दनकर टिकिया बना सुखा, दो मिट्टी के

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तवों के बीच में रख संपुट कीसन्धि को कपड़मिट्टी दे, सुखा कर गजपुट में पकावें। इस प्रकार सात बार ग्वारपाठें के रस में, सात बार गो मूत्र में और सात बार त्रिफला के क्वाथ में मर्दन कर के गजपुट दें। सात पुट तक प्रत्येक पुट में बारहवाँ हिस्सा हिंगुल मिलावें और ६-१२ घण्टे तक खूब घोंटें। इस प्रकार २१ पुट में लोहे की अच्छी भस्म होती है। हिंगुल के स्थान में शुद्ध मनः शिला का चूर्ण मिलाकर ऊपर लिखी हुई विधि से भस्म बनाने से भी अच्छी भस्म होती है। लोहे को आक दूध तथा पुनर्नवा, जामुन और अडूसा इनके रस में मर्दन करके पुट देने से भी भस्म होती है।

वक्तव्य--लोह, मण्डूर, कासीस, अभ्रक और माक्षीक इनकी भस्मों को ताजे आँवले और भँगरे के स्वरस की ३-३ भावना दे, सुखाकर पीछे प्रयोग करने से भस्म विशेष गुणकारी होती है। लोह या मण्डूर की भस्म एक बार में ४० से ६० तोले तक बनावें, अधिक न बनावें।

मात्रा--आधी रत्ती से एक रत्ती तक।

अनुपान--शहद अथवा त्रिफला का चूर्ण, छोटी पीपल का चूर्ण या सितोपलादि चूर्ण और शहद के साथ मिलाकर दें।

गुण और उपयोग--लोहभस्म उत्तम रसायन, वाजीकर, दीपन और रक्त को बढ़ानेवाली है। यकृत् और प्लीहा के रोग, खांसी, श्वास, पाण्डुरोग क्षय, आदि में योग्य अनुपान से इसका प्रयोग करें।

५--मण्डूर भस्म

द्रव्य और निर्माणविधि--

छिद्ररहित, वजनदार और चिकना मण्डूर ला, उसको गरम जल से खूब धोकर साफ कर लें। पीछे तपा-तपाकर गोमूत्र में २१ बार बुझा, जल से धो, सुखा, कपड़छान चूर्ण कर गोमूत्र में पीस, टिकिया बना, सुखाकर अर्धगजपुट का अग्नि दें। इस प्रकार सात बार गोमूत्र, सात बार त्रिफला का क्वाथ और सात बार ग्वारपाठे के रस में मर्दन करके पुट देने से मण्डूर की उत्तम भस्म बनती है।

मात्रा—१-२ रत्ती।

अनुपान—रोगानुसार या शहद।

उपयोग—उदर रोग, यकृत् और प्लीहा के रोग तथा पांडुरोग में इससे अच्छा लाभ होता है। मण्डूर की भस्म एक साथ ४० से ६० तोले तक बनावें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

६–विमल भस्म

विमल और माक्षिक के स्वरूप के विषय में रसपद्धतिकार ने लिखा है कि–

तापीजं द्विरुदाहरन्ति विमला-माक्षीकभेदादिह ।
त्रेधाऽद्या तु सुवर्णकांस्यरजतच्छायानुकारादमूः ॥
X X X
तिस्रोऽप्यस्रयुताश्चतुस्त्रिफलका वृत्ताः स्वनामश्रियः ।
माक्षीको द्विरिहादिमः कनकरुग्दुर्वर्णवर्णोऽपरः ।।
कांस्यश्रीकमुशन्ति केचन परं सर्वेऽपि पूर्वत्विषः ।
निष्कोणा गुरवः किरन्ति निभृतं घृष्टाः करे कालिमाम् ।।

ताप्य दो प्रकार का होता है, एक विमल और दूसरा माक्षीक। विमल गोलाई लिये, कोने और धारवाला तथा पासेदार होता है। उसके रंग पर से सवर्णविमल, रौप्यविमल, और कांस्यविमल ये तीन भेद माने जाते हैं। माक्षीक धार, कोने और पासे रहित तथा वजनदार होता है। उसको अंगुलियों से खूब रगड़ने पर अंगुलियाँ काली होती हैं। माक्षीक के भी उसके वर्ण के अनुसार सुवर्ण माक्षिक, रौप्यमाक्षिक और कांस्यमाक्षिक ये तीन भेद माने गये हैं।

विमल में लोहा और गन्धक तथा माक्षीक में लोहा, गन्धक और थोड़े अंश में ताँबा पाया जाता है। इस समय बाजार में जो विशेषरूप से मिलता है और प्रायः वैद्य लोग जिसका माक्षिक के नाम से उपयोग करते हैं, वह बहुधा विमल होता है।

७--विमल का शोधन और मारण

विमल को गरम पानी से धो, सुखा, कपड़छान चूर्ण कर त्रिफला के क्वाथ की ३ भावनायें देकर सुखा लें। पीछे उसमें से २० तोला लोहे के तवे पर रख, उसमें सब चूर्ण तर हो जाय इतना गाय का घी मिला, अग्नि पर रखकर करछी या खोंचे से हिलाते रहें। हिलाते-हिलाते जब उसमें ज्वाला लग जाय तब तवे पर फैलाकर रख दें। स्वांगशीतल होने पर यही विधि करें। इस प्रकार २-३ बार अग्निपर भर्जन करने से लाल रंग की भस्म होगी। जब तक भस्म लाल रंग की तथा कषाय और अम्लरसरहित न हो जाय तब तक यह विधि करनी चाहिये।

मात्रा--१ रत्ती।

अनुपान--शहद या रोगानुसार।

उपयोग--विमल भस्म का उपयोग मण्डूर जैसा करें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वक्तव्य--विमलभस्म मात्र भर्जन से अच्छी बनती है। उसको पुट देने की आवश्यकता नहीं है।

८--माक्षीक का शोधन और मारण

विमल के लिये जो शोधन की विधि लिखी है, उसी विधि से माक्षीक का भी शोधन करें। पीछे शुद्ध माक्षीक में आधा शुद्ध गन्धक का चूर्ण मिला, बिजोरे के रस में १ दिन मर्दन कर, टिकिया बना, सुखा, दो तवों के बीच में रख, संपुट को अच्छी तरह कपड़मिट्टी दे, सुखा कर गजपुट का अग्नि दें। स्वांगशीतल होने पर टिकिया निकाल, ग्वारपाठे के रस में मर्दन कर, टिकिया बना, सुखा, दो तवों के बीच में रख कर आधे गजपुट का अग्नि दें। इस प्रकार जब तक भस्म कषाय और अम्लरस-रहित न हो जाय तब तक पुट देते रहें। प्रायः १० पुट में जामुन के रंग की भस्म होती है। माक्षीक की भस्म एक साथ में ४० से ६० तोला तक बनावें।

मात्रा और अनुपान--१ रत्ती भस्म, चौथाई तोला शहद तथा आधे तोले गाय के घी में मिलाकर दें।

उपयोग--पाण्डु यकृत् तथा प्लीहा के रोग और क्षय में इसका प्रयोग करें।

९--नाग, वंग और जसद का शोधन

नागवङ्गौ प्रतप्तौ च गलितौ तौ निषेचयेत्।
सच्छिद्रश्रावपिहिते हण्डिकास्थे द्रवे शनैः॥
सप्तधैवं विशुद्धिः स्याद्रविदुग्धे च सप्तधा।

नाग और वंग लोहे की मजबूत छोटी कड़ाही में गलाकर एक मिट्टी की मजबूत हाँड़ी को तैल आदि द्रव से, जिसमें नाग-वंग को बुझाना हो, लगभग आधी भर, उस पर बीच में छिद्र किया हुआ सकोरा रख, उसको लोहे के तार से बाँध; उसपर गला हुआ रस सावधानी से गिरा दें जिससे द्रव में गिर कर उछला हुआ नागबंग गिरानेवाले के शरीर में न लगे। इस प्रकार तिल का तेल, छाछ, गोमूत्र, काँजी कुलथी के क्वाथ और आक के दूध में ७-७ बार बुझाने से नाग और वंग शुद्ध होते हैं। मिट्टी की हाँड़ी के बदले लोहे के इमामदस्ते पर पत्थर की चक्की के ऊपर का पाट रखकर उसके छेद से नाग-वंग का द्रव गिरना विशेष अच्छा (निर्भय) है। जस्ते का शोधन भी इसी प्रकार करना चाहिए। जस्ते को तैल, छाछ, काँजी, गोमूत्र और कुलत्थ के क्वाथ में बुझाने के बाद आखिर में ७ बार गाय के दूध में बुझावें। जस्ते का द्रव होते समय उसपर मलाई-सा आकर किट्ट-सा जमता रहता है। उसको फेंक न दें। किन्तु बचे हुए जस्ते के साथ गरम करके बुझाते रहें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१०-नाग का मारण

शुद्ध नाग को अन्दर से खूब साफ की हुई लोहे की एक बड़ी कड़ाही में अग्नि पर गला कर उस पर इमली और पीपल (अश्वत्थ) की छाल समभाग लेकर जौकुट किया हुआ चूर्ण या अर्क मूल का चूर्ण थोड़ा-थोड़ा गिराते जावें और लोहे की करछी से हिलाते रहें। अन्त में शुद्ध गन्धक का चूर्ण अष्टमांश डाल कर जबतक सब नाग सूक्ष्म चूर्ण और लाल रंग का न हो जाय तबतक इस प्रकार करते रहें। पीछे सब चूर्ण को कड़ाही के मध्य में लाकर ऊपर से संकोरा ढ़क दे और चूर्ण अग्निवर्ण हो जाय इतनी तेज आंच दे कर रख छोड़े। स्वांगशीतल होने पर कपड़े से छान, खरल में डाल, उसमें बारहवाँ हिस्सा शुद्ध मैनसिल मिला, अड़ूसे के रस में घोंट, टिकिया बना, दो मिट्टी के तवों में रख, तवों की सन्धि को अच्छी तरह कपड़मिट्टी कर, सूखने पर १५२ सेर कण्डों की आँच में पुट दें। इस प्रकार ४० पुट दें। नाग जैसे-जैसे अग्नि सहन करता जावे वैसे-वैसे आँच का प्रमाण बढ़ावें। खुल्ले लाल रंग की भस्म होगी। १० पुट के बाद मैनसिल देना बन्द करें और संपुट की सन्धिपर कपड़मिट्टी भी न करें। नागभस्म एक बार में ४० तोला से ६० तोला तक बनावें, इससे अधिक न बनावें।

मात्रा——आधी रत्ती।

अनुपान——रोगानुसार या एक भाग शहद और दो भाग घृत में मिलाकर दें।

उपयोग—मधुमेह, शुक्रमेह, शुक्रमेह और स्त्रियों के श्वेतप्रदर में नागभस्म का उपयोग करें।

११--वंग-मारण

वंग को एक अन्दर से खूब साफ की हुई लोहे की कड़ाही में अग्निपर गला कर उसमें पलास (ढ़ाक-टेसू) के पुष्प, मोती की सीप का चूर्ण या मुरगी के अण्डे के छिलके धो सुखा कर किया हुआ चूर्ण थोड़ा-थोड़ा गिरा, लोहे की करछी से हिलाकर चूर्ण करलें। सब वंग का चूर्ण हो जाने पर चूर्ण के ऊपर सकोरा ढक, चूर्ण अग्निवर्ण हो इतनी तेज आँच देकर रख छोड़े। स्वांगशीतल होने पर कपड़े से छान, ग्वारपाठे के रस में मर्दन कर, टिकिया बना, दो तवों के बीच में रख कर आधे गजपुट की अग्नि दें। ऐसे ७ पुट देने से वंग की श्वेतवर्ण की भस्म होगी। वंगभस्म एक साथ में ४० से ६० तोले तक बनावें, इससे अधिक न बनावें।

मात्रा——१-२ रत्ती।

अनुपान——रोगानुसार या शहद।

उपयोग—शुक्रमेह और स्वेतप्रदर में वंगभस्म का प्रयोग करें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१२ जस्त भस्म

द्रव्य और निर्माणविधि--

शुद्ध जस्ते को एक अन्दर से खूब साफ की हुई लोहे की कड़ाही में गलाकर ऊपर थोड़ी-थोड़ी समभाग भाँग और अफीम के पोस्त (खसखस निकाले हुए डोडे) का चूर्ण गिराते जावें और लोहे की करछी से हिलाते रहें। जब सब चूर्ण हो जाय तब ऊपर सकोरा ढँककर चूर्ण अग्निवर्ण हो उतनी तेज आँच देकर रख छोड़ें। स्वांगशीतल होने पर कपड़े से छान, खरल में डाल, ग्वारपाठा के रस में घोट, टिकिया बना, दो मिट्टी के तवों के बीच में रखकर आधे गजपुट का अग्नि दें। इस प्रकार ७ पुट देने से कुछ ललाई लिये हुए पीले रङ्ग की भस्म होगी।

मात्रा--आधी रत्ती से १ रत्ती तक।

अनुपान--रोगानुसार या शहद।

उपयोग—जसदभस्म रस में कषाय और तिक्त, शीतवीर्य और रोपण है। प्रमेह, ग्रहणीरोग और राजयक्ष्मा में इसका प्रयोग करें।

१३-त्रिवंग भस्म

द्रव्य और निर्माणविधि--

अलग अलग शुद्ध किये हुए नाग, वंग और जस्त को एक साथ लोहे की कड़ाही में अग्निपर गलाकर उसमें भाँग और अफीम के पोस्त का चूर्ण थोड़ा-थोड़ा डाल, लोहे की करछी से हिलाकर चूर्ण कर लें। सब चूर्ण हो जानेपर ऊपर सकोरा ढक, चूर्ण अग्निवर्ण हो इतनी तेज आँच देकर रख छोड़ें। स्वांगशीतल होनेपर कपड़े से छान, खरल मे डाल, ग्वारपाठे के रस में मर्दन कर, टिकिया, बना, सुखाकर पूर्वोक्त विधि से आधे गजपुट की आँच में पुट दें। ऐसे ७ पुट देने से खुल्ले पीले रङ्ग की भस्म होगी।

मात्रा--१ रत्ती।

अनुपान--शहद या ताजे मक्खन में मिलाकर दें।

उपयोग--मधुमेह और जीर्ण पूयमेह में इसका प्रयोग करें।

१४--अभ्रक का शोधन और मारण

द्रव्य और निर्माणविधि--

काले रङ्ग का, पत्थररहित और वजनदार अभ्रक लाकर उसको अग्नि में लाल वर्ण का होनेतक तपावें। जो अभ्रक अग्निपर वैसा ही पड़ा रहे अर्थात् जिसके पत्र अलग न हों और रंग न बदले उसको काम में लें और दूसरा फेंक दें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अभ्रक को अग्नि में खूब लाल हो इतना तपा-तपाकर गोमूत्र में, त्रिफला के क्वाथ में और गाय के दूध में सात-सात बार बुझावें। पीछे जल से धो, सुखा, इमामदस्ते में कूटकर कपडछान चूर्ण कर लें। अभ्रक के चूर्ण को प्याज के रस में पीस, टिकिया बना, सुखा, दो तवों के बीच में टिकिया रखकर गजपुट का अग्नि दें। इस प्रकार २१ बार प्याज के रस में, ७ बार गिलोय के स्वरस में ७ बार अर्कक्षीर में और ७ बार अडूसे के स्वरस मे मर्दन कर के पुट देने से अभ्रक की उत्तम भस्म बनती है। अभ्रक भस्म एक साथ में ४० से ६० तोले तक बनावें अधिक न बनावें।

मात्रा--१-२ रत्ती।

अनुपान--शहद।

उपयोग--अभ्रकभस्म उत्तम रसायन, बलकारक रक्त को बढ़ानेवाली, दीपन और पाचन है। खाँसी, श्वास, क्षय, पांडुरोग, अम्लपित्त और अग्निमान्द्य में योग्य अनुपान के साथ इसका प्रयोग करें।

१५--शृङ्ग भस्म

द्रव्य और निर्माणविधि--

हरिण या सांभर के अच्छे पुष्ट (भरे हुए) और छिद्र रहित सींग ले, उनको सरौते से ४-५ अंगुल जितने टुकड़े कर ऊपर-नीचे कंडे (ऊपले) देकर गजपुट का अग्नि दें। स्वांगशीतल होनेपर निकाल, चूर्ण कर, ग्वारपाठे के रस में पीस टिकिया बना, सुखा, दो तवों के बीच में रखकर आधे गजपुट का अग्नि दें। स्वांगशीतल होनेपर खरल में पीस, कपड़छान करके शीशी में भर लें। पहली बार सींग जलते समय उसमें बड़ी दुर्गन्ध आती है, अतः उन्हें खुली जगह में गजपुट देना चाहिये।

मात्रा--२-८ रत्ती।

अनुपान--शहद या गाय के घी में मिलाकर दें।

उपयोग--हृच्छूल, पार्श्वशूल और कफजकास में शृंगभस्म का प्रयोग करें।

१६--मोती की पिष्टी

द्रव्य और निर्माणविधि--

अच्छा पानीदार बसराई मोती का खाखा (छोटे अनविध दाने) ला, उनको गरम जल से धो, सुखा, खूब साफ किये हुए लोहे के इमामदस्ते में कूटकर सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण कर लें। पीछे अच्छे (न घिसनेवाले) पत्थर के या गोसिलेन के खरल में डाल, एक दिन नीबू के रस में मर्दन करें। नीबू का रस सूखनेपर उत्तम

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुलाब के अर्क में या चन्दनादि अर्क में मर्दन करें। आँख में डालने के अंजन जैसा सूक्ष्म पिष्टी हो जाय तब छाया में सुखा, कपड़छान करके शीशी में भर लें।

मात्रा और अनुपान–१–२ रत्ती, शहद या ताजे मक्खन में मिला कर दें।

उपयोग--क्षय, दाह, अम्लपित्त तथा अन्य वात और पित्त के विकार में मुक्तापिष्टी का उपयोग करें।

१७–शंखभस्म

द्रव्य और निर्माणविधि--

अच्छा छिद्ररहित, बड़ा और वजनदार शङ्ख ले, उसको मिट्टी के घड़े में डाल, उसमें जल और नीबू का रस भरकर १ घण्टा मन्दी आँच पर पका लें। बाद में जल से धो, सुखा, १० सेर कण्डों या लकड़ी के कोयलों की आंच में पका लें। शङ्ख अच्छा पकने पर अंगुली से दबाने पर चूर्ण जैसा हो जाता है। पीछे उसको पत्थर के खरल में तीन बार नीबू के रस की भावना दें, छाया में सुखा; कपड़छान चूर्ण करके शीशी में भर लें।

मात्रा--४–८ रत्ती।

उपयोग--अम्लपित्त, पेट का दर्द और परिणाम-शूल में शंखभस्म का प्रयोग करें। शंखभस्म दीपन और पाचन है।

१८–कपर्दिका (कौड़ी की) भस्म

द्रव्य और निर्माणविधि–

लाल रङ्ग की, पृष्ठभाग में गांठवाली, छः आने (४॥ माशे) वजनवाली कौड़ियां ला, उसको मिट्टी के घड़े में डाल, उसमें जल और थोड़ा नींबू का रस डालकर मन्दी आँच पर १ घण्टा पकावें। ठण्डी होने पर निकाल, जल से धो, सुखा, दो मिट्टी के तवों के बीच में रखकर १० सेर कण्डों या लकड़ी के कोयले की आंच में फूंक दें स्वांगशीतल होने पर निकालकर पत्थर के खरल में २-३ बार नीबू के रस की भावना दे, सुखा, कपड़छान करके शीशी में भर लें।

मात्रा—२–८ रत्ती।

अनुपान—घृत चौथाई तोला और शहद आधा तोला में मिलाकर दें।

उपयोग--पेट का दर्द, परिणामशूल, अम्लपित्त और अग्निमान्द्य में कपर्दिका भस्म का उपयोग करें।

१९–मोती-सीप की पिष्टी

द्रव्य और निर्माणविधि--

अच्छी, बड़ी छेदरहित, वजनदार मोती की सीप ला, उसको मिट्टी के घड़े में डाल, ऊपर जल और थोड़ा नीबू का रस डालकर मन्दी आँचपर एक घण्टा पका लें। पीछे जल से निकाल, सुखाकर अच्छे साफ किये हुए लोहे के इमामदस्ते में

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कूट कर कपड़छान कर लें। पीछे न घिसनेवाले पत्थर के या पोर्सिलेन के खरल में आँख में डालने के अजन जैसी सूक्ष्म पिष्टी न हो तबतक अर्क गुलाब या चन्दनादि अर्क में मर्दन करें। बाद छाया में सुखा, कपड़छान करके शीशी में भर लें।

मात्रा—२-४ रत्ती।

अनुपान--शहद, ताजा मक्खन या दूध के साथ दें।

उपयोग--मोती-सीप की पिष्टी का उपयोग मुक्तापिष्टी जैसा करें।

२०—प्रवाल-पिष्टी और भस्म

पिष्टी निर्माणविधि--

अच्छे लाल रंग के और छेदरहित प्रवाल लाकर उसको गरम जल से धो, कपड़े से पोंछ, सुखा, लोहे के इमामदस्ते में कूटकर सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण कर लें। पीछे न घिसनेवाले अच्छे पत्थर के या पोर्सिलेन के खरल में डाल, उसमें नींबू का रस देकर दो दिन मर्दन करें, पीछे अर्क गुलाब या चन्दनादि अर्क में जबतक आंख में डालने के अंजन जितना सूक्ष्म न हो जाय तबतक मर्दन करें। बाद छाया में सुखा, कपड़छान करके शीशी में भर लें।

मात्रा--१-५ रत्ती।

अनुपान--शहद, ताजा मक्खन या दूध।

भस्म-निर्माणविधि—

अच्छे लाल रङ्ग के और छेदरहित प्रवाल लें, उसको गरम जल से धो, कपड़े से पोंछ, सुखा, लोहे के इमामदस्ते में कूट, सूक्ष्म कपड़छान चूर्ण कर, पत्थर के खरल में आक के दूध, गाय के दूध या ग्वारपाठे के रस में पीस टिकिया बना, सुखा, दो मिट्टी के तवों के बीच में रख कर गजपुट दें। स्वांग-शीतल होने पर निकाल, एक दिन नींबू के रस और एक-दो दिन चन्दनादि अर्क में पीस, छाया में सुखा, कपड़छान करके शीशी में भर लें।

मात्रा और अनुपान—१-२ रत्ती, शहद और गाय का घी या दूध के साथ दें।

उपयोग—जीर्णज्वर, राजयक्ष्मा, पांडुरोग, रक्तपित्त, अम्लपित्त और खांसी में प्रवाल का उपयोग करें।

२१—रत्नभस्म

द्रव्य और निर्माणविधि--

माणिक, नीलम, पोखराज, गोमेद, लहसुनियां, वैक्रान्त आदि रत्नों के अच्छे रङ्ग और पानीदार खंड-खंड (छोटे-टुकड़े) ला, उन्हें सोना गलाने की मूषा या सकोरे में रख, अग्निपर लाल हो जाय, इतना तपाकर ताजे आंवले के स्वरस में या चन्दनादि अर्क में बुझावें। इस प्रकार ५० से १०० बार तक (जबतक वह गरम होकर आपसे-आप टुकड़े न होने लगे तबतक) बुझावें। पीछे जल से धो, सुखा, लोहे के इमामदस्ते में कूटकर महीन रेशमी कपड़े से छान लें। पीछे सम्यक के या अन्य न घिसनेवाले पत्थर के खरल में डाल, उस को ताजे आंवले के स्वरस में मर्दन कर, टिकिया बना, सुखा, टिकियों को दो सकोरों के बीच में

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रखकर आधे गजपुट का अग्नि दें। इस प्रकार ३० पुट दें। बाद तीन दिन चन्दनादि अर्क में मर्दन कर, छाया में सुखा, महीन रेशमी कपड़े से छानकर शीशी में भर लें। रत्नभस्म चन्द्रिकारहित और आंख में डालने के अंजन जितनी सूक्ष्म बननी चाहिये। रत्नभस्म एक साथ २० तोले से अधिक न बनावें।

मात्रा--आधी से १ रत्ती।

अनुपान--शहद या खमीरे गावजवान में मिलाकर दें।

उपयोग--दिल व दिमाग की कमजोरी और उससे होनेवाले रोगों में रत्नभस्मों का उपयोग करें।

वक्तव्य--रत्नों को चन्दनादि अर्क में बुझा, सूक्ष्म चूर्ण कर, चन्दनादि अर्क में मर्दन करके पिष्टी भी बना सकते हैं। यूनानी हकीम बिना बुझाये ही अर्क गुलाब, अर्क वेदमुश्क या अर्क केवड़ा में मर्दन करके पिष्टी बना लेते हैं।

२२--कासीसभस्म

द्रव्य और निर्माणविधि--

अच्छा हरे रङ्ग का कसीस ला, उसको लोहे के तवे पर रख, अग्निपर गरम कर के उसका जल सुखा लें; बाद ताजे आँवलें, भँगरा या खन्धारी अनार के रस मे मर्दन कर, टिकिया बना, सुखा, संपुट में रख कर आधे गज पुट का अग्नि दें। ऐसे एक-दो पुट देने से लाल रङ्ग की भस्म होती है।

मात्रा--१-२ रत्ती।

अनुपान--शहद।

उपयोग--लोहभस्स के समान इसका उपयोग करें।

भस्म बनाने और पुट देने के विषय में कुछ आवश्यक सूचनाएँ

किस द्रव्य की एक साथ में कितनी भस्म बनानी चाहियें, उसकी सूचना हमने प्रत्येक भस्म की निर्माणविधि में प्राय: लिख दी है। उससे अधिक प्रमाण में भस्म बनाने से घुटाई ठीक नहीं होती और जितनी आंच उसके लिये आवश्यक होती है उतनी आँच में भस्म ठीक नही बनती। जिस भस्म के बनाने में पारा, हिंगुल, संखिया, हरताल, मैनसिल आदि अग्निपर उड़नेवाले द्रव्य का संयोग हो, उसके संपुट की संधि को कपड़मिट्टी अवश्य करनी चाहिये। परन्तु जब पारे-गन्धक जैसी अग्निपर उड़ जानेवाली वस्तु उसमें न डाली गयी हो तब संपुट की संधि खुली ही रखनी चाहिए। संपुट की सन्धि खुली रखने से आँच ठीक लगती है और भस्म का रङ्ग भी अच्छा आता है। कई वैद्य मिट्टी के घड़े जैसे पात्र में टिकिया भर कर पुट देते हैं, परन्तु ऐसा करने में बीचतक आंच एक-सी नहीं लगती। अत: मिट्टी के दो तवों के बीच में टिकिया रख कर पुट देना चाहिए, जिससे सब

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

टिकियों को एक-सी आँच लगे। तवों के बीच में टिकियों की दो तह (स्तर) ही रखनी चाहिए और तवे भी इतने गहरे न हों कि बीच में अधिक अवकाश रहे। बीच में अधिक जगह खाली रहने से भी आँच ठीक नहीं लगती। टिकिया गोल न बनाकर थोड़ी चिपटी ही बनानी चाहिये। टिकियों को अच्छी तरह सुखाने के बाद ही पुट देना चाहिए। यदि टिकिया कुछ गीली होंगी तो भस्म का रङ्ग अच्छा नहीं आवेगा। अभ्रक, लोह, मण्डूर, वङ्ग और माक्षीक को प्रारम्भ में तेज और पीछे मन्द आँच देनी चाहिए। पीछे के पुटों में उनको कड़ी आँच देने से भस्म कड़ी हो जाती है, मृदु-मुलायम नहीं बनती। सोना, चाँदी और नाग को प्रारम्भ के पुटों में मन्दी आँच देनी चाहिए और पीछे जैसे-जैसे वे अग्निसह होते जायँ वैसे-वैसे आँच क्रम से बढ़नी चाहिए। कोई भी भस्म तैयार होने के बाद उसमें कोई रस-विशेष का स्वाद न रहना चाहिये अर्थात् वह स्वादरहित (बेजायका) और जीभ को न लगे ऐसी होनी चाहिए। जबतक ऐसी भस्म न हो तबकत पुट देते रहना चाहिए। भस्म तैयार होने के पीछे उसका २-३ दिन खूब घोंटकर महीन रेशमी वस्त्र से छान लेना चाहिए। भस्म बनाते समय वनस्पति का स्वरस देकर ६ से ८ घण्टे तक उसको अच्छी तरह घोटना चाहिए। ठीक घुटाई न हो तो भस्म बनने में देरी लगती है। और भस्म सूक्ष्म तथा मृदु नहीं बनती। भस्म बनते समय ऊपर लिखी हुई सूचनाएँ खास ध्यान में रखनी चाहिए।

भस्म बनाने में जहाँतक बन सके जङ्गली उपलों की आँच दें। यदि वे न मिल सके तो हाथ से बनाए हुए उपलों कीं आँच दें शहरों में उपलों के जलाने से धुएँ के त्रास का भय हो तो अच्छी लकड़ी के कोयलों की आँच भी दे सकते हैं।

२३–संखिये का शोधन

संखिये के सरौते से चने जितने छोटे टुकड़े कर, कपड़े में बाँध, मिट्टी की हांडी में दोलायन्त्र में गाय के दूध में मन्दी आँचपर तीन घण्टा पकावें, पीछे कपड़े से निकाल गरम जल से धोकर सुखा लें।

२४–हरताल का शोधन

अच्छी पत्री (वरकी) हरताल ला, उसके चने जितने छोटे टुकड़े कर, कपडे में बाँधकर, मिट्टी की हांडी में पेठे के स्वरस में दोलायन्त्र में मन्दी आँचपर छः घण्टा पकावें, पीछे मिट्टी या काँच के बरतन में नींबू के रस में भिगोकर रख दें। प्रति दिन नींबू का रस बदलते रहें। ऐसे सात दिन नींबू के रस में रखने के बाद जल से धोकर सुखा लें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२५–मैनसिल का शोधन

अच्छी मैनसिल ला, उसके चने जितने छोटे टुकडे कर. उसको एक मिट्टी की हाँडी में भंगरे का स्वरस भरकर उसमें दोलायन्त्र से पकावें। बाद धोकर पत्थर के खरल में ३ भावना अदरक के रस की और ३ भावना लाल फूल के या अगस्त्य के फूलों के स्वरस की दें, सुखाकर रख लें।

२६–सज्जीखार का शोधन

सज्जीखारे के चूर्ण को चौगुने पानी में गलाकर मिट्टी के पात्र में रात भर रहने दें। सबेरे ऊपर से निथारे हुए जल को ७ बार कपड़े से छान, चौडे मुंह के मिट्टी के घड़े में डाल, आगपर रखकर सब पानी जलकर क्षार शुष्क हो जाय तब तक पका, ठण्डा होनेपर खुरच, सब क्षार निकालकर शीशी में भर लें। खाने के योगों में इस प्रकार शुद्ध किये हुए सज्जीखार का प्रयोग करें।

२७–टंकण (सुहागे) का शोधन

सुहागे का चूर्ण कर, उसको मिट्टी के तवेपर फैला कर तवे को अग्निपर रखें। जब सब सुहागा फूलकर लावा (खील) जैसा हो जाय तब ठंढ़ा होनेपर पीस, कपड़छान करके शीशी में भर लें।

२८–फिटकरी शोधन

फिटकरी का शोधन सुहागे के शोधन जैसा ही करें।

२९–गन्धक का शोधन

गन्धक का शोधन रसपर्पटी की निर्माणविधि में लिखे हुए शोधन के अनुसार गाय के दूध में करें।

३०--बछनाग का शोधन

जो बछनाग तोड़ने पर भीतर से ठोस और चिकना हो उसके छोटे-छोटे टुकड़े कर, एक मिट्टी या काच के पात्र में डाल, ऊपर सब डूब जाय इतना गोमूत्र डालकर २४ घण्टे तक पात्र को ढककर रख छोडें। दूसरे दिन पहला गोमूत्र निकाल कर नया गोमूत्र भरें। इस प्रकार तीन बार करें; पीछे जल से धो, एक कपड़े में बांध कर गाय के दूध में दोलायन्त्र से तीन घण्टे मन्दी आंचपर पकावे, बाद कपड़े से निकाल, जल से धो, सुखाकर रख छोड़ें। सूखने के बाद यथावश्यक वजन करके काम में लें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

३१--अफीम की शुद्धि

अफीम को चौगुने जल में घोल, कपड़े से छान, मन्दी आँच पर गरम करके गाढ़ा कर लें। बाद में उसको अदरक के रस की सात भावनाएँ दें, सुखाकर काम में लें।

३२--धतूरे के बीज का शोधन

अच्छे पके हुए धतूरे के बीज को कपड़े में बाँधकर दोलायन्त्र में गाय के दूध में तीन घण्टा मन्दी आँचपर पकावें। बाद गरम जल से धोकर सुखा लें।

३३--भांग का शोधन

भाँग को कपडे में बाँधकर जबतक जल में हरा रङ्ग आता रहे तबतक जल से धोवें। बाद कपड़े से जल निचोड़ भाँग बाहर निकालकर छाया में सुखा लें।

३४--कुचले का शोधन

अच्छे पुष्ट (भरे हुए) कुचले लाकर उनको मिट्टी या काँच के पात्र में गोमूत्र में भिगो दें। दूसरे दिन उस गोमूत्र को निकालकर नया गोमूत्र दें। इस प्रकार सात दिन गोमूत्र में भिगोवें। आठवें दिन चाकू से छीलकर कुचले के ऊपर के छिलके तथा दो दल के अन्दर की जीभ निकाल दें। पीछे कपड़े में बाँधकर गाय के दूध में दोलायन्त्र में पका, कपड़े से निकाल, गरम जल से धो लें। कुचले को योगों में डालना हो तो उसी समय सरौते से छोटे टुकडे कर पीस डालें। सूखने के बाद बड़े परिश्रम से चूर्ण होता हैं।

३५-- खर्पर का शोधन

खपरिये का सूक्ष्म चूर्ण बना, मिट्टी या काच के पात्र में डालकर ऊपर से पात्र को गोमूत्र से भर दें। प्रतिदिन गोमूत्र बदलते रहें। इस प्रकार सात बार गोमूत्र में भिगोने के बाद उसको जल से धो, सुखाकर रख लें।

बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी के फार्मेसी विभाग में जो खपरिया विकता है वह ठीक है। उसे काम में लेना चाहिये। खर्पर के स्थान में जस्ते की भस्म का व्यवहार करना भी अच्छा है।

३६--हिंगुल का शोधन

हिंगुल का चूर्ण कर, उसको एक प्रहर गाय के दूध में मर्दन करें। पीछे नीबू के रस की सात भावना दें। जबतक नीबू की खटाई न निकल जाय तबतक जल से धो, सुखाकर शीशी में भर लें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

३७--पारे का शोधन

हिंगुल से निकाला हुआ पारद शुद्ध होता है, उसी का योगों में प्रयोग करना चाहिए। शुद्ध हिंगुल को नीबू के रस में पीस उसकी टिकिया बना, एक चौड़े मुंह की मजबूत मिट्टी की हाँड़ी में रखकर उसको अंगीठी पर रखें। हाँडी पर हांड़ी के मुंह से कुछ चौड़ा मिट्टी का तवा या एनामल की हुई लोहे की रकाबी (तस्तरी) उल्टी कर रख दें, और उसके ऊपर चार तह किया हुआ कपड़ा पानी में तर करके रखें। पाव-पाव घण्टे से तश्तरी को बदलते रहें अर्थात् एक तश्तरी को उठाकर तुरन्त दूसरी तश्तरी हाँड़ी पर रख दें और उठाई हुई तश्तरी में लगे हुए पारे को अंगुली से निकाल कर काँच के पात्र में इकट्ठा करते रहें। इस प्रकार सब पारा निकलने तक यह विधि करनी चाहिए।

भिलावे का शोधन

भिलावे का शोधन अमृतभल्लातक की निर्माणविधि में लिखी हुई विधि के अनुसार करें।

वैद्य यादवजी त्रिकमजी आचार्य विरचित सिद्धियोगसंग्रह समाप्त।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वैद्यनाथ आयुर्वेदीय प्रकाशन

यह कारखाना केवल औषधि निर्माता ही नहीं है, बल्कि शुद्ध अर्थ में यह एक आयुर्वेदीय संस्था है। इसका मुख्य उद्देश्य है भारतीय चिकित्सा पद्धति-आयुर्वेद का प्रतिसंस्कार और उसके स्वाभाविक मानव-कल्याणकारी गुणों, उनकी विशेषताओं और चिकित्सा-प्रणाली की श्रेष्ठता की जानकारी जनता को देना। औषध और ग्रन्थ, दोनों इसके साधन हैं इसलिये एक ओर जहाँ यह उत्तमोत्तम औषधनिर्माण द्वारा आयुर्वेद की विशेषता को प्रमाणित करने की चेष्टा करता है, वहीं दूसरी ओर इसके उत्तमोत्तम और प्रामाणिक ग्रन्थों के प्रकाशन का समुचित प्रबन्ध भी करता है, राजकीय शिक्षा संस्थाओं तथा विश्वविद्यालयों ने इसके अनेक ग्रन्थों को अपने पाठ्यक्रम की पुस्तकों में प्रमुख स्थान दिया है। पुस्तकों के मूल्य निर्धारण में सर्वसाधारण की क्रयशक्ति का पूरा विचार रखकर इन्हें लागत मात्र कीमत पर बेचने का प्रबन्ध होता है। हमारे **आरोग्य प्रकाश** को तो जनता ने इतना पसन्द किया है कि, उसके २१ संस्करणों में २ लाख ५० हजार से अधिक प्रतियाँ छप कर हाथों-हाथ बिक चुकी हैं। इसी प्रकार अन्य ग्रन्थों के भी कई संस्करण छप चुके हैं।

१) अभिनव शारीरम् (संस्कृत)--लेखक : वैद्य पं. दामोदर शर्मा गौड़, ए. एम. एस.। शिक्षा में उच्चता तथा एकरूपता लानेवाला शारीरशास्त्र का अद्भुत ग्रन्थ है। अध्ययन तथा अध्यापन के लिये यह ग्रन्थ उपयुक्त पाठ्य-पुस्तक हो सकता है। शरीरशास्त्र का युगानुरूप परिष्कृत संस्कार कहा जा सकता है। पृ. संख्या ५८२, चित्र संख्या ४००, रंगीन चित्र ११२

२) अभिनव शारीर (हिन्दी)--लेखक : वैद्य पं. दामोदर शर्मा गौड़, ए. एम. एस.। १ लाख रुपयों के पुरस्कार से सम्मानित मूल संस्कृत ग्रन्थ का हिन्दी संस्करण केन्द्रीय आयुर्वेदिक कौन्सिल द्वारा पाठ्य--ग्रन्थ के लिए मान्यता प्राप्त ग्रन्थरत्न। पृष्ठ संख्या ६११

३) अष्टांग-संग्रह (सूत्रस्थान) (सर्वांग सुन्दर-व्याख्या-सहित) व्याख्याकार-वैद्य पं. लालचन्द्र शास्त्री। श्रीमद्वाग्भट्टाचार्य विरचित 'अष्टांग-संग्रह' आयुर्वेद के प्राचीन संहिताओं में सर्वोत्कृष्ट और प्रामाणिक ग्रन्थ है। इसमें सूत्रस्थान बहुत महत्वपूर्ण हैं। सूत्रस्थान में कुल ४० अध्याय हैं। इन अध्यायों में जो विषय प्रतिपादित हुए हैं, वे काय-चिकित्सकों की जानकारी के लिये अत्यावश्यक एवं उपयोगी हैं। पृष्ठ संख्या ९९४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४) **अम्लपित्त प्रकरण**–वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन द्वारा आयोजित अखिल भारतीय संभाषणपरिषद् में अम्लपित्त निदान और चिकित्सा पर प्रकट किये गये अनुभव इसमें संकलित हैं। पृष्ठ संख्या ८७

५) **आरोग्य प्रकाश**–(आरोग्य **स्वच्छता और चिकित्सा पर सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ इक्कीसवाँ संस्करण**) –श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड के संस्थापक **वैद्यराज पं. रामनारायण शर्मा**, वैद्य शास्त्री ने बड़े परिश्रम से इस ग्रन्थ का प्रणयन किया है। पूर्वार्द्ध के विषयों को पढ़कर और तदनुसार चलकर सदा बीमार रहनेवाला व्यक्ति भी बिना दवा के नीरोग (तन्दुरुस्त) हो जाता है। ग्रन्थ के उत्तरार्द्ध में शरीर में पैदा होनेवाले सभी रोगों की उत्पत्ति, कारण, निदान, रोग के लक्षण, चिकित्सा, पथ्यापथ्य आदि इस तरह समझाकर लिखे गये हैं कि इसके द्वारा विद्वान से लेकर साधारण पढ़े–लिखे, दोनों समान रूप से लाभ उठा सकते हैं। हिन्दी में ऐसी पुस्तक दूसरी नहीं है। पृष्ठ संख्या ५४६

६) **आरोग्य प्रकाश (मराठी संस्करण) –श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि.** के **प्रबन्धनिर्देशक वैद्य रामनारायण शर्मा** द्वारा लिखित ग्रन्थरत्न का यह मराठी संस्करण भी हिन्दी संस्करण की भांति सचित्र है। पृष्ठ संख्या ५६०

७) **आरोग्य प्रकाश (गुजराती संस्करण)–वैद्यराज पं. रामनारायण शर्मा, वैद्यशास्त्री द्वारा** लिखित हिन्दी आरोग्य–प्रकाश का यह गुजराती भाषा में अनुवाद है। पृष्ठ संख्या ६८७

८) **आयुर्वेदीय क्रिया–शारीर–(सचित्र रायल अठपेजी) लेखक : वैद्य रणजितराय देसाई, निवृत्त आचार्य श्री नाझर आयुर्वेद–महाविद्यालय, सूरत।** श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड द्वारा प्रकाशित "शारीर क्रिया–विज्ञान" का देश में सर्वत्र समादर हुआ था और हिन्दुस्तान के प्रायः समग्र आयुर्वेदीय कालेजों के पाठ्य–क्रम में यह पुस्तक नियत हो गयी थी। उसी ग्रन्थ का यह संशोधित और परिवर्धित षष्ठ संस्करण है। केन्द्रीय आयुर्वेदीय काउन्सिल ने इस ग्रन्थ को समग्र भारत के लिये बना युनिफार्म कोर्स के शारीर क्रिया विज्ञान विषय में पाठ्य ग्रन्थ के रूप में निर्धारित किया है।

प्रस्तुत संस्करण के पाठ्य–विषयों में तो पहले की अपेक्षा अनेक परिवर्तन किये गये हैं, इसमें अनेक एकरंगे चित्रों की संख्या वृद्धि कर, विषय को अधिक सुबोध बनाया गया है एवं पुस्तक की उपयोगिता में और भी अधिक वृद्धि कर दी गयी है। पृष्ठ संख्या ९५७

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

९) **आयुर्वेद–सार संग्रह** (द्वादश संस्करण)–राष्ट्र भाषा में ऐसी आयुर्वेदीय पुस्तकों की बहुत कमी थी, जिसमें रोग विचार के साथ–साथ चिकित्सा, औषध निर्माण, अनुपान, पथ्यापथ्य आदि का विवरण समझाकर सरल भाषा में दिया गया हो। प्रस्तुत पुस्तक में आयुर्वेदीय साहित्य की इसी कमी को दूर करने का सफल प्रयत्न किया गया है। श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि. द्वारा बनाई जाने· वाली सभी दवाओं की निर्माण–बिधि तया उनके गुण–धर्म और प्रयोग·विधि के साथ सभी वैद्योपयोगी बातों का सविस्तार वर्णन सरल हिन्दी भाषा में किया गया है। रस–रसायन, अर्क आदि बनाने के यन्त्रों के चित्र भी दिये गये हैं जिसके देखने से औषध निर्माताओं को काफी सुविधा होगी। पृष्ठ संख्या ७४२

१०) **आयुर्वेदीय व्याधि––विज्ञान** (पूर्वार्ध––चतुर्थ संस्करण) –लेखक : **आयुर्वेदीय–मार्तण्ड वैद्य यादवजी त्रिकमजी आचार्य, बम्बई।** इस ग्रन्थ में व्याधि बिज्ञान के साधनों का वर्णन बहुत ही सुन्दर ढंग से किया गया है, व्याधियों के सम्बन्ध में सभी ज्ञातव्य बातों का इस ग्रन्थ में वर्णन हैं। अध्ययन कर लेने के ब.द निदान–सम्बन्धी अनेक ज्ञातव्य सिद्धान्त हस्तामलकवत् प्रतिभासित हो जाते हैं। आयुर्वेद प्रेमी विद्वानों, वैद्यों और विद्यार्थियों सभी के लिये यह ग्रन्थ उपयोगी है।

पृष्ठ संख्या १३२

११) **आयुर्वेदीय व्याधि—विज्ञान** (उत्तरार्द्ध तृतीय संस्करण)––लेखक : **वैद्य आयुर्वेदमार्तंड वैद्य यादवजी त्रिकमजी आचार्य।** यह ग्रन्थ उपर्युक्त ग्रन्थ का उत्तरार्ध है इसमें ज्वर, महास्रोतगत रोग, उरोगत रोग, रक्तपित्त रोग, पाण्डु रोग, शोथ, व्रण, विसर्प, वृद्धि, भग्ननिदान, गलगण्ड, गण्डमाला, कुष्ठ आदि, १५ अध्याय हैं।

पृष्ठ संख्या २८३

१२) **आयुर्वेदीय पदार्थ–– विज्ञान** (तृतीय संस्करण) —लेखक : **वैद्य रणजितराय देसाई**–आयुर्वेदीय पदार्थ विज्ञान अन्य सभी आयुर्वेदीय बिषयों का आधारभूत है। अतः इसका अध्यापन किस शैली से होना चाहिए, इस बात का विषद् विवेचन करते हुए विषय को नया रूप देने का सफल प्रयास किया गया है।

पृष्ठ संख्या २८८

१३) **आयुर्वेदीय पंचकर्म बिज्ञान––लेखक : सुप्रसिद्ध आयुर्वेद मनीषी ह. श्री. कस्तुरे**––यह ग्रन्थ पंचकर्म विषय पर प्रथम ही अनोखा वैशिष्टच पूर्ण ग्रन्थ है। स्नातकोत्तर शिक्षण तथा अन्वेषण में लगे हुए छात्रों को पथ-प्रदर्शन के रूप में यह उपयुक्त सामग्री होगी। जो वैद्य व्यवसाय में लगे हुए हैं उन्हें प्रत्यक्ष कर्मों की वैज्ञानिक पद्धति इस ग्रन्थ से मिलती है। पंचकर्म पद्धत्ति को पुनरुज्जीवित करने की दिशा में यह ग्रन्थ अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा।

पृष्ठ संख्या ७१५

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१४) आयुर्वेदीय हितोपदेश (तृतीय संस्करण)–लेखक : वैद्य रणजितराय देसाई। आयुर्वेद के रहस्य–बोधन के लिए संस्कृत का ज्ञान आवश्यक है। प्राय: आयुर्वेदीय पाठ्यक्रम की प्रारम्भिक परीक्षाओं में संस्कृत भी एक अनिवार्य विषय रहता है, परन्तु इनका अध्ययन–अध्यापन संस्कृत साहित्य के पाठ्य–ग्रन्थ हितोपदेश, पंचतन्त्र प्रभृति आयुर्वेदेतर विषयों के रूप में होता है। इस दृष्टिकोण को सामने रखकर आयुर्वेदीय अध्ययन-अध्यापन के कार्य में दक्ष वैद्य रणजितराय ने "आयुर्वेदीय हितोपदेश" नाम की इस पुस्तक का प्रणयन किया है।

पृष्ठ संख्या २९६

१५) औषधि विज्ञान शास्त्र—लेखक : विश्वनाथजी द्विवेदी, विभागाध्यक्ष आयुर्वेद संस्कृत महाविद्यालय, काशी। प्रस्तुत पुस्तक में नवीन पद्धति के आधार पर औषधि शास्त्र के बारे में बहुत ही सरल ढंग से अत्यन्त परिश्रम पूर्वक विषय स्पष्ट किया गया है। यह ग्रन्थ पाँच भागों (अध्यायों) में विभक्त है और इन भागों में निघंटु, द्रव्य–गुण–शास्त्र, सैद्धान्तिक विवरण, सामान्य व विशिष्ट परिभाषा, कर्म विज्ञान, कार्मुक संज्ञायें आदि का बिस्तृत एवं सुबोध ढंग से वर्णन किया गया है। द्रव्य परिचय, स्वरूप, शरीर पर प्रभाव एवं चिकित्सा में उनका उपयोग आदि विषयों का खुलासा करने से वास्तव में लेखक ने औषधि विज्ञान शास्त्र को और भी सामने ला दिया है। पृष्ठ संख्या ८३८

१६) उपचार पद्धति (दशम संस्करण)––सर्व साधारण गृहस्थों के सैकडों रुपये प्रतिवर्ष बच सकते हैं, यदि उन्हें उपचार और पथ्य का साधारण ज्ञान हो जाँय। इसी लक्ष्य को सम्मुख रखकर इस पुस्तक का प्रकाशन किया गया है।

पृष्ठ संख्या १०७

१७) किशोर रक्षा और ब्रह्मचर्य (षष्ठ संस्करण)––किशोर बालकों और तरुणों को कुटेव-जन्य व्याधियों से बचाने का इस पुस्तक में सफल प्रयास किया गया है।

पृष्ठ संख्या ११६

१८) चर्मरोग निदर्शिका–यह पुस्तक पंचम अखिल भारतीय शास्त्र चर्चा परिषद पर विभिन्न बड़े-बड़े विद्वानों द्वारा बाह्य रोगों पर लिखे गये निबंधों का संग्रह है।

पृष्ठ संख्या ५०४

१९) त्रिदोष–तत्व बिमर्श (चतुर्थ संस्करण) – लेखक : आयुर्वेदबृहस्पति वैद्य रामरक्ष पाठक, आयुर्वेदाचार्य। इस ग्रन्थ में आयुर्वेद के आधारभूत त्रिदोषसिद्धान्त का शास्त्रीय विवेचन विधिवत् किया गया है। विद्वान लेखक ने त्रिदोष तत्व के विभिन्न रूपों का वैज्ञानिक विश्लेषण किया है।

पृष्ठ संख्या १९४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२०) द्रव्यगुण विज्ञानम् पूर्वार्धः-(षष्ठ संस्करण)-लेखक :आयुर्वेद मार्तण्ड वैद्यवाचस्पति वैद्य यादवजी त्रिकमजी आचार्य, बम्बई। आयुर्वेदीय ग्रन्थों में सूत्र-रूप में-यत्र-तत्र बिखरे हुए द्रव्यगुण-विज्ञान को आयुर्वेद-तत्त्ववेत्ता पूज्य आचार्य जी ने बड़े परिश्रम से द्रव्यों के रस, गुण, वीर्य, विपाक, प्रभाव आदि विषयों पर पृथक-पृथक् पाँच अध्यायों में बहुत उत्तमतापूर्वक संकलित कर सरल संस्कृत तथा हिन्दी भाषा में विवेचन किया है, जो आयुर्वेद-विज्ञान की प्रगति के लिए बहुत उपयोगी है स्नातकोत्तर शिक्षण के लिए भी यह ग्रन्थ अत्युपयोगी है। पृष्ठ संख्या ३९०

२१) निदान-चिकित्सा हस्तामलक (छात्रोपयोगी निदान-चिकित्सा) प्रथमखण्ड (द्वितीय संस्करण)—आयुर्वेदीय निदान चिकित्सा पर प्रकाशित की जा रही ग्रन्थमाला का यह प्रथम पुष्प है जिसमें निदान पञ्चक का विशद वर्णन किया गया है। आयुर्वेद तथा आयुर्वेदेतर विषयों के प्रतिपादक प्राचीन ग्रन्थों से संबद्ध सभी वस्तुओं का तो संकलन किया ही गया है, साथ-साथ आधुनिक चिकित्सा शास्त्र की सहायता से विषय-वस्तु को अधिक स्पष्ट करने का प्रयास भी किया गया है। क्रमागत रोगों के परिचय ने ग्रन्थ को अधिक उपादेय बना दिया है। पृष्ठ संख्या ७५८

२२) निदान चिकित्सा हस्तामलक (छात्रोपयोगी निदान-चिकित्सा)-द्वितीय खण्ड : वैद्य रणजितरायजी की अगाध विद्वत्ता, अनुपम लेखन शैली तथा सरल और रोचक पद्धति से आयुर्वेद जगत् पूर्ण परिचित है। इस ग्रन्थ में चिकित्सा के वर्गीकरण से आरंभ कर पाचन-संस्थान के कतिपय रोगों का निरूपण भी किया गया है। पृष्ठ संख्या ७१७

२३) निदान चिकित्सा हस्तामलक (छात्रोपयोगी निदान-चिकित्सा) तृतीयखण्ड। छात्रों की सुविधा के लिए यह ग्रन्थ बहुत ही उपयोगी है। पृष्ठ संख्या ६२०

२४) नेत्र चिकित्सा (संस्कृत)-लेखक : डॉ. बालकृष्ण शिवराम मुंजे। पृष्ठ संख्या २८८

२५) नेत्ररोग विज्ञान (मराठी संस्करण)-लेखक : डॉ. वैद्य र. रा. पद्मावार, अधिव्याख्याता शल्य-शालाक्य तंत्र शासकीय आयुर्वेद म० वि० नांदेड। पृष्ठ संख्या २०२

२६) नेत्र रोग विज्ञान (हिन्दी संस्करण) – उपरोक्त मराठी संस्करण का हिन्दी अनुवाद। पृष्ठ संख्या २०१

२७) पदार्थ विज्ञान (देशभर की आयुर्वेदीय संस्थाओं एवं परीक्षा समितियों के पाठ्यक्रम में स्वीकृत)– लेखक : आयुर्वेद बृहस्पति पं. रामरक्ष पाठक, आयुर्वेदाचार्य भू. पू. प्रिन्सिपल, अ. शि. आयुर्वेदीय कालेज बेगूसराय।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस ग्रन्थ के प्रथम अध्याय में पदार्थ का तुलनात्मक विवेचन किया गया है और द्वितीय अध्याय में आनेवाले पदार्थों का सुन्दर विवेचन हुआ है। तृतीय अध्याय में आयुर्वेद के मूलभूत त्रिदोष सिद्धान्त की जननी प्रकृति तथा उससे उद्भूत तत्वों की छान-बीन की गयी है। चतुर्थ अध्याय में आत्मतत्व का विवेचन किया गया है और यह दर्शाया गया है कि पूर्व जन्मकृत पापों का परिणाम भोगने के लिये किस प्रकार सगुण आत्मा भिन्न-भिन्न योनियों में प्रवेश कर कर्मों का फल भोगा करती है। पृष्ठ संख्या २६६

२८) **पारिषद्यं शब्दार्थ शारीरम्–सम्पादक : आयुर्वेदाचार्य पं. दामोदर शर्मा गौड। भूमिका लेखक आचार्य रघुवीरप्रसाद द्विवेदी।** यह ग्रन्थ आयुर्वेद के अध्ययन–अध्यापन के कार्य में लगे लोगों के लिये परम उपयोगी है।

पृष्ठ संख्या २१२

२९) **प्रारम्भिक रसशास्त्र (मराठी संस्करण) लेखिका : डॉ. विजया फडके।** यह किताब B. A M S. B. S. A. M. प्री. आयुर्वेद प्रथम द्वितीय वर्ष के पाठचक्रम को ध्यान में रखकर लिखी गई है। पृष्ठ संख्या १०१

३०) **मानस रोग विज्ञान–इस ग्रथ के विद्वान् लेखक : स्वर्गीय डॉ० बालकृष्ण अमरजी पाठक** ने बनारस हिंदू–विश्वविद्यालय के आयुर्वेदिक कालेज के अध्यक्ष एवं प्रधानाध्यापक के रूप में काफी कीर्ति प्राप्त की थी और एक उच्च कोटि के विचारक तथा उद्भट मनीषी के रूप में आप सम्पूर्ण भारत में सुप्रसिद्ध हो गये थे।

आज के युग में जब कि काम–क्रोध आदि तथा मिरगी (अपस्मार), उन्माद, न्यूरेस्थीनिया, मानसिक अस्थिरता, पागलपन, हिस्टीरिया आदि मानसिक रोग मनुष्य जाति को बुरी तरह त्रस्त कर रहे हैं, यह पुस्तक एक नवीन सन्देश देनेवाली है। अंग्रेजी भाषा के ज्ञाताओं का कहना है कि मानस शास्त्र जैसा अंग्रेजी में है वैसा अन्यत्र नहीं है किन्तु इस पुस्तक के अवलोकन से उनके भ्रम का निवारण होगा, हमारा ऐसा विश्वास है।

इस ग्रन्थ की रूपरेखा पूज्यपाद यादवजी ने तैयार की थी और इस विषय पर आयुर्वेदीय साहित्य में खटकनेवाली जबरदस्त कमी को पूरा करने के लिये डॉ. पाठक जैसे अनुभवी विद्वान वैद्य को यह ग्रन्थ लिखने के लिये उत्साहित किया था। पृष्ठ संख्या २२३

३१) **मानसायुर्वेद (मराठी)–लेखक: प्रज्ञाचक्षु श्री गुलाबराव महाराज** कृत यह लघुकाय पुस्तक है जिनमें उन्होंने आयुर्वेद और आरोग्य पर मानसायुर्वेद के अतिरिक्त अन्त में आरोग्य विषयक १४ प्रश्नों के गम्भीर, सूक्ष्म और महत्व-पूर्ण उत्तर देकर समाधान किया है। पृष्ठ संख्या १३२

३२) **मोटापन कम करने का उपाय–लेखक प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी।** ग्रन्थ परम उपयोगी एवं मननीय है। पृष्ठ संख्या १४६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

३३) **यूनानी चिकित्सा सार (द्वितीय संस्करण)**–लेखक : **हकीम डॉ० दलजीतसिंह**। इस पुस्तक में विद्वान् लेखक ने रोगों के निदान तथा चिकित्सा को सरल हिन्दी भाषा में लिखकर सर्वसाधारण जनता तथा साधारण पढ़े-लिखे वैद्यों तक के लिए सुलभ बना दिया है।

यह सुविदित है कि युनानी दवा के नुस्खे बहुत सस्ते तथा आशुफलदायक साबित होते हैं। विद्वान लेखक ने इस पुस्तक में ऐसे अनेक योगों का उल्लेख कर पुस्तक की उपयोगिता अत्यधिक बढ़ा दी है। पृष्ठ संख्या ५७६

३४) **यूनानी सिद्धयोग– संग्रह (चतुर्थ संस्करण)**--यूनानी चिकित्सा-पद्धति का महत्व सभी जानते हैं। यह आयुर्वेद के बहुत समीप है। इसके नुस्खे आयुर्वेदीय नुस्खों की भांति ही लाभदायक और तुरन्त फायदा करनेवाले तथा सस्ते होते हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ भी उपर्युक्त लेखक द्वारा ही लिखवाकर प्रकाशित किया गया है। पृष्ठ संख्या २३८

३५) **यौवन विज्ञान पर नया प्रकाश**-लेखक : डॉ. **लक्ष्मीनारायण शर्मा,** ए. एस. एस. आर. एम. पी. भिषग्रत्न। विद्वान् लेखक ने प्राचीन व आधुनिक लेखकों के पूर्वाग्रहों से हटकर स्वतन्त्र शैली द्वारा वैज्ञानिक एवं सरल ढंग से इस विषय को समझाने का पूर्ण प्रयास किया है। यह ग्रन्थ युवक एवं युवतियों के "यौवन विज्ञान" पर निश्चित ही "नया प्रकाश" डालनेवाला साबित होगा; साथ ही अभिभावकों के लिये भी मननीय है। पृष्ठ संख्या २०८

३६) **आयुर्वेदीय औषध सेवनविधि (तृतीय संस्करण)** (हिन्दी)-दवाइयों के गुण, उपयोग और सेवनविधि की विस्तृत जानकारी सरलता से दी गई है। पृष्ठ संख्या ११२

३७) **आयुर्वेदीय** औषध **सेवनविधि (मराठी प्रथम संस्करण)** उपरोक्त हिन्दी का मराठी अनुवाद। पृष्ठ संख्या ११६

३८) **आयुर्वेदीय औषध सेवनविधि**–(गुजराती संस्करण)–हिन्दी एवं मराठी भाषा में प्रकाशित आयुर्वेदीय औषध सेवन–विधि का गुजराती अनुवाद। पृष्ठ संख्या १४०

३९) **वनौषधि शतक–लेखक: आचार्य पं. दुर्गाप्रसाद शर्मा**। इस ग्रन्थ में ऐसी वनौषधियों का विषद परिचय रंगीन चित्रों के साथ प्रस्तुत किया गया है; जिनके शुद्ध और उचित उपयोग द्वारा ही औषधि पूर्ण गुणकारी बन सकती है। अतएव, यह पुस्तक आयुर्वेद के विद्वानों, छात्रों, चिकित्सकों एवं आयुर्वेद से प्रेम रखनेवाले साधारण जनों के लिए परमोपयोगी है। पृष्ठ संख्या २०८

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४०) **वैद्य सहचर** (सप्तम संस्करण)–लेखक : आचार्य विश्वनाथजी द्विवेदी 'औषधि विज्ञान शास्त्र' के सफल तथा अधिकारी लेखक द्वारा लिखी गई यह पुस्तक आयुर्वेद क्षेत्र में इतनी शीघ्रता से लोकप्रिय हुई कि इसका यह सातवां संस्करण प्रकाशित करना पड़ा। द्विवेदीजी ने इसमें नवीनतम अनुभवों का समावेश कर पुन:संस्कारित किया है। मधुमेह की आयुर्वेदीय सफल चिकित्सा तथा अन्वेषण का विवरण इसमें किया है। पृष्ठ संख्या ३५२

४१) **सिद्धयोग-संग्रह** (अष्टम संस्करण)–आयुर्वेदोद्धारक वैद्यवाचस्पति श्री यादवजी त्रिकमजी आचार्य के करकमलों से लिखा हुआ यह ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ से प्रत्येक वैद्य को लाभ होगा, इसमें रत्ती भर सन्देह नहीं है।
पृष्ठ संख्या १७६

४२) **संक्रामक रोग-विज्ञान**(तृतीय संस्करण) — लेखक: कविराज बालकराम शुक्ल, आयुर्वेद–शास्त्राचार्य। आज जब कि देश में मलेरिया, कुष्ठ, यक्ष्मा, हैजा, प्लेग आदि जैसे भयंकर रोगों से हजारों-लाखों मनुष्य आक्रान्त हो रहे हैं, तो यह आवश्यक है कि संक्रामक रोगों से बचने का उपाय तथा रोगपरीक्षा, निदान-चिकित्सा आदि से भारतीय जनता को पूर्णपरिचित कर दिया जाय, जिससे प्रथम तो यह भयंकर रोग होने ही न पावे और यदि हो भी जाय, तो उसका उचित प्रतिकार किया जा सके। प्रस्तुत पुस्तक में इन्हीं विषयों का सरल हिन्दी भाषा में वर्णन किया गया है। पृष्ठ संख्या ८१८

४३) **शार्ङ्गधर संहिता** (तृतीय संस्करण) – टीकाकार। आचार्य पं. राधाकृष्ण पारासर। शार्ङ्गधर–संहिता का अनेक टीकाओं के बावजूद इस टीका में पाठकों को आयुर्वेद का रहस्य नये ढंग से समझाकर लिखा गया है।
पृष्ठ संख्या ६०८

४४) **शालाक्य तन्त्र** (मराठी संस्करण) भाग १ ला – लेखक : वैद्य रा. रा. पद्मावार, अधिव्याख्याता शल्य–शालाक्य तंत्र शासकीय आयुर्वेद म. वि. नांदेड। कर्ण, नासा, शिरोरोग पर यह ग्रन्थ सरल भाषा में लिखा गया है।
पृष्ठ संख्या २१९

४५) **शालाक्य तन्त्र (मराठी संस्करण)** भाग २ – **लेखक : वैद्य र. रा. पद्मावार** द्वारा मुखरोग पर लिखा गया ग्रन्थ। पृष्ठ संख्या २०३

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अंग्रेजी प्रकाशन

(1)	Therapeutic Guide to Ayurvedic Medicines	**Pages 421**
(2)	Digestion & metabolism in Ayurveda.	**Pages 361**
(3)	Science & Philosophy of Indian Medicines By Shri K. N. Udupa, m. s. FRCS FACS Director instt. of medical sciences,	**Pages 351**
(4)	Arogya prakash	**Pages 443**

आगामी प्रकाशन

निदान–चिकित्सा-हस्तामलक (चतुर्थ खण्ड) – लेखक : वैद्य रणजीत-राय देसाई।

निम्न किताबें भी मिलती हैं

(१) पारद विज्ञानीयम् (द्वितीय संस्करण)– लेखक : श्री बासुदेवजी मूल-शंकरजी द्विवेदी। विद्वान लेखक ने आयुर्वेद मर्मज्ञ पं. रामनारायण शर्मा के व्यक्तिगत निरीक्षण में अपने लम्बे अनुभव के आधार पर पारद के अष्ट संस्कारों का संपादन करते हुए उनके परिणाम को इस ग्रन्थ में लेखबद्ध किया है।

पृष्ठ संख्या ३८३

(२) द्रव्य गुण विज्ञानम् उत्तरार्धं : (तृतीय संस्करण)—लेखक :— श्री यादवजी त्रिकमजी आचार्य। यह ग्रन्थ श्री यादवजी के अत्यन्त खोजपूर्ण परिश्रम का फल है। इसमें औषधीय द्रव्यों का वर्णन किया गया है।

पृष्ठ संख्या ४८२

भारतीय रसशास्त्र–लेखक : विश्वनाथ द्विवेदी। इस ग्रन्थ में अनेकानेक रस–साहित्य–विवरण जो अद्यावधि उपलब्ध नहीं थे, उसका समावेश है।

पृष्ठ संख्या ५९२

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
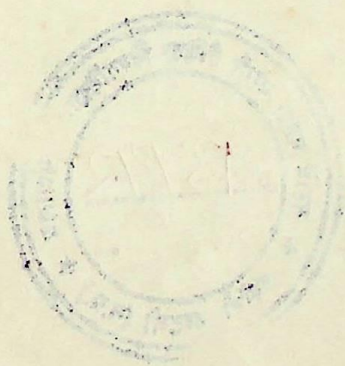
बैद्यनाथ प्रतिष्ठान की अनुपम भेंट

१,00,000 रुपयों के पुरस्कार से सम्मानित

"अभिनव शारीरम्"

का हिन्दी संस्करण

अभिनव शारीर (हिन्दी)

लेखक-आचार्य पं. दामोदर शर्मा गौड़, ए.एस.एम.
भूतपूर्व प्राध्यापक, मौलिक सिद्धान्त विभाग, एवं अध्यक्ष
चिकित्सा विभाग संस्थान, हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी

पृष्ठ संख्या ६५०, १/४ डेमी, चित्र सादे २८६,
रंगीन आर्टपेपर पर ४७

शिक्षा में उच्चता तथा एक आदर्श प्रस्थापित करने वाला अद्भुत ग्रन्थ है १/४ डेमी साईज एवं अनेक उपयोगी रंगीन चित्रों से परिपूर्ण लगभग ६५० पृष्ठों का यह ग्रन्थ है। मूल संस्कृत में प्रकाशित ग्रन्थ की सर्वांगिक उपादेयता को उसी प्रकार समाविष्ट करते हुए सभी के लिये सुलभ हिन्दी भाषा में प्रकाशित किया गया है। इस ग्रन्थ के संस्कृत संस्करण को पं. रामनारायण शर्मा रिसर्च ट्रस्ट द्वारा सर्वश्रेष्ठ मौलिक ग्रन्थ होने के कारण १ लाख रुपयों का पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

केन्द्रीय आयुर्वेदिक कौन्सिल द्वारा पाठ्य ग्रन्थ के लिए मान्यता प्राप्त ग्रन्थ रत्न

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.